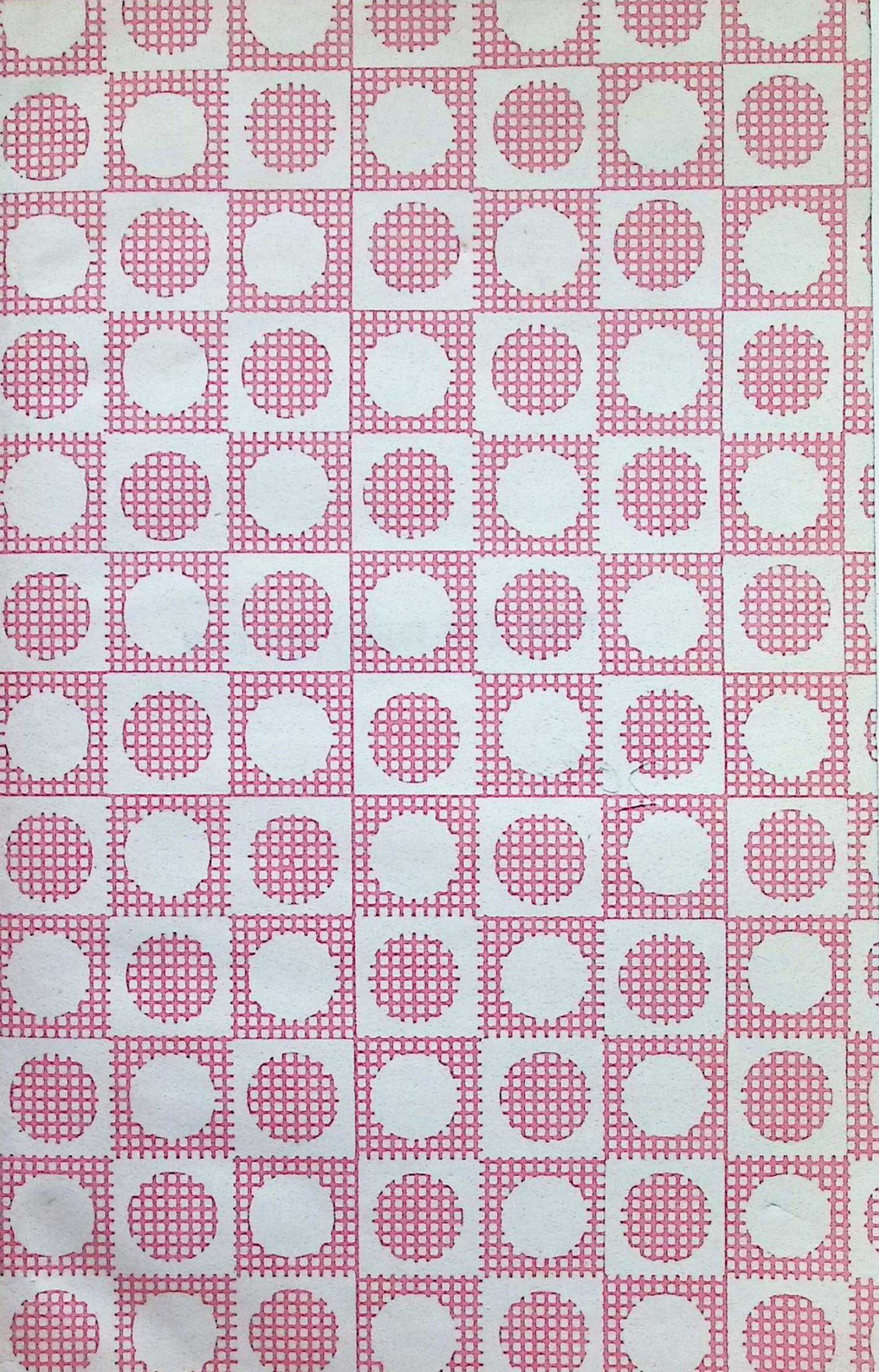
भागो नहीं (दुनिया को) बदलो

राहुल सांकृत्यायन



महल



राजनीतिक

भागो नहीं (दुनिया को) बदलो

•

राहुल सांकृत्यायन

किताब महल, इलाहाबाद

Bhago Nahin (Dunia ko) Badlo (Political) : Rahul Sankrityayan

प्रथम संस्करण, १९४४
द्वितीय संस्करण, १९४८
तृतीय संस्करण, १९५५
चतुर्थ संस्करण, १९६१
पंचम संस्करण, १९६७
षष्टम संस्करण, १९७२
सप्तम संस्करण, ११७६
अष्टम संस्करण, १९७८
नवम संस्करण : १९८०

प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद।
मुद्रक : किताब महल (होलसेल डिवीजन), प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।

तनिक अरज

पहिली छाप

इस किताब की भाखा देखके कितने ही पढ़नेवाले अचरज करेंगे, लेकिन उमेद है, कि वह नाराज नहीं होंगे; काहेसे कि यहाँ उन्हें ऐसे सैकड़ों सबद मिलेंगे, जिनको उन्होंने माँका दूध पीनेके साथ सीखा है और अब भी वह ऐसे ही फिर मीठे लगते होंगे। लेकिन मैंने इस पोथीको भाखा फैलाने के ख्यालसे नहीं लिखा। एक बरस पहले जो कोई कहता, कि तुम इस भाखामें एक किताब लिखोगे, तों मुझे बिसवास न होता। मैंने छपरा-बलियाकी भाखा मेंआठ छोटे-छोटे नाटक लिखे, और मैंने देखा कि बातोंको रखनेमें कोई कठिनाई नहीं है। उस भाखामें मैं इस पोथी को लिख सकता था, लेकिन फिर वह चार-पाँच जिलों ही के कामकी होती। लेकिन इस तरहकीं हिन्दीमें लिखना बहुत मुसिकल मालूम होता था। तो भी मैंने सोचा कि जिन लोगोंके पास मैं अपनी बातों को पहुँचाना चाहता हूँ, उनके लिए ऐसी ही भाखामें लिखनेकी कोसिस करनी चाहिये। पोथी लिखते बखत मेरे दिलमें हमेसा इस बातका ख्याल रहा है, कि जिन्होंने प्राइमरी तक हिन्दी पढ़ी है, वह इसे समझ पायें। इस काममें सन्तोखी और दुखराम ने मेरी बड़ी मदद की है, जो यह मेरे सामने न रहते, तो मैं बहक जाता। मेरी जनम-भाखा बनारसी (कासिका) है, लेकिन ३१ बरसोंसे छपरामें ज्यादा रहने के कारण मुझे वहींकी भाखाका ज्यादा ग्यान है। बनारसी बोलने लिखने में गलती कर जाता हूँ, तो भी भाखा लिखते बखत मुझे बनारसी और छपरही भाखाओंसे बहुत मदद मिली है। किसी समय मैं सालसे बेसी बुन्देलखण्डमें रहा था और उस भाखाने भी मुझे जरूर मदद की। इसके बाद सबसे बेसी मदद सिरी सतनारायेन दूबे (सेठवी) से मिली। मैं बोलता जाता था, और वह कागज पर उतारते जाते थे। कागज पर उतारनेके साथ-साथ वह सबदोंके बारे में अपनी राय देते जाते थे, जिससे भाखा और आसान बन सकी। वह भी राय देनेमें बहक जाते, जो उनके सामने गाँवकी पुरबहिया (अहिरिन) भौजाई न होती इस तरह फैजाबाद जिले की अवधी भाखासे भी मदद मिली। तो भी हिन्दी पढ़नेवालों के थोड़े से जिलोंकी मदद मिली। हो सकता है, इस पोथीमें कुछ ऐसे सबद भी आ गये हों,जो पच्छिमके कुछ जिलों में न चलते हों। मैंने अपने जान ऐसे सबदोंको न लेनेकी कोसिस की।

राजनीतिको थोड़े में पढ़े-लिखे आदमियों के हाथमें देकर अब चुप बैठा नहीं जा सकता। ऐसा करनेसे जनताको बराबर नुकसान उठाना पड़ा। जनताको वोट देनेका अख्तियार दे देनेसे काम नहीं चलेगा, उसे अपनी भलाई-बुराई भी मालूम होनी

चाहिये और यह भी मालूम होना चाहिये कि राजनीतिके अखाड़ेमें कैसे दाँव-पेंच खेले जाते हैं। इस पोथीमें इस बातके समझानेकी मैंने थोड़ी-सी कोसिस की है। लोगों को, इससे कुछ फायदा होगा या नहीं, इसे मैं नहीं कह सकता। और इतना बड़ा काम एक पोथी से हो भी नहीं सकता। मुझे उमेद है कि मेरे दूसरे भाई अपनी मजबूत कलमसे और अच्छी किताबें लिखेंगे; तब ज्यादा काम हो सकेगा।

हो सकता हैं किसी-किसी भाईको पोथी पढ़ते बखत कुछ सबद कड़े मालूम हों—दुखराम भाईकी कोई-कोई बातें देहमें तीर जैसी लगती हैं, लेकिन दुखराम जैसे किसान को हम वैसी ही भाखामें बोलते सुनते हैं। तो भी जो किसी भाईके दिलमें चोट लगे तो मैं छमा माँगता हूँ। मैं किसी एक आदमीको दोसी नहीं मानता। आज जिस तरहका मानुख जातिका ढाँचा दिखाई पड़ता है, असलमें सब दोस उसी ढाँचेका है। जब तक वह ढाँचा तोड़कर नया ढाँचा नहीं बनाया जाता, तब तक दुनिया नरक बनी रहेगी। ढाँचा तोड़ना भी एक आदमीके बूतेका नहीं है, इसके लिये उन सब लोगोंको काम करना है, जिनको इस ढाँचेने आदमी नहीं रहने दिया।

आखिरमें मैं एक बार फिर सिरी सतनरायेन दूबे (सेठवी) को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने रात-दिन लगाके बारह दिनों (१७ मई—२८ मई १६४४) में लिख डालनेमें अपनी कलम से मुझे मदद दी ?

प्रयाग —राहुल सांकिरतायन

तीसरी छाप

तीन बरिस पहिले मैंने इस पोथीको लिखा था। तबसे अपने देशमें बहुत बड़ा फेर-फार हुआ है। उस बखत भी मैं देखता था कि लड़ाईके पीछे हिन्दूस्तानको ग़ुलाम बनाकर रखा नहीं जा सकता, सो बात अब आँखके सामने है। गुलामी गइ मुदा गरीबीं बाकी है। गरीबी दूर करके हिन्दुस्तानको एक बलवान देस बनना है। रूस और अमेरिकाके बाद तीसरी जगह अपने देसको लेनी है। मुदा, यह मुँहसे कहनेसे ही नहीं होगा। इसकी खातिर समूचे देसमें पंचैती खेती, नये ढंग की खेती और कल-कारखाने छा जाना चाहिये और जल्दीसे जल्दी। कुल पच्चीस बरिस हमारे पास हैं। इसी बीच हमें यह कुल मंजिल मारना है। यह तभी हो सकता है कि सब जगह सेठोंके "लाभ-सुभ" को हटाकर देसकी भलाईको सामने रक्खा जाय। सेठ और सेठके पायक लोग लम्बी-लम्बी बात करके भरमाना चाहते है और देसकी भलाईका बहाना करके। हमें बात नहीं, काम देखना है। काममें देख रहे हैं कि लड़ाईके बखत भी सेठ लोगोंने दोनों हाथोंसे नफा बटोरा और आज भी उन्हींकी पाँच अँगुरी घीमें है। खाली चीनी-परसे आँकुस (कन्टरोल) उठानेसे कई करोड़ रुपैया सेठोंकी थैलीमें चला गया। कपड़ा

और अनाज परसे आँकुस उठानेपर और वहुत करोड़ रुपैया सेठों और चोरवजारी बनियों की थैलीमें जायेगा। कब तक थोड़ेसे आदमियोंके हाथमें देसका सारा धन और देसकी सारी जिनगी बटुरती जायगी ? और, ऊपरसे जो बेसी नफापर बड़ा एकम-टिकस (इनकम टैक्स) भी सेठोंपरसे उठा लिया गया है। सेठों के लिए सब काम फुर्ती से हो रहा है, सो हमारे सामने है।

दूसरी ओर जनताकी भलाईके सब काममें आज-कल, आज-कल हो रहा है। जिमीदारी उठानेकी बात खटाईमें पड़ी हुई है। कमेरोंके खिलाफ खूब हथियार चलाया जा रहा है और उनको फोड़कर आपसमें लड़ानेकी तदबीर की जा रही है। बाहरसे कमेरोंके परघट दुसमन बारयाम उछल-कूद रहे हैं। मुदा, एक ही भरोसा है "जिसको सालिगरामको भूनकर खानेमें अबेर नहीं हुई, उसे बैंगन भूनने में कितनी देर लगेगी ? जनता की तागत बहुत बढ़ गई। जनताके सेबकोंकी भी तागत बहुत बढ़ी है। कुछ जनसेवकोंको एक होनेका वखत आ गया है। घरके भीतर कमुनिस, सोसलिस, फरवड-बिलाकी, करन्तिकारी, सोसलिस आपसमें चाहें लड़ो, मुदा बूझ लो कि अकेले चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। जो सब लोग आपुसमें मिलकर काम नहीं कर सकते हैं तो कमेरोंके पंचैती राज (समाजवादी प्रजातन्त्र) का सपना दूर बहुत दूर चला जायगा।

लड़ाईके बाद अब क्या करना चाहिये, यही बात इस छापमें बढ़ा दी गई है। और पहले की बहुत-सी पाँती और एक समूचा अधियाए निकाल दिया गया है।

परयाग, १६-१-४८

—राहुल सांकिरतायन

चौथी छाप

सात बरस बाद चौथी छाप निकल रही है। पोथीके खतम हो जानेपर भी इतना देर लेखक और परकासक दोनोंकी ढिलाईके कारन हुई। इस छापमें भी बहुत-सी बातें घटा-बढ़ा दी गई हैं।

परयाग, ८-१०-५५

—राहुल सांकिरतायन

१. दुनिया नरक है

और जगह जाने की क्या जरुरत है, सामने देखते नहीं, यह दुनिया नरक नही तो क्या है ?—— दुखरामने सन्तोखीसे कहा । अभी दोनोंकी बात यहीं तक थी, कि एक तीसरा जवान आया, जिसे दोनोंने 'आओ भैया' कहकर पास बैठने के लिए कहा । अब फिर उनकी बात शुरू हुई । भैयाने ही पहले कहा——कहो क्या बात हो रही थी, मैं सुनूं ।

सन्तोखी—— यही दुखराम दुनिया का रोना रो रहे थे, दुनिया नरक है नरक ।

भैया—— तो इसमें कोई सक है ? देखते नहीं हमारे गाँव में पचास घर हैं, लेकिन उनमें कितने घर हैं, जो पेट भर खा सकते हैं ?

दुखराम——मैं समझता हूं, पाँचसे अधिक नहीं ।

भैया—— और वह पाँच भी सूखा-रूखा घास-पात खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं, बाकी पैंतालिस घरों में किसी को एक साँझ खाने को मिलता है, किसीको दो दिन पर मिलता है । चैत में जब फसल कटती है, तो एकाध महीना पेट भर खा लेते हों । छोटे-छोटे बच्चोंको देखते नहीं, कैसे उनका पेट कमरसे सटा हुआ है ! और किसी के लिए होगा कभी-कभी सूखा-अकाल, लेकिन हमारे यहाँ के लोगों के लिए तो सदा ही अकाल रहता है, उन्हें सदा ही भूखा रहना पड़ता है ।

भैया– जानते हो लोग जो इतना बिमार पड़ते हैं, वह भी भूखे ही रहने के कारन ।

दुखराम——क्यों नहीं भैया ! पेट में जब अन्न नहीं रहता, तो जान पड़ता है, आग भभक उठी है और सारे शरीर में लहर बनने लगता है ।

भैया——ठीक कहा दुक्खू भाई ! जब शरीरको अन्न नहीं मिलता, तो वह दुर्बल हो जाता है । और सुना नहीं है 'दुर्बलोदैव घातक:' । कोई भी आसपास से बीमारी जा रही हो, दुर्बल आदमी को देखते ही उसका मन ललचा जाता है । अकाल में जितने लोग भूखे मरते हैं, उससे तिगुने बिमारी से मर जाते हैं । अभी जो बंगाल में अकाल पड़ा था, जानते हो वहाँ कुछ ही महीनों में साठ लाख आदमी मरे, जिनमें भूखे मरने वाले २० लाख से ज्यादा न होंगे । मालूम है साठ लाख के अकाल-मरने के सुनने से तुम्हें वह रोमांचकारी दुख नजर नहीं आएगा, जो मरने से पहले उनपर बीता ।

——क्या ऐसी बीती भैया ?

भैया——कुछ न पूछो, यदि वह रात को सोते और सबेरे मरे पाये जाते, तो इतना दुख न होता । लेकिन उन्हें लाज छोड़नी पड़ी । सुना होगा तुमने, कलकत्ताकी

सड़कों पर पचास-पचास हजार भूखे नर-नारी बाल-बच्चे पड़े हुये थे। वह ऐसे लोग नहीं थे, उन्हें भीख माँगने की बान थी। कितने ही उनमें पढ़े-लिखे भी थे, कितनी ही औरतें ऐसी थीं, जिन्होंने घरके चौखट से बाहर पैर नहीं रखा था।

सन्तोखी—और वह भी घरसे निकल कर शहरकी सड़कों पर चली आई।

भैया—सारा बड़प्पन, सारा पर्दा-पानी तीन ही दिन चलता है, चौथे दिन जब भूख से अँतड़ियाँ तिलमिलाने लगती हैं, तो सब लाज-सरम इज्जत-पानी हट जाता है। फिर एक-दो आदमी के ऊपर आफत आई हो, तो हो सकता है, लाज-सरम के मारे आदमी घर में बैठा ही बैठा जान दे दे। लेकिन बंगाल में यह एक घर की बात नहीं, एक गाँवकी बात नहीं, जिले की बात नहीं थी, बल्कि एक सूबेके दो-दो, तीन-तीन करोड़ आदमियों पर यह आफत आई थी। अन्न परान से भी मंहगा था। पहले लोगोंने जेवर बेंचकर रुपये-दो-रुपये सेर का चावल खरीदा, लेकिन जेवर कितने लोगों के पास था? लोगोंने खेत बेंचा। खेत अन्न देते, लेकिन तीन महीने बाद—तब तक घर के लोग जिएं कैसे? इसलिए लोगों ने अपने खेतों को माटी के मोल बेंचा। बैल, गाय बेंचा, घर भी बेंच दिया, तब भी अन्न दुर्लभ था, खरीदने के लिए पास में कुछ भी नहीं था। करोड़-करोड़ आदमी कुएं, तालाब में डूबने के लिए तैयार नहीं हो सकते थे। जानते हो न जीनेका मोह?

सन्तोखी—हाँ भैया! जीने के लिए आदमी क्या नहीं करता?

भैया—वे लोग जीना चाहते थे। सुना कि कलकत्ता बड़ा शहर है। वहाँ देस-देसाउर से अन्न आता है। वहाँ जाने से क्या जाने, जीने का कोई रास्ता निकल आए। इसलिए घरके घर खाली हो गए। लोग भूखे-प्यासे कलकत्ता की ओर चल पड़े। सारे बंगाल के लोग कलकत्ता कैसे पहुँच सकते थे? भूखों के शरीर में इतनी ताकत कहाँ पर थी, कि साठ-सत्तर मील से ज्यादा चल सकें। कितने ही रास्ते में मर गए, कितने ही कलकत्ता की सड़कों पर भी पहुँच गए। जानते हो न कलकत्ता की बरखा?

दुखराम—हाँ भैया! वहाँ तो जान पड़ता है, बारहों महीने बरखा रहती है।

भैया—लेकिन यह सन् १९४३ के बरखा के महीने थे, जबकि भूखे नर-नारी कलकत्ता की गलियों में पहुँचे। कितनों के पास तन ढाँकने के लिए कपड़ा नहीं था वह शरीर में फटे बोरे लपेटे थे। मूसलाधार बरखा बरसती रहती थी और सड़क पर, पगडंडियों पर ये भीगते रहते थे।

सन्तोखी—क्या वहाँ धरमसाला-मुसाफिरखाना नहीं है?

भैया—धरमसाला-मुसाफिरखाना दो-चार हजार के लिये हो सकता है, लाख लाख आदमियों के लिए धरमसाला कहाँ तैयार है? कलकत्ता में भी सब को कहाँ खाने को मिलता? लड़के और सयाने भी कूड़ों परसे बीनकर दाना खाते थे, सड़क पर फेंके सूखे टुकड़ों को भी कुत्तों के मुँह से छीन लेते थे। जीवन का लोभ ऐसा ही है। आदमी कैसे भी हो, जीना चाहते हैं। मैं समझता हूँ, नरक में भी आदमी इसी तरह जीने की इच्छा रक्खेगा।

दुखराम—भैया! इससे बढ़कर और नरक क्या होगा?

भैया—हाँ, मुर्दे सड़कों पर पड़े रहते थे, कोई उठानेवाला नहीं मिलता था।

यह कलकत्ते की बात थी, देहात में तो और भी बुरी हालत थी, क्योंकि वहाँ कोई पूछताछ करनेवाला न था, न डाक्टरी महकमा, न डाक्टर, न मुर्दों की तस्वीर खींच-कर अखबारों में छापने वाले। लाखों आदमी दिल मसोसकर चुपचाप अपने गाँवों में मर गए। और जानते हो, कलकत्ता की सड़कों पर कुत्ते-बिल्ली की मौत मरने वाले ये लोग कौन थे ?

दुखराम—नहीं भैया ! बताओ, बंगाली रहे होंगे।

भैया—हाँ, बंगाली। इनमें थे बाम्हन, इनमें थे कायथ, इनमें थे ग्वाले, इनमें थे सेख, इनमें थे सैय्यद, सब जाति, सब धरम के लोग थे। भूखने सब को एक जैसा पंथ का भिखारी बना दिया। इतना ही नहीं, भूखने उनसे इज्जत बेंचवा दी।

सन्तोखी—क्या कहा भैया इज्जत बेंचवा दी !

भैया—हाँ, जान पड़ता है, इज्जत भी आदमी तभी रखता है, जब पेट में दो दाना पड़ता है। जवान लड़कियाँ, जवान बहुएँ और अधेड़ औरतें एक वक्त के भोजन के लिए अपनी इज्जत बेंच रही थीं। कलकत्ता की सड़कों पर इज्जत बेंची जा रही थी, चटगाँव, नवाखाली, बरीसाल की गलियों में इज्जत बिक रही थी, बाजारों में ही नहीं हर जगह इज्जत बिक रही थी। अन्न इज्जत से बहुत महँगा था। माँ अपनी बेटी की इज्जत का सौदा करती थी। पति अपनी स्त्री की इज्जत बेच कर कुछ लाने का इशारा करता था। कलकत्ता में कितनी नारियाँ खानगी (बेसवा) बनने के लिए मजबूर थीं, जानते हो ?

सन्तोखी—बहुत होंगी।

भैया—बहुत कहने से वह दिल दहलाने वाला नजारा हमारे सामने नहीं आता। किसीने हिसाब लगाकर बतलाया था, कि एक समय तीस हजार औरतें अपनी इज्जत से चावल बदल रही थीं।

दुखराम—इससे तो एक ही बार आँख मूंद लेना अच्छा होता।

भैया—लेकिन यह एक आदमी के आँख मूंदने की बात नहीं थी, करोड़-करोड़ आदमी कैसे बिना हाथ-पैर हिलाये मरने के लिए तैयार हो जाते। इसी लिए भूखने उनसे इज्जत बेचवाई, जो कभी इज्जत के लिए मरते थे। साठ लाख आदमी मर गए, क्या उससे कम हैं, यह लाखों औरतों का इज्जत बेचना ?

सन्तोखी—यह उससे भी बुरा है।

भैया—और जब फसल हुई, लोगों को थोड़ा-थोड़ा अन्न मिला, तो बरसात बीतने भी न पाई कि मलेरियाने आ घेरा। घर-के-घर बीमार पड़ गए, कोई पानी देने वाला नहीं रह गया। किसी-किसी गाँव में दो-तिहाई आदमी मलेरिया और महामारी में मर गए। घर के घर सूने हो गए। मुर्दे सात-सात दिन तक घर के भीतर सड़ा किये।

सन्तोखी—जीता ही देस मसान हो गया।

भैया—तो देखा न सन्तोखी भाई ! इससे बढ़कर नरक कहाँ होगा, जहाँ इस तरह घुल-घुल कर आदमी को मरना हो और बेइज्जत बे-पानी। वह तो बंगाली की बात है, अभी १९४४ में जान रहे हो, बिहार में क्या हो रहा था ?

दुखराम--बिहार में भी कुछ हुआ भैया ?

भैया--कुछ नहीं, बहुत। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा के सिरिफ तीन जिलों में और वह भी सिरिफ तीन-चार महीने में एक लाख से ऊपर आदमी हैजा और मलेरिया से मर गए।

सन्तोखी--मरना-जीना भगवान के हाथ में है।

दुखराम--जो मरना-जीना भगवान के हाथ में होता, तो दवा-दारू करने की जरूरत न होती। फिर सन्तोखी भाई! तुम्हें खाने की जरूरत नहीं, जो भगवान को जिलाना होगा, तो तुम्हें हवा पिलाकर भी जिला देंगे!

भैया--कोई आदमी बहुत बूढ़ा सरीर से मजबूत होकर मरता है, तो उसके लिए कहा जा सकता है, कि बुढ़ापे को कोई नहीं रोक सकता, बूढ़े को मौत से कोई नहीं बचा सकता। लेकिन बूढ़ों को भी बीमार पड़ने पर हम भाग के ऊपर छोड़ नहीं देते। उसकी दवा करते हैं, पथ्य देते हैं। बिहार के तीन जिलों में एक लाख से अधिक आदमी मर गए, वह बूढ़े नहीं थे। बीमारी ने इसलिए उन्हें धर दबाया, कि साल-साल तक आधा पेट और भूखे रहते-रहते उनके सरीर में सकती नहीं रह गई थी। मलेरिया के कीड़ा ने जब उनके ऊपर धावा बोल दिया, तो इन्हें रोकने के लिए भीतर ताकत कहीं रह गई। हैजा के कीड़े जब पानी के रास्ते या सांस से होकर भीतर पहुँचे, तो उन्हें निकालने के लिए उनके पास कोई ताकत नहीं बची रही थी। तन्दुरुस्त आदमी न बीमारी कम लगती है।

सन्तोखी--बीमारी न होने से आदमी तन्दुरुस्त होता है ?

भैया--नहीं सन्तोखी भाई! यह बात नहीं है। पुस्टई वाले खान-पान से आदमी तन्दुरुस्त होता है और तन्दुरुस्त होने पर बीमारी उसके पास नहीं आती।

दुखराम--तो अन्नही मूल हुआ ?

भैया--अन्नही मूल है, अन्नही परान है, अन्न के मिलने से जीवन रहता है, अन्न के मिलने से इज्जत बचती है।

दुखराम--तो जो अन्न मिले, तो दुनिया का आधा नरक खतम हो जाएगा।

भैया--हाँ, दुक्खू भाई! इस बात को गाँठ में बाँध रक्खो। हम आगे बतलाएँगे, कि क्यों अन्न रहते भी अन्न नहीं मिलता, पथ्य रहते भी पथ्य नहीं मिलता, दवा रहते भी दवा मुवस्सर नहीं होती।

सन्तोखी--'सन्तोखं परम् सुखम्' हमने तो यही सुना था।

भैया--तुम्हारे ऊपर भी वह आ सकती है, आती तो देस में कौन बच सकता ? कल बंगाल की पारी थी, आज मिथिला-तिरहुत की और बिहान हमारी-तुम्हारी भी बारी आ सकती है। 'सन्तोखम् परम् सुखम्' को उसने लिखा होगा, जिसे कभी भूख से पाला न पड़ा होगा। उसका पेट भरा होगा। वह निचित सोया रहा होगा। लेकिन इतने ही से दुनिया का नरक होना पूरा नहीं हो जाता।

दुखराम--हाँ, खाना-कपड़ा तो मूल है लेकिन और भी पचासों चिन्ताएँ हैं, पचासों विपदाएँ हैं।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई ! चिन्ता की कुछ मत पूछो। माँ-बाप हैं, घर में चार बीघा खेत है, किसी तरह गुजारा चल जाता है। फिर हो जाते हैं चार लड़के और चार लड़कियाँ। अब चार बीघे खेत से दस मुँहों का काम कैसे चल सकता है ? फिर जैसे-जैसे उमर बीतती जाती है, वैसे-वैसे मुँह भी बढ़ते जाते हैं, आहार भी बढ़ता जाता है। लड़कों का ब्याह करना, गरीब होने पर लड़की खरीदने ही में खेत बिक जायगा, इज्जतदार होने पर एक ही लड़की के ब्याह में सारा खेत चला जायगा। फिर परिवार को भी भूखा रहना पड़ेगा। दो हाथ की चादर सिर ढाँको तो पैर नंगा, पैर ढाँको तो सिर नंगा।

दुखराम—चार बीघा क्या चालिस बीघा वालों को भी चिन्ता खाये जाती है।

भैया—क्यों न खाएगी ? चार लड़के हुए, तो दूसरी पीढ़ी में दस-दस बीघा रह जायगा, मानो उनको जो एक पीढ़ी या पन्द्रह साल के लिए कम कुछ चिंता हुई, लेकिन तीसरी पीढ़ी में तो फिर दो-दो बीघा खेत और आठ-आठ लड़के लड़कियाँ। जिसके घर में आज दाल भी है, तो नमक नहीं है।

दुखराम—और फिर भैया गाँव में आधे से अधिक तो ऐसे घर हैं, जिनके पास खेती पथारी भी नहीं है। दिन भर मजदूरी करते हैं, शामको जो सूखा-रूखा मिल गया तो लड़कों-बालों के मुँह में अन्न पड़ा। रोज कमाना, रोज खाना। एक दिन गाड़ी बैठ गई, तो हाहाकार। तीस दिन मजूरी भी तो नहीं मिलती और साल में छः महीना भी करने के लिए काम नहीं रहता। सिरिफ बोने, काटने के वक्त काम रहता है।

भैया—मजूर-पेसा आदमियों की तो और आफत है। जेठ, आसाढ़, सावन का दिन काटना मुश्किल हो जाता है जो महुआ उस साल रहा, तो कुछ अवलम्ब लगा।

दुखराम—और महुआ भी तो अब नोहर (दुर्लभ) हो गया है। कहाँ पैसे का दो सेर और कहाँ वह भी अब चार आना सेर लग गया। आम की गुठली जमा करके कुछ दिन रोटी पकाते-खाते थे, और अब उसके खाने वाले इतने अधिक हैं कि सबको गुठली कहाँ से मिलेगी ?

भैया—दुक्खू भाई ! इसे भी क्या कोई जीना कहोगे ? यह नरक की जिन्दगी नहीं तो और क्या है ? फिर देखते नहीं, मजूर-घरों की क्या दशा है ? फूस की छत भी उन्हें ठीक से मुवस्सर नहीं। एक बार छा पाये, तो चाहे सड़-गल जाक और बरसात का आधा पानी भीतर हो जाता हो, लेकिन फिर उनको नया करना मुयश्कल है। कितनी छोटी छत, कितना छोटा दरबार, भीतर सीड़, बाहर नाबदान और कूड़े-करकटकी बदबू ! यह क्या आदमियों के रहने लायक घर है ? इन्हीं सड़ी झोंपड़ियों में बच्चे पैदा होते हैं। जब वह आँख खोलते हैं, तो उनके आसपास क्या दिखलाई पड़ता है। गरीबी का नंगा नाच, तिलमिलाती अँतड़ियाँ, सूखा मुँह, नंगा बदन !

दुखराम—आजकल के जमाने में बीस-बीस रुपये की साड़ी कौन खरीदेगा ? फटा-चीथड़ा भी तो नसीब नहीं होता। जान पड़ता है, टाट भी पहिनने को नहीं मिलेगा।

भैया—हाँ, और बच्चा नङ्गा-भूखा सरीर और वही गरीबी चारों ओर देखता है। सूखे थनों से दूध निकालना चाहता है। इस पर भी जो हमारे देश के आधे बच्चे बचपन ही में मर जायँ तो बड़े अचरज की बात है।

दुखराम—हाँ ! भैया सतमी के बच्चों को नहीं देखा ? दो तीन बरसों के भीतर उसका लड़कों से भरा घर खाली हो गया।

सन्तोखी—मैं समझता हूँ, बच्चों के लिए अच्छा ही हुआ ? पेट भर खाना किसे कहते हैं, क्या इसे उन्होंने कभी जाना ? जाड़े में बेचारे जो किसी के कोल्हू आड़े में आग तापने जाते, 'ऊख चुराकर ले जायगा' कह कर दुतकार दिये जाते मानो वह आदमी नहीं कुत्ते थे। कोदो का पुवाल या ऊख की पत्तियों में घुस कर रात बिता देते। भूख लगती, तो किसी के द्वार पर खड़े होते। दया आई, तो किसी ने एक कौर दे दिया नहीं तो फिर फटकार। जड़ैया (मलेरिया) में सब गिर जाते, तिल्ली बढ़ती, पेट फूल कर कुंडा जैसा हो जाता, मुँह पीला और आँखें फूल जातीं। फिर एक-एक करके पके पत्ते की तरह झड़ने लगते ! क्या यह आदमी का जीवन है ?

भैया—अब समझा न, यह नरक का जीवन है। तुम समझते होगे कि सहर के साफ कुर्त्ता-धोती पहनने वाले बाबू लोग अच्छी जिन्दगी बिताते होंगे ?

दुखराम—हाँ, भैया ! हम तो ऐसा ही समझते हैं—वह तो पान भी खाते हैं, सिनेमा भी देखते हैं, हम लोगों को देख कर गन्दा-गँवार कह कर हट जाते हैं।

भैया—उन सफेद कपड़ों के भीतर ही भीतर कितना धुआँ उठ रहा है, यह तुम्हें नहीं मालूम है दुक्खू भाई ! पहिले कभी जमाना था, कि विद्या का मोल जियादा था। इन्ट्रैन्स भी नहीं पास होते थे, कि लोग वकील, मुन्सिफ, सदरआला हो जाते, लेकिन अब एम० ए०, बी० ए० पास कर साठ-साठ रुपल्ली की नौकरी के लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। सेर भर का आटा, सेर भर का चावल, पाँच रुपया सेर घी, तीन रुपया मन इंधन, बताओ साठ रुपये में तो अकेले आदमी का पेट भी नहीं भर सकता। फिर दुकान का किराया तिगुना। पैर पसारने पर इस दीवार से उस दीवार पहुँच जायँगे, ऐसी-ऐसी कोठरियों का किराया दस रुपया महीना। कपड़े का दाम भी चौगुना। फिर बाबू अकेले नहीं होते - माता-पिता अपने पैर पर खड़ा करने से पहिले लड़के का ब्याह कर देते हैं और पचीस बरस के होते-होते बाबू के चार-पाँच बच्चे भी हो जाते हैं। अब बताओ साठ रुपये में वह क्या अपने खायें, क्या बीबी और बच्चों को खिलायें ? कहाँ से घर भर के लिए कपड़ा ले आयेंगे ? मकान का किराया कैसे देंगे ? लड़कों की फीस कहाँ से आयेगी ? यदि लड़के-लड़कियों को पढ़ाया नहीं, तो उन्हें भीख भी नहीं मिलेगी। फिर लड़कियों के ब्याह के लिए दहेज का रुपया कहाँ से आये ? उनके घर के घर तपेदिक में उजड़ जाते हैं। ठीक से खाना नहीं, चिन्ता के मारे दिन-रात कलेजा सुलगता रहता है, दवा का भी ठिकाना नहीं। इतने कमजोर शरीर में तपेदिक क्यों न घुसे ? ठीक कहता हूँ दुक्खू भाई ! बाबू लोगों के घर साफ हो गये।

दुखराम—मैं तो समझता था भैया ! कि बाबू लोग बहुत अच्छी तरह से होंगे, खूब लोगों से रुपया ऐठते हैं।

भैया—सौमें पाँच तो सब जगह अच्छे मिल जायंगे। जानते नहीं हो, वकालत पास करके कचहरी में आधे लोग सिर्फ मक्खी मारने जाते हैं। इधर-उधर से माँग-जाँच के पैसे दो पैसे का पान खाकर मुँह पर रोब और रोशनी लाना चाहते हैं ? लेकिन दुक्खू भाई ! रोशनी मुँह में खैर-चूना लपेटने से नहीं आती। जब आदमी को

पेट भर खाने को मिलता है, निश्चिन्त रहता है, रोशनी अपने आप झलकने लगती है। तुम समझते होगे कचहरी के मुहर्रिर, थाना के मुंशी जी—जिनसे तुम्हें भी कभी पाला पड़ा होगा।

दुखराम—हाँ भैया ! वह तो अपने बाप से भी पैसा लिये बिना नहीं छोडते, हड्डा पेर कर पैसा निकालते हैं।

भैया—तो उनका ऐसा करना क्या हद दरजे का कमीनापन नहीं है ? गरीब आदमी किस्मत का मारा न्याय पाने के लिए थाना कचहरी जाता है और उसे जेवर बचकर, खेत रेहन रखकर रुपया लाने के लिए कहा जाता है।

दुखराम—देह वेंचकर देना पड़ता है भैया ! क्या करें, नहीं तो जेल भेज दें, मुकदमा खराब कर दें।

भैया—यह तो पाप की कमाई है न दुक्खू भाई ! लेकिन आदमी क्यों ऐसा करता है ? इसीलिए न कि तनखा से उसका पेट नहीं भरता। उसे अपने बाल-बच्चों को पढ़ाना है और सबसे बड़ी आफत है आजकल लड़कियों का ब्याह करना। बाबू लोगों के लड़के बिना पढ़ी-लिखी लड़की से ब्याह नहीं करते, इसलिए लड़की को भी पढ़ाना पड़ता है।

सन्तोखी—बनारस में हमारी अगरवाल बिरादरीके हैं एक भाई जिनकी लड़की ने एम० ए०, बी० ए० पास किया है।

भैया—हाँ, कोई-कोई लड़कियाँ एम० ए०, बी० ए० भी पास कर लेती हैं। माँ-बाप तो चाहते हैं, कि बारह-तेरह ही वर्ष में ब्याह हो जाय, लेकिन जानते हो न लड़कोंका मोल-भाव ? तिलक दहेज नहीं जुटता, आज-कल करते दिन बीत जाता है। लड़की पढ़ने में लगी है, वह कहते हैं, चलो तब तक पढ़ती रहे। फिर जानते हो न विद्दाका चसका। जब आँख पर पट्टी बंधी रहती है, तो मरद हो चाहे मेहरी, उसको दुनिया-जहान का कोई पता नहीं रहता, लेकिन विद्दा आँख खोल देती है। कुछ पढ़-लिख लेने पर लड़की को विद्दा के घर में सजाकर रक्खें। जगमग-जगमग करते रतन दिखायी देने लगते हैं। उसे खुद और पढ़ने का लोभ होता है और जब बेचारी एम० ए०, बी०ए० पास कर लेती हैं, तो ब्याह होना और मुस्किल हो जाता है।

सन्तोखी—क्यों भैया ? तब बाबू लोगों को बहुत पढ़ी-लिखी से ब्याह करने के लिए उतावला होना चाहिये।

भैया—घबराते हैं घबराते। मेहरी जो एम० ए०, बी०ए० तक पढ़ी होगी, उसके दिमाग में गोबर नहीं न भरा रहेगा ? वह खुद अदब से बात करेगी, लेकिन बाबू को भी अदब सीखना होगा,। वहाँ 'ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी' से काम नहीं चलेगा, झूठा रोब भी नहीं गाँठा जा सकेगा।

दुखराम—एम० ए०, बी० ए० की क्या बात कर रहे हो भैया ! हमारी बुधुआ की माई को नहीं देखते, बलिस्टर बन जाती है बलिस्टर ! मुँह से बात नहीं निकलने देती। उसके सामने हम क्या ढोल गँवार की बात कर सकते हैं ?

भैया—इसीसे समझ जाओ, ज्यादा पढ़ी-लिखी औरतों को ब्याहने से बाबू-भैया लोग क्यों घबराते हैं। अभी पचास-पचास बरस तक कुंवारी बैठी रहने वाली मेहरिया देखी जाने लगी हैं, आगे न जाने क्या होगा ?

दुखराम—तो माँ-बाप के लिए भी बड़ी चिन्ता है ।

भैया—कुफुत है कुफुत, तीस ही पैंतिस बरस में बाबू लोग बूढ़े हो जाते हैं, इसी सब चिन्ता के कारन। लड़कियाँ तो ब्याहे बिना जवानी बिताने लगती हैं और लड़कों का जल्दी ब्याह कर देने के लिए लड़की वाले घेरने लगते हैं। बाप को ऐसे ही गिरस्ती चलाना मुश्किल है, ऊपर से लड़के की बहू बनकर एक और घर में पहुँच जाती है ।

दुखराम—और वह अकेली भी तो नहीं रहती ।

भैया—बस बरस ही भर बाद से घर में नये-नये मुँह आने लग जाते हैं। जितने मुँह थे, उन्हीं के खाने का ठिकाना न था। अब पोता-नाती और बढ़ने शुरू होते हैं। फिकर की बात क्या पूँछते हो ? हर बखत मन परेसान रहता है, फिर घर में बिना बात ही का झगड़ा क्यों न होता रहे ? मेहरी मर्द से लड़ती है, बाप बेटा से लड़ता है और सब आपस में लड़ते हैं। मार-पीट, गाली-गलौज क्या कोई बात उठा रखते हैं ? सारा मुहल्ला सुनता है, ज्यादा सिर-विर फूटा या किसी ने अफीम-संखिया खा ली, तो जेल की भी हवा खानी पड़ती है। यह घर नरक नहीं तो क्या है ?

सन्तोखी—हाँ भैया ! मेरे भी सहर में कुछ रिस्तेदार हैं। हमको तो गाँव का गँवार समझ कर नाक-भौं सिकोड़ते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ, कि चूनाकली किए उनके सफेद घरों, धोबी के घर से आये बगुले के पर जैसे धुले कपड़ों के भीतर आग धाँय-धाँय जल रही है, चिन्ता के मारे परेसान हैं, व्यापार मन्दा, दिवाले का डर, सिर पर महाजन, घर लड़की सयानी। क्या करें बेचारे, यही सोचते हैं कि किसको लूटें, किसको मारें ।

भैया—देखा न दुक्खू भाई ! जो सफेद दिखाई देता है, उसके भीतर भी ढोल की पोल है। साठ-सत्तर पाने वाले बाबुओं की बात नहीं, जो चार-सौ पाँच सौ पाने वाले बड़े-बड़े हाकिम हैं, उनके घरों में भी नरक की आग धाँय-धाँय जल रही है ।

दुखराम—चार-पाँच सौ रुपया महीना जो पाएगा, उनको क्या दुःख होगा भैया ?

भैया—चार-पाँच सौ पाने वाले के घर में मेहरी बच्चे मिला कर चार-पाँच आदमी तो होंगे। कितना ही बच्चा पैदा करने से हाथ रोकें, लेकिन घर में इतने से कम परानी कहाँ होंगे ।

दुखराम—हाथ रोकने की बात क्या है भैया ! बाल-बच्चा देना भगवान के हाथ में है ।

भैया—भगवान अपने कितने ही कामों से इस्तीफा दे चुके हैं, हमारे सामने नहीं, उन लोगों के सामने, जो भगवान की नस-नाड़ी पहचानते हैं। एक बुन्द पुरुष का और एक बुन्द तिरिया का मिलाकर बच्चा पैदा होता है। आजकल बहुत से तरीके निकल आये हैं, जिनके इस्तेमाल से दोनों बुन्द मिलने ही नहीं पाते। लेकिन अभी हमारे देश में पुरुखों में न हो, लेकिन तिरियों में पूत की लालसा बेसी होती है है। इसलिए चार-पाँच सौ पाने वाले हाकिम के घर में भी चार-पाँच परानी तो होते ही हैं। बेचारों को आदमीका धरम छोड़ना पड़ता है भैया ?

सन्तोखी—धरम क्यों छोड़ना पड़ता है भैया ?

भैया—माँ-बाप ने पढ़ाया-लिखाया कि लड़का कमाएगा, तो बुढ़ापे में उसकी भी खबर लेगा। एक उदर से पैदा हुए भाई-बहिनों ने समझा था कि ये हमारे हाड़-माँस हैं; लेकिन हाकिम बनते ही लड़के की आँख बदल जाती है। उसे साहब से हाथ मिलाना है, उसे कलट्टर साहब के सामने पूँछ हिलाना है। अच्छा कोट चाहिए, अच्छा बूट चाहिए, नहीं तो दरसन मिलना मुसकिल हो जायगा। यहीं से लिबास और लिफाफा बढ़ना शुरू होता है। पाँच सौ में चार सौ तो बँगला-भाड़ा, टोप-कोट, घोड़ा-गाड़ी या मोटर ही पर खर्च हो जाते हैं आजकल तो बात ही मत पूछो। फिर बताओ सौ रुपये में अपने खाएँ, बीबी-बच्चों को खिलाएँ या नौकर-चाकर को।

सन्तोखी—तो वहाँ सचमुच लिफाफा ही है।

भैया—लिफाफा मत कहो, सन्तोखी ! वहाँ भी नरक की आग धाँय-धाँय कर रही है। बेचारे माँ-बाप की भी आशा तोड़ते हैं, भाई-बहिन की ओर से भी तोता-चसम बनते हैं; सिरिफ अपना और अपने अंडे-बच्चे का ख्याल करते हैं। तुम्ही बताओ बचे सौ रुपये में वह और क्या कर सकते हैं ? वह मजबूर हैं, पढ़े-लिखे आदमी से जानवर बनने के लिए, लोग कहते हैं कि पहले दरजे की खुदगरजी और कमीनापन है। लेकिन बेचारे करें तो क्या करें ? जो लिफाफा में काम करें तो बड़े अफसर घिनकी नजर से देखेंगे, फिर आगे की तरक्की-वरक्की की आशा गई। नहीं तो घूस-रिसवत लें।

सन्तोखी—इतनी-इतनी तनख्वाह पाने वाले हाकिमों को रिसवत नहीं लेनी चाहिये।

भैया—मैंने लेखा-जोखा बतलाया न ? उसी से लेना पड़ता है ? पाँच सौ वाले भी लेते हैं, पाँच हजार वाले भी लेते हैं और पच्चीस हजार वाले भी, इस दुनियाँ में घूंस-रिसवत का बाजार हो सबसे तेज है। सब इसे जानते हैं, सब एक दूसरे की आँख में धूल झोंकना चाहते हैं—कहीं-कहीं इस घूंस-रिसवत का नाम है बड़ा-बड़ा भोज और मेम साहब की अंगुली में हजारों की अंगूठी, लाखों की मोती-रतनमाला।

सन्तोखी—भैया ! मैं क्या सुन रहा हूँ ?

भैया—चुपचाप सुनते जाओ, बड़े घरों की बड़ी पोल, बड़ी फिकर, बड़ी दोजख की आग। सब जानते है, घूंस-रिसवत बुरी चीज है। कभी-कभी पकड़े जाने पर सबसे बड़ी मछलियों को तो कुछ नहीं होता, लेकिन छोटी-मझोली मछलियों पर हाथ उठाना पड़ता है, आखिर न्याय का ढोंग तो कुछ दिखलाना ही पड़ेगा। दुक्खू भाई ! तुम खुद समझते हो, जो सौकी आमदनी पर डेढ़ सौ खर्च करने के लिए मजबूर है और उसे घूंस-रिसवत, जैसे भी हो तैसे, पूरा करना चाहता है, उसका चित सान्त होगा या असान्त, वह भयभीत होगा या निरभय ?

दुखराम—वह भीतर ही भीतर काँपता रहेगा भैया !

भैया—फिर उसकी जिनगी सुख की जिनगी नहीं हो सकती, चाहे उसके मुंह पर मुसकुराहट दीख पड़ती हो, चाहे उसके चारों ओर सुन्दरताई फैल रही हो। इन बड़े लोगों के लड़के-लड़कियाँ बड़े ठाट में पलते हैं। लड़कियों को इन्द्रपुरी की परी बनाने का उदजोग बचपन ही से सुरू हो जाता है। जवानी में पैर रखते-रखते वह अप्सरा भी बन जाती हैं, लेकिन कितना महंगा सौदा !

सन्तोखी—सहर में जाता हूँ, तो मैं भी कभी-कभी इसे देखता हूँ ? मेरी ही जाति के चौधरी हैं, उनकी ओर उँगली कौन दिखला सकता है। लेकिन जान पड़ता है सील-संकोच, धरम-करम से उन्हें वास्ता नहीं।

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई ! तुम समझ रहे हो कि वह अपने मनसे ऐसा करते हैं। नहीं ऐसा नहीं। बड़े दामाद चाहिये, दामाद अप्सरायें पसन्द करते हैं, नाच-गाना हाव-भाव चाहते हैं। जो यह सब बातें लड़की में न हों तो उसे कौन पूछेगा ? इतना होने पर भी तो कितनी ही लड़कियों को कुँआर ही जिनगी बिता देने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

सन्तोखी—नहीं भैया ! मैं यहाँ तुम्हारी बातको नहीं मानता। जो साहब-बहादुर बन जाते हैं, उनमें बराबर एक दूसरे की औरत मंगा ले जाने का रोग होता है।

भैया—रोग से तुम्हारा मतलब है महामारी ? लेकिन ऐसी कोई महामारी नहीं है। यह लोग हैं तो हमारे देसके, लेकिन इनका दिमाग सातवें आसमान पर रहता है। कलट्टर हो गये, पन्द्रह सौ रुपये में अपनी देह और आतमा को बेंच दिया, इसके लिए उन्हें सरम होनी चाहिये थी; लेकिन यह हमारे भाई... काले साहब गोरों का भी कान काटते हैं और हम लोगों को जंगली, उजड्ड, गँवार समझते हैं। हम भी आदमी हैं, हम भी समझते हैं, आखिर "हित अन-हित पसु पंछिहु जाना" हम उनसे घिना करते हैं।

सन्तोखी—यह बात ठीक कही भैया।

भैया—और जब आदमी के दिल में घिना हो जाती है, तो सदा छिद्दर ढूँढ़ने लगता है, और जरा भी छिद्दर मिल गया, तो बात का बतंगड़ बना डालता है। मैं मानता हूँ कि इनमें कभी-कभी एक-दूसरे की औरत को भगाने की बात भी देखी जाती है। लेकिन वह भी क्यों ? उन्हें अप्सरा बनाओ, उन्हें विल्लायत वालों के लिखे गन्दे-गन्दे उपन्यास पढ़वाओ या सिनेमा की रामलीला दिखाओ। पुरुखों को तो कचहरी के दफ्तर में कुछ काम भी रहता है, इनकी तिरियों को तो कोई काम भी नहीं रहता। काम करने लगें तो मक्खन के से हाथ कहाँ रहें ? बेकार रहने का मतलब है, दिल में हमेशा खुराफात पैदा करना। इसके बाद दूसरे भी लोग होते हैं। किसी के पास दो हजार की मोटर है, तो किसी के पास दस हजार की। किसी के पास इतना पैसा नहीं, कि नैनीताल-मंसूरी जाय और कोई वहाँ जाकर ५० रु० खर्च कर सकता है। किसी के लिए २० रु० की साड़ी खरीदना मुश्किल है और कोई दो सौ की साड़ी ले सकता है, जो सिनेमा सुन्दरियों के शरीर पर देखी जाती हैं। यह निठल्लापन, लोभ और उपन्यासों की कामुकता का कारन है, जिनसे तिरियों के भागने की नौबत आती है। इनके घरों की लड़कियों की तो और दुरदशा है। वह सिरिफ माता-पिता के भरोसे पर पति नहीं पा सकतीं, इसीलिए उन्हें अप्सरा की तरह सजना पड़ता है।

संतोखी—यह ठीक कहा भैया ! हमने अब तक सुना था, कि महावर पैर में लगाता जाता है, लेकिन अब सुनते हैं, कि इनके घर की लड़कियाँ ओंठ में भी महावर लगाती हैं।

भैया—इनका सारा जीवन नाटक है संतोखी भाई ! और सुख का नाटक सायद सौ में दो-चार का, बाकी सबका ही दुख का नाटक है। लड़की को पढ़ाया-

लिखाया, बी० ए०-एम० ए० कराया। बंसी फकी जा रही है कि कोई कलट्टर, मजिहटर या लाख-दो-लाख वाला आदमी फँसे, लेकिन यह सब के भाग की बात तो नहीं है। उनके लड़कों की तो और बुरी हालत है।

दुखराम—लड़कों का मिजाज तो बाप से बढ़-चढ़ कर होता है।

भैया—यही मिजाज तो उनके लिए और घातक होता है। यह पान-फूल की तरह पाले-पोसे जाते हैं : मेम लोगों के स्कूल में पढ़ने के लिए भेजे जाते हैं, वह नहीं हुआ तो देवफोफी-समाज वालों के स्कूलों में जाते हैं।

दुखराम—देवफोफी-समाज क्या है भैया ?

संतोखी—अरे सखी समाज की तरह कोई होगा ?

दुखराम—यह सखी समाज क्या है सन्तोखी भाई ?

संतोखी—अरे तुम तो गाँव से बाहर कहीं जाते भी नहीं।

दुखराम—वही एक बार कलकत्ता गया था, बरस दिन चटकल में काम किया, बीमार होकर घर पर आया, बचने की उम्मेद नहीं थी। अब यही पुरखों के गाँव में मट्ठा पाट-पाट कर चाहे आप पेट खायें, चाहे भूखे रहें।

सन्तोखी—अयोध्या में एक बार हम गये थे, हमारे बनारस के रिस्तेदार थे, महात्मा का दसरन कराने ले गये। लेकिन महात्मा को देखकर देह में आग लग गयी। मेहरा की तरह सोलहों सिंगार करके बैठे थे—आँख में मोटा-मोटा काजल, सिर में टीका, मटक-मटक कर चलना, मीठा-मीठा बोलना। मैंने उनसे पूछा "वह महात्मा कहाँ है ? उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कान में कहा "चुप, यही तो महात्मा हैं।" पीछे बतलाया कि यह महात्मा रामजी से मिल चुके हैं। रामजी रोज इनके पास आते हैं।

दुखराम—धत्तेरे की ! रामजी राजा रहे, उनको हजार-हजार जोरू मिल जातीं, लेकिन सीताजी को छोड़कर किसी की ओर नजर उठाकर नहीं देखा, वह भला इन जनखे मर्दों के पास आयेंगे ! मैं होता, सन्तोखी भाई ! तो कुछ तो जरूर बोल उठता।

सन्तोखी—कुफुत तो मुझे भी हो गई थी, क्या करता रिस्तेदार का ख्याल करके चुप रह गया। ये लोग अपने को सखी कहते हैं।

दुखराम—तो यही है सखी समाज, और देवफोफी समाज भी इसी तरह का क्या कोई है भैया ?

भैया—कुछ फरक है, सखी समाज काले भाई लोगों की करतूत है और देवफोफी समाज गोरे लोगों की।

सन्तोखी—किरिस्तान का धरम तो नहीं है ?

भैया—नहीं सन्तोखी भाई ! वह सतनजा है सतनजा। कुछ हिन्दू धरम-से लिया, कुछ किरिस्तान से लिया, कुछ मुसलमान से लिया ! लेकिन इतना ही रहत तो कुछ काम चल जाता।

सन्तोखी—तब तिननजा ही न रह जाता। सतनजा कैसे बना भैया ?

भैया—अरे इन्होंने ओझा-सोखा, भूत-परेत, चुड़इल-डाइन सब मिलाकर बहुत बड़ा धरम खड़ा कर दिया।

दुखराम—बहुत बड़ा धरम, वह तो ताड़ से भी बड़ा धरम होगा। तो पढ़े-लिखे लोग यह ओझा-सोखा, भूत-परेत वाली बात मानते हैं ?

सन्तोखी—देवफोफी सुना नहीं हैं, देवता लोगों से बात करने की फोफी है, इसलिए न भैया ! नाम देवफोफी पड़ा है ?

भैया—नाम तो वह लोग थेयोसोफी कहते हैं, लेकिन मतलब वही देव-फोफीका।

सन्तोखी— देवफोफी का भी अपना स्कूल है भैया ?

भैया—देवफोफी के स्कूल में मामूली घर के लड़के थोड़े ही पढ़ सकते हैं, बड़े घर के लड़के जाते हैं। हवा-बतास धूप-घाम से बचाकर उनको रखा जाता है।

दुखराम—तब तो एक ही झकोरा में मुरझा जायँगे।

भैया—मुरझा तो जाते ही हैं। हाकिम के लड़के हैं तो हाकिम भी तो हजारों हैं और सब के घर में दो-दो चार-चार लड़के हैं। एम० ए०, बी० ए० तो किसी तरह ठोंक-पीटकर खुशामद-बरामद करके बना लिए जाते हैं लेकिन सबको नौकरी कहाँ से मिले !

सन्तोखी—तब बैठे-बैठे मक्खी मारते होंगे।

भैया—मक्खी मारना भी तो इन्होंने नहीं सींखा। लड़की होते तो शायद कभी भाग भी खुल जाता। राजकुमारों की तरह पाले गये, मिजाज आसमान पर रहा। पढ़ लिखकर तैयार हुए, तो बड़ी नौकरी मिली नहीं। पचास-पचीस की मुहर्ररीपर मन ही नहीं जाता। बापके मत्थे खाये। पेंसिन ले ली, तो घर का चलाना और मुस्किल और दो-चार बेटा-बेटी में लटक गये बस।

दुखराम—जीते ही नरक।

सन्तोषी—तो मालूम होता है सब जगह यही हाल है।

दुखराम—हम तो अपना ही दुख देखकर दुनिया को नरक कहते थे।

भैया—नहीं दुक्खू भाई ! नरककी आग घर-घर जल रही है, किसी का घर आज बचा हुआ है तो कल नहीं बच पायेगा।

सन्तोखी—सायद राजा-महराजा लोग अच्छी हालत में होंगे, उनके पास बहुत धन...

भैया—बहुत रानी-महरानी, रंडी-मुंडी, नौकर-चाकर होते हैं, इसीलिए उनके यहाँ बैकुंठ है, यही न कहते हो सन्तोखी भाई ? लेकिन जानते हो न ? इन्दौर निकाले गये, अल्वर के महाराज निकाले गये, नाभावाले न जाने कहाँ जाकर मरे। और अब तो सभी गद्दी से अलग।

दुखराम—बिल्लायत के बादसाह तो बहुत सुख से होंगे भैया ?

भैया—मैं कब कहता हूँ कि सौ में दो-चार आदमी भी सुखी न मिलेंगे। लेकिन कल के लिए निचिंत, ऐसा सुख तो दोरंगी दुनिया में कहीं नहीं है। तुमने सुना नहीं है दुक्खू भाई ! अभी बहुत दिन की बात तो नहीं है, विलायत के बादसाह एडवर्ड निकाल दिये गये।

सन्तोखी—हाँ, हाँ। आजकल जो बादसाह हैं, इन्हीं के तो बड़े भाई थे और सिर्फ व्याह करने के कसूर में।

दुखराम—व्याह करने में कौन कसूर था ?

भैया—कसूर तो नहीं था। बेचारा कुंआरा था, अपने मनकी स्त्री से व्याह करना चाहता था।

दुखराम—साहब लोग तो अपने मनका व्याह करते ही हैं, फिर इसमें क्या बुराई थी ?

भैया—साहब लोग कर सकते हैं, लेकिन बादसाह नहीं।

दुखराम—कलकत्ता में सुना था कि टोप-टोप सब एक जाति होती हैं।

भैया—विलायत में राजा का खून दूसरा होता है और परजा का दूसरा।

दुखराम—तो राजा का खून लाल नहीं सुनहले रंगका होगा ?

भैया—खून तो सबका ही लाल होता है लेकिन कोई समझता है हमें भगवान ने दाहिने हाथ से बनाया है और दूसरे को बाएँ हाथ से।

सन्तोखी—तो साहब लोगों में भी बेकूफों की कमी नहीं है ?

भैया—चालाकों की कमी नहीं है कहो, इसे मैं पीछे बताऊँगा। जैसे हमारे घर-घर में नरक बन गया है, वैसे ही विलायत में भी हैं।

सन्तोखी—सुनते हैं कि अरबों रुपया हर साल हिन्दुस्तान से दूर बिलायत जाता था, फिर वहाँ के लोग इतने तकलीफ में क्यों ?

भैया—वह सब रुपया विलायत के चारों करोड़ आदमियों में नहीं बाँटा जाता। वहाँ पाँच सौ-छः सौ परिवार हैं जो करोड़पति, अरबपति हैं। ताल-तलैया, ऊसर-डावर, नदी-नाला, सबका पानी बहकर समुद्र में चला जाता है, वैसे ही दुनिया के बहुत से भाग का और हिन्दुस्तान का भी धन पाँच सौ-छः सौ परिवारों के पास चला जाता है ! बिलायत में तो गरीबी और असह हो जाती है। १९३०-३१ में तीस-तीस, चालीस-चालीस लाख आदमी बेरोजगार हो गये थे, दस-पाँच लाख आदमी तो वहाँ बराबर ही बेरोजगार रहते हैं। वहाँ बेरोजगार रहने का मतलब और भी साँसत। बाहर आने में जहाँ एक प्याला चाय और एक टुक्का रोटी मिले, वहाँ नाते-दार-रिश्तेदार भी कैसे किसी की खातिर कर सकते हैं। लोग बुरी तरह मरते हैं।

दुखराम—जैसे बंगाल में साठ लाख आदमी मर गए।

भैया—नहीं, वैसा हो तो दूसरे ही दिन उन छः सौ परिवारों के महलों-दरबारों को लोग जमीन से खोदकर फेंक दें। इक्के-दुक्के करके हजारों आदमी मरते हैं। कोई रेल के नीचे कटकर मरता है, कोई गैस का पाइप खोलकर नाक पर रखकर मर जाता है, कोई टेम्स नदी या समुन्दर में अपने कूद मरता है। छः सौ परिवार और उनके साथी समाजी घबड़ा कर खैरात बाँटने लगते हैं !

दुखराम—खैरात खाके जीना तो और बुरा है।

भैया—पुरा है, वह भी नरक का जीवन है, लेकिन जीवन बहुत प्रिय है, नरक वाले भी जीवन को छोड़ना न चाहते होंगे।

दुखराम—तो घर-घर मट्टी का चूल्हा है, किसी के यहाँ सोने का चूल्हा नहीं है ?

भैंया—हाँ बेसी मट्टी का चूल्हा है, और जिनके पास आज सोने का चूल्हा है, उनके बेटे-पोतों के लिए ठिकाना नहीं है कि मट्टी का चूल्हा मिलेगा।

दुखराम—तो मैंने ठीक कहा न दुनिया नरक है ?

भैंया—नरक हैं लेकिन, बनाने से नरक बनी है।

दुनिया क्यों नरक है ?

दुखराम—सन्तोखी भाई, कल रात तो बहुत देर हो गई थी, लेकिन भैंया ने बात खूब बतलाई।

सन्तोखी—हम लोगों को दुक्खू भाई ! दुनिया जहान का क्या पता है। हम तो गूलर के कीड़े हैं, हमारी दुनिया बस उतनी ही बड़ी है। लेकिन भैंया राजबली कितना समझा-समझाकर बतलाते हैं। नरक-नरक तो हम सुनते चले आए थे।

दुखराम—लेकिन सुना न भैंया ने क्या कहा था ?

सन्तोखी—हाँ, कि दुनिया नरक बनाने से बनी है। अच्छा अब सावधान हो जाओ भैंया आ गए !

भैंया—कहो, दुक्खू भाई ! रात को तो सोने का बखत बहुत कम मिला होगा।

दुखराम—बखत ही कम मिला था भैंया ! फिर दो घड़ी दिन गिरे तक हल चलाते रहे, हल छोड़कर एक घंटा सो लिए हैं। तुम्हारी बात सुनने का बहुत मन रहता है भैंया।

भैंया—मैं किस्सा-कहानी नहीं कहता दुक्खू भाई ! दुनिया नरक है, यह तो बहुत दिन से सुनते आए हैं, लेकिन अब जानना है कि यह दुनिया नरक क्यों बनी है ? किसने बनाई ? इसके बाद हमें यह भी जानना होगा, कि दुनिया अच्छी कैसे बनाई जा सकती है।

सन्तोखी—हाँ भैंया ! हम वही सुनना चाहते हैं, और हमारी तागत क्या है, लेकिन जो बन पड़ेगा करेंगे। सुना है, जब कन्हैया जी ने गोबरधन उठाया था, बाल गोपालों ने भी अपनी-अपनी लाठी लगा दी थी।

भैंया—कन्हैया जी का गोबरधन नहीं है सन्तोखी भाई ! यह है दुक्खू भाई का छान (छप्पर)।

दुखराम—दस-पाँच का हाथ लगने से छान भी उठ जाती है भैंया।

भैया—बस यह बात है सन्तोखी भाई ! लाखों हाथ लग जाएँगे, तो बिगड़ी दुनिया बन जायेगी । लेकिन पहले तो यह देखना है कि दुनिया नरक कैसे बनी है ! घाघकी कविता सुनी है न ।

"गेहूँ के रोटी जड़हने के भात ।
गल-गल नेमुआं औ घिउ तात ।
तिरछी नजर परोसे जोय ।
ई सुख सरग पैठिले होय ।"

दुखराम—हाँ भैया ! गेहूँ की रोटी, महीन चावल का भात, गरम घिउ हरख-प्रसन्न से अपनी इस्त्री परोसकर खिलाए, नेमूं न भी रहेगा तो भी यही दुनिया बैकुंठ हो जायेगी ।

भैया—तो दुनिया को वैकुंठ बनाने के लिए कौन चीज की जरूरत है ! पेट भर खाने को मिले अच्छा अन्न, घर भर को लाज ढाँकने, जाड़ा-गर्मी से बचने के लिए कपड़ा मिले, घरनी के मुँह पर चिन्ता और फिकिर की छाँह न पड़े । इतना हो जाने पर दुनिया नरक नहीं रह जायगी ?

दुखराम—चिन्ता न रहे, घर भर को सुन्दर कपड़ा-खाना मिले, फिर क्या चाहिये भैया ?

भैया—दुक्खू भाई, हमारे गाँव के बगल में यह गड़ही है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यह भी नरक है । जब माघ-फागुन में पानी सूख जाता है, तो गाँव भर के पाखाने की जगह बन जाती है, गाँव भर की छुतहर हाँड़ी और सब गन्दी-गन्दी चीज इसी में फेंकी जाती है, असाढ़ में पानी जो खूब जोर का नहीं बरसा, तो सब बज-बज करने लगता है ।

भैया—अभी हम बज-बज की बात नहीं कहते, यह गढ़ही बनती क्यों है ?

दुखराम—हम लोग घर बनाने के लिए मट्टी जो निकालते हैं ।

भैया—तो यह जो पास में ऊंचे-ऊँचे घर खड़े हैं । इसीलिए न यह जमीन गड़ही बन गई ? इसी तरह तुमको जो खाना नहीं मिल रहा है, नंगा रहना पड़ता है वह क्यों ? तुम जितना गेहूँ अपने खेतों में पैदा करते हो, जो सब तुम्हारे पास रह जाय तो गेहूँ की रोटी मिलेगी कि नहीं ?

दुखराम—मिलेगी ! हम एक साल की कमाई दो साल तक खाएँगे । लेकिन हमारे पास गेहूँ रहने कहाँ पाता है ? खलिहान में उतनी बड़ी राशि देखते हैं, लेकिन बैसाख बीतते-बीतते घर में चूहे डंड पेलने लगते हैं, न जाने कहाँ वह रासि अलोप हो हो जाती है ?

भैया—कहाँ अलोप हो जाती है, क्या तुम जानते नहीं हो ? जो सब रासी तुम्हारे पास रहे, तो कुछ गेहूँ को सुक्खू अहीर को देकर तुम घी भी ले सकते हो, कुछ से अपने लिए कपड़ा भी खरीद सकते हो ! लेकिन आधे से वेसी को बेचकर तो तुम मालगुजारी भी नहीं दे पाते, फिर जमींदार की हर हकूमत, जरिबाना-तलबाना, पटवारी-मुन्सी को घूंस-रिसवत, थानेदार को माल-मलीदा, कचहरी के

वकील-मुख्तार को मुँह-सुँघाई, और सैंकड़ों तरह के दूसरे खर्च किये बिना तुम्हारी जान नहीं बचेगी ।

दुखराम—और आजकल तो और पचास तरह के डंड लगे हुए हैं । सरकार को चन्दा दो, नहीं तो तहसीलदार साहब आँख निकाल लेंगे, थानेदार एक सौ दस में चालान करने की धमकी देंगे । एक आफत है हम लोगों के सिर पर ?

भैया—तो तुम्हारे सामने की परोसी थाली खींच ली जाती है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यही कहना चाहिये । परोसी थाली तो खींच ली ही जाती है ।

भैया—दुनिया में जितना धन है, उसको पैदा करते हैं कमेरे लोग । किसान न हों तो मट्टी का सोना कौन बनावे ?

दुखराम—हाँ, गेहूँ सोना से भी बढ़कर है । अनाज न रहे तो सोना खाकर कोई नहीं जी सकता है, न सोना पहनकर जाड़ा काट सकता है ?

भैया—मजूर न रहें तो चटकल-पटकल में सूत कौन कतेगा ? ताँत (करघा) कौन चलाएगा ? किसान कपास पैदा करता है, उसी का भाई मजूर कपड़ा तैयार करता है । लेकिन दोनों को तन के ढाँकने के लिए कपड़ा भी नहीं मिलता ।

दुखराम—बीस रुपया जोड़ा धोती कौन खरीदेगा भैया ?

भैया—बीस रुपया नहीं कुछ ही दिन पहले तीस रुपया जोड़ा धोती बिकती रही है ! आध सेर कपास लगा होगा, किसान को बारह आना दे दिया । मजूर ताँत पर दिन में दो जोड़े से भी बेसी कपड़ा बुन सकता है । मँहगाई मिला के साठ रुपया महीना मिलने पर धोती के दामों में से उसे एक रुपया मिला ।

सन्तोखी—बारह आना, एक रुपया, एक रुपया तो भैया ! बीस रुपया के धोती जोड़ा में पौने दो रुपया न मजूर किसान को मिला बाकी सवा अठारह रुपया ?

भैया—बाकी का हिसाब समझ लोगे तो पता लग जांयगा कि इस दुनिया को नरक किसने बनाया । लड़ाई से पहिले यह धोती जोड़ा साढ़े तीन-चार रुपये में मिलता था, उस वक्त किसान मजूर को दस-बाहर आना मुश्किल से मिलता था, बाकी तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे ।

सन्तोखी—पहले तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे, अब अठारह-अठारह रुपये और धोती के बनाने वाले हैं मजूर-किसान !

भैया—किसी चीज के पैदा करने में जो देह चलाता है, खून-पसीना एक करता है, वह है कमकर, कमेरा, कारीगर । घर के लोग काम कर रहे हों और कोई आदमी छाँह में होवे, तो उसे क्या कहेंगे दुक्खू भाई ।

दुखराम—जाँगरचोर कहेगे, कामचोर कहेंगे, देहचोर कहेंगे और क्या कहेंगे भैया ? घर के लोग खून-पसीना वहा रहे हों और वह छाँह में बैठा सोवे, वह भी कोई आदमी है ?

भैया—और, दुक्खू भाई ! जो वह कहीं संझाको आकर कहे कि हम तो बासमती का भात खायेंगे, दाल में एक छटाँक घी डालकर, और उसके साथ आधसेर

सजाव दही भी चाहिये, नेबुआ भी चाहिए, और छम-छम करके कोई गोरी परोसने के लिए आए । तब क्या कहोगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—कहने की बात पूछ रहे हो भैया ? उस कामचोर से एक भी बात नहीं कहेंगे, उसका दोनों कान पकड़ेंगे, गाँव के सिवाने के बाहर ले जाएँगे और गाल पर खूब जोर से दो-दो थप्पड़ लगाएँगे । फिर कहेंगे—"कामचोर, जा मुंह काला करके चला जा, फिर हमारे घर की ओर मुंह नहीं करना ।"

भैया—तुम्हारा बेटा जीवे दुक्खू भाई । तुमने ठीक किया और ठीक कहा । किसान मजदूर, कमकर हैं, कामचोर नहीं हैं, उनके पल्ले पड़ा एक रुपया बारह आना और सवा अठारह रुपया कामचोर के हाथ में गया, जो बासमती का चावल खाते हैं, जिनकी थाल में गोरी छम-छम करके घी और सजाव दही परोसती है । वह तुमसे माँगने नहीं आते, तुम्हारे सामने हाथ नहीं पसारते कि तुम उनका कान पकड़ कर गाँव की सीमा के बाहर कर आओ ।

सन्तोखी—भैया ! हम लोग तो छोटी-छोटी दौरी-दुकान करते हैं, रुपये पर एक पैसा मिल गया तो उसी को बहुत समझते हैं । लेकिन एक असली काम करने वालों को दो रुपया थमाकर अठारह रुपया अपनी जेब में रख लेना यह रोजगार नहीं है भैया ! यह तो सीधी लूट है !

भैया—लेकिन यह अठारहो रुपया एक आदमी की जेब में नहीं जाता सन्तोखी भाई ! इसमें बहुत लोगों को हिस्सा मिलता है ।

दुखराम—चोरी का माल अकेले नहीं न पचता ।

भैया—अच्छा तीन का हिसाब बताएँ कि तेरह का ?

दुखराम—तीन-तेरह क्या भैया ?

भैया—अरे यही लड़ाई के पहले एक-एक जोड़े पर तीन रुपये की लूट थी और अब तेरह की ।

दुखराम—पहिले तीन के ही बारे में बतलाओ भैया । पहिले हथौड़े की मार सह लें, फिर घन की सहेंगे ।

भैया—तीन रुपये में जाते तो सभी कामचोर के पास हैं, लेकिन उनमें से चार आना चला जाता है कल-मशीन बनाने वालों के पास ! जानते हो न ? कल-मशीन विलायत से बनकर आती है ?

दुखराम—तो यह चार आना कल-मशीन बनाने वाले मजदूरों के पास चला जाता है ?

भैया—दुक्खू भाई ! क्या तुम समझ रहे हो, बिल्लाइत में सतयुग चल रहा है ? दुनिया भर में सबसे जियादा जो परान देकर काम करते हैं, वही सबसे जियादा भूख-नंगे रहते हैं । विलायत के मजूरों की तनखाह बेसी है, उनको एक दिन का दस-पन्द्रह रुपया मिल जाता है ।

दुखराम—जनु हमारे यहाँ का एक महीना और वहाँ का एक दिन बराबर है ।

भैया—तो तुम समझते हो कि उनके पास रुपया रखने की जगह भी नहीं रह जाती होगी ?

दुखराम—हाँ भैया। दो-दो, ढाई-ढाई सौ रुपया महीने में जिसके घर आता हो, उसके घर में तो तोड़े का तोड़ा रुपया गँज जाता होगा।

भैया—तोड़ा गाँजने वाले दूसरे हैं, वे सब बिलायत के कामचोर हैं। मैंने बतलाया नहीं था, कि बारह आना में तो वहाँ एक प्याला चाय और एक टुक्का रोटी मिलती है, और यह लड़ाई से पहले की बात कह रहा हूँ।

दुखराम—तो क्या बेचारों के पास बचता होगा?

भैया—तो धोती जोड़े का चार आना जो बिलायत जाता है। उसमें से एक आना कल बनाने वाले मजूदरों को मिलता है, और तीन आना वहाँ के कमजोरों की जेब में।

सन्तोखी—तीन रुपये में चार आने का हिसाब तो मालूम हुआ, बाकी पौने तीन का?

भैया—चार आना और देना-पावना सूद-साद में चला जाता है, आठ आना-में सरकारी टिकस, खुदरा बेचने वालों के नफाको रख लो, बाकी दो रुपया सीधा पटकल के मालिक के जेब में जाता है।

दुखराम—तब भी भैया! बहुत है। मैं तो किसान हूँ, एक साल कलकत्तामें पटकलमें काम करके मजूदरों के भी दुख को जानता हूँ। कमेरों को दस-बारह आना मिले और सेठ लोग दो रुपया अपनी जेब में रख लें, यह क्या कम लूट है, लेकिन तेरह रुपये की लूट के सामने तो यह कुछ भी नहीं है। यह कैसे हुई भैया!

भैया—लड़ाई के पहले जिस धोती जोड़े का दाम चार-साढ़े चार रुपये था, अब चौदह हो गया। वह इस तरह से हुआ, सरकार ने कल वाले मालिकों से कहा, कि बहुत भारी लड़ाई हमारे सर पर आई, उसके लिए हमें खर्च चाहिए, लड़ाई के कारन तुम्हें भी बहुत ज्यादा नफा होगा, इसलिए हम तुमसे टिकस लेंगे।

सन्तोखी—एकम टिकस न भैया!

भैया—हाँ इनकम टिकस, लेकिन लड़ाई वाला एकम टिकस। सरकार ने कहा कि रुपये में पौने पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा।

दुखराम—लेकिन यह सोरहो आना तो हम लोगों के ही मत्थे न पड़ा?

सन्तोखी—जो-जो कपड़ा पहिनता है, उसी के मत्थे पड़ा, इसमें भी कोई पूंछने की बात है।

भैया—सरकार ने यह तो कह दिया कि सोलह आने में पौने-पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा लेकिन यह नहीं हुकुम दिया कि धोती ४) जोड़ा ही बेंचनी पड़ेगी।

सन्तोखी—तो मिल वालों का हाथ खुला छोड़ दिया?

भैया—चार रुपये की धोती बेंचते तो साढ़े-उन्नीस आना सरकार के पास चला जाता; और पटकल वाले को मिलता दस पैसे। उसने धोती जोड़े का दाम आठ रुपया लगा दिया। अब उसको मिलने लगा पाँच आना। फिर उसने सोचा कि जितन ही दाम बढ़ाओ, उतना ही हमारा पैसा ज्यादा होगा। सोलह रुपया करने में

उसको दस आना मिलता। सरकार को भी नुकसान नहीं था, उसे भी सात रुपया छः आना मिल जा सकता था।

दुखराम—अब मालूम हुआ भैया ! कैसे कपड़ को इतना महँगा कर दिया।

भैया—लासा या रबड़ ताने से बढ़ता है, लेकिन उसकी भी हद होती है ! कोस-दो-कोस तक कोई लासा को थोड़े ही तान सकता है ?

दुखराम—कोस दो कोस क्या हाथ दो हाथ भी नहीं खींच सकते।

भैया—कारखाने वाले नफा कमाने के लिए चीजों का दाम चौगुना-पचगुना कर दिया। अब तुम्हीं बताओ, सोलह रुपया जोड़ा खरीदने में एक छोटी-मोटी भैंस बेचनी पड़ती न ? दस सेरका गेहूँ बेंचते तो चार मन गेहूँ घरसे निकालना पड़ता। किसान गँवार होते हैं, उनको समझ नहीं होती, सब कहा जाता है; लेकिन जब वह देखते हैं, कि बजार में जिस चीज पर भी हाथ लगाते हैं, उसी-का दाम चौगुना-पचगुना है, तो वह गेहूँ को दस सेर का कैसे बेचते ? गेहूँ का दाम भी महँगा होने लगा। जब ढाई-दो सेरका होने लगा, तो पहिले उन लोगों नें घबराहट हुई, जो कि न किसान हैं, न सेठ हैं, न सरकार। अनाज महँगा होना उसके लिए उतना बुरा नहीं होगा, जिसको देना-पावना बेबाक करके खाने भरको घर में अन्न रह जाता है। लेकिन जिसके घरमें बैसाखमें ही अन्न नहीं रह जाता, वह क्वार तक कैसे काटेगा ? बंगाल में यही हुआ, चावल रुपये का दो सेर, नहीं बैसाख में दो रुपये सेर हो गया। अब तुम बताओ, जिसके पास बैसाख में ही अनाज खतम हो जाता है, वह दो रुपये सेर अनाज खरीद कर कितने दिनों तक खा सकता है ?

दुखराम—घर में दस परानी हुए तो पेट जिलाने के लिए भी तीन सेर चावल चाहिए। छः रुपया रोज लगाने पर तो अषाढ़ ही तक हल-बैल, घर-दुआर, जर-जमीन सब बिक जायेगी।

भैया—सब बिक जायेगी, तब घरवाले क्या करेंगे ?

दुखराम—वही भैया जो तुमने कहा है, लाज-सरम भी चली जायेगी, इज्जत भी बिक जायेगी, और तब भी नैया पार होगी कि नहीं, इसमें भी सक है।

भैया—तो जो साठ लाख आदमी बंगाल में मर गये, उसका कारन तुम्हें मालूम हुआ ? उनका खून किसकी गर्दन पर है ?

दुखराम—कारखाने वालों और सरकार के ऊपर, उन्होंने ही अन्धेर-गरदी 'की तभी न अन्न का दाम बढ़ा।

भैया—दो गरदन तो तुमने ठीक बतलाई लेकिन एक गरदन अभी और बाकी है। नहीं बल्कि एक मद कहो, यह चोरबाजार का मद है।

सन्तोखी—हाहू लोगकी बाजार लगती है यह तो सब जानते हैं, क्या चोरी की भी बाजार होती है भैया ?

भैया—होती है और सरकार बहादुर के राज में दिन-दहाड़े लग रही है। कपड़े के कारखाने वालों ने देखा, यह तो दस आना हमारे हाथ में थमाकर सात रुपया छः आना सरकार ले लेती है, क्यों न हम अपने माल को चोरी-चोरी बेच लें। लाखों

गाँठों को बेचने का सवाल था, सेर दो-सेर चीनी नहीं थी कि लुका-छिपा के काम चल जाता।

सन्तोखी——लेकिन सरकार ने तो कारखाने वालों का हाथ खुला छोड़ दिया था ?

भैया——खुला छोड़ दिया था कि जितना चाहें दाम रखें, लेकिन दाम को बिक्री खाते में लिखना पड़ता, फिर धोती पीछे दस आना और सात रुपये छः आनाका हिसाब रहता। मालिकोंने सोचा, बिना खाता-बही पर लिखे माल बेंच डालो।

दुखराम——न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

भैया——उन्होंने जाली बही-खाते रखे, बहुत अधिक माल को चोरी-चोरी बेंचा, इसी को कहते हैं चोर-बाजार। तुम कहोगे बही-खाता जाली बनाना और सरकारी टिकिस अदा करने में धोखा देना यह तो बहुत भारी कसूर है। लेकिन जहाँ करोड़ों का वारा-न्यारा हो, वहाँ लाखों की घूस-रिसवत चलती है। फिर कौन है जो घर आई लक्ष्मी को लौटायेगा ? हजार-दो-हजार नहीं एक लाख एकमूठ घूस दिया जाता है ! बताओ कितने मिलेंगे इन्कार करने वाले ? कालों हीके बारे में नहीं कहता, गोरे साहबों की भी बात पूँछ रहा हूँ।

सन्तोखी——तब तो भैया ! सब का इमान-धरम डिग गया होगा ?

भैया——लाख ही नहीं सन्तोखी भाई ! करोड़का भी घूस चला है, उसने हिमालय की सबसे ऊँची चोटियों तक को भी ढाँक दिया है। लोग टुक-टुक देखते रहे,सब जानते हुए भी; लेकिन करें क्या किसके पास फरियाद ले जाएँ ?

दुखराम——चोर-बाजार वालों ने कहर किया भैया!

भैया——इन कपड़े और दूसरी चीजों के कारखाने वालों ने करोड़ों रुपये बनाए मालामाल हो गये। कितनों ने तो पाँच सौ पाने लायक नौकर पन्द्रह सौ रुपये में रक्खा, पाँच सौ उसे दिया, डेढ़ हजार की रसीद लिखाई और एक हजार अपनी जेब में रख लिया। बताओ इन करोड़पतियों को कौन पकड़ सकता है, यहाँ कागज-परत्त भी ठीक है। फिर अनाज के चोरी के अपराध को तो कोई भूल ही नहीं सकता।

सन्तोखी——अनाज-चोरों ने क्या किया भैया ?

भैया——जानते हो न ! चैत में गेहूँ तैयार हुआ या अगहन में धान ! घर आया, दो महीने के भीतर ही खाने या भूखे मरने के लिए जो कुछ अन्न घर में रह गया, वह रह गया, नहीं तो सब झार-झूरकर बनिए के पास चला गया। सन्तोखी दास ! तुम भी अनाज खरीदते हो, बताओ उसे कितने महीने तक अपने घर में रखते हो ?

सन्तोखी——महीने और घर में रखना ! हमारे पास तो उतना पैसा भी नहीं होता। किरानावाले बड़े-बड़े-सेठ हैं, हम उनके लिए अनाज खरीदते हैं। रुपये पीछे पैसा-दो-पैसा बच गया तो बहुत है।

भैया——तुम्हारे सेठ लाखवाले होंगे।

सन्तोखी—हाँ, यही लाख दो लाख का रोजगार होगा और क्या ?

भैया—किराना के असली मालिक लाख-दो लाख नहीं पाँच-दस करोड़ का रोजगार करते हैं। चैत में तुमने खरीदा, तो बैसाख-जेठ में वह अनाज करोड़पति सेठों का हो जाता है। असाढ़-सावन में आठ सेर के भाव से खरीदा और दो सेर, तीन सेर कर दिया। अब यह दुगना-तिगुना नफा किसके पेट में गया ?

सन्तोखी—उन्हीं करोड़पति सेठों के मुँह में।

दुखराम—लेकिन भैया ! अन्न तो जीव का अहार है। अन्न को महँगा करके यह तो लोगों को जबह करना है। सरकार एक आदमी के खून करने पर फाँसी चढ़ा देती है फिर लाख-लाख के खूनपर चुप क्यों है ?

भैया—जब आदमी मरने लगे, हाय-हाय मचने लगी, तो सरकार ने भाव पक्का किया। लेकिन भाव पक्का करने से क्या होता है ? अनाज तो करोड़पतियों के हाथ में था। जो एक करोड़ नफा हो तो बीस लाख घूस-रिसवत कौन नहीं दे देगा।

सन्तोखी—तो छोटे-छोटे बच्चों के बिलख-बिलख कर मरने का ख्याल नहीं किया, पेट के लिए औरतों की इज्जत बेचने का ख्याल नहीं किया, ख्याल किया तो एक अपने ही नफेका ? छी ! धिक्कार है। ऐसे पापियों को !!

भैया—धिक्कार मत कहो सन्तोखी भाई ! वे बड़े धर्मात्मा हैं। उनके बड़े-बड़े मन्दिर हैं, तीर्थों में सदाबरत और धरमशाला चलती है, गोसाला में चन्दा देते हैं। साधू-सन्त और पंडित-पाधा लोग सेठ की जय-जयकार मनाते हैं, मौलवी लोग सौदागर के लिए दुआ माँगते हैं।

दुखराम—तो इन कसाइयों में हिन्दू-मुसलमान दोनों हैं ?

भैया—हाँ, सब अपने-अपने धरम के चौधरी हैं। हिन्दू सेठ दोनों साँझ ठाकुरजी का दरसन कर चरनामिरित लेते हैं, मुसलमान सेठ पाँच बेर नमाज पढ़ते हैं।

दुखराम—भैया रजबली ! यह क्या है ?

भैया—मुँह में राम बगल में छूरी और क्या ? लाखों औरतों ने अपनी इज्जत बेची, खानगी बनी; लाखों बच्चों ने तड़प-तड़प कर जान दी, साठ लाख आदमी मर गये, लेकिन इन मोटी तोंदवालों के कानपर जूँ भी न रेंगी।

सन्तोखी—इनके कानपर न जूँ रेंगी, तो भगवान के कानपर तो जूँ रेंगनी चाहिए थी ? राछछ आततायी ! साठ-साठ लाख आदमियों को तड़पा-तड़पा कर मार डालें ! भगवान अब भी अवतार न लें तो कब लेंगे ?

भैया—भगवान बहुत दूर रहते हैं सन्तोखी भाई ! कौन समुन्दर में रहते हैं, मुझे तो याद नहीं आता।

सन्तोखी—छीर समुन्दर में भैया ! सेसनाग के ऊपर सोते हैं और लच्छिमी चरन दबाती हैं।

भैया—एक तो दूर बहुत दूर छीर समुन्दर न जाने कहाँ है, भूख के मारे बोल भी न सकने वाली इन लाखों आदमियों की सिसकी की आवाज वहाँ तक पहुँचती भी कैसे ? फिर वह सेस नागपर सोये हैं, गुलगुल बिछौना पर नींद जल्दी आ जाती है ? तिस पर से अपने नरम-नरम हाथों में लच्छिमी जी चरन दबा रही हैं, तो क्या मामूली नींद आएगी ?

सन्तोखी—लेकिन भैंया ! प्रहलाद के ऊपर गाढ़ पड़ा, तो तुरन्त खम्भ फाड़कर निकल आये, ध्रुव ने पुकारा, तो तुरन्त दरसन दे दिया। द्रौपती की चीर खींची जाने लगी तो आके उसमें समा गये !

भैंया—प्रहलाद और धुरुब राजा के लड़के थे, द्रौपती रानी थी। राजा-रानी कोई मरता, तो जरूर भगवान की नींद टूट जाती, वह नंगे पैर दौड़ पड़ते।

सन्तोखी—भगवान का राजा-रानी के साथ इतना प्रेम क्यों है भैंया ?

दुखराम—मूर्ख चपाट ! तुमको इतना भी पता नहीं ? हमारे-तुम्हारे बूते का है कि भगवान के लिए मन्दिर बनवा दें। जो उनके लिए बड़े-बड़े मन्दिर बनवाता है, छप्पन परकार का भोग बनवाता है, दान-दच्छिना देता है; भगवान उनके लिए अवतार न लेंगे तो क्या तुम्हारे-हमारे लिए लेंगे ?

भैंया—दुक्खू भाई ! तुमने बड़ी कड़ी बोली मारी !

दुखराम—बोली की चोट गोली से भी बढ़कर होती है भैंया ! लेकिन संतोखी भाई का हम पैर पकड़ते हैं, वह हमारा अपराध जरूर छिमा कर देंगे ?

सन्तोखी—नाहीं दुक्खू भाई ! हम तुम्हारे ऊपर भला नाराज होंगे ? हम दोनों लड़कपन के संघतिया।

भैंया—तनिक कड़ा कहा लेकिन दुक्खू भाई, कहा तुमने बावन तोला पाव रत्ती ठीक ही।

दुखराम—भैंया ! और तनिक आँख खोलो, चारों ओर मालूम होता है किसी ने जकड़बन्द कर दिया है, साँस लेने की भी छुट्टी नहीं है। उधर सेठ लोगों की धरमशाला और सदाबरत, इधर अजोधिया जी का सखी समाज, फिर छीर-सागर के भगवान जो राजा-रानी के लिए नंगे पैर दौड़े-दौड़े आवें, पचास-पचास लाख गरीब कुत्ते की मौत मार डाले जायँ, और वह सुगबुगाएँ भी नहीं।

भैंया—लेकिन दुक्खू भाई ! यहाँ हमारे सामने भगवान नहीं हैं कि उनको गाली-फदीहत दें। भगवान बेचारे का दुनिया के बनाने-बिगाड़ने में कोई हाथ नहीं है।

दुखराम—तो वह हैं किस वास्ते ?

भैंया—अभी हमें यह जानना है कि दुनिया को नरक किसने बनाया।

सन्तोखी—हाँ, ठीक तो है दुक्खू भाई ! रजबली भैंया ने तो कह दिया कि भगवान का दुनिया के बनाने-बिगाड़ने में कोई हाथ नहीं। हम लोगों को यह जानना चाहिये कि दुनिया को नरक बनाया किसने ? भगवान को लेकर हम क्या करें।

दुखराम—सच ही कह रहे हो सन्तोखी भाई ! मुझे तो मालूम होता है कि भगवान-वगवान कोई नहीं है; वह केवल धोखा की टट्टी है।

भैंया—भगवान के बारे में फिर किसी दिन पूछना, दुक्खू भाई ! आज दुनिया को नरक बनाने वाले की बात सुनो। साठ लाख आदमियों को किसने मारा ? कमेरा-कमकरों, किसान-मजूरों ने ? या कामचोरों ने ?

सन्तोखी—कामचोरों ने मारा। किसान-मजदूरों ने तो अन्न-कपड़ा तैयार रके रख दिया था, लेकिन इन सेठों ने, इन घूसखोरों ने और अंधी लालची सरकार

ने यह सब कहर किया। लेकिन इन कामचोरों के ऊपर साठ ही लाखों का खून नहीं चार हजार बरस से इनके दाँत में बेकसूरों का खून लगा हुआ है।

दुखराम—चार हजार बरस से ? न जाने कितने करोड़ कितने अरब बेकसूरों का खून किया ?

भैया—इन्हीं के जुलुम से यह दुनिया नरक हो गयी है। मैंने पहिले ही नहीं पूछा था कि हमारे गाँव के पास में गड़ही कैसे बन गयी ? जो बड़े-बड़े कोठे-अटारी, मोटर-हाथी, लाव-लसकर, नोकर-चाकर और छप्पनछुरी का नाच तुम देख रहे हो, यह धन कहाँ से आता है ? लाख रुपया महीना लाट साहब और दो लाख रुपया महीना दिल्ली के बड़े लाट पर जो खरचा होता है, यह कहाँ से आता है। पाँच-पाँच साल में एक चीनी की मिल खोलकर दस-दस लाख रुपया कमा लेना, यह कहाँ से आता है ? यह चिकने-चिकने गाल और लाल-लाल ओंठ किसके खून से रँगे जाते हैं ?

सन्तोखी—कहते हैं, धन-वैभव भगवान देते हैं।

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देखो हमारी-तुम्हारी विगड़ जायेगी। चाहे तो पहिले ही भगवान के बारे में फैसला कर लो, नहीं तो भगवान का नाम अभी मत लो।

भैया—झगड़ो मत दोनों जने। सन्तोखी भाई जो कहते हैं, वह दूसरों की सुनी-सुनाई बात है। अच्छा दुक्खू भाई ! जो हमारे गाँव में यह घर-दीवार उठी है, इसके बारे में कोई आकर कहे, कि यह सब माटी भगवान ने दी है; तो क्या जवाब दोगे ?

दुखराम—पहिले जवाब नहीं दूँगा भैया, पहिले देखूँगा कि उसके आँख है कि नहीं। और आँख जो हुई, तो कान पकड़ कर ले जाऊँगा गड़ही के पास और कहूँगा—'देख आँख के अंधे, यह जो जमीन गड़ही बन गई है, वह इन्हीं घरों के कारण, यहाँ की माटी वहाँ गई है।'

भैया—सन्तोखी भाई ? किसी के आँगन में सोने का पेड़ नहीं है कि हिला दिया और आँगन भर गया। किसी के घर में हम सोने की बरखा होते नहीं देखते; फिर हम कैसे मान लें, कि जो यह भोग-विलास करोड़-करोड़ पानी रुपये पर पानी फेरना हो रहा है, वह भाग और भगवान की ओर से उनके पास आता है ? किसान ऊख पैदा करता है, मिलवाले ऊख का दाम कितना मन देते थे दुक्खू भाई ?

दुखराम—एक बार तो चार आना मन भी नहीं दे रहे थे, फिर हम सब किसानों ने एका किया तब कुछ हल्ला-गुल्ला हुआ, रजबली भैया ! तुमने ही तो मदद की थी ? तब जाकर आठ आना मन हुआ था।

भैया—मन भर ऊख में जानते हो कितनी चीनी होती, चार सेर।

दुखराम—तो हमें आठ आना थमा के चार सेर चीनी ले लिया है ? डाकू कहीं का।

भैया—तुम्हें भी लूटा और जो यह चार-चार आना मजूरी पर दस-दस घंटा खटते हैं, इन मजूरों को भी लूटा। उसका दस-बारह आना से बेसी नहीं खर्च हुआ।

सन्तोखी—और बेचा था डेढ़ रुपये पर न ? जनु दूना का नफा।

गिलास में ४..........पानी है।

दुखराम——जो जेठ-बैसाख की धूप में खून-पसीना एक करे, जो मशीन में हाथ-पैर कटावे, और देह भर कोइया-कालिख लगावे, उसको तो चार आना और आठ आना मिले और यह ठंडे-ठंडे घर में बैठे बिना हाथ-पैर डुलाये आधा हमारा लूट लें।

भैया——और जानते हो; वह लूट रहे हैं दस-दस बीस-बीस हजार किसानों को, सैकड़ों मजूरों को तब न एक-एक साल में दो-दो तीन-तीन लाख का नफा करके रख देते हैं ? जो यह कहें कि यह तीन लाख रुपया भगवान ने छीर सागर से भेजा है, तो यह मानने की बात है ?

दुखराम——नहीं भैया ! यह हमीं लोगों के खून को पीकर मोटे होते हैं।

भैया——यह जोंक हैं जोंक दुक्खू भाई !

दुखराम——जोंक ! ठीक कहा भैया ! यह जोंक ही हैं और कितनी होशियार जोंक हैं कि लाखों आदमी का खून पी रहे हैं और किसी को पता भी नहीं लगता। एक बात कहें रजबली भैया ! मैं तो समझता हूँ कि जोंकों के छिपाने के लिए ही भाग-भगवान को किसी ने गढ़ा है।

सन्तोखी——मैंने भगवान का जब नाम लिया, तो दुक्खू भाई ! तुम नाराज हो गये ?

दुखराम——अच्छा सन्तोखी भाई ! जीभ लुटपुटा गई, क्षिमा करना। हम पीछे यह बात पूछेंगे।

भैया——जब से आदमियों में जोंक पैदा हुई, तभी से यह दुनिया नरक बनी।

दुखराम——जोंक माने कामचोर, जाँगरचोर, सेठ, राजा, नवाब यही न ?

भैया——हाँ, इन्होंने खून चूस-चूस कर किसानों को, मजूरों को गरीब बना दिया, उनको किसी लायक नहीं रहने दिया। सरकार में सब जगह यही कामचोर बैठे हैं; पलटन, पुलिस सब जोंकों की रच्छा के लिए बनी है।

दुखराम——जिसमें अपनी देह में लगी जोंक को भी हम निकाल कर फेंक न सकें।

भैया——जोंको को निकालकर फेंक दोगे, तो वह जियेंगी कैसे ? उनके हाथ-पैर भी नहीं, वह घासपात भी नहीं खातीं। उन्हें चाहिए तुम्हारा गरम-गरम खून ! इसीलिए तो यह सब सरकार-दरबार बनाया गया है, यह लाव-लसकर रखी हुई है, कि जिसमें तुम जोंकों को निकाल कर फेंक न सको। जिस दिन तुमने जोंकों को निकाल फेंका, उसी दिन यह दुनिया नरक से सरग हो जायगी।

दुखराम——भैया रजबली ! अब आँख कुछ-कुछ खुलती है, कितना बड़ा पट्टर बाँधा हुआ था।

भैया——एक पीढ़ी का नहीं डेढ़ सौ पीढ़ी का पट्टर; और हर पीढ़ी में जोंकों ने नया-नया पट्टर तुम्हारी आँखों पर चढ़वाया।

दुखराम——हाँ भैया, यह पट्टर ऊखाड़ फेंके बिना काम नहीं चलेगा।

सन्तोखी——इतनी जोंकें जिसके शरीर पर लगी हों, उसके पास कहाँ से खून बना रहेगा ?

भैया——और जोंकें दिन पर बढ़ती गईं सन्तोखी भाई ! पहिले एक अँगुली की थी, फिर दो अँगुली की और अब तो हाथ-हाथ भर की हो गई हैं।

दुखराम—पूरी भैंसिया जोंक, देख के डर लगता है, जब भैंस को लग जाती है, तो यह नहीं कि पेट भर खाके छोड़ दे।

भैया—पेट भी तो उनका सरीर के छोटे से कोने-अँतरे में नहीं होता।

दुखराम—हाँ, भैया, जोंक का तो सारा सरीर ही पेट होता है। जितना पीती हैं, उससे भी ज्यादा खून तो बाहर गिरा देती है। लेकिन भैया एक अँगुल की ज़ोंक एक हाथ की कैसे बन गई ?

भैया—बतलाता हूँ, लेकिन यह भी मन में रखना, कि जैसे-जैसे जोंकें बढ़ीं, वैसे-वैसे दुनिया और नरक बनती गई। लेकिन एक समय था दुक्खू भाई जब आदमियों में जोंकें नहीं थीं। और अब भी दुनिया का चौथा भाग है, जिसमें जोंकें नहीं हैं।

दुखराम—तब तो वहाँ नरक नहीं होगा भैया, लेकिन कैसी जगह है वह जहाँ जोंकें नहीं हैं।

भैया—रूस का और चीन का नाम सुना है न ?

दुखराम—हाँ भैया, रूस का चीन का, नाम किसने नहीं सुना होगा ? वही रूस न जहाँ गाँव का आदमी पीछे पाँच बीघा (३ एकड़) खेत और गाय बाँटी गयी थी ?

भैया—हाँ वही, लेकिन बाँटने की बात शुरू-शुरू में रही, पीछे तो उन्होंने गाँव के गाँव का सारा खेत साझे में जोतना शुरू कर दिया।

सन्तोखी—वही न भैया, जहाँ की लाल सेना की वीरता की खबर रोज अखबारों में सुनते रहे।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जो लाल सेना नहीं रही होती और रूस बेजोंकवाला राज न रहा होता, तो आज दुनिया भर में रावन का राज हो गया होता। लेकिन रूस और रावन के बारे में फिर किसी दिन बात करेंगे। आज तो अभी जोंकों के बड़ा होने की बात थोड़ी सुन लो।

दुखराम—हाँ सुनाओ भैया !

भैया—हम जानते हैं रात ज्यादा हो गई है, फिर कतिक की भीड़ है। कल फिर दुक्खू भाई, हल नाधना पड़ेगा। पहिले जोंकें नहीं थीं, यह बहुत पुरानी बात है, लेकिन लाख दो लाख बरस नहीं, किसी देश में जोंकों को पैदा हुए दो हजार बरस हुआ, किसी देश में चार हजार और ज्यादा से ज्यादा सात-आठ हजार समझ लो।

सन्तोखी—तो सात-आठ हजार बरस में पहिले दुनिया में जोंकों का कहीं नाम नहीं था ?

भैया—बिल्कुल नाम नहीं था। जब आदमी इतना ही कमा पाता था कि दिन भर खाने से निश्चित हो जाय, तो जोंक कैसे पैदा हों ? कलमुँहा और लालमुँहा बानरों को तुमने देखा है न दुक्खू भाई ?

दुखराम—कलमुँहा बानर तो हमारे गाँव में बहुत हैं।

भैया—तो देखते हो न बानर पेड़ तोड़कर या जमीन से बिनकर अपना पेट भरता है, वह जमा नहीं कर पाता। इसीलिए दूसरे को पैदा की हुई चीज को हड़पने वाली जोंकें वहाँ नहीं।

दुखराम—हाँ भैया ! उनमें जो सबसे बलिष्ठ हनुमान होता है, उसे हम लोग खेखर कहते हैं। लेकिन खेखर को भी आहार के लिए उतनी ही मेहनत करनी पड़ती है, जितनी दूसरे बानर-बानरियों को ?

भैया—लेकिन जिस समय आदमी में जोंक नहीं थी, उस समय भी उसमें और बानरों में अन्तर था। आदमी अपने लिए पत्थर, सींग या लकड़ी का हथियार बनाता था। इन हथियारों से वह अपने शत्रुओं से लड़ता और अपने लिए सिकार या फल गिरा कर आहार जमा करता।

दुखराम—तो भैया ! उस समय लोहे का हथियार नहीं था ? तीर-धनुख भी नहीं था।

भैया—लोहाको तो दुनिया में पैदा हुए चौंतीस सौ बरस से ज्यादा नहीं हुआ।

दुखराम—और भैया, उससे पहले खाली सींग, लकड़ी पत्थर का हथियार चलताथा ?

भैया—नहीं लोहा से पहले आदमी को ताँबे का पता लग गया था, लेकिन उसे भी पाँच हजार बरस से ज्यादा नहीं हुआ। और यह भी दुनिया भर में एक ही बार सब जगह नहीं हुआ, अकबर के दादा बाबर के हिन्दुस्तान में आने के पहले हमारे यहाँ बारूद का कोई हथियार नहीं था, दूर तक मार करने के लिए सिर्फ तीर-धनुख था। तीर के मुँहपर तिकोना लोहा लगा रहता जिसको लोग बिख से बुझाकर रखते थे। लेकिन जब तोप बन्दूक आई तो तीर-धनुषका रिवाज उठ गया, लेकिन भील-संथाल लोगों में अब भी तीर-धनुष चलता है।

सन्तोखी—हाँ भैया, यह तो हम भी संथाल परगना में देख आए हैं।

दुखराम—तो पहले लोग सिकार और फल से ही गुजारा करते थे क्या ?

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! पहिले सिकार-फल फिर लोग पशु पालने लगे।

दुखराम—गाय, घोड़ा, भेड़, बकरी ?

भैया—हाँ, पशु पालने लगे। और जानते हो सिकार एक दिन से ज्यादा रखा नहीं जा सकता। फल भी बहुत महीनों तक नहीं रह सकता। लेकिन पशु-धनको सालों तक रखा जा सकता है और जितने दिन रक्खें, वह उतने ही दिन और बढ़ते जाते हैं।

दुखराम—सूअर तो भैया साल में एक से बीस हो जाती...

सन्तोखी—और दूसरे साल बीस से चार सौ ?

भैया—जो खाये-पकाये से बच जाये या मरे-वरे नहीं। हाँ, तो जब आदमी के पास पसु-धन हुआ, जो बरसों तक उसके पास रह सकता है; तब पहिले-पहल जोंक पैदा हुई। बलुक वह पूरे रूप में जोंक नहीं थी, वह बहुत कुछ आदमियों जैसी ही थी।

सन्तोखी—यह कौन जोंक थी भैया, राजा या सेठ या कौन ?

भैया—अभी न राजा थे, न सेठ थे। वह पहिली जोंक थी पुरखा या पितर। जब आपस में झगड़ा-झंझट होता, तो एक पंचायत देखनेवाले की जरूरत पड़तीथी। जब बाहर से झगड़ा होता, तो पल्टन चलाने के लिये एक नेता की जरूरत होती। यह दोनों काम जो आदमी करता, उसे पितर या महा-पितर कहते थे। अभी उसके

सिरपर मुकुट नहीं था, अभी भी वह चटाई पर साथ बैठने-वाला बिरादरी का चौधरी था। लेकिन उसके पास धीरे-धीरे पसु बढ़ रहे थे, धन बढ़ रहा था।

सन्तोखी—तो भैया पसु-पालने से पहिले ज्यादा दिन रहने वाला धन तो किसी के पास था नहीं, फिर धनी-गरीब का फरक भी नहीं रहा होगा ?

भैया—पसु-पालने के जुग से पहिले मेरा-तेरा का सवाल ही नहीं था। एक जगह रहने वाले लोग साथ मिलकर सिकार मारते, साथ मिलकर फल जमा करते और साथ ही खाते-पीते थे।

दुखराम—माँ-बाप, बहिन-भाई, चाचा-चाची, सब न साथ रहते होंगे ? कितना बड़ा कुनबा रहता होगा।

भैया—अभी बाप नहीं बना था दुक्खू भाई !

दुखराम—बाप नहीं था, इसका क्या मतलब भैया ?

भैया—ब्याह का रवाज नहीं था। माँ को सब जानते थे।

दुखराम—माँ को क्यों नहीं जानेंगे ? माँ के उदर से बच्चा पैदा होते देखा जाता है।

भैया—तो जंगल में गाय, घोड़े, भेड़, बकरी रहा करते थे, उन्हीं से कुछ को लोगों ने पालतू बनाया। आखिर रोज-रोजका सिकार मिलना तो आसान नहीं था। पसु पालने का काम मर्दने शुरू किया, उससे पहले परिवार की मुखिया माँ होती थी। अब अधिक धनवाला पुरुख मुखिया हो गया।

दुखराम—जनुक तिरिया के राज की जगह मरद का राज, माता के राज की जगह पिता का राज शुरू हुआ।

भैंया—अभी इतना ही समझो, कि नारी को हटाकर मरद मुखिया बन गया ! लेकिन अभी जोंक नहीं तैयार हुई थी। जब पसुधन और बढ़ा, भीतरी जौर बाहरी झगड़े और बढ़े; तब मुखिया का जोर बढ़ा, और कभी-कभी घर बैंठे लोग उसके पास खान-पान पहुँचाने लगे। बस छोटे रूप में जोंक शुरू हो गई। मैंने बतलाया था न, कि जोंकों ने दुनिया को नरक बनाया।

दुखराम—हाँ भैया।

भैया—तो जोंकों का अवतार कैसे हुआ यह मैंने तुमसे कहा। लेकिन पूरा जोंक-पुरान आज नहीं कह सकता।

सन्तोखी—हाँ भैया, आज रात बहुत हो गई है।

भैया—कल रात को इसी बखत जोंक-पुरान की क़था होगी।

३ जोंक-पुरान

सन्तोखी—भैया। बेचारा दुखराम आज बड़ी देर तक हल चलाता रहा। कातिक की भीड़ है न, आता ही होगा।

भैंया—वह देखो पेट पर हाथ-फेरते दुक्खू, भाई आ रहे हैं। कहो दुक्खू भाई ! आज बहुत डकार लेते आ रहे हो।

दुखराम—क्या पूंछते हो भैंया, आज मलकिन ने पूरी व खीर बनाई थी, हम गरीबों को छठे-छमाहे कभी कुछ अच्छा खाना मिल जाता है, तो अपने को धन्य-धन्य समझने लगते हैं।

भैंया—जो जोंके न रहें तो छठे-छमाहे क्यों रोज अच्छा-अच्छा भोजन मिल सकता है और तेल की पूरी और गुड़ की बखार नहीं खालिस घी की बनी पूड़ी और दूध-चीनी की बनी खीर।

दुखराम—हाँ भैंया ? यह हो सकता है, इतनी-इतनी जोंकें जो हमारे गेहूँ, घी-चीनी को छोड़ देंगी, तो क्यों नहीं हम मौज से खायें-पियेंगे ?

भैंया—तो कल हमने जोंकों का जनम बतलाया था ? अब उसकी बाललीला जवानी और मरने की घड़ी की बात सुनो।

सन्तोखी—मरने की घड़ी भी ? क्या भैंया जोंकों के मरने की घड़ी आ गयी ?

भैंया—मैंने बतलाया नहीं कि दुनिया के चार भाग में से एक भाग रूस में अब जोंकें नहीं हैं। रूस में जोंकों के मरने की घड़ी आज से सत्ताईस बरस पहले बीत चुकी, चीन में अभी-अभी लेकिन बाकी तीन भाग में जोंकें अब भी हैं और बड़े जोर से। यही समझ लो सिर्फ एक सूबा में पाँच-छ: महीने के भीतर साठ-साठ लाख आदमियों की जान लेना बतला नहीं रहा है, कि वह कितनी भयंकर है।

सन्तोखी—हाँ भैंया ! हम तो भगवान से रोज मनाते हैं कि कब यह जोंके जाएँगी !

दुखराम—फिर सन्तोखी भाई, तुमने भगवान का नाम लिया।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, नाराज मत हो। न हमने भगवान से अवतार लेने के लिए कहा और न पाव-पियादे दौड़ने के लिए। भैंया की बात हमें ठीक मालूम होती है; भगवान इतनी गाढ़ी नींद में सोये हैं कि लाख दो लाख बरस में भी उनके जागने की उमेद नहीं है।

दुखराम—यह सदा के लिए सो गये हैं सन्तोखी भाई ! मैं तो यही मानता हूँ।

भया—तो दूक्खू भाई जोंकों की बाल-लीला और पहले की कथा मैं बहुत संक्षेप में कहूँगा, पीछे की कथा को तुम्हें ज्यादा सुनना चाहिए।

दुखराम—हाँ भैंया, पीछे ही की जोंकों से तो हमें पाला पड़ा है।

भैंया—मैंने बतलाया था कि पहिले इसतिरी मुखिया होती थी, सारा परिवार उसका होता था, सबको ठीक रखना, सबकी देभखाल करना उसी का काम था। पचीस-पचास या सौ का जो भी परिवार होता, उसकी मुखिया या महामातर इसतिरी होती थी। कभी दो-दो परिवारों में खून-खराबी भी होती थी।

दुखराम—खून-खराबी क्यों होती थी भैंया, वहाँ तो जोंकें नहीं थीं।

भैंया—जंगल के लिए झगड़ा हो जाता था। जिसका परिवार बढ़ जाता, उसे अधिक सिकार, अधिक फल बटोरने की जरूरत पड़ती थी !

सन्तोखी—तो वे उन्हीं पत्थर, सींग और लकड़ी के हथियार से लड़ते होंगे ?

भैया—वही तो उनके पास हथियार थे, उन्हीं से वे बैल, हरिन और भालू का शिकार करते थे, लेकिन जानते हो न जिसके पास आदमी ज्यादा, वही लड़ाई में जीतता था, हथियार तो सबके पास एक से थे। इसी वास्ते बलवान परिवार से बचने के लिए कितने ही छोटे-छोटे परिवार एक हो जाते हैं। इसको कहा जाने लगा जन।

सन्तोखी—हम लोग तो एक जन दा जन कहते हैं एक आदमी दो आदमी के वास्ते।

दुखराम—और जन-मजूर भी कहते हैं, कमकरके वास्ते।

भैया—लेकिन पहले-पहल जन एक आदमी या मजूर के लिये नहीं बोला जाता था। उस बखत कई परिवारों को मिला कर जो एक पड़ा परिवार बनता, उसी को जन कहते हैं।

दुखराम—मानो कई महामाइयों के परिवारों को इकट्ठा कर दिया जाता था।

भैया—हाँ, इसको जन कहते थे। जनवाले जुग में भी जोंकें नहीं पैदा हुई थीं। जोंकें तब पैदा हुई जब पशुओं को पाल के मरद धनवाला बन गया, वह महा-पितर बन गया और दूसरों की कमाई उसे मुफत में मिलने लगी। धीरे-धीरे आदमी ने खेती करना सीखा, फिर चमड़े का सीना, फिर सूत कातना और आखिर में कपडा भी बुनने लगा। अब उसके पास ऐसी चीजें आने लगीं कि जिन्हें वह बरस-दो बरस रख सकता था। सिले चमड़े को देकर खाने-पीने की चीजें बदल सकता था, कंबल से भी अपने मन की चीज बदल सकता था। उनके भीतर, यह महापितर के बड़े गिरोह के भीतर कभी-कभी झगड़ा-वगड़ा हुआ, तो उसका फैसला तो आपस ही में हो जाता था, लेकिन बाहर के लोगों से जब-तब लड़ाई होती थी। खेती सुरू करने के बाद तो आदमी घर में रहने लगा।

सन्तोखी—पहिले क्या घर में नहीं रहता था ?

भैया—पहिले सिकार और फल के पीछे एक बन से दूसवे बन में घूमता रहता था। जब ढोर-डंगर पोसने लगा; तो जहाँ चराई का सुभीता होता, वहाँ चला जाता। लेकिन खेती शुरू कर देने पर वह कैसे जाता ?

दुखराम—तो खेती आदमी के लिए खूंटा हो गई, अब वह बँध गया ?

भैया—हाँ बँध गया, अब उसने अपने लिए घर बनाया। दूसरे गिरोह से बचने के लिए सब लोगों ने अपना घर पास में बनाया, जिसमें दुश्मन से लड़ने के लिए जल्दी एक दूसरे की मदद कर सकें। पास-पास घरों का गाँव कहा गया, क्योंकि ग्राम का मतलब है झुण्ड।

दुखराम—घरों का झुण्ड, यही मतलब है न गाँव का ?

भैया—हाँ, महापितरों के जुग में लड़ाई और बढ़ी, क्योंकि दुसमन को हराने से सब पसु, सारा धन उसे मिल जाता था। महापितर मुखिया था। उसको लूट का माल ज्यादा मिलता था और दूसरों को थोड़ा-थोड़ा।

सन्तोखी—तो धनी-गरीब का फरक और बेसी हुआ। हारे लोगों के बचे हुए आदमियों को क्या करते थे ?

भैया—पहिले जो मरद मिलता, सबको मारते; जो औरत हाथ आती, उन्हें अपने में बाँट लेते।

दुखराम—तो मरद कोई नहीं बचने पाता था ?

भैया—हाँ, मरद का परान नहीं छोड़ते थे। लेकिन पीछे खेती के काम के लिए, चमड़े-जूते के काम के लिए, कपड़ा-मिट्टी का बर्तन बनाने के वास्ते आदमियों की अधिक जरूरत पड़ने लगी।

दुखराम—बेसी माल तैयार हुआ तो बदल कर खूब बेसी हाथ लगेगा यही सोचकर न भैया ?

भैया—हाँ, इसीलिए पहिले लड़ाई में हारे सतरू को कैदी बनाते थे, कौन उसे घर बैठाकर खिलाता। लेकिन जब देखा कि आदमी हाथ से मेहनत करके अपने खाने से दुगुना-तिगुना पैदा कर सकता है, तो हारे मरदों को कैदी बनाने लगे। इन्हीं को दास या गुलाम कहा जाता था।

दुखराम—तो यह गुलाम दूसरे लोगों में बाँट दिये जाते होंगे ?

भैया—हाँ, अच्छे-अच्छे दास और दासी महापितर को मिलते, बाकी को और लोग बाँट-चोंट लेते।

सन्तोखी—तो यह दास-दासी भी ढोर की तरह ही हुए ?

भैया—वह भी मालिक के धन थे, वह मालिक के लिए काम करते थे। यह जुग हुआ गुलामी का।

दुखराम—जनु तबसे गुलाम बनाने का रिवाज हुआ।

भैया—गुलाम को मालिक खाना-कपड़ा देता था। नहीं देता तो वह मर जाता, फिर उसका नुकसान होता। जानते हो न दुक्खू भाई ! गुस्सा होंने पर बैल को मारते हैं, लेकिन इतना नहीं मारते कि वह मर जाय।

दुखराम—हाँ भैया ! कौन अपना नुकसान करेगा ?

भैया—गुलामों के आने से अब कम्बल, जूता-चमड़ा और कई तरह की चीजें बहुत इफरात बनने लगीं। लोग उन्हें आपस में बदलने लगे। बदलने के सुभीते के लिए हाट लगने लगी। सब लोग अपना-अपना माल ले आते थे और जिसको जो लेना होता, उसे अपनी चीज से बदल लेते थे। लेकिन कभी-कभी हाट में, आदमी को अपने काम की चीज जल्दी नहीं मिलती या अपनी चीज के खाहिसमंद नहीं मिलते तो आदमी को बहुत हैरान होना पड़ता। सब काम-धन्धा छोड़कर दो-दो, तीन-तीन दिन हाट अगोरना पड़ता। फिर लोगों ने गाँव पीछे एक-दो आदमी के जिम्मे अपनी चीज लगा के छुट्टी ली। जो आदमी हाट अगोरता उसने दूसरों के लिए भी अपना काम-धन्धा छोड़ा, इलिए सब लोग अपने माल में से उस आदमी को कुछ दे देते थे।

दुखराम—जैसे भँड़भूजा को भूनने के लिए हम लोग थोड़ा-थोड़ा अनाज दे देते हैं।

भैया—हाँ, तो पहिले तो हाट अगोरने वाला अपने गाँव के दो-चार घरों की जिम्मेवारी लेकर बैठता था और सो भी कभी-कभी। फिर वह गाँव भर की जिम्मे-

वारी लेने लगा, और बराबर हाट में बैठा रहता। उसका रूप अब कुछ-कुछ बनिया जैसा था। लेकिन अभी दो आदमियों की चीजों की अदला-बदली में वह खाली एक ओर का बिचवई था, फिर वह दोनों ओर का बिचवई बन गया। जव उसके पास बेसी नफा जमा हो गया, तो वह हर तरह की चीज को अपने पास रखने लगा। इन चीजों को महँगा किया और दूसरी चीजों को सस्ते में खरीदा, अब वह पूरा बनिया हो गया।

सन्तोखी—लेकिन रोजगार तो था चीज से बदलना ही न ?

भैया—लेकिन जब ताँबा मिल गया, लोगों ने देखा कि उसकी धार पत्थर और हड्डी से ज्यादा तेज है, उसकी मार आदमी और पेड़ को काटकर गिरा सकती है, तो सभी लोग ताँबे के हथियार रखना चाहने लगे। लेकिन ताँबा पैदा होत था थोड़ा, चाहने वाले ज्यादा थे। एक दूसरे ने चढ़ा-ऊपरी करके ताँबा का दामा चढ़ा दिया। दस मन गेहूँ के लिए दस सेर ताँबा काफी समझा जाने लगा। अब बहुत से लोग दस मन गेहूँ ढोकर ले जाने की जगह दस सेर ताँबा ले जाने वगे। एक छटाँक ताँबा भी पास रहने से अढ़ाई सेर गेहूँ ढोने का काम नहीं था।

सन्तोखी—तो ताँबा पैसे-रुपये का काम देने लगा।

भैया—हाँ, पहले-पहल पैसे-रुपये ने इसी रूप में औतार लिया। महापितर गुलामों के कमाये धन से और मोटी जोंक बन गया और इधर बनिया दूसरी जोंक तैयार हो गया।

दुखराम—उस बखत जोंकें न पैदा हुई होतीं भैया ?

भैया—तो बहुत बुरा हुआ होता दुक्खू भाई ! गाड़ी ही रुक जाती। आदमी पत्थर और सींग के हथियार ही चलाता और हारे दुसमन को बीन-बीन कर मारता रहता।

सन्तोखी—तो जोंकों ने कुछ फायदा भी किया था ?

भैया—जो फायदा न पहुँचाया होता, तो जोंक पैदा ही नहीं होतीं। लेकिन देख रहे हो न, जोंकों की दो जाति अब तैयार हो गई।

दुखराम—गिरोह का सरदार और बनिया, यही दोनों न भैया ?

भैया—ठीक ! गुलामों के जुग से हम और आगे बढ़े। महापितर या सरदार तो भी अभी साथ चटाई पर बैठने वाले चौधरी थे, लेकिन उसके पास धन ज्यादा था, लौंडी-गुलाम ज्यादा थे। वह खिला-पिला के बिरादरी के लोगों से भी कितने हीको फोड़ लेने में सफल हुआ। वही आगे चलकर राजा वन गया।

सन्तोखी—तो अव राजसी ठाट और हजार रनिवासों का युग आ गया।

भैया—अब बड़ी मोटी और भयंकर जोंक तैयार हो गई। वह सभी छोटी-बड़ी जोंकों को अपने छतरछाया में रखने लगी। लेकिन लोग तो समझते थे कि वह कल तक हमारी विरादरी का चौधरी था, एक साथ चटाई पर बैठता था। राजा ने समझा कि हमारी नींव अभी मजबूत नहीं है। जाति का चौधरी होने से तैंतीसों कोटि देवता के सामने बलि देना, पूजा करना, महापितर ही का काम था। वह ओझा भी था, पुरोहित भी था और जाति का चौधरी भी।

दुखराम——ओझा भी था ! जोंक ओझा भी हो जाय, तो खैरियत नहीं ।

भैया——ठीक कहा दुक्खू भाई ! महापितर अपने काम की जो कोई बात करवाना चाहता, तो आँख लाल-लाल करके सिर हिला देवता के नाम से कह देता । और उस समय आजकल से बेसी देवता थे ।

दुखराम——लोग भी बहुत सीधे-सादे रहे होंगे भैया ?

भैया——बहुत सीधे-सादे लेकिन जब लड़ पड़ते, तो उनका दिल भी बहुत कठोर होता । लेकिन महापितर या जाति का बड़ा चौधरी एक खून की बिरादरी का ही अगुवा होता था । राजा की ताकत ज्यादा थी, हथियार भी चोखे थे । वह अपने धन का लोभ दिखा बिरादरी में बेसी फूट डलवा सकता था । उसको एक बिरादरी पर संतोख नहीं हुआ, वह कई बिरादरियों को हराकर उनका राजा बन गया ।

दुखराम——तो जमात बढ़ती ही रही ?

भैया——हाँ, माई से महामाई की जमात बड़ी थी, महामाई से पितर की जमात बड़ी थी, पितर से सैकड़ों गुलाम रखने वाले महापितर की जमात बड़ी हुई । महापितर से भी बड़ी जमात राजा की बनी । लेकिन महापितर तक कुछ भाई-चारा था । अब राजा ने बिरादरियों से अपनेको ऊपर कहना शुरू किया । लेकिन लोग कैसे मान लेते, इसलिए उसने ओझा-सोखा से मदद ली । किसी बड़े होसियार ओझा को अपना पुरोहित बनाया । उसने देवता के नाम से राजा को देवता बनाना शुरू किया । इसके लिए राजा पुरोहित को भेंट चढ़ाने लगे ।

दुखराम——तो भैया ! पुरोहित एक और बड़ी जोंक पैदा हो गया ।

भैया——देखा न दुक्खू भाई ! कैसी हमारी-तुम्हारी आँख पर एक के बाद एक नए-नए पट्टर बाँधे जाने लगे ।

संतोखी——जोंकों ने चारों ओर अपना जाल फैला दिया ।

भैया——और कमेरे उस जाल में फँसने लगे । उनका बल घटने लगा । कमेरे देस भर में बिखरे हुए थे । उनका कोई मजबूत दल नहीं था । राजा ने लोभ देकर कमेरों के बहुत से लड़कों को सिपाही बना लिया ।

दुखराम——इसी को कहते हैं काँटे से काँटा निकालना । कमेरे जिसमें कान-पूँछ न हिलाएँ, इसलिए उन्हीं के लड़कों के हाथ में तलवार दे दी ।

भैया——दुनिया में राजा लोग खूब मजबूत होने लगे । अपना राज बढ़ाने के लिए, और बेसी लोगों का खून चूसने के लिए एक दूसरे से लड़ने लगे । फिर बड़े-बड़े राज कायम हुए । दूर-दूर के देसों पर हाथ फैलाए । पुरोहितों का बल और धन भी बढ़ा, व्यौपारियों का व्यौपार भी खूब चमका । इसी बीच में लोहा निकल आया और खूब तेज-तेज तलवारें बनने लगीं । पत्थर के रूप में पड़ा सोना-चाँदी भी अलग करके निखालिस रूप में तैयार होने लगा । असरफी, रुपया और ताँबे का पैसा बनने लगा । व्यौपार में और तरक्की हुई । लखपती सेठ जगह-जगह दिखलाई देने लगे । सेठ, पुरोहित और राजा का खूब गठबंधन था ।

दुखराम——चोर-चोर मौसियाउत भाई, सभी जोंकें मिलकर कमेरोंका खुन चनेमलगीं ।

भैया—व्यौपारी, कारीगरों-किसानों के पैदा किए हुए धन को दुगुने-तिगुने दामपर दूर-दूर देशों में ले जाकर बेंचने लगे। गङ्गा में बड़ी-बड़ी नाव, समुन्दर में बड़े-बड़े जहाज चलने लगे। बढ़िया कपड़ा, गहना और सौक की हजार तरह की चीजों की माँग बढ़ी। कमेरों, मजूरों, किसानों को इतनी ही मजूरी मिलती, जिसमें उनका बंस खतम न हो जाय, लाख-दो लाख भूखे मर जायँ, तो उसकी कोई परवाह नहीं, लेकिन देसके देसमें कोई दिया-बत्ती जलाने वाला न रह जाय, इस बात को जोंकें पसन्द नहीं करतीं। जब जोंकें परजापर दया करने की बात कहती हैं, तब उनका मतलब यही है कि चिराग न बुझ जाय।

सन्तोखी—उनका अपना मतलब पूरा होना चाहिये, दुनिया जाय चूल्हा भाड़ में!

भैया—व्यौपार से बनियों को खूब फायदा होने लगा, जिसमें राजा को भा भाग मिलता। हर राजा अपने बनियों की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। काठ के बड़े-बड़े जहाज कपड़े के बड़े-बड़े पाल उड़ाते समुन्दर को छान डालते थे। नफा की कुछ न पूछो। ढाका का मलमल विलायत में जाकर दुगुने-तिगुने नफा में बिकता था। योरुप के बनियों ने देखा कि इस व्यौपारसे हमें भी नफा उठाना चाहिए। पहिले इटलीवाले व्यौपार करने लगे, फिर पुर्तगाल वाले बनिये चढ़ दौड़े। उसके बाद हालैंड भी, फ्रांस भी, इंग्लैंड भी कैसे पीछे रहते। सब जगह के बनियों ने अपनी अपनी गुट्ट बनाई। उनके राजाओं ने मदद दी। वह काले लोगों के देसकी ओर दौड़ पड़े। लेकिन जो समुन्दर में जहाज दौड़ाने और मोल-तोल करने की ही चतुराईसे ही काम चल जाता, तो हिन्दुस्तान के बनिये भी पीछे नहीं रहते।

सन्तोखी—तो गोरों के पास और कौन सी बात थी भैया, जिससे वह दुनिया के राजा बन गए?

भैया—उनके पास बारूद का हथियार था, अच्छी-अच्छी तोपें, बन्दूकें, तमन्चे।

दुखराम—क्या हमारे देस के लोग बारूद नहीं जानते थे?

भैया—हमारे देसवाले तो नहां जानते थे, लेकिन हमारे पड़ोसी चीनवाले जानते थे।

सन्तोखी—तो चीनवालोंने क्यों नहीं बारूदसे काम लिया?

भैया—वह समझते थे कि यह आतिसबाजीके खेलके ही कामकी है। चंगेजखाँ नामका एक मंगोल सरदार था, उसने अपने घुड़सवारोंकी मददसे चीन को जीत लिया। बारूदकी बन्दूक पहले-पहल उसीने बनवाई। उसकी फौज दुनियाको जीतती हुई योरुपमें घुस गई। मंगोलोंसे ही योरुपवालोंने बारूद का भेद पाया, उन्हींसे ही योरुपवालों ने किताब छापने का ढंग सीखा?

सन्तोखी—तो किताब छापने की विद्या योरुपवालोंको पहले नहीं मालूम थी?

भैया—चीन छोड़कर किसीको नहीं, हिन्दुस्तानको भी नहीं मालूम थी। हमारे यहाँ भी उल्टा अच्छर खोदकर लोग अपनी-अपनी मुहर बनाते थे, लेकिन उन्हें यह सूझ नहीं आई कि पूरी किताबको लकड़ीपर उल्टा खोदकर छापा जा सकता है।

सन्तोखी—तो चीनी लोग लकड़ीपर उल्टा अच्छर खोदकर किताब छापते थे।

भैया—हाँ, फिर यूरपवालोंने सोचा कि एक लकड़ी एक किताबको उल्टा खोदने से अच्छा यह होगा कि एक-एक अच्छर उल्टा बनाकर रख लिया जाय और उतने ही अच्छरोंके जोड़नेसे तो बड़ी पोथी बन जाती है, इस तरह एक बारके बनाये उल्टे अच्छर बहुत-सी किताबोंके छापनेका दाम देंगे। लकड़ीका अच्छर टिकाऊ नहीं होता, इसी वास्ते उन्होंने सीसेका अच्छर बनाया।

सन्तोखी—तो योरुपवालोंने दूर तक सोचा ?

भैया—बारूदके हथियारों के बारे में भी योरुपवालों ने बहुत दूर तक सोचा और अच्छे-अच्छे हथियार बनाए। आज-कलके इतने अच्छे-अच्छे हथियार तो नहीं। लेकिन उस समय जो हथियार दुनियामें बनते थे, उनसे यह बहुत अच्छे थे।

दुखराम—तो भैया, पत्थर-लकड़ीके हथियार से ताँबे की तलवारों का जमाना आया, फिर लोहेकी तलवारें, तीर और भाले, फिर बारूदकी तोपें ढलने लगीं ?

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! ताँबे, लोहे और बारूद के हथियारोंपर जोंकों ने ही पूरा कब्जा किया।

दुखराम—तभी तो हजार आदमीकी नकेल एक आदमी के हाथ में है।

भैया—विलायत के व्यौपारी भी हिन्दुस्तानके व्यौपारी के साथ व्यापार करने लगे। खूब दुगुना-चौगुना नफा कमाने लगे। हमारे यहाँके राजा, नवाब आपसमें लड़ रहे थे। उन्होंने विलायतवालोंके हथियारोंको बहुत मजबूत देखा। वह गोरों को लड़ने के लिए किरायेपर रखने लगे। गोरे व्यौपार भी करते थे और किरायेपर लड़ते भी थे।

सन्तोखी—हमारे देसवाले अपने ही क्यों नहीं उन हथियारों को बनाने लगे ?

भैया—हमारे यहाँ तो सनातन धरम चलता है न ? जो चीज जितनी ही पुरानी है, उतनी ही ठीक है। जब नाक तक पानी आ जाता है, तब सनातन धरम का नसा टूटता है ? लेकिन "अब पछताये होत का जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"। हिन्दुस्तान वालों को एक दूसरे के साथ खूब लड़ते देखा; फिर विलायती बनियों की कम्पनी ने व्यौपार के साथ-साथ देश जीतने का काम भी अपने हाथ में ले लिया !

संतोखी—तो इस तरह हिन्दुस्तान में कम्पनी बहादुर का राज कायम हो गया ?

भैया—हाँ विलायती बनियों के गुटको कम्पनी बहादुर कहते हैं।

दुखराम—मैं तो समझता था कि कम्पनी बहादुर कोई राजा है।

भैया—कम्पनी कहते हैं, गुट्टको दुक्खू भाई। १७५७ ई० से अंग्रेजों ने हिन्दूस्तान में अपने राज की नींव मजबूत कर ली।

दुखराम—राजा भी जोंक, बनिया भी जोंक, और जब वह आदमी राजा और बनिया दोनों हो, तो देश में कहाँ से खून बच पाएगा।

भैया—आज सौ बरस हुए, मरकस बाबा ने लिखा था कि हिन्दुस्तान के छः करोड़ आदमी जो कुछ साल भर में कमाते हैं, वह सब विलायती कम्पनी विलायत ढो ले जाती है।

सन्तोखी—छः करोड़ आदमी की सारी कमाई ।

भैया—उस समय हिन्दुस्तान में बीस करोड़ से कम ही आदमी रहते थे; इस लिए हर तीन आदमी में एक आदमी विलायत वालों के लिए कमाता था। और इस रकम में वह धन सामिल नहीं था, जो कम्पनी के नौकर घूस-रिसवत, चोरी-ठगी से जमा करते थे ।

दुखराम—यह मरकस बाबा कौन हैं भैया ?

भैया—मरकस बाबा के बारे में दुक्खू भाई ! फिर हम किसी दिन बतायेंगे । मरकस बाबा हीने जोंक-पुरान का परदा खोला । उनके ही परताप से कमेरों की आँखका पट खुला । उन्होंने ही बतलाया कि दुनिया को नरक बनाने का कारन यही जोंकें हैं । उन्होंने ही रास्ता दिखलाया कि कैसे जोंकों से पिण्ड छूटेगा, और दुनिया नरक से सरग बनेगी ।

सन्तोखी—तब तो मरकस बाबा कोई औतार हैं भैया ?

दुखराम—किसके औतार हैं सन्तोखी भाई ?उन्हीं के तो नहीं जो छीर सागर में सदा के लिए सो गए हैं ।

भैया—सन्तोखी भाई का मतलब है कि बाबा बहुत भारी पर-उपकारी जीव रहे हैं और उनकी सूझ ऐसी रही, जैसा कि और आदमियों में देखनेमें नहीं आती ।

सन्तोखी—हाँ भैया ! यही मतलब है, क्या करें जो लबज लोग बोलते हैं, जान पड़ता है उसी में बहुत खामी है ।

दुखराम—खामी ही नहीं बहुत धोखा है सन्तोखी भाई ! और यह सब धोखा जोंकों का फैलाया हुआ है । अपने जान जोंकों ने हमें साँस लेने का भी कोई रास्ता नहीं छोड़ा था । लेकिन उनको क्या पता था कि कमेरों का पच्छ करने वाले मरकस बाबा दुनिया में पैदा होंगे । भैया ! तो जो तुम हम लोगों के आँखका पट्टा खोल रहे हो, यह सब मरकस बाब हीने बताया है ?

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! दुनिया में इतना बड़ा नबज पहचानने वाला कोई बैद नहीं हुआ । उसने दुनिया के रोग का कारण बतलाया, फिर दवाई भी बतलाई । उस दवाई को दुनिया के चौथे भाग के लोगों ने खाया, वह आज निरोग हो गए हैं । मरकस बाबा ने यह भी बतलाया कि अब तक जितनी जोंकें पैदा हुई थीं, अब उन सब की कान काटनेवाली सबसे बड़ी जोंकें दुनिया में आ गईं । इसको दो घड़े खून से सन्तोख नहीं हो सकता, इसके लिए समुन्दर का समुन्दर खून चाहिए ।

सन्तोखी—वह सबसे बड़ी जोंक कौन है भैया ?

भैया—पहले जनम होता है तब नाम रखा जाता है । सुनो जनमकी बात । बिलायती बनिये हिन्दुस्तान में राज और व्यौपार दोनों करने लगे—बल्कि राज भी वह व्यौपार हीके लिए करते थे । हिन्दुस्तान का माल वह खरीद-खरीदकर और बहुत कुछ नजर-सौगातमें ढो-ढोकर विलायत ले जाने लगे । हिन्दुस्तानका कपड़ा सौ बरस पहिले भी विलायत बहुत जाता था । हिन्दुस्तान के धनसे विलायत कितना धनी हो गया, यह इसीसे समझ सकते हो, कि जहाँ १८१४ ई० में विलायतकी सारी सम्पत्ति ३० अरब रुपया (२३० करोड़ पौण्ड) थी, वहाँ ६१ साल बाद १८७५ ई० में बढ़कर ११ खरब ५ अरब रुपया (८५०० करोड़ पौण्ड) हो गई । इस धनकी जो इतनी

बड़ती हुई, उसमें थोड़ा ही बहुत और जगह से आया, बाकी अधिक भाग हिन्दुस्तान-से गया।

दुखराम—माने अरब-खरब रुपया हमी लोगोंके देहका खून न खींच करके गया ?

भैया—इसे भी क्या पूछना है। कम्पनी बहादुरने धरम कमाने के लिए थोड़े ही हिन्दुस्तान को अपने हाथ में लिया। बङ्गालमें कम्पनी का राज्य कायम होनेके बाद १७६४-६५ ई० में जहाँ १ करोड़ ६ लाख ३४ हजार रुपया (८ लाख ८१ हजार पौण्ड) मालगुजारी आई थी, वहाँ दूसरे ही साल वह दस गुना कर दी गई (१४ लाख ७० हजार पौण्ड) और कम्पनीके ९३ वर्षों के राज्यमें मालगुजारी बीस गुना बढ़ गई। और जानते हो इसका फल ? अकाल हर दूसरे-तीसरे साल दौड़ने लगे। कम्पनी बहादुरके राज कायम होने के छठवें ही साल (१७७०) में बङ्गालमें एक करोड़ आदमी भूखों मर गये।

दुखराम—भैया। तुम चाहे कुछ भी दबाओ और सन्तोखी भाई कितना ही नाराज हों, मैं तो समझता हूँ कि भगवान कहीं भी नहीं हैं, छीर सागरमें भी नहीं हैं। कभी पैदा भी हुए हों तो उनको मरे-मिटे हजारों बरस हो चुके।

सन्तोंखी—इतना तो मैं भी कहूँगा दुक्खू भाई, कि एक-एक साल में एक-एक करोड़ या साठ-साठ लाख आदमियों को जोंकें चूसकर मार डालें, फिर भी भगवान अवतार न लें, तो उनके सब औतारोंकी कथा झूठी है।

भैया—हिन्दुस्तान से जो धन दुहा जाता था, उसमें कपड़ेका भी बहुत भाग रहता था। विलायत के कुछ व्यौपारियोंने सोचा कि यदि हम हिन्दुस्तानसे भी सस्ता और अच्छा कपढ़ा दे सकें, तो उल्टी गंगा बहा देंगे।

सन्तोखी—माने कपड़ेके नइहरमें कपड़ा बनाकर भेजेंगे।

भैया—इतना ही नहीं, नइहरकी रूई लेकर, क्योंकि विलायत में कपास नहीं पैदा होती है। विचार करनेवालों ने बुद्धि लड़ानी शुरू की। अठारवीं सदीके अन्त पर भाप के इंजनका पता लग गया और कपड़े बुननेके करघे भापसे चलाए जाने लगे। मशीनकी चीज हाथकी बनी चीज से सस्ती होती है।

दुखराम—यह क्यों होता है भैया। हम देखते हैं कि मिलकी बनी चीज देखने में बुरी नहीं होती, मजबूत भी होती है, फिर सस्ती क्यों होती है ?

भैया—आदमी का जाँगर (परिश्रम या मेनहत) जितना लगता है, चीजका दाम भी उतना ही होता है। गाढ़ा कपड़ा सस्ता होता है और बनारसी किमखाब बहुत मँहगा, क्योंकि गाढ़ेमें आदमी का उतना जाँगर नहीं लगता जितना कि किम-खाबमें। अब हाथके करघेपर पुराने ढंगसे कपड़ा बुनने में एक आदमी पांच गज से ज्यादा कपड़ा नहीं बुन सकता है और वह भी हाथ सवा हाथ अरजका और कपड़ेकी मिलमें एक आदमी दो से चार करघे तक सँभाल सकता है।

दुखराम—हाँ भैया, उसमें हाथसे ढरकी थोड़ा ही चलानी पड़ती है। सब तो अपने ही आप होता है, कहीं सूत टूट जाता है, तो उसे जोड़ देना होता है।

भैया—बुनाई कितनी तेजीसे होती है ? एक दिन में एक आदमी करघों के मुताबिक सौ, डेढ़ सौ, दो सौ गज तक कपड़ा बिन सकता है। १०० गज लेने पर भी हाथके करघेंसे जितना काम १० आदमी करेंगे, मशीन पर उतने काम के लिए सिर्फ एक आदमी चाहिए। अब तुम्हीं बतलाओ १० आदमी के जाँगरसे बना कपड़ा सस्ता होगा या आदमी के जाँगर से बना उतना ही कपड़ा।

सन्तोखी—एक आदमीके जाँगरवाला भैया। क्योंकि उसमें मजूरी कम देनी पड़ेगी।

भैया—कलवाले कारखानोंने हाथकी कारीगरीको तबाह कर दिया, इसीलिए कल लगाने से थोड़े ही आदमी ज्यादा काम कर सकते हैं। कुछ दिनों पहले जानते हो न, चीनी और गुड़ करीब-करीब एक भाव बिकते थे। वह इसीलिए कि मिलों में चीनी बनानेमें बहुत कम आदमी लगते हैं। देखा नहीं है, एक ओरसे बोझाका बोझा ऊख खींची जा रही है और पच्चीसों कलोंमें होते दूसरे छोर पर दानादार सफेद चीनी बोरे में बन्द होती जा रही है।

दुखराम—कल-मशीन से भैया, यह चीज बहुत सस्ती तैयार होती है, यह तो हम रोज देखते हैं।

भैया—सस्ती ही नहीं दुक्खू भाई! वह इतनी इफरात होती है कि अगर मिलवालों को सस्ती पड़ जाने से घाटा होने का डर न होता, तो थोड़े ही जोर लगाने से आदमी पीछे एक मन चीनी हर साल हिन्दुस्तान में बाँटी जा सकती है। कल-मसीन ने आदमी के खाने, पहिनने, रहने की चीजों को इतना इफरात कर दिया है, कि जो जोकें बाधा न डालें, तो दुनिया में एक भी आदमी भूखा-नंगा नहीं रह सकता लेकिन इस बात को अभी हम आगे कहेंगे दुक्खू भाई! अभी तो यही हम बतला रहे थे कि सबसे बड़ी जोंक कैसे पैदा हुई। जब कल-मशीनों को दिमाग वालों ने सोचकर बनाया, तो व्यौपारी तुरन्त दौड़ पड़े। उन्होंने सोचा कि अब धुनिया, जुलाहा, लुहार के पीछे दौड़ने की हमें कोई जरूरत नहीं, हम रुई खरीद कर कारखाने में लाएँगे और कल उसका सूत कातकर कपड़ा बना देगी। इसी समय रेल और जहाज वाले इंजन भी बन गये, इसलिए माल एक जगह से दूसरी जगह भेजना भी सस्ता हो गया। व्यौपारियों के पास करोड़ों की पूँजी थी, उन्होंने दिमाग वालों की सोची चीज को तुरन्त ले लिया और सब तरह के लाखों कारखाने खोल दिये। अब नफाका क्या ठिकाना ? किसान से रुई खरीद रहे हैं, उससे भी कारखाने वालेंको नफा रेल से भेजते हैं, रेल भी कारखाने वालों की है उसको भी नफा। जहाज से सामान विलायत भेजते हैं उसका किराया लगता है; जहाज भी कारखाने वालों का, फिर कपड़े की मिल भी कारखाने वालों की है, उसका भी नफा है उन्हीं को। उसके बाद कपड़ा हिन्दुस्तान को लौटता है, वहाँ भी हर जहाज और रेल में हर जगह पूँजीपति का नफा धरा हुआ है। पुराने व्यौपारी इतना नफा नहीं कमा सकते थे क्योंकि वह सिर्फ तैयार माल को एक जगह से दूसरी जगह भेजते और आजके यह पूँजीपति कच्ची रुई में हाथ लगने से लेकर पग-पग पर नफा कमाते हैं।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया ? हम लोग रुपया पीछे पैसा दो पैसा बहुत समझते हैं और यह तो बारह आनेके कपास में बीस रुपये की धोती बेचते हैं, फिर इनके नफे का क्या पूछना।

भैया—विलायत वाले पूँजीपति...

दुखराम—पूंजीपति क्या है, सो अच्छी तरह नहीं समझा भैया ?

भैया—पूंजी तो समझते हो, दुक्खू, भाई ?

दुखराम—रुपया-पैसा, जमा-पूंजी यही न भैया ?

भैया—हाँ यही रुपया-पैसा, लेकिन जो रुपया-पैसा कल-कारखाने में लगा है, जिसके कारण पूंजी वाला बारह आने की कपास को बीस रुपया में बेचता है, उसे पूंजी कहते है। और जो अपनी पूंजी से इन कल-कारखानों को खड़ा करते हैं, उन्हीं को कहते हैं पूंजीपति। पूंजीपतियों के नफे के सामने व्यौपारियों का नफा कुछ नहीं हैं।

सन्तोखी—ठीक कहा भैया ! जो मारवाड़ी सेठ लोग खाली व्यौपार करते थे, अब सब अपने चीनी-मिल, जूट-मिल, सीमेन्ट मिल, कागज-मिल, खोलते जा रहे हैं । अब उनका ध्यान कोई दूसरी ओर जाता ही नहीं।

भैया—बिड़ला, डालमिया, सिंघानियाँ एक ही पीढ़ी पहले खाली व्यौपारी थे, दूसरे कारखाने का माल खरीद कर बेचते थे, थोड़ा-सा उन्हें भी नफा हो जाता था । लेकिन अब देख रहे हो न ? बिड़लाकी कितनी ही चीनी की मिलें, कपड़ा और जूट मिलें, हिन्द बाइसिकिल कारखाना और मोटरका भी कारखाना है। पूंजीपति के नफे के सामने व्यौपारी का नफा कुछ भी नहीं है दुक्खू भाई !

दुखराम—मैंने तो एक ही बात गाँठ बाँध ली है। जो बारह आने के कपास को लेकर उसे २०) की धोती बना सकता है, उसके नफे के बारे में क्या कहना है।

भैया—विलायत वाले पूंजीपति दुनिया भर का धन लूटकर अपनेमें गाँज रहे थे, इसे देखकर दूसरे मुल्कवाले कैसे चुप रहते ? फ्रांस ने भी कारखाने खोले, अमेरिका ने भी कारखाने खोले, रूस ने भी कारखाने खोले।

सन्तोखी—जापान ने भी कारखाने खोले ?

भैया—हाँ जापान ने भी खोले लेकिन अभी हमको जो समझाना है, उसमें जापान का उतना काम नहीं है। विलायतने कारखाना खोला था। पहिले तो दुनिया में और किसी मुल्क में कारखाना खुले ही न थे, इसलिए 'चारों मुलक जगीरी में' उसीके था ? लेकिन जब फ्रांस ने कारखाना खोला तो दुनिया में जिन-जिन मुल्कों को फ्रांसीसियों ने अपना गुलाम बनाया था, वहाँ फ्रांस के कारखाने का ही माल बिक सकता था। अमेरिका के पास अपना ही बहुत मुल्क है, इसलिए कितने ही साल तक माल बेचने के लिए उसे ग्राहक ढूंढ़ने की जरूरत नहीं थी। जर्मनी के लिए आफत थी। वह सबसे पीछे कारखाना खोलने लगा, लेकिन अपनी विद्या-बुद्धि से वह तेजी से बढ़ा। माल टालका टाल जमा हो गया, वेचने के लिए दुनिया में जहाँ भी जाते, जवाब मिलता है—हटो-हटो यह हमारा राज है। अफ्रीका में जाते यही बात, हिन्दुस्तान में आते यही बात। अब तुम्हीं बतलाओ, जो चुप लगा जाए तो उसका क्या मतलब होगा ?

सन्तोखी—कारखाने बन्द हो जायेंगे, पूंजीपतियों का दिवाला निकल जायगा और क्या होगा ?

भैया—और यह समझो कि अब दुनिया में राजाओं का राज नहीं है ?

दुखराम—क्यों भैया, राजाओं का राज नहीं है तो किसका राज है ?

भैया—पूंजीपतियों का राज है, कल-कारखाने वाले करोड़पतियों का राज है। आज से तीन सौ बरस पहले (३० जनवरी १६४९ ई०) को विलायत के व्यौपारियों ने अपने राजा चार्लसका सिर कुल्हाड़े से काट डाला था, उसी दिन से प्रभुता व्यौपारियों के हाथ में चली गई, लेकिन कारखानों के खुलने और पूंजीपतियों के पैदा होने में अभी डेढ़ सौ साल और लगने वाले थे। व्यौपारियोंमें से ही पूंजीपति पैदा हुए और पूंजीपतियों को सिर काटने भरसे सन्तोख नहीं हो सकता था, वल्कि वह सिर काटने को नुकसान की बात समझने लगे ?

दुखराम—नुकसानकी बात क्यों मानने लगे ?

भैया—जोंक हैं न ! जोंकों को बहुत परदा की जरूरत होती है, नहीं तो—'उधरे अन्त न होहि निबाहू' । राजा के रहने पर खूब बड़ा-बड़ा दरबार लगेगा, झंडा-पताका निकलेगा, सहर सजाया जायेगा, हीरा-पन्ना जड़े मुकुटोंको दिखलाकर लोगों की आँख चौधियायी जायगी, राजपुरोहित भगवान के नाम से उसके सिर पर मुकुट रखेंगे और अबूझ कमेरों की आँख में धूल झोंककर वतलाया जायगा कि यहाँ कोई जोंक नहीं है, यह सब भगवान की दाया-माया है।

सन्तोखी—पूंजीपतियों ने माटी की मूर्ती बनाके रखना चाहा।

भैया—हाँ, देखा नहीं आठवें एडवर्ड को किसने निकाला ? यह वाल्डविन था वाल्डविन।

सन्तोखी—वाल्डविन कौन था भैया ?

भैया—वाल्डविन इङ्गलैंड का महामन्त्री था। लेकिन उससे भी बढ़कर वह था गेस्ट, कीन आदि वड़ी-वड़ी कम्पनियों का करोड़पति, पूंजीपति।

दुखराम—तव तो भैया राजा कोई रहे, विलायत के असली राजा तो यही पूंजीपति हैं।

सन्तोखी—और उस समय के हिन्दुस्तान के असली राजा .

भैया—जब विलायत के राजाको ही उन्होंने गुड़िया बना दिया, तो हिन्दुस्तान के बड़े लाट, छोटे लाट, हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूरके बारे में क्या पूछना है ? यह सब उन्हीं के वरदान पर हिल-डुल रहे थे।

दुखराम—यह तो कठपुतली का नाच मालूम होता है।

भैया—ठीक दुक्खू भाई ! है यह कठपुतली का नाच ही। सब सूत विलायत के छः सौ परिवार पूंजीपतियों के हाथ में और 'सबहि नचावैं राम गोसाई।' तो मैं बतला रहा था कि जर्मनीने अपने यहाँ कारखाने ठीक किए। माल को वेचने के लिए जिस देशमें भी गये, वहाँ धक्का मिला। वहाँ के पूंजीपति चुप कैसे रहते ? उन्होंने कहा कि जो खुशी से दरवाजा नहीं खोलोगे तो हम दरवाजा तोड़कर भीतर चले आवेंगे। यही कारन था जो १९१४ में जर्मनी ने लडाई छेड़ दी। उसने सोचा था कि दुनिया के चार हिस्सा में एक हिस्सा भूमि और आदमी अंग्रेज लोगोंके हाथमें हैं। जो इनको खतम कर दिया, तो सब जगह हमारा राज होगा, हमारा माल बिकेगा फ्रांस ने भी दुनिया का बहुत-सा हिस्सा घेर लिया है, उसके खतम होने पर हमारे माल के लिए और भी बाजार मिलेगी।

दुखराम—तो भैया ? गया के पण्डे बन गये । जैसे वह जजमान के लिए लड़ जाते हैं, वैसे ही ग्राहकों के लिए ये लोग लड़ गये ।

भैया—हाँ, यह ग्राहकों के लिए लड़ाई हुई । जितना ही अधिक ग्राहक मिलेंगे, उतना ही अधिक माल बेचेंगे और जो ग्राहक अपने ही गुलाम हुए, तब उनमें खाली कपास पैदा कराना जैसा सस्ता-सस्ता काम करायेंगे, और बारह आने का बीस रुपया बनायेंगे, पूंजीपति तभी इच्छा भर खून पीने पायेंगे। बल्कि इच्छा भर मत कहो, जो समुन्दर भर भी खून मिले, तो भी इन जोंकों की इच्छा पूरी नहीं होगी । और इन जोंकों के प्यास के लिए पहली लड़ाई में इतने लोग मरे और घायल हुए—

	मरे	घायल
अँगरेजी राज्य	१०,८९,९१९	२४,००,९८८
फ्रांस	३०,९३,३८८	४०,९०,०००
जर्मनी	२०,५०,४६६	४२,०२,०३०
अमेरिका	१,१५,६६०	२,०५,७००

दूसरी महालड़ाई में संसार में ढाई करोड़ नागरिक और २ करोड़ ७० लाख सैनिक मारे गये, जिनमें सिरिफ जर्मनी में ३३ लाख नागरिकों और साढ़े बत्तीस लाख सैनिक मरे । रूसमें ७० लाख नागरिकों और १ करोड़ ३६ लाख सैनिकों ने परान दिये । पहिली लड़ाई में ६६ लाख जोंकों के लिए बलि चढ़े, तो इस लड़ाई में ५ करोड़ २० लाख ।

जोंक-पुरानके इन दो भयानक अध्यायों से अभी उन्हें सन्तोख नहीं है, वह तीसरे महालड़ाई को अणुबम से लड़ना चाहती हैं, जिनकी ताकत हिरोसीमा वाले बमसे २० गुना से भी अधिक है । एक बम से दस लाख नरनारी तो वहीं खतम हो जायेंगे ।

४. जोंकों के दुसमन मरकस बाबा

दुखराम—आज तो भैया मरकस बाबाके बारे में कुछ बताओ ।

सन्तोखी—हाँ भैया, जोंकों की बात सुन करके तो हमारा दिल खौलने लगा। उनके सामने गाय-भैंस की देह में लगने वाली जोंकें तो कुछ भी नहीं ।

भैया—देखा न सन्तोखी भाई, जोंकों की सकल-सूरत चाहे कितनी ही देखने-में सुन्दर हो, उनके आस-पास कितनी ही दया-धरमकी बात चलती हो, लेकिन चारों ओर की धरती खून से लथपथ रहती है ।

सन्तोखी—इनके बड़े-बड़े महलों के नीचे न जाने कितनी जिन्दा लासें पड़ी हुई हैं और पग-पगपर उनके खून की प्यास बढ़ती ही गई है ।

भैया—हाँ, पहिले बिरादरी-बिरादरी की छोटी-मोटी लड़ाई होती थी, फिर राजाओं की बड़ी-बड़ी लड़ाई हुई । लेकिन इन जोंकों की लड़ाइयों के सामने तो पहले की

लड़ाइयाँ कुछ भी नहीं। अभी जो इतनी बड़ी लड़ाई हो चुकी है सो भी उन्हीं जोंकों के कारण। जबसे जोंकों का त्रास बढ़ा, तभी से कितने ही दया रखने वाले महात्मा सोचने लगे, कि कैसे दुनिया का दुख कटे। उन्होंने सोचा कि जब तक धनी-गरीब रहेंगे, तब तक लोगों को सुख-चैन नहीं मिलेगा, क्यों कि धनी होते ही हैं बहुतसे लोगों को गरीब बनाकर। जो धनी-गरीब का भेद मिटा दिया जाय, तो दुनिया में इतना दुःख नहीं रह जायगा।

दुखराम—क्यों भैया, ऐसे महात्मा लोग दुनियामें पहिले भी पैदा हुए हैं ?

भैया—पैदा हुए, लेकिन उन्हें ठीकसे नबज नहीं मालूम हुई। वह रोगके असली कारनका पता नहीं लगा सके।

दुखराम—कारन का पता नहीं लगेगा तब दवा कैसे बतायेंगे ?

भैया—खून के भीतर के रोग को पानीसे धोनेसे क्या होता है ? अढ़ाई हजार बरस पहले हमारे देस में बुद्ध नामके महात्मा हुए थे ?

सन्तोखी—नहीं बौधावतार भैया ?

दुखराम—बस सन्तोखी भाई ! मालूम पड़ता है कि औतार तुम्हारे मुँहसे नहीं छूटेगा। कौन औतार ? किसका औतार ? कहीं उसका पता भी है ? विलायती बनियोंने एक बरस में एक करोड़ आदमियोंको मार डाला, लेकिन औतार का कहीं पता नहीं ! जोंकों ने साठ लाख आदमियों को तड़पा-तड़पाकर मार डाला, लाखों तिरियोंसे इज्जत बेंचवाई, तब भी उस औतार का पता नहीं ! छोड़ो औतार की बात। औतार होता है राजाओं-रानियों के लिए। दुनिया भर की जोंकोंको बचानेके लिए हमें औतार से कोई मतलब नहीं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! बुद्ध ने अपनेको किसीका औतार नहीं कहा, वह मानुख थे और मानुखोंका हित चाहते थे। उन्होंने सोचा कि सारी दुनियाको धनी-गरीब का भेद मिटाने के लिए तैयार करना मुस्किल होगा, राजा और सेठ दोनों बड़ी-बड़ी जोंकें खिलाफ हो जायँगी; इसलिए उन्होंने चाहा, जो थोड़े से समझदार और त्यागी आदमी अपने भीतरसे धनी-गरीब का भेद मिटाकर अपने सुन्दर जीवनसे दिखला दें, तो क्या जानें दूसरे लोग भी पसन्द करें और उसी रास्ते पर चलें।

सन्तोखी—तो बुद्धने ऐसे लोगोंकी जमात बना ली थी, जिसमें धनी-गरीब का कोई भेद न था !

भैया—हाँ, ऐसे औरत-मरदोंकी जमात बनाई थी, जिसमें न कोई धनी था न गरीब। उनका घर-द्वार, खटिया-बिछौना, खाना-पीना सब साझेमें रहता। बाँभन हो या चंडाल, उनके भीतर कोई जात-पाँतका भेद न था, सब एक साथ खाते, एक साथ सोते और एक दूसरे के दुख-सुख में सरीक होते।

दुखराम—बड़ी सुन्दर जमात बनाई थी भैया !

भैया—लेकिन जोंकोंका इससे क्या बिगड़ा। बड़ी-बड़ी जोंकोंने इस जमात के लिए बड़े-बड़े महल बनवा दिये, गाँव और जमीन दे दी, खाने-पीने का आराम कर दिया। फिर कहने लगे, यह तो महात्मा लोग हैं, संसार-त्यागी भिच्छु संन्यासी हैं, इनमें सब सामरथ हैं।

सन्तोखी—माने उनके चारों ओर दीवार घेरकर उसीमें उनको बन्द कर दिया, जिसमें उनके आचरनका दूसरोंपर कोई असर न पड़े।

भैया—और असर नहीं पड़ा क्योंकि लोग समझने लगे, ऐसा जीवन तो साधू-संन्यासी ही बिता सकते हैं, वह सारी दुनिया के लिए सम्भव नहीं। इस तरह बुद्ध की दवा सारी दुनिया के लिए नहीं रह गई और फिर जोंकोंने उस जमात को बिगाड़ना शुरू किया। बुद्ध ने कहा था कि जिस किसीको कुछ दान देना हो तो सारी जमात (संघ) को दे, एक आदमीको नहीं। लेकिन बुद्धके देह छूटने के बाद जोंकोंने बड़ा-बड़ा दान जमात के नाम नहीं, आदमीके नाम देना सुरू किया। जमातमें फूट पड़ गई, धनी-गरीब का भेद फिर सुरू हो गया, जोंकोंका बाल भी बाँका न हुआ। जैसे बुद्धने हमारे देश में किया, वैसा दूसरे देशों—चीन, ईरान, यूरपमें भी कितने ही महात्मा पैदा हुए, जिन्होंने धनी-गरीब का भेद मिटाना चाहा, पर कोई सफल नहीं हुआ। अन्तमें कल-मसीन की विद्या का पता लगा। व्यौपारियोंने कारखाने खोल लिये। एक-एक कारखानेमें एक छत के नीचे हजार-हजार, दो-दो हजार मजूर काम करने लगे। कारीगरोंका रोजगार कलोंने चौपट कर दिया। धुनिया, जुलाहा, बढ़ई, लोहार, रंगरेज, कुम्हार, लहेरा, ठठेरी कलकी चीजोंके सामने सबको हार माननी पड़ी, सब का घर उजड़ा और कारखानेमें मजूरी करना छोड़ जीने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दिया। लाखों मजूर विलायतके कारखानों में मजूरी करने लगे। मालिक तो मजूर नहीं चाहते, गुलाम चाहते हैं। गुलामों को चाहे मारो-पीटो, उसको कहीं ठौर नहीं है। उसकी देह तो मालिकके हाथ में बिक चुकी है। मजूरों के साथ भी मालिक ऐसा ही सलूक करना चाहते थे। जब चाहा किसीको नौकर रख लिया, नराज हुए तो निकाल दिया। लेकिन कारखाने वाले मजूरों का घर तो पहले ही उजड़ गया था, अब मालिक निकालने पर जायँ तो कहाँ जायँ? अपने भाई मजूरके ऊपर जुलुम करते देखा, दूसरे मजूरोंका भी दिल पसीज गया। वह भी समझने लगे जो आज इसकी गति है, वही कल हमारी होगी। मजूरों में एका होने लगा, उन्होंने कहा कि हमारे भाई को कामसे निकालना ठीक नहीं, निकालोगे तो हम काम नहीं करेंगे।

दुखराम—हड़ताल करेंगे।

सन्तोखी—हड़ताल क्या दुक्खू भाई?

दुखराम—सब तुम्हीं समझ लोगे? मजूर कारखानेका काम छोड़ देते हैं, इसी को हड़ताल कहते हैं।

भैया—पूंजीपति जोंकोंको यह पता नहीं था। उन्होंने समझा, कि जिनका घर-द्वार नहीं, ठौर-ठिकाना नहीं, उनकी क्या मजाल है, कि हमें आँख दिखायें। लेकिन उन्हें यह नहीं समझमें आया, कि जिन कल-कारखानोंने उनके घरोंमें करोड़ोंकी बरसा की, उन्होंने इन हजारों मजूरोंको एक जगह कर दिया, एक नाव में बैठा दिया अब सबका अच्छा-बुरा भाग एक ही तरह का था। एक के ऊपर संकट पड़नेपर दूसरे चुप कैसे रह सकते थे? मजूरोंकी बिरादर बन गई। उन्होंने हड़तालें कीं। हड़ताल करने पर उनके बाल-बच्चोंको भूखा मरना पड़ता, लेकिन मालिकका भी लाखों का नुकसान होता। सरकार भी मालिकोंकी, पुलिस और पलटन भी पूंजीपतियोंकी। सबने मजूरोंको एक ओरसे दबाया। कितने ही गोली से मरते, कितनों ही को

जेलखाना भेजा जाता और कितने ही भूख के मारे तड़पते; लेकिन यह एक दिन की आफत तो नहीं थी, कि मजूर सिर नवा देते। 'बुढ़िया के मरने का डर नहीं था, डर था जमके परच जानेका'। हारते, तकलीफ सहते भी मजूरोंकी बहुत-सी माँगोंको पूँजीपति मानने के लिए मजबूर थे। यह अठारह सौ ईसवीसे कुछ पहिले और कुछ पीछेकी बात है। इसके बाद ही आज से सवासौ वर्ष पहले (५ मई १८१८ ई०) मरकस बाबाका जनम जर्मनी में हुआ। राइनलैंड इलाकेके ट्रेवेज नगर में उनके पिता एक यहूदी वकील थे। मारकस यह खान्दानका नाम था ! बाबाका नाम था कारल।

दुखराम—पूरा नाम कारल मारकस हुआ न भैया ?

भैया—हाँ लेकिन दुनिया में मारकस नाम ही को सब जानते हैं।

दुखराम—और यहूदी क्या है ?

भैया—यहूदी एक जाति है, जिसमें बड़े-बड़े पूँजीपति भी हैं, बड़े-बड़े पंडित भी हैं, लेकिन सबसे अधिक मजूर हैं। ये दुनिया में हर जगह बिखरे हुए हैं। १९५१ बरस पहले कुछ यहूदियों ने चुगली करके ईसामसीहको फाँसी चढ़वा दिया, इसी वास्ते ईसामसीहके मानने वाले किरिस्तान लोग यहूदियोंसे घिनाते हैं। मरकस बाबाके पिता वकील थे। जब मरकस बाबा छः ही बरस के थे, तभी उनके पिता यहूदी धरम छोड़कर कर ईसाई हो गये थे। मरकस बाबा लड़कपन ही से बुद्धिके बड़े तेज थे।

दुखराम—तेज न होते, तो जोंकोंके चार हजार बरस के जाल को तोड़ पाते ?

भैया—मरकस बाबा अपने सहरके इसकूल में पढ़े। कभी-कभी अपने पिता के मीत एक तालुकदारसे सतसंग होता। तालुकदार विद्वान थे और विद्या का आदर करते थे। इसकूल की पढ़ाई खतम करके सत्रह बरसकी उमरमें वह बोन सहर के विस्सविद्यालय में वकालत पढ़ने लगे। लेकिन एक साल बाद मरकस बाबा का मन उचट गया। तब वह जर्मनीके सबसे बड़े सहर र्बलिन के विस्सविद्यालय में चले गये। वकालत पढ़ना छोड़ दिया, अब वह पढ़ने लगे इतिहास, कविता और दरसन।

दुखराम—दरसन क्या है भैया ?

सन्तोखी—दरसन भी नहीं जानते ? रोज हम लोग दरसन-परसन करते हैं ?

दुखराम—तो इस दरसन-परसनमें पढ़ना क्या है ? यह कोई दूसरा ही दरसन होगा। सखी-समाज वालों को जैसे भगवान दरसन देते हैं, वैसे दरसन तो नहीं है भैया !

भैया—हाँ, कुछ वैसा ही है। है तो यह अँधेरी कोठरी में काली बिल्ली का पकड़ना, बलुक खाली अँधेरी कोठरी में काली बिल्ली का पकड़ना। लेकिन इसको लोग समझते हैं कि वहीं पहुँचकर विद्या का ओर होता है।

दुखराम—यहाँ भी तो जोकों की माया नहीं है। भैया ?

भैया—बहुत भारी माया है। दरसन वाले कहते हैं, कि दुनिया सब माया है।

दुखराम—उनके सामने जब थाली परोस कर रख दी जाती है, तो वह अपना हाथ उधर फैलाते हैं कि नहीं ?

भैया—फैलाते हैं, खाते हैं, मौज करते हैं।

दुखराम—बस-बस हो गया भैया! यह भारी धोखा है। जोंकोंका बड़ा भारी जाल है। जोकोंका छप्पन परकार तो छिनाएगा नहीं। उनका सराब और परियों का नाच चलता ही रहेगा। वह लोगोंका खून पी-पीकर साल में करोड़-करोड़ आदमी मारते रहेंगे। उनके भोग-विलास में यह दरसन कोई दखल नहीं देगा। वह बस यही चाहता है, कि जोंकों के जुलुम को लोग माया समझें। दुनिया को नरक बनाने का सारा कसूर जोंकों का है, लेकिन वह लोगों को बतलाना चाहते हैं, कि यह सब माया है।

भैया—तुम्हारा कहना ठीक है दुक्खू भाई! लोगों को भूल-भुलैया में डालने के लिए हिन्दुस्तानमें दरसन वाले ग्यानी पैदा हुए, यूरुपमें भी पैदा हुए। मरकस बाबाने जवानीमें दरसन पढ़ा, तो अच्छा ही किया। जब मरकस बाबा उन्नैस सालके थे, तभी कांट और फिखटे जैसे चोटीके पंडितोंका दरसन उन्हें थोथी कल्पना मालूम होने लगा। फिर मरकस बाबा को एक और दरसनके पंडित हेगलकी किताब पढ़नेको मिली। हेगलकी यह बात मरकस बाबाको बहुत पसन्द आई, कि दुनिया जो यह चित्तर-विचित्तर दिखाई दे रही है, वह इसीलिए कि वह हर छन बदल रही है। दुनियाकी कोई चीज छोटीसे छोटी या बड़ी ऐसी नहीं जो न बदले। हमारे यहाँ भी हेगल से चौबीस सौ बरस पहले बुद्ध महात्माने यही कहा था।

दुखराम—चौबीस सौ बरस पहले! और बुद्ध महात्मा भी तो धनी-गरीबका भेद मिटाना चाहते थे। वह भगवानको मानते थे कि नहीं भैया।

भैया—नहीं बिलकुल नहीं। वे कहते थे कि 'है' कहकर जिसे हम पुकारते हैं, वह सभी चीजें छिन-छिन बदलती हैं। जो बदलती नहीं, ऐसी दुनियामें कोई चीज नहीं है।

दुखराम—बुद्ध महात्मासे जो सन्तोखी भाई पूछते कि भगवान है कि नहीं, तो क्या जवाब देते?

भैया—पहले सन्तोखी भाई से पूछते कि भगवान बदलते हैं कि नहीं, माने बिल्कुल मर जाते हैं कि नहीं और फिर उनकी जगह कोई दूसरा बिल्कुल नया भगवान पैदा होता है कि नहीं? पहले बुद्ध महात्मा सन्तोखी भाईसे यह सवाल करते।

दुखराम—सन्तोखी भाई बताओ तुम क्या जवाब देते?

सन्तोखी—जो भगवान को मानता है, उन्हें जनम-मरनसे मानता है।

भैया—तो ऐसी चीजके बारेमें बुद्ध महात्मा कहते, कि वह अफीमचीकी पिनक है। ऐसी चीज दुनियामें कोई नहीं हो सकती?

दुखराम—तो सब चीज बदलती रहती है, दुनियामें न बदलनेवाली चीज कोई नहीं है, यही बात मरकस बाबाको पसन्द आई न भैया?

भैया—हाँ, बरलिनसे फिर मरकस बाबा जेना सहरके विस्सविद्यालय में चले गए और तेईस बरसकी उमरमें विद्या-पारंगत होनेके लिए उनको डाक्टरीकी पदवी मिली।

दुखराम—दवाई देनेवाले डाक्टर भैया ?

भैया—ग्यान के डाक्टर दुक्खू भाई ! मरकस बाबाने ग्यान तो सब पढ़ लिया, लेकिन दुनियामें देखा, सब जगह नरक की आग धाँय-धाँय जल रही है । उनकी कलममें बज्जरकी ताकत थी । उनकी नजर इतनी पैनी थी कि गहरीसे गहरी जगह में घुस जाती थी । विस्सविद्यालयसे पढ़ कर निकलनेके बाद मरकस बाबा एक अखबारके सम्पादक हो गये ?

दुखराम—सम्पादक क्या है भैया ?

भैया—अखबार के सब लेखों के परखने और रास्ता दिखलानेके लिए मुक्ख लेख लिखनेकी जिसपर जिम्मेदारी हो, उसे ही सम्पादक कहते हैं। इसी सम्पादक के रहते समय मरकस बाबाको मजदूरोंकी दुख-तकलीफ जाननेका और मौका मिला । फिर दो साल तक उन्होंने उसके कारन ढूंढ़ने और दवाईका पता लगाने के लिए खूब सोचा, खूब पढ़ा, खूब गुना । जब मरकस बाबा पच्चीस बरस (१८३५) के थे तभी अपने एक दोस्तको खत लिखा था—"बटोरने और व्योपार करनेका जो ढंग दुनिया में चल रहा है, मानुख जाति को गुलाम बनाने और खून चूसनेका जो ढंग चल रहा है, वह सारे समाजकी जड़को भीतर ही भीतर जल्दी-जल्दी कुतुर रहा है; जितनी जल्दी-जल्दी आदमियोंकी तादाद बढ़ रही है, उससे भी जल्दी-जल्दी वह कुतुर रहा है । इस घाव को पुराना (जोंकोंवाला) ढंग भर नहीं सकता, क्योंकि उसके पास भरने की कोई ताकत ही नहीं । वह (जोकोंका ढंग) तो सिरिफ भोग करना और अपने जीना, बस इतना ही जानता है ।" मरकस बावाने उसी साल अपने पिताके दोस्त तालुकदारकी लड़की, जेनीसे ब्याह किया ।

दुखराम—जोंक की लड़कीसे विवाह किया ?

भैया—जोंक आदमी से पैदा हुई है । और जोंकों में भी कोई-कोई आदमी पैदा हो सकता है कि नहीं ?

दुखराम—हो सकता है भैया !

भैया—जेनी उसी तरहकी आदमी थी । जोंकोंके घरोंमें उसने जन्म लिया । तेईस-चौबीस बरस तक जोंकोंके सुख और भोग में पली, लेकिन बाकी सारा जीवन उसने कितनी तपस्या की, कितना कष्ट सहा, उसको सुनकर रोआँ खड़ा हो जाता है । पच्चीस बरसके ही मरकस बाबा हो पाये थे, कि जर्मन सरकार उनके विचारोंको जानकर घबराने लगी । जानते हो न दुनिया भरकी सरकारें जोंकों की सरकार हैं। जोंकों के स्वारथको बचाना ही उनका सबसे पहला काम है । जर्मन सरकार ने मरकस बाबा को जेहलमें डाल देना चाहा । लेकिन बाबा और जेनी दोनों उनके हाथ में नहीं आये, वे फ्रांस की राजधानी पेरिसमें चले गये ।

दुखराम—चाबस (शाबस) ! बाबा जर्मन जोंकों के पंजे से बच गये ।

भैया—लेकिन जर्मन जोंकों की सरकारने फ्रांस की सरकार पर दबाव डालना शुरू किया, और डेढ़-दो साल बाद फ्रांसकी सरकार ने उन्हें अपने देससे निकल जानेका हुकुम दिया। बाबा को वहाँ से (१८४५ में) बेल्जियम के सहर ब्रूसेल्स में जाना पड़ा । दो बरस बेल्जियममें रहे। बड़ी गरीबीकी जिन्दगी बिताई । जेनी को

सब काम अपने हाथ करना पड़ता, बाबा खाली जोंकों से कमेरों की मुक्ति कैसे हो, इसीपर सोचते और लिखते रहे। १८४३ में "न्याव वालों की सभा" (जिसे पहले ही विदेसमें भागे जर्मन मजूरों ने कायम किया था) की बड़ी सभा लन्दन में हुई, उस सभा में मरकस बाबा और जिनगी भरके साथी, ऐङ्गल बाबा भी बुलाये गये। मरकस बाबासे वहीं सभावालों ने कहा, कि हम लोगों का एक ढिंढोरा-पत्तर (घोषणा-पत्र) लिख दीजिए, जिससे जोंकोंको भी पता लग जाय, कि कमेरे क्या करना चाहते हैं; और दुनिया भरके कमेरोंको भी पता लगे, कि दुनिया के इस नरकको ढहाने के लिए उनको क्या करना है, जोंकों को देह से छुड़ाने के लिए कौन-सा रास्ता पकड़ना है। मरकस बाबाने बत्तिस साल की उमरमें यह ढिंढोरा-पत्तर लिखा, जो हिन्दी में भी 'कमूनिस्ट घोषणा' के नामसे छप गया है। बीस-पच्चीस पन्ने की इस छोटी सी पोथीमें जो तागत है, वह दुनियाकी किसी बड़ी-सी-बड़ी किताबमें भी नहीं देखी गई। दुनियाके कमेरों की आँख खोलने में इस ढिंढोरा-पत्तर जितना काम किसीने नहीं किया। किताब खतम करते हुए बाबा ने कहा "कमेरों! अपने पैर की बेड़ियों को छोड़कर तुम्हारे पास गवाने के लिए रक्खा ही क्या है? (जोंकों को खतम कर देने पर) यह सारा संसार तुम्हारा है। सभी देसोंके कमेरों! एक हो जाओ।"

दुखराम—वाह रे बाबा, आज तू मिलता, तो अपने आँसुओंसे तेरे पैर पोंछता।

भैया—अगले साल (१८४८) फ्रांसमें बड़े जोंक राजा के तखतको उलट दिया गया। दुनिया के मुकुटधारी काँपने लगे। फ्रांस के लोगों ने पंचायती राज कायम किया। मरकस बाबाको सरकारके मुखिया ने (१ मार्च १८४८ को) बड़े आदर-भावसे आनेके लिए बिनती की। बाबा पेरिस सहर में आये। जर्मनी में भी कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ बगावत की। उसके एङ्गल बाबा और दूसरे कई साथियोंको बाबाने जर्मनी भेजा और अपने भी राइनलैण्ड इलाके में पहुँच गये। वहाँ से कमेरोंको रास्ता दिखलाने के लिए एक अखबार निकाला। जोंकोंकी सरकार दब गई थी, इसलिए मरकस बाबाकी ओर उसने हाथ नहीं बढ़ाया। डेढ़ बरस अखबार निकालनेमें बाबाकी और जेनीमाईके पास जो कुछ भी कौड़ी-पैसा था, सब चला गया। जर्मन जोंकोंकी सरकारका फिर कुछ हौसला होने लगा, इसलिए बाबा और जेनी पेरिस चले आये। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जोंकोंके स्वभावको ठीकसे पहचाना नहीं। उन्होंने जोकोंको अंगूठेसे दबाया। खून निकल जानेसे वह सुटुककर पतली हो गई। कमेरोंने समझा, अब कुछ नहीं कर सकती, इसलिए उन्हें उठाकर फेंक दिया।

दुखराम—जोंकोंका जीव बड़ा कड़ा होता है भैया! उनको जब तक गत्तर-गत्तर काट चींथकर न फेंका जाय, तब-तक वह मरती नहीं।

भैया—पेरिसमें फिर जोंकोंका जोर बढ़ गया और १८४९ में मरकस बाबाको फ्रांससे निकल जानेका हुक्म हुआ। बाबा और जेनी कमेरोंकी भलाईके लिए सब दुख सहनेके लिए तैयार थे। घर छूटा, देश छुड़ाया गया और जिस देसमें भी जाते वहाँ की जोंकें उनके पीछे जातीं। अब वह लन्दन चले गये। १८३९ से १८८३ तकके लिए (चौंतीस बरसों के लिये) लन्दन ही मरकस बाबाका घर बना।

दुखराम—लन्दन तो सबसे बड़ी-बड़ी जोंकोंकी राजधानी है, वहाँ मरकस बाबाको कैसे जगह मिली?

भैया—जोंक सरकारोंका आपसमें भी झगड़ा है, यह तो सैंतीस साल पहले वाली लड़ाई और पिछली लड़ाईसे तुम्हें मालूम है। इसलिए भी अपने मुद्दई जर्मनी और फ्रान्सकी जोंकोंके दुसमन मरकस को अपने यहाँ रहने देने में उन्हें कोई हरक्कत नहीं मालूम हुई, और सारे अँगरेजोंके गुलाम देसोंका इतना अधिक धन आता था कि अपने यहाँके मजूरों को वह कुछ दे-दिवाकर सन्तुष्ट कर देते थे। मरकस बाबाने बड़ी-बड़ी पोथियाँ लिखीं। दुनिया भरके कमेरोंपर उनकी नजर रहती थी।

दुखराम—हिन्दुस्तानके रहनेवाले हम कमेरोंके बारे में बाबाने कुछ सोचा और लिखा ?

भैया—हाँ दुक्खू भैया! बाबाके सामने आजसे ९१ साल पहले भी हिन्दुस्तान का कोई रोग छिपा नहीं था। बाबाने उस वक्त लिखा था—काहे अँगरेज हिन्दुस्तान के मालिक बन गये ? मुगल सुबेदारोंने मुगलाई राज-संगठन तोड़ा। सूबेदारों की ताकतको मराठोंने तोड़ा। मराठोंकी तागतको (पानीपतकी लड़ाईमें) अफगानोंने तोड़ा और जब यह सभी सबके खिलाफ लड़ रहे थे, तो अँगरेज चढ़ दौड़े और उन्होंने सबको दबा दिया। (क्यों दबा सके ?) यह देस सिर्फ हिन्दू, मुसलमानों में ही बँटा नहीं, बल्कि खोम-खोम और जाति-जातिमें बँटा है। यहाँ के समाजका ढाँचा इस तरह कसकर बाँधकर रखा गया है, कि आदमी-आदमीके बीच बिखराव और बेमेलपन फैला है। जो देस, जो समाज ऐसा हो, वह हारके लिए, गुलाम होनेके लिए नहीं बना तो किस लिए बना। चाहे हिन्दुस्तानका पुराना इतिहास हम न भी जानते हों, तो भी इस बातमें तो कोई दो मत नहीं है, कि इस छन भी हिन्दुस्तान अँगरेजोंकी गुलामीमें जकड़बन्द है। और उस जकड़बन्दीका काम करती है हिन्दुस्तानी फौज जिसका खर्च भी हिन्दुस्तान ही देता है। ऐसा भारत गुलाम होने से कैसे बच सकता है ?

दुखराम—भैया ? बाबाने सचमुच हम लोगों के रोगको पहिचाना।

भैया—बाबाने एक और भी बात लिखी है। उन्होंने हिन्दुस्तानके पुराने जमाने में गाँवका जो पंचायती इन्तिजाम था, उसके बारेमें कहा, ये सुन्दर (गाँवके) प्रजातन्त्र सिर्फ पड़ोसी गाँवसे अपने गाँवकी सीमाकी रच्छाके लिए मुस्तैदी दिखा सकते थे, लेकिन अपने राजाओंकी मनमानीको रोकनेकी उनमें जरा भी ताकत नहीं थी।

दुखराम—क्यों भैया! गाँवका पंचायती राज क्या बुरा था ?

भैया—पंचायती राजको बुरा कोई नहीं कहता। बाबाने भी वही कहा। जो कनैलाकी कोई जमीन या तालपोखरीका हक भदया छीनने लगे, तो कनैला वाले कितना मनसे लड़ेंगे ?

दुखराम—भैया! गाँवका बच्चा-बच्चा लाठी लेकर दौड़ पड़ेगा। भला कोई घर बैठा रह सकता है ? न जाने कितनी बार कनैला नरेहतासे लड़ा, उसने उमरपुरका दाँत खट्टा किया, भदयाको सिवानामें घुसने नहीं दिया।

भैया—बाबा यही कहते हैं, कि जब देसमें इतना बिखराव हो जाता है कि लोगों को सारा देस तो भूल जाता है, याद रहता है सिर्फ अपना गाँव; तो गाँव की सीमाकी रच्छा भले ही हो जाय, लेकिन देसकी सीमाकी रच्छा नहीं हो सकती। क्योंकि लोग अपनेको उतना ही मनसे देसका वासी नहीं समझते, जितना मनसे कि

गाँवका वासी समझते हैं। इसीलिए हिन्दुस्तानकी सीमाकी रच्छाकी जिम्मेदारी सिर्फ राजाओंकी रह गई। राजाओंका जुलुम और मनमानापन लाखों गाँवोंके पंचायती राज्योंमें बँटे हिन्दुस्तानी लोगोंके रोकनेकी चीज नहीं रह गया। गाँवकी पंचायतोंने कारीगरों को हजारों बरस पुराने वसूलों और रुखानियोंसे चिपके रहने दिया, किसानोंको हँसुओं-फलोंसे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दिया जबकि दूसरे मुलुकवाले अपने जुल्मी राजाओंकी गरदन कुल्हाड़ेसे काट रहे थे, उस वक्त सब जुलुम, सब अन्याय बरदास करते हिन्दुस्तानी लोग कहते थे—"कोउ नृप होइ हमैं का हानी।" इससे वह यही दिखलाते थे, कि हमारा हाथ-पाँव बँधा हुआ है, हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे इस गाँव-गाँवके बिखराव, जाति-जाति के बिखराव, धरम-धरम के बिखरावने हमें बिलकुल कमजोर बना दिया। हम हिल-डोल नहीं सकते। हम समय देखकर अपनेको बदल नहीं सकते। हम अचल मुरदा बने रहना चाहते थे। लेकिन जो कोई दूसरा न छेड़ता तब न? मुसलमानोंने राज किया, उससे पहिले उसको और यूनानियोंने भी राज किया था, लेकिन हिन्दुस्तानके समाजके पुराने ढाँचों, गाँव-गाँवके अलग-बिलग संगठनों और जाति-पाँतिको कोई नहीं तोड़ सका। लेकिन वह काम अँगरेजोंने किया। उन्होंने मुरदेको खूब झकझोरा। वह बिल्कुल मुरदा नहीं था। उन्होंने हजारों बरससे चले आये हमारे चरखोंको तोड़ डाला, पुराने करघेको बिदा किया। यह सब कैसे किया? अपने यहाँके मिलके बने सस्ते कपड़ोंको भेजकर। बाबा ने लिखा—"अँगरेजोंने कपासकी जनम भूमिमें कपड़े की बाढ़ ला दी। १८१८ में उन्होंने जितना कपड़ा भेजा था, उससे ५२ गुना कपड़ा १८ बरस बाद १८३३ में अँगरेजोंने हिन्दुस्तान भेजा। १८३७ में मुस्किलसे दस लाख गज विलायती मलमल हिन्दुस्तानमें आया था, लेकिन दस ही बरस बाद १८४७ में ६ करोड़ ४० लाख गजसे ऊपर मलमल हिन्दुस्तान आया। लेकिन इसी बीचमें ढाका सहर उजड़ गया। वह डेढ़ लाखकी जगह सिर्फ २० हजारकी बस्ती रह गया। इस तरह अपनी कारीगरीके लिए दुनिया भरमें मसहूर हिन्दुस्तान के सहर बरबाद हो गये।"

दुखराम—जोंकोंने बड़ा जुलुम किया भैया?

भैया—बाबाने भी लिखा था—"यह सब देखकर आदमीका दिल बियाकुल हो जाता है। हिन्दुस्तान जो अनगनित पंचायती गाँवमें सान्तीके साथ जिन्दगी बिता रहा था, उसके सारे संगठनोंको जोंकोंने तितर-बितर कर दिया, लोंगोंको कस्टोंके समुन्दरमें झोंक दिया। पीढ़ियोंसे चले आते जीविका कमानेके रास्ते बन्द कर दिये। यह ठीक है, कि गाँवोंका पुराना पंचायती संगठन बहुत सुन्दर था, देखनेमें (दुधमुँहे बच्चेकी तरह) बहुत ही भोला-भाला था। लेकिन यह भी याद रखना चाहिये, कि पूरबी देसोंमें (जोंकोंको) मनमानी करनेमें सबसे बड़ी मदद इसी भोले-भालेपनने दी। इसने आदमीके दिमागको नन्हीं-नन्हीं कोठरियोंमें बन्द कर दिया। गप्पों और झूठे बिस्वासोंको चुपचाप माननेके लिए वहाँके लोगोंको तैयार किया, उन्हें पुराने रवाजोंका गुलाम बनाया। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये, कि एक छोटी-सी जमीनकी टुकड़ीमें ही जब सारी ममता बटुर गई हो, तो बिसाल देसका बिधंस क्यों नहीं होता? इसी छोटी ममताने लोगोंको कितना जुलुम सहने के लिए मजबूर किया। बड़े-बढ़े सहरोंमें भयंकर हत्या करवाई, (जिसमें लाखों बालक-बूढ़े, नर-नारी गाजर-मूलीकी तरह काट डाले गये) हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए, कि यह अपमान-भरा जीवन, मुरदे

कीड़े-मकोड़े का जीवन ही, बिलकुल, जड़ जीवन ही था, जिसको देखकर जंगलियों, अत्याचारियों, सत्यानासियोंको वैसा करनेकी हिम्मत हुई। हमें यह न भूलना चाहिए, कि भारतकी यह (गाँव-गाँवमें) बिखरी छोटी-छोटी जमात भी सैकड़ों जातोंमें बँटी थी, गुलामीके रोग में फँसी थी। जहाँ मानुखका काम है ऊपर उठकर जो भी रास्तेमें बाधाएँ आएँ उनको परास्त करना, वहाँ हिन्दुस्तानियोंको परिस्थितियोंका गुलाम बनना पड़ा। उसीके कारण मानुख समाजको जहाँ बहती गंगाकी धाराकी तरह बराबर बढ़ते रहना चाहिए था, वहाँ वह अचल बनकर जमानेके हाथकी कठपुतली बन गया। मानुख अन्धे जमानेका दास हो गया। जिस मानुखको जमानेका राजा बनना था, वह इतना पतित हुआ कि बानर हनुमान और कपिला गायके सामने घुटने टेकने लगा।"

सन्तोखी—क्यों भैया! बाबाको हनुमानजी की पूजा और गोमूत पीनेकी बात मालूम थी।

दुखराम—खूब मालूम थी सन्तोखी भाई! और बाबाने हम मूढ़ोंके गालपर खूब चपत लगाया। लेकिन यह चपत ऐसे माँ-बापका था, जिसका हृदय भीतर ही भीतर रो रहा हो।

भैया—बाबाने और कहा "हिन्दुस्तानमें अंगरेज जो समाजमें उलट-पुलट कर रहे हैं, उसके पीछे उनका एक बहुत ही नीचा स्वारथ छिपा हुआ है। लेकिन हम पूछेंगे, कि क्या एसियावासियोंके समाजको बिना उलटे-पुलटे मानुख जाति अपने पहुँचनेकी जगह पहुंच सकती है? अगर नहीं पहुँच सकती तो अंगरेजोंने चाहे जितना भी पाप किया, उन्होंने अनजाने ही इस हितकारी उलट-पुलटको करनेमें सहायता की, फिर चाहे (हिन्दुस्तानमें) टूट-टूटकर गिरती हुई पुरानी जिन्दगीको देखकर हमारा दिल कितना ही विकल क्यों न हो जाय, उसके खिलाफ हमारे दिलमें कितनी ही आग क्यों न लग जाय; लेकिन उसने उलट-पुलट करके हिन्दुस्तानका नया इतिहास बनानेमें मदद की है।"

दुखराम—बात तो भैया? बाबाने सच्ची-सच्ची कह डाली, चाहे किसीके गले उतरे या न उतरे।

भैया—बाबाने एक ओर जुगोंसे चले आये हिन्दुस्तानको लाखों गाँवोंमें छिन्न-भिन्न देखकर उसे पूरा कहा; गाँव संगठन और उलट-पुलटको आगेकी भलाईके लिए जरूरी बतलाया। साथ यह भी कहा—अंगरेजोंने तलवारसे हिन्दुस्तानके ऊपर जो एकता जबर्दस्ती लाद दी है, उसे बिजलीके तार और भी मजबूत और बहुत दिन तक रहने वाली बना रहे हैं। अंगरेज सरजन्ट जो हिन्दुस्नानी सेनाको परेड सिखला रहे हैं, उसका संगठन कर रहे हैं; वही हिन्दुस्तानी सेना विदेसियोंके हमलेसे ही देसको नहीं बचाएगी, बल्कि वह देसको छुटकारा दिलानेका काम भी करेगी। अखबार और छापाखाना नया-हिन्दुस्तान बनानेके बड़े ही जबर्दस्त हथियार हैं जो हिन्दुस्तानी अंगरेजोंसे पच्छिमी विद्या सीख रहे हैं, वह राज चलानेके काम और पच्छिमके साइंस में भी चतुर हो रहे हैं, यह भी हित करनेवाला है। भापके इंजनने हिन्दुस्तानसे यूरोप के साथ आने-जानेमें सहायता की है। हिन्दुस्तान के मुख्य-मुख्य बन्दरगाह इंगलैंडके बन्दरगाहों से जुड़ गए हैं, जिसके कारन अब हिन्दुस्तान अलग-बिलग नहीं रह सकता और वह जड़ताईको जड़मूल से उखाड़ फेंकेगा। वह दिन दूर

नहीं है,जब भापसे चलनेवाली रेल जहाज मिलकर इंगलैंडको आठ दिनके रास्ते पर ले आ देंगे। उस समय हिन्दुस्तान भी पच्छिमी देसोंका पड़ोसी देस बन जायगा। बिलायतकी राज करनेवाली जमातने हिन्दुस्तानमें जो कुछ तरक्कीका काम किया है, वह अनजाने और सिरिफ अपने स्वारथसे किया। बिलायती सरदार हिन्दुस्तानको जीतना चाहते थे, बिलायती थैलीसाह (बनिये) उसे लूटना चाहते थे और मिल साह (पूँजीपति) गलाकट्टी कर रहे थे।...अब मिलसाह सारे भारतमें रेलों का जाल बिछाना चाहते हैं और ऐसा करके रहेंगे ।...मैं जानता हूँ कि अंगरेज मिलसाह (पूंजीपति) हिन्दुस्तानमें रेल सिरिफ इसीलिए बिछाना चाहते हैं कि बहुत थोड़े खर्चमें हिन्दुस्तानके कपास और दूसरे अच्छे मालको अपने कारखानों में ले आएँ; अंगरेज ऐसे देसमें कल-मशीनको ले जा रहे हैं जहाँ कोयला और लोहा मौजूद है। फिर कोयला-लोहाके धंधेको आगे बढ़नेसे कौन रोक सकता है ?...हिन्दुस्तानियोंमें ऐसे बहुत लोग हैं जो कल-मशीन के इलिमको समझ सकते हैं, वह पूंजी भी जमा कर सकते हैं, उनमें बड़ा दिमाग भी है; यह इसीसे मालूम है कि गिनती (हिसाब) जैसे इलिममें वे बहुत चतुर होते हैं; उनकी बुद्धि बड़ी तेज है।"

दुखराम—बाबाने देख लिया था कि हिन्दुस्तानी लोगोंकी आँख जरूर खुलेगी और वह अपनी विद्याको अपनी भलाई, अपनी मुकतीके लिए इस्तेमाल करेंगे।

भैया—बाबाने यह भी सोच लिया था कि हिन्दुस्तानको आजाद करने में, उसके आगे बढ़नेमें बिलायतके कमेरोंकी-भी सहायता जरूरी होगी।

दुखराम—बिलायतके कमेरोंमें भी क्या बाबाके माननेवाले लोग हैं ?

भैया—बाबाने उनकी भी आँख खोल दी है दुक्खू भाई ! बिलायतमें एक लाख तो बाबाके पार्टीके खास लोग हैं। वहाँ की जोंकें उस समय बहुत घबरा रही हैं कि लड़ाई खतम होते कहीं उनका भी तखता न उलट जाय। बाबाने ९१ बरस पहले लिखा था— जब तक खुद बिलायत में वहाँ के कमेरे अपने जोंक-राजको हटाकर अपना राज न कायम कर लें या खुद हिन्दुस्तानी ही इतने मजबूत न हो जायँ कि अंग्रं जोंके जुएको उतार फेंकें (तब तक हिन्दुस्तानके लिए वह सुन्दर दिन नहीं आ सकता)। चाहे कुछ भी हो थोड़े हो, या अधिक, दूसरे समयमें वह दिन जरूर आएगा, जब बिसाल मनोहर हिन्दुस्तान देशका नया जनम होगा। वह देस जिसके नरम सुभाव वाले निवासियोंमें आजकी गुलामीमें भी एक तरहकी सांति और अभिमान है। आलसी से दिखाई देने पर भी जिन्होंने अपनी बहादुरी से अंगरेजोंको चकित कर दिया। जिनका देस हमारी भाखाओंका, हमारे धरमों का मूल स्रोत रहा; जिसके जाट अपनी बहादुरीमें पुराने जर्मनों जैसे हैं, जिसके बाम्हन ग्यानमें पुरने यूनानियों जैसे हैं, उस देसका जरूर उद्धार होकर रहेगा।"

सन्तोखी—बाबा क्या हिन्दुस्तानमें आये थे भैया ?

भैया—हिन्दुस्तान नहीं आये थे लेकिन सैकड़ों बरसोंसे अँगरेज लोग हिन्दुस्तानके बारेमें लिख-लिख कर जो ढेर किये थे, उस सबको बाबाने पढ़ा, हिन्दुस्तानसे जानेवाले आदमियोंसे बातचीत की; उसीसे उनको सब बातें मालूम हुईं। हम कहते थे, कि बाबाको असली रोग और दवाका पता लगा। उन्होंने समझा कि रोग हैं यही जोंकें, जिनमें सबसे बड़ी हैं यह पूँजीपति, मिलमालिक, कारखानेवाले जो ७५

पैसे का २०)बनाते हैं और दुनिया पर राज करते हैं। विलायतके मजूरोंने इन जोंकोंसे लड़ाई ठानी। जब पेट काटा जाय, बेकसूर आदमी निकाल बाहर किये जायँ, तो भला वह कैसे चुप रहें? जोंकोंका अपार धन, उनकी पलटन, पुलिस, धरम और पुरोहित सब कमेरोंको पीस देना चाहते थे; लेकिन वे तीस-चालिस बरससे बराबर लड़ते रहे। तोंद पचकती देख जोंकों को कितनी बातें माननी पड़ीं। कमेरोंका बल घटनेकी जगह और बढ़ता गया। बाबाने समझा जोंकोंकी असली दवा यह कल-कारखानेके मजूर हैं। जो वह हजारों लाखों गाँवों में बिखरे रहते, तो जोंकोंका मुकाबिला नहीं कर सकते। अपने कारखानोंको चलाने के लिए जोंकोंने उन्हें सहरोंमें एक जगह जमा कर दिया। यह बड़ी तागत है। जोंकों ही ने मजूरों को अपने स्वारथ के लिए इकट्ठा किया और वही जोंकों को तबाह करेंगे।

दुखराम—हाँ भैया? चटकल-पटकलमें लाखों मजूर काम करते हैं। जब मालिक कोई जुलुम करने लगते हैं तो सब एका करते हैं। दस-दस बीस-बीस दिन काम छोड़ने पर मजूरोंको तो तकलीफ बहुत होती है, लेकिन मालिकोंको झुकना पड़ता है।

भैया—झुकना क्यों न पड़े, जो मजूरोंका एक रुपया जाता है, तो जोंकों का १९ रुपया। लेकिन बाबाने कहा कि मजूरी बढ़वाने और छोटे-मोटे जुलुमको हटवाने से काम नहीं चलेगा, दुनिया भरके किसानों मजूरों—सभी कमेरोंको एका करके जोंकों का राज खतम करना होगा। पुलिस-पलटन, अदालत-कचहरी, कल-कारखाना सबको जोंकों के हाथसे छीन लेना होगा। हवा-पानीकी तरह धरती-धन सब कुछ को सबका साझेका करना होगा; तब जाकरके दुनियाका यह नरक खतम होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया? बाबाने बड़े कामकी बात बतलाई।

भैया—अब सुनो बाबाका बाकी जीवन चरित्तर। ३१ सालकी उमरमें बाबा कहाँ-कहाँकी जोंक-सरकारोंसे बचते लन्दन पहुँचे। और वहीं ६५ बरसकी उमरमें बाबाका देह छूटा। बाबाने अमरीका, यूरप सब जगहके मजूरोंकी जोंकोंसे लड़ने में मदद दी, रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखीं। कोलोनके कंमूनिस्टोंके ऊपर मुकदमा चल रहा था।

दुखराम—कमूनिस्ट कौन हैं भैया?

भैया—बाबाके चेला लोगोंको, बाबाके पार्टीवालोंको कमूनिस्ट कहते हैं। दुनिया भरकी जोंक कमूनिस्टोंसे बहुत डरती हैं। कमूनिस्टोंने कमेरों की लड़ाइयाँ खूब बहादुरीसे लड़ी हैं, अपना सरबस होम दिया है। रूससे जोंकोंका राज उन्होंने ही खतम किया।

दुखराम—तो भैया? हमारे देसमें भी ऐसे कमूनिस्ट होने चाहिएँ। बाबाके चेला हम लोगोंको रास्ता नहीं बतलाएँगे, तो हम कैसे लड़ पाएँगे।

भैया—हमारे यहाँ भी बाबाके चेला हैं दुक्खू भाई? लेकिन ४० करोड़की आबादी में कुछ हजार कमूनिस्ट तो बहुत कम होते हैं न? सरकारने अब भी दो-तीन हजार कमूनिस्टोंको जेलमें बन्द करके रखा है और जोंक और पुलिस दोनों उन्हें फूटी आँखसे भी नहीं देखना चाहतीं; लेकिन वह रकतबीजकी तरह बढ़ते रहेंगे। सहर-दिहात सबमें छा जायँगे। बाबाका पंथ कौन कमेरा है, जिसको पसन्द न होगा?

दुखराम—हाँ भैया ! वह अभागा ही होगा। बाबाने सब दुख-तकलीफ सह-कर हमारे ही फायदाके लिए न काम किया।

भैया—बाबाने कमूनिस्टों के मुकदमेके लिए किताब लिखी, लेकिन छापनेके लिए कागज़ नहीं था। उनके पास एक कोट बच रहा था, उसे भी उन्होंने बन्धक रख दिया।

दुखराम—तो बाबा बिना कोट हीके रह गए ? सुनते हैं, बिलायतमें हाथ चीरनेवाला जाड़ा पड़ता है।

भैया—बाबा कष्ट सहने को तैयार थे। और जेनी माईकी तकलीफको सोचो दुक्खू भाई ! एक तालुकदारकी लड़की, बड़ी लाड़-प्यारमें पली, वह भी बाबाके साथ गली-गली मारी-मारी फिरती रही; लेकिन उसने एक दिन भी अफसोस नहीं किया। बाबा इतने पंडित थे, कि हजार दो हजार कमा सकते थे और अपने बाल-बच्चोंको आरामसे रख सकते थे; लेकिन बाबाने कमेरोंकी सेवाके लिए अपना जीवन दे दिया था। बाबाके दो लड़के चार लड़कियाँ हुईं; लेकिन दोनों लड़के और एक लड़की ज्यादा दिन नहीं जी सके। बीमार पड़ते तो दवाई और पथका पाना मुश्किल होता। बाबाने कमेरोंके लिए गरीबीके जिन्दगी बिताई, जोंकें उनको फूटी आँखों नहीं देखना चाहती थीं। गरीबीके कारन बाबाके तीन बच्चे मर गये; लेकिन बाबाने सोचा, हजारों बरसोंसे जोंकें कमेरोंके करोड़ों बच्चों को मार चुकी हैं, उन्हीं बच्चोंमें मेरे भी तीन बच्चे गये।

सन्तोखी—बाबा-जैसी तपेस्सा कौन करेगा भैया ? दूसरे तपेस्सा करने वाले तो जोंकोंकी जड़में पानी डालते हैं, जोंकोंको मजबूत करते हैं।

दुखराम—बाबाने भी जोंकोंकी जड़में पानी डाला, लेकिन खूब खौलाकर गरम-गरम पानी।

भैया—बाबाके साथी एङ्गल बाबाने भी बड़ी तपेस्सा की। उन्होंने ब्याह नहीं किया, और कमा-कमाकर हर साल साढ़े तीन सौ गिन्नी मरकस बाबाको देते गये। जो एङ्गल बाबाने यह तपेस्सा न की होती, तो बाबाके ऊपर और आफत आती। बड़े बाबाने एङ्गल बाबाको एक चिट्ठीमें लिखा था—'तुम्हारे बिना मैं कभी अपने कामको पूरा न कर सका होता। सिर्फ मेरे लिए तुमने अपनी जबरजस्त बुद्धिको बेकार जाने दिया और गलाघोटू व्यापारी जिनगी अपनायी।'

सन्तोखी—क्या एङ्गल बाबा व्योपारी थे भैया ?

भैया—हाँ, उनके बापका कारखाना था, उसीको एङ्गल बाबाने सँभाला, लेकिन वह कितना ऊब गये थे, यह उनकी इस चिट्ठीसे मालूम हो जाता है—"मैं किसी चीजको उतना नहीं चाहता, जितना कि इस व्योपारी की जिनगीसे भाग निक-लनेको।" बाबाके जीवनमें ही (१८ मार्च १८७१ में) पेरिस के कमेरोंने वहाँसे जोंकोंका राज कुछ महीनोंके लिए उठा दिया। कमेरों की तागत अभी उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंकोंने फिर हजारों मजूरोंको कतल करके अपना राज जमा लिया। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जितना अच्छी तरहसे अपना राज चलाया, उससे यह पता लग गया, कि कमेरे जोंकों को हटा सकते हैं और अच्छी तरह राज चला सकते हैं।

पेरिसके कमेरोंने क्या गलती की थी, इसे बाबाने लिख दिया था। फिर ४६ वर्ष बाद जब रूसके कमेरोंने जोंकोंका राज उलटा, तो उस बखत बाबाकी वही सिच्छा बड़े काम आई। ४१ साल तक कमेरोंकी लड़ाई लड़ते बाबाने आखिर ६५ सालकी उमरमें (१४ मार्च १८८३ को) देह छोड़ा। लन्दन के हाईगेटके कबरिस्तानमें अब भी बाबाकी समाधि है। कौन होगा जो बाबाकी समाधि पर फूल चढ़ानेकी लालसा न रखता हो? बाबाके मरनेपर एङ्गल बाबाने लिखा था—"मानुख जातके पास जितने दिमाग हैं, उनमें सबसे बड़ा दिमाग आज खो गया। कमेरा-दलकी लड़ाई चलती रहेगी, लेकिन वह दिमाग चल बसा, जिसकी ओर फ्रांस, रूस, अमेरिका, और जर्मनीके कमेरे गाढ़के समय आँख दौड़ाते थे और वह दिमाग सदा बहुत साफ दो-टूक सलाह देता था।"

दुखराम—धन्न है भैया! मकरस बाबा धन्न हैं, सती है जेनी माई।

भैया—सती जेनीकी तपेस्साकी बहुत-सी बातें हैं, जिनको सुननेपर आँसू रोकना मुसकिल है। अब दुक्खू भाई, बाबाकी मोटी-मोटी सिच्छा सुनो।

दुखराम—हाँ भैया! जरूर सुनाओ।

भैया—बाबाने पहली बात यह बतलाई कि रोटी, कपड़ा, घर, आदमीको सदासे जरूरी रहे हैं, इनको पैदा करना मानुखका सबसे पहला काम रहा है। मानुख इनके पैदा करनेके लिए नये-नये हथियार, नये-नये ढंग सोचता रहा है, जिससे रोटी-कपड़ा, घरके पैदा करने का ढंग बदलता रहा है। वह पहले सिकार करके जीता था, फिर खेती करने लगा, खेतीसे फिर कारीगरोंकी ओर बढ़ा, कारीगरीसे व्यौपार होने लगा, व्यौपारसे कारखानेके ढंगपर चला आया। पैदा करनेका ढंग जैसे-जैसे बदलता गया, वैसे-वैसे मानुखकी जमात भी बदलती रही और पहिली जमातबन्दी टूटती गई। सिकार और फल जमा करके जीविका करते समय माईका राज और सबका एक परिवार चलता था। लेकिन जब खेती आई, ताँबा आया, तब वह पुराना ढाँचा नहीं चल सकता था। रोटी-कपड़ा वगैरह पैदा करनेके ढंगके बदलनेके साथही मानुख-समाजके ढाँचेको बदलने से रोका नहीं जा सकता। और जब ढाँचा बदलता है, तो उसका कानून आचार-विचार सब बदलता है, आदमीका मन तक बदल जाता है। बाबाने एक जगह लिखा है कि रोटी-कपड़ा इत्तादिके पैदा करनेका ढंग बदल गया। और जहाँ मानुख पुराने ढर्रे को छोड़ना नहीं चाहता, पुराने ही तरहका मालिक-मिल्कियत का ख्याल रखता है, वहाँ तो दोनों का संग्राम छिड़ जायगा।

दुखराम—भैया! थोड़ा समझा के कहो।

भैया—देखो, जब कपड़ा चरखा और करघासे बनता था, घर-घरमें लोग चरखा चलाते थे और गाँवका जुलाहा कपड़ा बुन देता था; उसी तरह बढ़ई, लोहार भी अपना-अपना काम करते थे। तब गाँव अपने काम की करीब-करीब सभी चीजोंको पैदा कर लेता था, सबको चीज भी मिल जाती थी, सबको काम भी मिल जाता था। यह उस समयकी बात है, जब रोटी-कपड़ाके पैदा करनेका ढंग सिरिफ हाथसे किया जाता था। इसके बाद भापकी कल-मसीन बनी। कल-मसीनने इतना सस्ता कपड़ा और चीज तैयार किया, कि हाथकी कारीगरी चौपट हो गई।

दुखराम—यह तो देखा है भैया! हमारे देसके सब जुलाहे करघा छोड़-छोड़ के चटकल-पटकलमें भाग गए।

भैंया—तो अब पौनी-परजा, मालिक-जजमान ओगैंरहवाला गाँवका ढाँचा टूटने लगा कि नहीं ?

दुखराम—बहुत टूट गया भैंया ! और टूटनेके लिए लोग हाय-हाय करते हैं, कल-जुगको दोख देते हैं । लेकिन जान पड़ता भैंया ! यह किसीका दोख नहीं है । पाथर, ताँबा, लोहा, कल-मसीन जैसे-जैसे नई चीज, नया ढंग आदमी के हाथमें आता गया, वैसेही मानुख-जातिका ढाँचा भी बदलता गया । टिटिहिरीके पैर रोपनेसे आसमान ऊपर नहीं टँगा रहेगा ।

भैंया—इसी तरहका एक और भी संकट आया है । कल-मसीनसे अन्न भी बेसी पैदा किया जा सकता है । रूस और अमेरिकामें नई-नई खाद और मोटरका हल लगाकर बिगहा पीछे चालिस-चालिस, पचास-पचास मन अनाज पैदा करते हैं और एक-एक खेतमें नहीं समूचे देसमें । इसी तरह चीनी, कपड़ा, लालटेन दुनियाकी खाने-पहनने और रहनेकी सभी चीजें कल-कारखानों में इतनी पैदा की जा सकती हैं कि सारी धरतीके दो अरब लोग एक सालकी उपजसे दो-दो साल तक खूब आरामसे रहें । लेकिन हो क्या रहा है ? दुनियामें गरीबी बढ़ रही है, लोग और ज्यादा नंगे-भूखे रह रहे हैं ।

दुखराम—इसका कारण तो जोंकें ही हैं भइया ?

भैंया—हाँ, जोंकें ही हैं दुक्खू भाई ? लेकिन उसको इस तरह समझो । अब एक-एक बढ़ई लोहार अपना-अपना हथौड़ा-बसूला लेकर अलग-अलग काम तो नहीं कर सकता । कारखानोंके कारण अब सभी साझेमें एक दूसरेसे मिलकर करना होता है । यह छोटी-सी सुई जो बनकर आती है, वह भी सैकड़ों हाथोंसे तैयार होती है । काम साझेमें—सबको मिलकर करना होता है, लेकिन चीजों की मालिक है जोंक । जोंक कहती है, यह हमारी चीज है, इसलिए हम २०) की चीज बनानेवाले मजूरको ७५ पैसे देंगे, किसानको उसके कपासका १) देंगे । और बाकी दामको वह अपने पास रखना चाहता है । लेकिन सुईवाली जोंक नफेमें सुई अपने पास नहीं रखना चाहती । वह चाहती है कि उसका सब माल बिक जाय । लेकिन बिकनेके लिए पैसा चाहिए । किसानको उसने १) दिया, मजूरको ७५ पैसे दिया, कमेरोंके हाथमें कुल मिलाकर पौने दो रुपया गया । अब बताओ २०) की चीज वह कैसे खरीदें ?

दुखराम—तो भैंया ! यही न हुआ कि जोंकें हमारे पास पैसा भी नहीं आने देतीं और बेसी माल पैदा करके खरीदनेको कहतीं हैं ।

भैंया—हाँ, इसलिए तो जोंकोंका दिवाला निकलता रहता है । जब माल बेसी हो जाता है और खरीदनेवालोंके पास पैसा नहीं रहता, तब भारी सस्ती लग जाती है । याद है न बीस-इक्कीस बरस पहलेकी बात ?

दुखराम—मत कहो भैंया ! उस वक्त तो अनाज इतना सस्ता लग गया था कि बेंचकर जमींदारकी मालगुजारी भी हम बेबाक नहीं कर सकते थे । कितनोंकी जमीन नीलाम हो गई । बड़ी साँसत हुई ।

भैंया—एक ओर लोग सस्ती होने पर भी पैसे बिना कपड़ा नहीं खरीद सकते थे और दूसरी तरफ कपड़ा गोदाममें सड़ रहा था । जब पहिले हीका कपड़ा गँजा हुआ है, तो नया कपड़ा क्यों बनाया जायगा ? जोंकोंने उस मन्दीके दिनोंमें मजूरोंको कामसे निकाल दिया । कारखाने बन्द हो गये ।

सन्तोखी—तब तो भैया ! इन करोड़ों मजूरोंके पास भी पैसा नहीं रहा कि मालको खरीदें। इससे तो माल गोदाम हीमें सड़ेगा न, कौन उसे खरीदेगा।

भैया—इसीको कहते हैं कबीर साहबकी उलटबाँसी 'पानीमें मीन पियासी'। एक ओर उसी अमरीकामें बेरोजगार होनेसे करोड़ों मजूर भूखे मर रहे थे, दूसरी ओर अमरीकाकी जोंकोंकी सरकारने १९३३ में पचास लाख सूअर खरीदकर मरवाकर फेंकवा दिये—भूखोंको खानेके लिए नहीं दिया।

दुखराम—आततायी ? जोंकोंको क्या दाया-माया होगी ?

भैया—डेनमार्क देसमें हर हफ्ता १५०० गाएँ मारकर उनका मांस जमीनमें गाड़ दिया जाता था। अरजनतीन देसमें लाखों भेड़ोंको मारकर नस्ट कर दिया गया ? अमेरिकामें लाखों मन गेहूँको आगमें झोंक दिया गया, जहाजों में भरी नारंगियाँ समुन्दरमें फेंक दी गईं।

सन्तोखी—भैया ! क्या दुनिया बौरा गई।

भैया—दुनियाकी बात मत कहो, सन्तोखी भाई ? दुनिया तो भूखों मर रही है। यह जोंकोंका कसाईपन है। वह सोचते थे कि दो रुपया मन गेहूँ है, जो पचास लाख मन गेहूँ और बजारमें चला आया, तो वह और सस्ता हो जायगा ? फिर नफा कहाँसे मिलेगा; इसलिए पचास लाख मन गेहूँ या पचास लाख सुअरों को बरबाद कर दिया गया, जिसमें कि बाजारमें बाकी जो चीजें वह भेजेंगे, उसका दाम ज्यादा मिलेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ? बाजारमें माल कम और गाहक ज्यादा हों तो दाम चढ़ जाता है।

भैया—यही दाम चढ़ानेके लिए जोंकोंने आदमीके मुँहका आहार, तनका कपड़ा सब चीज बरबाद किया।

दुखराम—और नये गाहक ढूंढ़नेके लिये जर्मन जोंकोंने सैंतीस साल पहिले लड़ाई छेड़ी।

भैया—और पिछली लड़ाई भी जोंकोंने उसी मतलबसे छेड़ी है दुक्खू भाई ! बाबाने कहा था, कि जैसे दुनिया भरकी चीजें सब मिलकर पैदा करते हैं, उसी तरह सबको मिलकर उन चींजोंका मालिक बनना चाहिए, तभी दुनियामें सुख-सान्ती होगी।

दुखराम—मिलकर मालिक बनना कैसे होगा भैया ?

भैया—जैसे दुक्खू भाई ! तुम्हारे घरमें पचास परानी हैं, कोई खेती देखता है, कोई गाय-भैंस देखता है, कोई रसोई बनाता है, मतलब कि परिवारका हर आदमी रोटी-कपड़ा आदिके लिए कोई न कोई काम करता है। घरमें तो कायदा है न, कि सब लोगोंके खाना-कपड़ा इत्तादिका काम किया जाय। अब तुम ऐसा कायदा चलाओ नहीं,—हम तो सबके कामकी मजूरी देंगे और दो रुपयाके कामकी चार आनासे बेसी नहीं। अब इसका फल क्या होगा ? जितना काम लोगोंने किया है, उसका आठवाँ ही हिस्सा मजूरीमें उनके पास होगा, वह सब चीजको खरीद नहीं सकेंगे। अब वही जोंकोंवाली बलाय आएगी कि नहीं ?

दुखराम—हाँ भैया ! आठ भागमें सात भागको खरीदनेके लिए किसीके पास पैसा ही नहीं होगा, तब वह चीज सड़ेगी कि नहीं। लेकिन ऐसा परिवार कहाँ होगा।

भैया—हाँ, यह जोंकें ही कर सकती हैं। मरकस बाबा कहते हैं, कि यह नफाकी बात उठा देनी चाहिए और लोग एक परिवार की तरह साथ ही चीज पैदा करें और साथ ही भोगें।

दुखराम—तब जोंकें कहाँ रहेंगी भैया ?

भैया—इसीलिए तो बाबा कहते हैं, कि जोंकोंका काम खतम हो गया, उन्होंने राजाओं की तागत को नस्ट करके कल-कारखानों का रास्ता दिखला दिया; अब उनका एक दिन भी जीना करोड़ों आदमियोंको भूखों मारने और लड़ाइयों में कतल होने के लिए होगा।

दुखराम—यह बात बहुत पक्की है भैया।

भैया—दूसरी बात बाबाने बताई, कि मानुख जातिमें जबसे जोंकें पैदा हुईं, तभीसे जोंकों और कमेरोंका झगड़ा शुरू हुआ और यह तब तक बन्द नहीं होगा, जब तक कि जोंकें खतम न हो जाएँगी। जोंकें अहिंसा और दयाका ढोंग भले ही करें, लेकिन वह अहिंसा-दया पर कभी विश्वास नहीं करतीं। सौमें पंचानबे कमेरे (मजूर) हैं और पाँच जोंकें हैं। उन्होंने पंचानबे आदमियों को पुलिस-पलटन-जेल के बल पर दबाकर रक्खा है। एड़ी से चोटी तक जोंकें हथियार से लैस हैं, उनका सारा राज-पाट, हिंसा, खून, लूट, झूठ और धोखापर हैं। वे किसी साधू-महात्माके वचनमें आकर गलेमें कण्ठी बाँध लेंगी, यह सोचना पागलपन है। जोंकोंको और बड़े हथियारसे और बड़े संगठनसे और बड़े त्याग से, कल-बलसे पछाड़ना होगा, उनका हथियार छीनना होगा और पूरी तरह मीस-मास देना होगा।

दुखराम—देखता हूँ भैया। मरकस बाबा ने जो भी कहा है, वह एक-एक बात मेरे दिलमें घुसती चली जा रही है। बाबा ने धोखेवाली बात नहीं कही है। सुनते हैं महात्मा गांधी तालुकदारों-जमींदारों, सेठों-साहूकारोंको कंठी पहिनाना चाहते थे और कितने लोग तो कहते फिरते, कि गांधी महात्माने सेर-बकरी को एक जगह पानी पिला दिया। लेकिन मुझे यह बात तो धोखाकी मालूम होती है। बच्चा जब नहीं सोता है, तो माँ लोरी गाती है, जिससे वह सो जाय। मुझे तो यह लोरी ही जैसी मालूम होती है।

भैया—गांधी महात्मा के रास्तेके बारेमें मैं फिर कहूँगा दुक्खू भाई ! और गांधी बाबाने कोई बात नहीं कही। महात्मा-बुद्ध, ईसामसीह और भी सैकड़ों महापुरुख कण्ठी बाँधकर सेरको भेड़ बनानेकी कोसिस करते रहे, लेकिन कोई सफल नहीं हुआ। जोंकोंको कहीं कण्ठ भी है, कि उसमें कण्ठी बाँधी जायगी ? घोड़ा घाससे यारी करेगा तो जिन्दा रहेगा ? जोंकोंको खतम कर देना बस यही एक रास्ता है।

वह देस जहाँ जोंकें नहीं हैं

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देख रहे हो न कैसी-कैसी बात सुननेमें आ रही है। हम लोग समझे थे, कि धनी-गरीब भगवानने बनाया है; अब मालूम हो रहा

है कि यह सब जोंकोंका जाल है। इस जाल-फरेब से जोंकोंको ही फायदा है। बढ़िया खाना खाते और बढ़िया कपड़ा पहनते हैं, और हम लोग जो ढेला फोड़-फोड़कर मर जाते हैं, भर पेट अन्न भी नहीं मिलता।

सन्तोखी—हम लोग छोटी-छोटी दुकान खोलकर जो दिन-रात चिन्तामें रहते हैं, यह भी तो जोंकोंकी ही तावेदारी है। दिन-रात फिकरमें हम मरते हैं और सब नफा जोंकोंके पास चला जाता है। जो चारकी धोती चौदह रुपयापर दूकानदार बेंचता है, तो गिरस्त समझता है कि सब हमें लूट रहे हैं। सब गाली हम लोग सुनते हैं और जिसके पास पौने चौदह रुपया चला जाता है, उसको कोई नहीं पूछता।

दुखराम—वह तो कलकत्ता-बम्बईमें बैठे हुए हैं; उनसे कौन पूछने जायगा? लेकिन मजूर उनकी भी खबर ले रहे हैं। अब मोटी तोंद ज्यादा दिन नहीं चलेगी। अच्छा, भैया रजबली आ गये।

भैया—दुक्खू भाई? कमेरोंकी जीतका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है, उसको समझना-समझाना और भी मुस्किल है। मैं जो कुछ कहता हूँ, जो सोलह आनामें आठ आना भी तुम्हारी समझमें आ जाय, तो बड़ी बात है।

दुखराम—आठ आना नहीं भैया, मैं तो पन्द्रह आना समझ रहा हूँ। बात तो सब याद नहीं रहेगी, लेकिन एक-एक चीज दिलमें बैठती जा रही है।

भैया—याद होनेकी जरूरत नहीं है, बस दिलमें बैठना चाहिए। मरकस बाबाने बतला दिया था, कि पूंजीपतिके राजमें हर दसवें साल भाव गिर जाना, मन्दी पड़ना, करोड़ों मजूरोंका बेकार होकर भूखों मरना, करोड़ों किसानोंका अनाजके सस्ता होनेसे उजड़ जाना, और सबके ऊपर संसार भरको लड़ाईमें झोंक देना यह बातें रोकी नहीं जा सकतीं। इन सबसे बचनेका उपाय यही है, कि जोंकोंकी सरकार को हटाकर कमेरोंकी सरकार बैठाई जाय, और देस भरको एक परिवार बना दिया जाय। बाबाने जो रास्ता दिखलाया था, उसीसे चलकर पेरिसके कमेरोंने जोंकोंको उलट दिया। लेकिन पेरिसके मजूरोंने यह नहीं समझा, कि किसानोंको भी वही दुख-तकलीफ है; उन्हें भी हमें अपने साथ मिलाना है। किसान ज्यादा भोले-भाले होते हैं; गाँव में एक कोनेमें रहते हैं, दुनिया जहानका उन्हें पता नहीं रहता। अलग-बिलग रहनेसे उनका एक करना भी मुस्किल होता है। उनको पचास तरहसे भड़काया जा सकता है। जोंकोंने इसी तरह भड़काया। मजूर बड़ी बहादुरीसे लड़े, लेकिन जोंकोंने सारे फ्रांस भरकी पल्टनको उनके ऊपर झोंक दिया। उसी समय (१८७०-७१) जर्मन जोंकोंने फ्रांसीसी जोंकोंकी सरकारको हरा दिया था, लाखों सिपाहियोंको कैदकर लिया था, लेकिन जैसे ही मालूम हुआ, पेरिसमें मजूरोंने अपना राज कायम कर दिया, तो वह घबरा गई। जर्मन जोंकोंने फ्रांसके सभी कैदी सिपाहियोंको छोड़ दिया, जिसमें कि वह पेरिसमें जाकर मजूरोंके राजको बरबाद कर दें।

दुखराम—एक दूसरे के खूनकी प्यासी जोंकें आपसमें मिल गईं, जैसे ही उन्हें कमेरोंका डर मालूम होने लगा?

भैया—सैंतीस साल पहले जो महाभारत जर्मनोंने छेड़ा था, पता है न, वह जर्मन जोंकोंके फायदाके ही लिए। इस वक्त तक मरकस बाबाके एक परतापी चेला लेनिन पैदा हो गए थे।

दुखराम—लेनिन कौन थे भैया—कहाँके थे ?

भैया—लेनिनका जनम रूसमें हुआ था। मजूरों-किसानोंको उन्होंने मरकस बाबाका रास्ता बतलाया। मजूरोंके ऊपर होनेवाले जुलुमके लिए वह जोंकोंसे लड़ते रहे। जोंकोंकी सरकार और पुलिसने उनके बड़े भाईको फाँसी चढ़ाया, और उनको भी काला-पानी भेज दिया। लेनिन जहाँ भी रहते, वहाँसे कमेरोंको रास्ता बतलाते रहते। जेहलखाना और काला-पानीमें रखकर भी जोंकें उन्हें रोक नहीं सकती थीं। ४६ वर्ष पहिले (१९०५) लेनिन अगुआ बने और कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ तलवार उठाई। उस वक्त इनकी ताकत उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंकोंने दवा दिया। हजारोंको गोली से उड़ा दिया, उनसे भी ज्यादा जेलोंमें ठूंस दिये गये। जोंकें जीत गईं, कमेरे हार गए। लेनिन जोंकोंका एक बारका हारना उनका सदाके लिए खतम हो जाना है, कमेरोंका एकबार हारनेसे कुछ नहीं होगा, वह तो धूल झाड़कर फिर-फिर लड़ते रहेंगे। कमेरे लड़ते हैं रोटी-कपड़े के लिए, रोटी-कपड़ेका जब दुख मिटेगा, तभी न वह लड़ाई करना छोड़ेंगे ?

दुखराम—जोंकोंके राजमें रोटी-कपड़ा सबको कहाँ से मिल सकता ?

भैया—लेनिन महात्माको रूसकी जोंकें जो पकड़ पातीं, तो फाँसी चढ़ा देतीं, इसलिए वह रूससे बाहर चले गये; लेकिन उनके वहुत से साथी देसके भीतर रहकर कमेरोंमें काम करते थे। लेनिन उसको रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखते थे और लोग जोखिम उठाकर उन किताबोंको रूसके भीतर ले जाते थे।

दुखराम—जोखिम क्या भैया !

भैया—पकड़े जाते तो फाँसी-डामलकी ही सजा होती।

दुखराम—किताब कौन इतने खतरेकी चीज थी, भैया।

भैया—मरकस बाबा और उनके चेला लोगोंकी किताबोंसे जोंकें तोप-बन्दूक-से ज्यादा डरतीं। वह समझती हैं, गोला-गंठा तो गरीबोंके लड़कोंके ही पास रहता है। जोंकोंके लड़के थोड़े ही पन्द्रह रुपये के सिपाही बनते हैं ? इसलिए जोंकें समझती हैं, कि जिस दिन गरीबों और उनके लड़कोंको जोंकोंके पापका पता लग जायगा, उस दिन फिर खैरियत नहीं। जब लेनिन महात्मा रूससे बाहर कभी लंडन, कभी फ्रांस, कभी स्वीजरलैंड इत्तादि देसोंमें मारे-मारे फिर रहे थे, उनके साथ उनकी स्त्री कुरुपसकाया (क्रुप्सकाया) भी दुख झेल रही थीं। उसी वक्त १९१४ में जर्मन जोंकोंने अपना माल वेचनेका, कहीं रास्ता न देखकर दूसरी मोटी-मोटी जोंकोंपर धावा बोल दिया। इंगलैण्ड, फ्रांस, और रूस और पीछे अमेरिका एक ओर हुए; जर्मनी-आस्ट्रिया एक ओर हुए। जर्मन जोंकें कमजोर रहीं, और उनके दुसमन जीत गए। लेकिन हमें जोंकोंके हारने-जीतनेकी वात नहीं समझाना है। समझाना यह है कि कैसे रूसमें लेनिन महात्मा और उनके कमेरे साथियोंने जोंकोंका टाट उलट दिया।

दुखराम—हाँ भैया ? यह हमारे बहुत कामकी बात है।

भैया—रूसकी जोंकें जर्मन जोंकोंसे भिड़ रही थीं। नफा-नुकसान तो जोंकोंका था, लेकिन लड़नेवाली जोंकें थोड़े ही होती हैं। जैसे भड़भूजा भाड़में पत्ता झोंकता है, उसी तरह रूसी जोंकें अपने देसके कमेरों और उनके लड़कोंको जर्मन-तोपोंके

मुँहमें झोंकने लगीं। लेकिन जर्मन ज्यादा मजबूत थे। वह रूसियोंको हराने लगे। रूसी जोंकें घबराने लगीं, उन्होंने और कमेरोंको और उनके बच्चोंको लड़ाईमें भेजा। कितनोंको तो बन्दूक भी नहीं दिया।

सन्तोखी—बन्दूक बिना लड़ते कैसे भैया ?

भैया—जोंकोंने कहा कि, वहीं जाके, जो सिपाही मरें, उनकी बन्दूकें ले लो। जोंकोंके वह अपने लड़के नहीं न थे, गरीबोंके लड़कोंको भाड़में झोंकने से क्यों हिचकिचाते ? गरीबोंके बच्चे समझने लगे, जोंकें उनके साथ चाल चल रहीं हैं। उधर लेनिन महात्मा भी किसानों, मजूरों और उनके लड़के सिपाहियों की आँखें खोलने लगे। जोंकों-जोंकोंकी लड़ाईमें नाहक गरीबोंका बध कराया जा रहा है। लेनिन महात्माने कहा कि जवानों ? तुम्हारे दुसमन बाहर नहीं तुम्हारे घर की जोंकें हैं। बन्दूकें खूब हाथमें आ गईं, बन्दूकोंका मोहड़ा फेर दो और घरकी जोंकोंको खतम कर दो।

दुखराम—मरकस बाबाके चेला लेनिन महात्मा भी कम नहीं थे ?

भैया—लेनिन महात्मा बाबाके बड़े लायक चेला थे दुक्खू भाई ? हाँ, तो मजूर-किसान उठ खड़े हुए। उन्हींके लड़के सिपाही थे, सबको वह तेईस बरससे समझा रहे थे। अब (नवम्बर सन् १९१७ में) उनकी बात समझमें आ गई। उस बखत पेतरोग्रात सहर रूसकी राजधानी रहा। उसीका नाम पीछेसे बदलकर लेनिनग्राद हो गया। लेनिन महात्माने पेतरोग्रातमें कमेरोंकी सरकार कायम की। पेतरोग्रात में लाखों मजूर कारखानोंमें काम करते थे। वह लेनिन महात्माको खूब जानते थे और परानसे भी अधिक प्यार करते थे। जब मजूर बन्दूक लेकर अपना लाल झंडा गाड़ रहे थे, तो जोंकोंने पलटन-पर-पलटन उनके खिलाफ भेजी। लेकिन सिपाही अपने भाई-बहनोंको पहचानते थे, वह जोंकोंकी बातमें नहीं आये। वह अपनी बन्दूक लिये दिये कमेरोंके साथ मिल गये। पलटनके अफसर जोंकोंके लड़के थे। लेकिन हजार सिपाहीमें दस अफसर क्या करते ? अफसर सिपाही बन गये और उन्होंने कमेरोंकी पलटनपर गोली चलाई, लेकिन गोली जल्दी खतम होगई और वह भी ठंडे हो गये। फिर जोंकोंने लड़ाईके मैदानसे पलटनें मँगवाईं, और उन्हें कमेरोंके साथ लड़नेके लिए भेजा। पचास-पचास हजार पलटन कूच करती चली आती, लेकिन जहाँ पेतरोग्रात राजधानीकी सीमामें पहुँचती, जेठकी दुपहरियामें मक्खनकी तरह पिघल कर लोप हो जाती।

सन्तोखी—लोप कैसे हो जाती भैया ?

भैया—लोप हो जानेका मतलब है कि सब सिपाही कमेरोंकी पलटनमें मिल गये, अफसरोंमें जिन्होंने तीन-पाँच किया, वह वहीं मार दिये गये, बाकी भाग निकले। कमेरोंके राज सँभालनेकी खबर जहाँ-जहाँ पहुँची, वहाँ-वहाँ जोंकों और कमेरोंका दो दल हो गया और सब जगह जोंकोंको निकाल बाहर किया गया। कमेरोंकी सरकारने तुरन्त कानून बना दिया, कि जितने तालुकदार-जमींदार, राजा-नवाब हैं, उनकी सारी जमींदारी आजसे सारे रूसके कमेरों की हुई। जितने कल-कारखाने हैं, आजसे जोंकें उनकी कुछ नहीं हैं, अब सारे कमेरे उनके मालिक हैं। जितने रेल, जहाज ओगैरह की कम्पनियाँ हैं, वह सब अब कमेरोंकी हैं; जितनी कोयलेकी खानें, तेलकी खानें,

हर तरहकी खानें है, वह सब कमेरोंकी हैं। जितने बंक और उनके पास करोड़ों-अरबोंका खजाना है, वह कमेरोंका है। जोंकोंके जितने महल-कोठा, अटारी, बाग, बँगले हैं, वह सब कमेरोंके हैं।

दुखराम—तो मरकस बाबाने जो बात बतलाई थी, उसे लेनिन महात्माने पूरा कर दिया।

भैया—हाँ, पूरा कर दिया। पेतरोग्रात राजधानीमें आधेके करीब-करीब लोगोंके रहनेका कोई ठौर-ठिकाना नहीं था। लोग सड़ी-गन्दी गलियोंमें रहते थे। लाखों मजूर तो फटे टीन और कनस्तरकी छतों-दिवारोंवाली सूअरकी खोभार जैसी छोटी-छोटी झोंपड़ियोंमें रहते थे। पाँच हाथ लम्बी, चार हाथ चौड़ी झोंपड़ियों में दस-दस आदमियोंका परिवार रहता था। रूसका जाड़ा बहुत कड़ा तिसमें पेतरोग्रात तो और ज्यादा; सरदीके मारे वहाँ नदी, समुन्दर सब जमकर बरफ हो जाते हैं।

सन्तोखी—पत्थर जैसी बरफ?

भैया—सन्तोखी भाई? जो तुम जाड़ामें वहाँ पहुँच जाओ, तो साँस लेनेसे जो भाप नाकसे बाहर निकलेगी, वह पहले पानी बनकर तुम्हारी बड़ी-बड़ी मूँछोंमें समा जायगी और छन भर ही में मालूम होगा कि तुम्हारी मूँछें सीसेके भीतर जमी हुई हैं। इतनी सरदीपर भी मजूरोंको उन्हीं टीनोंकी खोभारोंमें रहना पड़ता। उनके पास आग जलानेके लिए कोयला भी नहीं रहता।

दुखराम—जोंकोंका कदम जहाँ गया, वहाँ नरक छोड़ और क्या होगा?

भैया—कमेरोंकी सरकारने तुरन्त हुकुम निकाला और जोंकोंके बड़े-बड़े महलों और कोठोंको कमेरोंके लिए खोल दिया। उन्होंने जोंकोंसे कह दिया कि जो कमेरोंकी सरकारके खिलाफ हैं, उनके ही ऊपर हम हाथ उठायेंगे। जो जोंकका धरम छोड़कर आदमी बननेके लिए तैयार हैं, उनको हम भाई मानेंगे और काम देंगे। जोंकोंमें जो मानुख बन गये, उनको उन्हींके घरोंकी एक कोठरी दे दी और बाकी मकानमें सूअरकी खोभारसे निकालकर कमेरोंको ला बसाया। कमेरोंका राज कायम होते ही रानियों, तालुकदारनियों और सेठानियोंकी लौंडियाँ काम छोड़कर अलग हो गईं।

सन्तोखी—जब जमीन, मकान, बंकका रुपया और कल-कारखाना सभी छीन लिया गया, तो लौंडियोंको कैसे रखतीं।

भैया—नौकर-चाकर भी जोंकोंको छोड़कर हट गये।

दुखराम—अब रानी भरती होंगी पानी!

भैया—बिना देह हिलाये हरामका पैसा थोड़े ही मिल सकता था? कमेरोंकी सरकारने सबको काम देने का इन्तिजाम किया। जब इङ्गलैण्ड, फ्रांस, अमेरिका, जापान और दूसरे देसोंकी जोंकोंको पता लगा, तो उनकी नींद हराम हो गई। रूस छोटा-मोटा देस नहीं है, दुनिया के छः भागमें एक भाग रूसका है। उसके पूरबी किनारेसे पच्छिमी किनारे तक डाकगाड़ीसे जायँ तो १५ दिन १५ रात लगती है।

दुखराम—बम्बईसे परयाग तो भैया? एक दिन एक रात हीमें चले आते हैं, रूस बहुत भारी देस होगा।

भैया—हाँ, हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंकी धरती इकट्ठा जोड़ी जाय, तो रूसके बराबर होगी। इसलिए बाहरी देसोंकी जोंकें बहुत घबराईं, लेकिन साल भर तक वह बहुत नहीं कर सकीं, जब जर्मनी हार गया, तो जीतनेवाली सारी जोंकें इतनी घबराईं, जितना कंस भी कन्हैयाके पैदा होनेसे नहीं घबराया होगा। उन्होंने अपनी फौज, गोला-बारूद सब लेकर बोलसेविकोंके ऊपर धावा बोल दिया।

दुखराम—बोलसेविक कौन हैं भैया ?

भैया—रूसमें मरकस बाबाके चेलोंको बोलसेविक कहा जाता है।

दुखराम—तो बोलसेविक भी कमूनिस्तोंकी तरह हम कमेरोंके आदमी हैं ?

भैया—बोलसेविक और कमूनिस्त एक ही हैं। चर्चिल उस वक्त विलायतका युद्ध-मंत्री था, वह तो बोलसेविकोंको कच्चा खा जाना चाहता था।

दुखराम—यही चर्चिल न भैया ? जो लड़ाईके समय विलायतका महा-मंत्री था।

भैया—हाँ वही जो चाहता था, कि परलय तक हिन्दुस्तानकी छाती पर कोदो दरें। उसने भी अपनी पलटन और गोला-बारूद रूसमें उतारी। फ्रांसने भी अपनी पलटन भेजी। अमेरिका ने भी। जापानने भी। चौदह बादशाहों ने अपनी-अपनी पलटन कमेरोंकी सरकारको बरबाद कर डालने के लिए रूस भेजी ? क्यों भेजा ? क्या रूसके कमेरे किसी की एक अंगुल भी जमीन लेना चाहते थे ?

दुखराम—दुनियाँ भरकी जोंकों ने समझा, कि जो धरती के छः भागोंमेंसे एक भाग की जोंकों को खतमकर कमेरों ने अपना राज्य कायम कर लिया, तो बाकी पाँच भाग के कमेरोंका भी मन बिगड़ जायगा, फिर बकरी की माँ कै दिन खैर मनायेगी ?

भैया—बड़े संकट की बेला थी। दुनिया भर की जोंकें गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही थीं, अखबारों में छाप रही थीं, कि बोलसेविक अधरमी हैं, बच्चों को मार डालते हैं, बूढ़ोंको नहीं छोड़ते। उन्होंने सभी औरतों को बेसवा बना दिया, मसजिदों-मन्दिरों को तोड़ दिया, हराम-हलाल की बात उठा दी इत्मादि हजारों झूठ फैलाये जाने लगे।

दुखराम—हिन्दुस्तानमें भी भैया वह यही बात करेंगे, जोंकें समझती हैं कि कमेरे मूरख-अनपढ़ होते हैं, उन्हें झूठ-साँच कहकर मरकस बाबाके रास्तेके खिलाफ देंगे। भैया ! हम लोगों को बहुत सजग रहना होगा। तुम भगवानकी बात को दबा देते रहे, अब उसका फायदा मुझे मालूम हो रहा है। भगवान और धरम से हमें पहले नहीं झगड़ना है। पहिले हमें जोंकों से निपट लेना है। कमेरे भाई बहुत दिनों से जाल में फँसे हैं, हम लोग धरम और भगवानके खिलाफ बोलनेमें ही ताकत लगा देंगे, तो जोंकें उन्हें बहकाने लगेंगी।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! सबकी जड़ यही जोंकें हैं, जड़ काटना अच्छा है कि पत्ता नोचना अच्छा ?

दुखराम—जड़ काटना अच्छा है भैया ?

भैया—लेकिन जोंकें सभी कमेरों की आँखों में धूल नहीं झोंक सकतीं, बिलायत के मजूरोंको जब मालूम हुआ कि हमारे देसकी जोंकें रूस के कमेरा राजका सत्यानास करने के लिए तोप-बन्दूक, गोला-बारूद भेज रही हैं, तो उन्होंने जहाज पर माल लादने से इनकार कर दिया। खलासियों-मल्लाहोंने जहाज छोड़ दिया। फ्रांसकी पलटनें लड़ने के लिए रूस पहुँचीं और सभी कमेरोंने जान जोखिममें डालकर फ्रांसीसी सिपाहियों के पास पहुँच सब बात कही, तो पलटनें बिगड़ चलीं। अँगरेजी पलटनोंमें भी यही बात दिखाई देने लगी। रूसी कमेरे अब जोंकों के लिए नहीं अपने लिए लड़ रहे थे, इसलिए जानपर खेलना उनके लिए खेल था। बाहर की जोंक सरकारों ने समझ लिया, कि अपनी पलटन को जो वहाँ लड़ने के लिए भेजा, तो बोलसेविकोंकी बीमारी हमारे देस में चली आयेगी। उन्होंने अपनी पलटनें लौटा लीं। लेकिन हाथपर हाथ धरकर बैठते कैसे ? रूसी जोंकोंके कितने ही जरनैल और बच्चे कमेरों के राज से जहाँ-तहाँ लड़ रहे थे। बड़े-बड़े महन्त भी तो जोंक ही हैं न ? उन्होंने धरमके नाम पर कितने ही किसानों को बहकाया। विलायत और दूसरे मुल्कोंकी जोंक सरकारोने सोचा, कि रूसी जोंक जरनैलों और उनके आदमियों के ही सिखण्डी बनाकर टट्टीकी आड़ में सिकार करें। चर्चिल और दूसरे भी देशों के जोंकराजोंके मंत्रियोंने जोंकें-जरनैलोंको रुपये-पैसे, गोला-बारूद, हवाई जहाज आदि से खूब मदद की। जोंकें आखिर रूसमें रह न सकीं; लेकिन चलते-चलते भी उन्होंने रूसको भयानक नरक बना दिया, सहर और गाँव तबाह कर दिये। जोंक जरनैलोंने औरतों और बूढ़ोंपर दिल खोल कर हाथ साफ किया।

दुखराम—वह तालुकदारों, राजा-नवाबों, सेठ-साहूकारोंके लड़के थे न ? वह सोच रहे होंगे कि अब हमें महल और अप्सराएँ फिर कहाँ मिलेंगी ?

भैया—हाँ, और यह बात सभी जगह दुहराई जायगी। जोंकें जल्दी हार नहीं मानेंगी। जोंक-जरनैलोंने खेती बरबाद कर दी, अनाज जला दिया। बाहरके किसी मुलुकसे कमेरोंकी सरकार कोई चीज न मँगा ले, इसके लिए बिलायत और दूसरे मुलुकोंके जहाज पहरा देते थे और जहाँ कोई जहाज कमेरोंके लिए आता या जाता दिखाई देता उसे डुबा देते। जितने लड़ाईमें नहीं मरे थे, उससे कई गुना ज्यादा आदमी-बच्चे-औरतें भूख के मारे मर गये—एक करोड़ से ज्यादा आदमी मरे।

दुखराम—जब बिना लड़ाईमें बंगालमें साठ लाख आदमी बलि चढ़ गये, तो वहाँ के बारेमें क्या पूछना है।

भैया—पाँच बरस तक (१९१७-२२) रूसके कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकों और बाहरवाली जोंकोंके साथ लोहा लिया। लाखोंने हँस-हँस कर जान दी, अन्त में जयमाला कमेरोंके गलेमें पड़ी। लाल झण्डा अचल हो गया और लाल पलटनके नामसे जोंकें घबड़ाने लगीं।

दुखराम—लाल झण्डा और लाल पलटन क्या है भैया ?

भैया—लाल झण्डा तुमने देखा नहीं है दुक्खू भाई ! कलकत्ताके मजूर भी जब कोई अपना जलसा या सभा करते हैं, तो लाल झण्डा ही लेकर चलते हैं !

दुखराम—देखा तो था भैया, लेकिन मैंने समझा था महाबीरी झंडा है।

भैया—तुम्हारा चटकलके मुसलमान मजूर उस झंडे के साथ-साथ थे कि नहीं ?

दुखराम—थे भैया ! जुम्मन काका सुकरू भैया बहुतसे थे । और अब मुझे समझ में आता है कि उस झंडे पर महावीरजीकी मूरत नहीं थी ।

भैया—कमेरोंका झंडा लाल और चौकोर होता है । रूसके झडे पर हँसिया और हथौड़ा का चिन्ह बना रहता है । हँसिया है किसानों का हथियार और हथौड़ा है मजूरोंका । झण्डेका लाल रंग कमेरों का खून है ।

दुखराम—अब मालूम हुआ लाल झण्डे का मतलब । हमें भी अपने झंडे को खून से लाल करना होगा । भैया, यह लाल रंग कमेरोंका अपना लाल रंग है न ?

भैया—हाँ, अपना रंग है । इसी वास्ते कमेरोंकी पलटनका नाम है लाल पलटन ।

दुखराम—उस दिन भैया ! तुमने अखबार में पढ़कर सुनाया, कि लाल पलटनके सामने भागते-भागते जर्मन जोंकोंकी फौजें अपने घर में घुस गईं ।

भैया—हाँ, लाल फौज उनके घर में घुसकर जोंकों और उनकी सेनाका संहार करती रही है । रूसमें १८२ कौमें बसती हैं ।

दुखराम—तो वहाँ एक खोम नहीं है ।

भैया—एक खोम नहीं है, लेकिन कमेरों का राज्य है न, इसलिए सभी १८२ खोमें मेल से रहती हैं । बाहरकी जोंकोंने बाकी खोमोंको बहकाने में कोई कोसिस नहीं बाकी रखी । किसी को मुसलमान कहके बहकाया, किसीको किरिस्तान कहकर, किसी को यहूदी कहकर, किसीको बौद्ध कहकर अलग करना चाहा, लेकिन कमेरे-कमेरे सब एक हो गये । लेनिन महात्माकी पारटीने लड़ाईसे पहिले ही बात पक्की कर दी थी, कि रूसमें १८२ खोमें हैं, १८२ भाषा हैं, चार-चार धरम हैं, काले लोग भी हैं, गोरे लोग भी हैं, लेकिन कोई छोटा-बड़ा नहीं है, सब बराबर हैं । जमीन-मकान, कल-कारखाना, रेल-खाना सब १८२ खोमोंके हैं । जो किसी खोम को दबाया जाय, तो वह जब चाहे तब अपना देश अलग कर सकती है ।

दुखराम—दिल साफ था भैया ! छल-कपट की कोई बात नहीं थी ।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई १८२ खोममेंसे किसी ने अलग होने का नाम नहीं लिया । बल्कि पाँच खोम बाहर से आकर मिल गई ।

दुखराम—बड़ा भारी परिवार है भैया ।

भैया—बीस करोड़ का परिवार है और सब एक दूसरे के वास्ते परान देते हैं । लड़ाई-झगड़ा करना खून चूसनेवाली जोंकों का काम है, कमेरों को तो खूब मेहनत करके अधिक अन्न उपजाना, अधिक कपड़ा पैदा करना, अच्छा घर बनाना, सबके पढ़ने-लिखने का, दवाई-दरपन का इन्तिजाम करना है ।

दुखराम—जिसमें सब खुसी रहें, कहीं नरकका निसान न रह जाय । दुनिया भरकी जोंकोंके मुँह पर कालिख पुत गया न भैया ।

भैया—कालिख तो पुत गया, और उनका दिल भी थरथर काँपने लगा । वें समझने लगीं, कि जब तक रूसमें कमेरों का राज रहेगा, तब तक हमारी जान हर

वक्त खतरेमें है। लेकिन महात्मा पर उन्होंने गोली चलवाई, घाव तो भारी था, लेकिन उस वक्त वह बच गये, तो भी वह दिन पर दिन कमजोर होते गये, और कमेरोंके राजके कायम होनेसे सात बरस बाद (जनवरी १९२४) में मर गये।

दुखराम—हत्यारे पापी।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई मरकस बाबाका रास्ता इतना कच्चा नहीं है, कि एक नेताके मार देनेसे वह खतम हो जायेगा। लेनिन महात्माने रूस के कमेरोंको सिच्छा दी थी कि एक-एक कमेरा नर या नारी को राज चलानेका ढंग सीखना होगा। कमेरे लेनिन महात्माकी एक-एक बात पर जान देनेके लिए तैयार थे। रूसकी जोंकको तो अब कोई आसा नहीं रह गई थी, इसलिए बाहरी देसोंकी जोंकोंने दूसरा रास्ता लेना चाहा। रूसके कमेरों की बातको सुनकर हुँगरी देसमें भी कमेरों का राज कायम हुआ। लेकिन इंगलैण्ड, फ्रांस और अमेरिकाकी जोंकोंने उसे दबा दिया। इटलीमें भी जब कमेरोंने जोर लगाया, तो राजा-तालुकदार, सेठ-महाजन काँपने लगे। उन्होने एक गुण्डेकी पीठ ठोकी, जिसका नाम मुसोलिनी था और राजकी लगाम उसके हाथमें दे दी। मुसोलिनी ने कमेरोंका पच्छ लेनेवाले एक-एक आदमीको चुन-चुनकर मारा। बिलायती जोंकें खूब खुश हुईं, उनके बड़े-बड़े मन्त्री तक मुसोलिनीको बधाई देने इटली गये। मुसोलिनीने लाखों कमेरों और कमुनिस्टोंके खूनकी होली खेली, लेकिन दुनियाकी जोंकोंने मुसोलिनीको महापुरुष और क्या कह-कह कर तारीफ की। जर्मनीके भी कमेरे जोंकोंके पीछे पड़े। इसको देखकर भीतर और बाहरकी जोंकें खूब घबराईं, वह चारों ओर आँख फाड़-फाडकर सहारा ढूँढ़ने लगीं। जब जर्मनीमें भी मुसोलिनी की तरहका एक दूसरा गुण्डा हिटलर पैदा हो गया, तो जोंकोंका दिल ठंडा हुआ। बिलायतकी जोंकोंने हिटलरकी हिम्मतको खूब बढ़ाया। हिटलर कहता था कि दुनिया भरके सबसे बड़े दुसमन यही बोलसेविक हैं।

दुखराम—दुनिया भरके दुसमन नहीं, जोंकों के दुसमन हैं?

भैया—लेकिन दुक्खू भाई? सच्ची बात वह कैसे कहता? जर्मनी के करोड़पति पूंजीपतियों ने हिटलर के लिए थैली खोल दी, तालुकदार पहले कुछ सन्देह करते थे।

सन्तोखी—तालुकदार क्यों सन्देह करने लगे? पूंजीपति और तालुकदार तो एक ही तरहकी जोंकें हैं।

भैया—बिलायतमें जैसे बड़े-बड़े जमींदार, बड़े-बड़े पूंजीपति, कारखानेदार भी हैं, जर्मनी में अभी उतना नहीं हो पाया था। जर्मनीमें नवाब-तालुकदार अपनी अकड़में रहते थे और उनमेंसे बहुत कम कारखानेदार बनना चाहते थे। कारखानेदार पूंजीपति हिटलरकी पीठपर थे, इससे वह समझने लगे कि कहीं पूंजीपतियों का पलरा भारी न हो जाय। पूंजीपतियोंके पास जो करोड़ोंके कारखाने थे, उनके पास रुपये का बल था; तो जर्मनी के तालुकदार नवाबोंके हाथमें सारी सेना थी। जर्मनी फौजके बड़े-बड़े अफसरोंमें सभी और छोटोंमें से भी अधिक तालुकदार घरानेके लड़के थे। इधर पूंजीपतियों और तालुकदारोंमें अभी गठबन्धन नहीं हो पाया था, उधर कमकरोंकी ताकत बढ़ रही थी। बाहर की जोंकोंने भी समझाया, तालुकदारोंने भी झख

मारा, और कमेरोंके भारी खतरे को देखकर जर्मनीके प्रेसीडेन्ट एक बड़े तालुकदार हिन्डनबर्गने हिटलरके हाथमें राज दे दिया। अब गुण्डा-राज पूरी तौरसे अपना रूप दिखलाने लगा। कमेरों की सभाओं और जमात-बन्दीको खूनी हाथों से बन्द कर दिया गया। गोली और फाँसीसे मारे जानेवालोंकी गिनती नहीं हो सकती थी। हजारों हजार मरद-मेहरारू नरकसे भी बुरे जेलों में डाल दिये गये, जहाँ उनमेंसे अधिक भूखे रहकर या पागल होकर मर गये।

दुखराम—तो हिटलर सबसे बड़ा खूनी निकला भैया! और एक दिन एक सफेद टोपीवाले बाबू हिटलरको देवता बना रहे थे।

भैया—वह क्या, दुनिया भरकी जोंकें हिटलरको देवता बना रही थीं। यह तो अँगरेज, फ्रांसीसी और अमेरिकावाली जोंकोंपर जब हिटलरने हल्ला बोल दिया, तब उसे गाली देने लगे। लेकिन हिटलर को मजबूत करनेमें सबसे बड़ा हाथ विलायतकी जोंकोंका था। उन्होंने उसे खोलकर धन और बरदान दिया।

सन्तोखी—तो भैया, सिउजीसे बरदान पाकर भस्मासुर उन्हींके सिरपर हाथ रखने चला?

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई! हिटलर ने जर्मनीके लोगों का कान भरना शुरू किया कि भगवानने नीली आँखों और भूरे बालोंवाली जातिको ही दुनिया में राज करने के लिए पैदा किया। ऐसी जाति जर्मनीसे बाहर कहीं नहीं। जर्मनी ही वह आर्य जाति है, जिसे भगवानने दुनियाका राजा बनाया।

सन्तोखी—तो हिटलर अपने को अरिया कहता है भैया।

भैया—हाँ, वह अपनेको अरिया कहता है और (सतिया) (स्वास्तिक) का चिन्ह अपने झंडे पर लगाता है।

सन्तोखी—अब पता लगा, उस दिन महासय भड़ामसिंह उपदेसक बड़े जोर-जोरसे कह रहे थे, कि जर्मनीने भी अरिया धरमको मान लिया।

भैया—लेकिन महासय भड़ामसिंहको यह मालूम नहीं है कि हिटलर हिन्दुस्तानियोंको काला पसु जैसा मानता था, उसने अपनी किताब में लिखा कि हिन्दुस्तानी लोग सिरिफ गुलाम रहने के लिए पैदा भये हैं। वह तो फ्रांस और इंगलैंड जैसे गोरे-गोरे लोगोंको भी बरनसंकर कहता था।

दुखराम—बड़े बड़े बहे जायँ गरहा कहै कितना पानी, भड़ामसिंह अरिया समाजी हैं और हिटलर अरिया है। छिः! छिः!! भड़ामसिंह समझा होगा कि हिटलर और जर्मनीके अरिया बनानेकी बात कहनेसे सारा हिन्दुस्तान अरिया समाजी बन जायगा।

भैया—हिटलर जर्मनीके लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकने के लिए यह झूठी-मूठी बात गढ़ी थी। पहली लड़ाईमें जर्मन हार गये थे, हिटलर ने हजारों स्वयंसेवकोंको भूरी उरदी पहनाकर सड़कोंपर परेड कराना सुरू किया। जोंकों और उनके पिट्ठुओंने सोचा, कि राजा विलियम तो दुम दबाकर भाग गया, क्या जाने अब हिटलरके हाथसे जर्मनीका भाग फिर पलटे। इसमें कमेरोंके नेताओंने विश्वासघात करके मदद दी।

दुखराम—कमेरोंके नेताओंने कैसे धोखा दिया भैया ?

भैया—इसमें हमेसा खतरा रहता है दुक्खू भाई ! मरकस बाबा और लेनिन महात्मा दोनों कह गये हैं, कि कमेरोंको अपने नेताओंकी सदा परख करते रहना चाहिए । जोंकोंके पास करोड़ोंका धन है, वह लाखोंका घूस-रिसवत दे सकती हैं । इसलिए जो कमेरे सजग नहीं रहेंगे, तो बेईमान नेता उनको धोखा दे देंगे । बिलायतमें ऐसा ही हो रहा है । मजूर-नेताओंको हिन्दुस्तानके कमेरोंका ख्याल होना चाहिए था, क्योंकि हिन्दुस्तान और बिलायत दोनों जगहके कमेरे एक ही नाव पर बैठे हुए थे । जो बिलायतके कमेरोंने अपने यहाँ जोंकोंका राज खतम किया, तो उनके पिट्ठू हिन्दुस्तानमें राज नहीं कर सकते । जो हिन्दुस्तानपर जोंकोंका राज मजबूत रहा तो बिलायतके कमेरे आजाद नहीं हो सकते । चौदह ही बरस पहले हमने असपेन देसमें देखा कि जब वहाँके कमेरे जोंकोंका राज खतम करने लगे, तो असपेनकी गोरी जोंकोंने मराको (अफरीका) की काली फौज लेकर असपेन कमेरोंपर धावा बोल दिया और जोंकोंका राज फिर कायम किया ।

सन्तोखी—तो भैया ! तुम समझते हो, कि जो कभी बिलायतके कमेरे अपने यहाँसे जोंकोंका राज नहीं हासिल करते तो विलायती जोंकें यहाँसे हिन्दुस्तानी फौजको अपने भाइयोंके साथ लड़नेके लिए ले जातीं ?

भैया—कमेरे जोंकोंके भाई-वन्द नहीं हैं । जहाँ वे अपना महल, कल-कारखाना, करोड़ों रुपया हाथसे निकलते देखेंगी, तो जानते हो वे चुप बैठी नहीं रहेंगी । वह कोई बात उठा न रक्खेंगी ।

दुखराम—हाँ भैया ! जोंकोंको न कोई लाज-सरम न दया-माया; उनके लिए तो टका ही भगवान है ।

भैया—जर्मनीके कमेरोंके नेताओंमें कुछने तो अपनेको जोंकोंके हाथमें बेच डाला, और कुछ हिजड़े थे । वह मरकस बावाके नाम की माला जपते थे, इसलिए बहुतसे कमेरे धोखेमें पड़ गये । एक बार कमेरोंके हाथमें राज आ गया तो उनको चाहिए था कि जोंकोंका सब कुछ छीन लेते, उन्हें पीस-पीस कर रख देते लेकिन नकली सियारोंने कहना शुरू किया कि जल्दी मत करो, बहुत खून-खराबी होगी । धीरे-धीरे सब हो जायगा । जर्मनीमें कमूनिस्त भी थे, लेकिन कमेरोंके दूसरे नेताओंने कमेरोंके भीतर फूट डाल दी थी । सब एक नहीं हुए, लोग कितने बरस तक इन्तजार करते !

दुखराम—और बीचमें जोंकें चुप नहीं रही होंगी भैया !

भैया—चुप कैसे रहतीं ? उनके मरने-जीनेका सवाल था । उधर हिटलरने जोंकोंके पैसेसे अपना बल बढ़ाया, इङ्गलैंडकी जोंकोंसे खूब मदद मिली । अन्तमें तालुकदारोंने भी राज उसके हाथोंमें दे दिया । राज हाथमें आते ही उसने अपनी सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया । उसने कहा—मक्खन खानेसे बन्दूक रखना अच्छा है । फ्रांसकी जोंकें कुछ घबराईं क्योंकि पिछली लड़ाईमें जर्मनीने उनका बहुत नुकसान किया था, लेकिन बिलायतकी जोंकोंका हाथ बराबर हिटलरकी पीठपर रहा । उनको यह ख्याल नहीं था कि कहीं हिटलर हमारे ऊपर न दौड़ आये । हिटलरने राज

सँभालते ही कमेरोंको बेदरदीसे दबा दिया लेकिन बिलायतकी जोंकोंकी नजर रूसके कमेरोंपर थी। उन्होंने समझा था कि जर्मनीमें सात-आठ करोड़ आदमी रहते हैं, जो हिटलरने सबको तैयार करके रूस पर हमला कर दिया, तो बोलसेविकोंका राज नस्ट हो जानेसे दुनिया भर की जोंकें चैनकी बन्सी बजायेंगी। लेकिन रूसके कमेरोंका नेता इस्तालिन वीर गाफिल नहीं था।

दुखराम—इस्तालिन वीर कौन है भैया !

भैया—लेनिन महात्माका सबसे लायक चेला। लेनिन महात्माके मरनेपर उसीको रूसके कमेरोंने अपना अगुआ माना। इस्तालिनका मतलब है, लोहा फौलाद।

दुखराम—तो इस्तालिन वीर फौलाद ही जैसा होगा भैया !

भैया—उसका मनसूवा फौलाद ही जैसा है दुक्खू भाई ! और उसके ऐसा दूर देखनेवाला तो आज दुनियामें कोई नहीं। उसने रूसके कमेरोंसे कहा, दुनिया की जोंकें चार बरस तक आपसमें लड़कर बहुत कमजोर हो गईं, उन्होंने कमेरोंके राजाको खतम करना चाहा, लेकिन वह उसे कर न सकीं। तो भी जैसे ही मौका मिलेगा वैसे ही वह कमेरोंके राजका गला घोटने लिए एक होकर दौड़ पड़ेंगी।

सन्तोखी—फिर इस्तालिन वीरने क्या इन्तिजाम किया भैया ?

भैया—रोटी, कपड़ा और पढ़ने-लिखनेके साथ-साथ अपने देसको कल-कारखानासे इतना मजबूत कर दिया, जिसमें जोंकोंके हमला करनेपर बाहरका मुँह ताकना न पड़े। पहिले तो राज हाथमें लेते ही लेनिन महात्माने और कामों के साथ यह काम जरूरी समझा कि रूसमें जितने नर-नारी हैं उनमें कोई अनपढ़ न रह जाय। लेकिन पढ़ाई कौन भाखामें हो। दूसरेकी भाखामें पढ़ाई हो तो भाखा ही सीखनेमें बहुत दिन लग जायँगे। लेनिन महात्माने कहा कि हमारे यहाँ १८२ खौम हैं। सौमें नब्बे, पंचानवे अनपढ़ हैं; लेकिन कोई खौम गूँगी नहीं है।

दुखराम—एकाध आदमी गूँगा हो सकता है, सारी की सारी खौम गूँगी कैसे होगी ?

भैया—हाँ, उन्होंने कहा कि एकसौ बयासी खोमोंकी सबकी अपनी बोली है। बस जो बोली जो बोलता है, उसे उसी बोलीकी किताब पढ़ाना चाहिए। कमेरा राजसे पहले पाँच-छ: खोमों को छोड़कर किसीकी बोलीमें कोई किताब नहीं लिखी गई, न उनका कोई अच्छर था। पंडितोंने हरेक अवाजके लिए अच्छर चुना और फिर इसके बाद किताब लिख-लिखकर छापने लगे।

दुखराम—अपनी भाखा हो, तब क्या सीखनेमें देर लगेगी भैया ! दूसरेकी भाखामें पढ़ाई करनेका नतीजा देख रहे हो न, हम चार दरजा हिन्दी पढ़े हैं ? लेकिन घरमें तो हिन्दी बोलते नहीं; हमारी अपनी बोली है, उसीको बोलते हैं। और बड़ी मीठी बोली है भैया ! हम लोग जो बोली बोलते हैं, इसका नाम क्या है भैया ?

भैया—आजमगढ़, गाजीपुर, बनारस, मिर्जापुर जौनपुर, ये सब पुराने जमानेमें कासी-देश कहा जाता था। इसलिए हमारे यहाँकी भाखाको कासिका कहना चाहिए।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया, कासिका बोली में पढ़ाई होने लगे, तो क्या कोई अनपढ़ रह जायगा ? खाली अच्छर सीखना है। और अच्छर तो आदमी तीन

दिनमें सीख सकता है, लेकिन महतिमाने ठीक कहा भैया ! कि कोई खोम गूँगी नहीं है। लेकिन हम लोगोंको गूँगा बना दिया गया । हँसते, रोते, बोलते, गाते हैं हम अपनी कासिकामें और हमको पढ़ाई जाती है अरबी-फारसी भाखा ।

भैया—हिन्दी पढ़ना खराव नहीं है दुक्ख् भाई ! लेकिन सुरूहीसे अपनी भाखाको छुड़ाके हिन्दी पढ़ानेका यही नतीजा होता है कि लड़के मिडिल पास कर जाते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी लिख सकते हैं न हिन्दीकी बड़ी-बड़ी किताबें समझ सकते हैं। आठ बरस पढ़ना अकारथ ही गया न ?

सन्तोखी—अपनी भाखा में पढ़ाई होगी तभी भैया, कोई मरद-औरत अनपढ़ नहीं रहेगा और सब किताब, अखवार पढ़-समझ लेंगे ।

भैया—लेकिन महात्माने सोचा कि अव हमारा राज जोंकों का राज नहीं है। कमेरा लोगोंको अपना राज चलाना है और जो कमेरा मरद-औरत अनपढ़ रहेंगे, तो राज-काज कैसे चलायेंगे ? इसीलिए उन्होंने पंडितोंको इस कामके लिए बैठा दिया। उन्होंने रोमन अच्छर क-ख बनाया और किताबे छाप-छाप कर स्कूलोंमें भेजना सुरू किया। लेनिन महात्मा और इस्तालिन वीरका कहना सुनते ही समूचे ही देसके लोग विद्दारथी वन गये । सत्तर सालके बूढ़े-वूढ़ियों तकने अपने पोतों के साथ बैठकर अच्छर सीखा ।

दुखराम—अपनी बोलीमें जो पढ़नेका इन्तजाम नहीं हुआ होता, तो बूढ़े-बूढ़ियों को छोड़ जवानोंको भी पढ़नेकी हिम्मत न होती । हमारे यहाँ देखो न, अपनी भाखाको तो कोई पूछता ही नहीं, हिन्दी पढ़ाई जाती है, लेकिन वह भी नाम करने के लिए, नहीं तो बड़ी-बड़ी पढ़ाई तो अँगरेजी में होती है ।

भैया—और अँगरेजी चौदह बरस पढ़नेके वाद भी वहुत थोड़े ही आदमी लिख-वोल सकते हैं ?

दुखराम—हमको तो मालूम होता है, जोंकें हमें पढ़ने देना नहीं चाहतीं । अपनी भाखामें पढ़ाई हुई तो सव मरद-औरत पढ़ जाएँगे, तब वह दुनिया जहानकी बात जानने लगेंगे, फिर उनकी आँखोंमें धूल कौन झोंकेगा ? हम लोग तो भैया, अपने ही देसमें पराए हो गए हैं । न थानामें हमारी बोली, न कचहरी में, न स्कूलमें, न इस्टेसनमें, बेसी तो अँगरेजी ही है। फिर जो हिन्दी-उर्दू है, उसमें जो चार आना भी हम लोग समझ जायँ, तो धन भाग है । रूसमें तो ऐसा नहीं होगा भैया !

भैया—वहाँ चार आना नहीं सोलहों आने समझ जाते हैं दुक्खू भाई ! जौन इलाकामें जो बोली लोग बोलते हैं, वहाँ उसी बोलीमें इसकूल लगता है। थाना, डाकखाना, कचहरी, इस्टेसन सब जगह वही बोली चलती है। अखबार भी उसी बोलीमें छपते है, सिनेमा भी उसी बोलीमें चलता है। जो कोई दूसरी बोली भी सीखना चाहता है, उसके सीखनेका इन्तिजाम है। १८२ भाखा वोलने-वाले सभी कमेरे तो अब सगे भाई हैं । इसीलिए वह एक दूसरेसे बात भी करना चाहते हैं, इसके लिए रूसी भाखा को पढ़ना चाहिए, उसका भी इंतिजाम है ।

दुखराम—उसी तरह जो हमारे यहाँ हिन्दी पढ़ना हो, तो कोई हरज नहीं । हम लोग सब कुछ अपनी कासिका भाखामें पढ़ें, ऊपरसे हिन्दी भी कुछ सीख लें, तो अच्छा ही है; दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जानेपर बातचीतमें सुभीता होगा ।

भैया—अपनी बोलीमें पढ़नेका यह फायदा हुआ, कि आठ ही नौ बरस के भीतर वहाँ एक भी आदमी अनपढ़ नहीं रह गया ।

दुखराम—हिन्दुस्तानसे सात गुना वड़ा देस है न भैया ? और बीस करोड़ आदमी बसते हैं । तो सारे रूसमें सब कोई मूरख वेपढ़ नहीं है न ?

भैया—इस बातको तो कई बरस हो गये ।

दुखराम—यह बहुत वड़ा काम है भैया, अन्धेको आँख देना है ।

भैया—जोंकें लोगोंको अन्धा रखना चाहती हैं । जितने कल-कारखाने लड़ाईके वक्त टूट गये थे, जितनी रेलकी सड़कें और खानें बिगड़ गई थीं, इस्तालिन वीरने सबको फिरसे तैयार करने को कहा । रूसके सारे मर्द-औरत सभी मिसतिरी-इन्जिनियर जुट गये और कमेरा-राज कायम हुए दस साल भी नहीं वीता, कि कल-कारखाना, रेल-खाना सब पहले इतना माल पैदा करने लगे । खेत भी फिरसे आवाद हो गये, और उतना ही अनाज पैदा होने लगा । अब इस्तालिन वीरने कहा, कि पैर बढ़ाके चलनेसे काम नहीं चलेगा, अब सारे देसको दौड़ना होगा, जिसमें हमारे देसमें सब जगह हजारों नये बड़े-बड़े कारखाने खुलें; तेल, कोयला, लोहा इतना पैदा हो, कि कोई जोंकोंका देस हमारा मुकाबला न कर सके । गाँव-गाँवमें बिजली और पानीका नल लग जाय । और खेतमें दिनमें दस विस्वा (कट्ठा) जोतनेवाले हल नहीं तीस बीघा जोतनेवाले मोटरके हल चलें । सिंचाईके लिए जहाँ नदीसे नहर निकल सके वहाँ नहर निकलें, जहाँ धरतीमें पाइप गाड़नेसे पानी निकले, वहाँ पाइप गाड़कर सींचनेका इन्तजाम किया जाय ।

दुखराम—लकड़ीके हलकी जगह मोटरका हल ! और वह इतना बेसी खेत जोतता है भैया ?

भैया—मोटरके हलके सात-सात फार होते हैं और फार एक-एक हाथ गहरी जुताई करता है । तुम्हारे खेतमें जितनी जंगली घास—कुसकास जमती है, उसकी जड़ खोदकर देखें कि वह धरतीमें कितने नीचे तक गई है, फिर फालको उतना ही बड़ा लगा दें । एक बार खेत जोत देनेपर सब घास जड़ मूलसे निकल जाएगी, और तीन बरस तक खेतमें कोई जंगली घास नहीं निकलेगी । गहरी जुताईका यह भी फायदा है कि सीड़ वनी रहती है, गेहूँ-चनेकी जड़ धरतीमें नीचे तक पैठती है, और बरसा-बुन्दी कम भी हो, तो भी नीचेकी सीड़से काम चल जाता है । नई-नई तरहकी खाद तैयार करनेके लिये भी इस्तालिन वीरने हजारों कारखाने खुलवाये । उन्होंने किसानों को समझाया, कि हजारों टुकड़ोंमें बँटे गाँवके खेतोंमें मोटरका हल नहीं चल सकता ।

दुखराम—३० बीघा रोज जोतनेका मोटरवाला हल छोटे-छोटे कोलेमें कैसे चलेगा भैया ?

भैया—इसीलिए इस्तालिन वीरने किसानोंसे कहा—गाँव भरका खेत इकट्ठा कर दो, मेंड़ तोड़ दो, गाँव भरके लोग एक परिवारकी तरह मिलकर साझेमें खेती करें ।

सन्तोखी—किसीके पास कम और किसीके पास बेसी खेत होता है भैया ?

भैया—इस्तालिन वीरने कहा, कि जो साझेकी खेतीमें नहीं सामिल होते, उनको खेत अलग दे दो और गाँवके जितने लोग इकट्ठा खेती करना चाहते हों, उनके खेतोंको एक जगह कर दो, और धरतीसे खेत बनानेका हक उन्हींको हो। जियादा खेतवाले किसान कुछ समय अलग जोतते-बोते रहे, लेकिन उनके पास चार अंगुल खुरचनेवाला सतजुगसे चल आया हल था। उनके पास खाद और सिंचाई का उतना इन्तिजाम नहीं था, जबकि उनकी बगलके बड़े-बडे खेतोंमें मोटरके हल चल रहे थे, पाइपसे सिंचाई होती थी, कल खेत काटती और दाँवती थी। उन्होंने देखा कि बेसी खेत रहनेपर भी हम उतना नहीं पैदा कर पाते, जितनी साझीवाले किसानको मिलता है; फिर वे किसान भी आकर पंचायतके पैरों पड़े।

दुखराम—रूसमें सब काम पंचायतसे होता है भैया ?

भैया—रूसमें लोग अपने देसको अब रूस नहीं कहते, अब उसे सोवियत संघ कहके पुकारा जाता है। सोवियतका मतलब वही है जो हमारी भाखामें पंचायतका। वहाँ एकसौ बयासी खोमें बसती हैं, उनमेंसे एक है रूसी खोम; इसीलिए इस्तालिन वीरने कहा कि हमें कई तरह के खोमोंवाले देसको किसी खोमके नामसे नहीं पुकारना चाहिये। दुक्खू भाई! हम आसानीसे समझनेके लिए रूस-रूस कहते रहे, नहीं तो अब उसका नाम है साम्यवादी समाज वाले पंचायती-प्रजातन्त्र संघ।

दुखराम—सामवादी क्या है भैया ?

भैया—मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है न, कि देस भरके कमेरोंका एक साझा परिवार हो; और देस भरकी धन-धरतीका मालिक कोई एक आदमी नहीं बल्कि वही बड़ा परिवार। इसी सिच्छापर जो चले उसे सामवादी कहते हैं।

दुखराम—पंचायती तो हम समझ गये लेकिन परजातन्तर क्या ?

भैया—जहाँ राजाका काम न हो, पर प्रजा ही अपना राज चलाती हो, उसको प्रजातन्त्र कहते हैं ?

सन्तोखी—और संघ तो जमातको कहते हैं न भैया ?

भैया—हाँ, वहाँ साम्यवादी पंचायती प्रजातन्त्र एक-एक खोमका अलग-अलग है, और सब प्रजातन्त्र एक जमात बन गया। इसीलिए संघ कहा गया।

दुखराम—तो वहाँ पक्का पंचायती राज है।

भैया—गाँव, जिला, देस और सारे १८२ खोमोंके, मुलुकका, इन्तिजाम पंचायतें करती हैं। मरद हो चाहे औरत, सहर हो चाहे गाँव, अठारह बरससे बेसी जिसकी उमर है, वह वोट देकर पंचायत (सोवियत) चुनता है। गाँवके पंचायतमें पच्चीस-तीस या चालिस मेम्बर चुने जाते हैं। फिर इन मेम्बरों की पाँच-छः छोटी पंचायतें बना ली जाती हैं। इन छोटी पंचायतों में किसीका काम होता है आपसी झगड़ोंका फैसला करना और पुलिसका इन्तिजाम देखना, किसीका काम होता है असपताल और बीमारोंका ध्यान रखना, किसीका काम होता है इसकूल, सिनेमा, पुस्तकालय आदिका परबन्ध करना। किसीका काम होता है खेतीबारीका इन्तिजाम करना।

दुखराम—तो भैया ! सोवियतवालोंने इस कहानीको झूठ कर दिया 'साझेके सुई सगड़ानेसे उठे'। भैया ! मुझे तो मालूम होता है, कि जोंकोंने जान-बूझकर ऐसी-ऐसी कहावतें गढ़कर कमेरोंके भीतर फैला दीं। कमेरोंमें एकके पास उतना धन और नौकर-चाकर है नहीं, कि उसके बलपर कोई बड़ा काम उठावें, साझेका काम करनेसे उनका बल बढ़ता, उसीको ताड़नेके लिए जोंकोंने कहावत गढ़ी छोटी-सी सुई भी साझेकी होनेपर बड़े-बड़े बाँससे उठानेकी तदबीर सोची जाती है।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! कमेरोंको पैर फूंक-फूंक कर रखना है। हजारों बरसोंसे जोंकें राज कर रही हैं। उन्होंने हर जगह अपना जाल बिछा रखा है।

दुखराम—भैया ठीक कह रहे हो। मैंने ही न जाने कितनी बार दुहराया होगा और मैं समझता था कि यह कोई विधि-ब्रह्माका बचन है; लेकिन अब न मालूम हो रहा है, कि जोंकोंने इसे गढ़कर हमारे भीतर फैला दिया जिससे मिलकर हम कोई काम कर न सकें।

भैया—जुलाहा अकेले ही न कपड़ा बुनता था, और चटकल-पटकलमें कितने सौ जुलाहे एक साथ काम करते हैं। देखो साझेवाला काम कितना जोरसे चल रहा है और अकेले काम करनेवाले जुलाहे उजड़ गये।

दुखराम—तो भैया ! सोवियत देसके किसानों और उनके गाँवोंकी सकल ही बिलकुल बदल गई होगी ?

भैया—पहिली बात तो यह है, कि वहाँ अब छोटे-छोटे खेत नहीं रह गये हैं। तीन-तीन सौ चार-सौ बीघाके खेत हैं, जिनको जोतने के लिए पाँच लाखसे ज्यादा मोटरहल और डेढ़ लाखसे ज्यादा काटने दाँवनेवाली कल हैं।

दुखराम—और यह मोटर और कल कहाँसे आती है भैया ?

भैया—१९२८ ई० से पहिले रूसमें एक भी मोटरहल नहीं बनता था, जोंकोंके राजके समय कोई मोटर कारखाना नहीं था। लेकिन इस्तालिन वीरने कहा, कि हमें सब चीजें अपने यहाँ बनानी होंगी, नहीं तो किसी वक्त बाहरकी जोंकें गला दबाकर हमें मार डालेंगी। आज खाली एक गोरकी सहरके कारखानोंमें हर साल एक लाख मोटरें बनती हैं। मोटरलारी, मोटरहल, हवाई जहाज, सब सोवियतके कारखानोंमें बनते हैं। हर बारह-बारह चौदह-चौदह गाँवपर एक-एक मसीन-मोटरहलका इस्टेसन, उसे बड़ा गाँव समझो दुक्खू भाई ! उस गाँवमें जितने लोग हैं सब मोटर मसीन चलाना, उनकी मरम्मत करना, बस यही काम करते हैं। गाँवकी पंचायत अपने गाँव का लेखा करती है; कितना बीघा खेत एक हाथ गहरा खोदना हैं, कितना बीघा पौन हाथ और कितनी बार जोतना है ? इसका हिसाब करके मोटर स्टेशनमें जाते हैं। जोताई आदिकी दर बँधी हुई है, दोनों ओरसे कागज-पत्तरपर दसखत हो जाती है, फिर मोटरवाले आकर खेत जोत-बो देते हैं। छोटे-मोटे कामके लिए एकाध मोटरहल गाँवमें भी होता है ?

दुखराम—तो गाँव भरकी साझे में खेती होती है। और काम कैसे बाँटा जाता है ?

भैया—हर कामका नाप बँधा हुआ है। जैसे समझ लो एक आदमीको एक दिनमें दस बिस्वा जोतना चाहिए, जो किसीने पन्द्रह जोत दिया, तो एक ही दिनके

कामके लिए उसे डेढ़ दिन समझा जायगा; जो कोई पाँच बिस्वा ही जोत सका, उसका आधा ही दिन होगा। हर आदमीके कामका बहीखाता होता है, जिसमें रोज-रोजका काम लिखा जाता है।

दुखराम—तो बड़ा हिसाब-किताब रखना पड़ता होगा ?

भैया—सैंकड़ों आदमियोंका काम, हिसाब-किताब नहीं रखा जायगा, तो गड़बड़ी नहीं मचेगी ? मान लो किसी घरमें सौ औरत और एकसौ पचास मरद काम करनेवाले हैं। दस-दस आदमी की एक टोली बन जाय, टोली अपना मुखिया बनायेगी। फिर दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह टोलीकी एक बड़ी जमात होगी, जिसको वहाँ बिरगेड कहते हैं। बिरगेड अपने में से सबसे लायक औरत या मरदको अपना मुखिया चुनता है, जिसको बिरगेडियर कहते हैं। टोलीका मुखिया अपनी टोलीके साथ काम करता है, लेकिन बिरगेडियरको बहुत काम देखना-भालना होता है। आजके काममें कितना हुआ, कितना नहीं हुआ, इसका हिसाब और तन्देही करनी पड़ती है; इसलिए उसे और आदमियोंके साथ अपने हाथ जोतने-बोनेका काम नहीं करना पड़ता। लेकिन बिरगेडियर लोग उन्हीं कुदाल-फावड़ा चलानेवाले लोगों में से बनते हैं।

सन्तोखी—खाद, पानी, अच्छी जुताई, बीजका इन्तिजाम होनेसे वहाँ पैदावार भी ज्यादा होगी ?

भैया—देखते नहीं गाँवके गोएड़ेके खेतमें फसल कितनी पैदा होती है ?

दुखराम—सुतर जाय तो मकई में तीन-तीन मोटी बाल लगती हैं भैया ?

भैया—वहाँ भगवानके भरोसेपर खेती नहीं करते। कहते हैं जब आसमान से पानी नहीं बरसा तो धरतीमें तो पानी है ही। पाइप लगाकर धरती के भीतर के पानीसे खेत सींच डालते हैं। और फसल कितनी होती है, यह इसीसे समझ सकते हो कि एक-एक बीघा ($\frac{2}{3}$ एकड़) में बीस-बीस मन तक चीनी उन्होंने पैदा किया है।

दुखराम—एक-एक बीघामें बीस-बीस मन चीनी ? हमने तो बीस मन गेहूँ भी पैदा नहीं होते देखा ? वहाँ की ऊख बहुत मोटी होगी ?

भैया—वह बहुत ठंडा मुल्क है दुक्खू भाई ? वहाँ ऊख नहीं पैदा होती। हमारे यहाँ जैसे सकरकंद होता है, वैसे ही वहाँ एक चीज पैदा होती है, जिसको चुकन्दर कहते हैं। वह बहुत मीठा होता है; उसीसे चीनी बनाई जाती है। ऊखकी चीनी-जैसी वह भी मीठी, दानेदार और सफेद होती है। और कपास बीघामें बारह-तेरह मन खूब बारीक रेसावाला बिनौला निकालकर पैदा होता है। तीस-तीस मन प्रति बीघा धान पैदा कर लेते हैं और जानते हो न दुक्खू भाई ? खाली हाथसे कुदाल चलानेसे ही काम नहीं चलता। जब कुदालके साथ दिमाग भी लगता है, तो धरती सोना उगलने लगती है। वहाँ ऐसा-ऐसा गेहूँ निकला है, कि एक वार बोनेपर तीन-तीन साल तक फसल काटते हैं। धानका बीज ऐसे तैयार किये हैं, कि अगहनी धान कातिकहीमें कट जाता है।

दुखराम—भैया ? जो ऐसा बीज हमको मिलता, तो हमारी दस बीघाकी धानकी कियारी भी दोफसला हो जाती। चढ़ते कातिकमें धान कट जाते, तो खेत जोत-जातकर कातिकके अन्तमें गेहूँ बो सकते हैं।

भैया—जोंकोंका राज बिना हटाये यह नहीं हो सकता दुक्खू भाई ? वहाँ जिस फसलको तीन-चार हफ्ता पहले काटना चाहते हैं, उसके बीजको भिगोकर बड़े-बड़े गोदामोंमें फैलाकर रखते हैं और जानकार पंडित गरमी-सरदी नापते रहते हैं। दो दिन वैसा करके फिर बीजको सुखा लेते हैं। हिन्दुस्तानमें कहाँ उतने-उतने बड़े गोदाम, सरदी-गरमी नापनेकी कल और लाखों रुपयेकी दूसरी चीजें हैं। यहाँ भी सरकारने जो बड़े-बड़े खेतीके कालेज खोले हैं, उनमे पाव-आध सेर बीज तैयार करके देखा गया है, कि रूसी विदियामानोंका कहना गलत नहीं है। लेकिन जोंकें अगर करोड़ों रुपये लगाकर देहातमें वैसा इन्तजाम करने लगें तो उनकी तोंद ही पचक जायगी।

दुखराम—ठीक कहा भैया ? बिना जोंकोंके हटाये हमारा दुख दूर नहीं हो सकता। जहाँ इतना अन्न, धन पैदा होता है, वहाँ के लोग तो बड़े खुसहाल होंगे।

भैया—खुसहाल ? वहाँ किसीकी हड्डी निकली दिखलाई नहीं पड़ती। आज जो अपने गाँवमें तुम आधे लड़कोंको हाड़-हाड़ निकले, फटी लँगोटी पहिने देखते हो, इसका वहाँ कोई पता नहीं। पहर भर रातसे आधीरात तक जो मरद-औरतको यहाँ खटना पड़ता है, वह भी वहाँ नहीं है। बिरगेडियरको इस फसलमें कितना काम करना है, यह पंचायत बता देती है और देखती रहती है। बिरगेडियर हर टोली को हफ्तेका काम बाँट देता है और देखता रहता है, कि काम ठीक-ठीक चल रहा है कि नहीं ? टोली भी अपने कामका हिसाब मिलाती रहती है। टोली-टोलीमें होड़ लगी रहती है। एक टोली जब पाँच दिनमें सोहनी खतम करना चाहती है, तो दूसरी चार ही दिनमें खतम कर चाबसी (साबासी) लेना चाहती है। फिर गाँवके दूसरे गाँवसे, एक परगनेसे दूसरे परगनेकी होड़ रहती है कि कौन अपने कामको अच्छी तरह और जल्दीसे खतम करता है।

दुखराम—गाँव-गाँव और परगने-परगनेमें होड़ (लागडाट) लगती है, हमारे यहाँ तो कुस्तीमें कभी-कभी दौड़ने और कूदनेमें होड़ लगती है।

भैया—वहाँ जिलाकी ओरसे लाल झण्डा रखा जाता है, कि जो परगना सबसे पहले काम करे, सबसे अधिक फसल पैदा करे, उसको लाल झण्डा दिया जाय। इसी तरह गाँवके लिए भी लाल झण्डा रहता है। मर्द-औरत सब जी तोड़कर काम करते हैं, कि झन्डा उनके गाँवमें आये। झन्डा जब किसी गाँवको मिलता है, तो मेला लग जाता है, आसपासके गाँवोंसे हजारों मर्द-औरत अपने-अपने गाँवोंकी लारियोंपर चढ़कर आते हैं।

दुखराम—तो वहाँ गाँव-गाँव में लारियाँ हैं भैया ?

भैया—न अब वहाँ बैलवाले हल रह गये और न गाड़ियाँ। हर गाँव में आठ-आठ, सात-सात बड़ी-बड़ी लारियाँ रहती हैं। काम भी आदमीको ७ घन्टेसे बेसी नहीं करना पड़ता। और काम करने में आनन्द आता है दुक्खू भाई ! लोग तरह-तरहका गाना गाते हुए काम करते हैं। खानेका वक्त हुआ तो किसी पेड़के नीचे खाना लेकर लारी आ गई। सब लोग बैठ गये। रोटी-तरकारी, भात, मांस-मछली, दूध-दही सब तैयार है। परोसनेवाले परोस रहे हैं, औरत-मर्द सब भोजन कर रहे हैं। एक ओर रेडियो बाजा लगा दिया, दुनिया भरकी खबर और मीठे-मीठे गीत हो रहे हैं ?

दुखराम—रेडिहा वाजा क्या है ? क्या यह कोई फोनोगिलाफ है ?

भैया–जानते हो न दुक्खू भाई ! पत्थर हड्डीके हथियारों और तीर-धनुसके जुगसे मानुख-जाति अब बहुत आगे चली आई है। यह मानुखके दिमाग की करामात है, लेकिन अफसोस है कि इस करामातका फायदा जोंकोंहीको मिल रहा है। रेडियो बाजा होता है एक चौकोर बाकस, लेकिन उसमें बिलायत, अमेरिका, रूस कलकत्ता, बंबई, दिल्ली सब जगह का गाना और खबर चली आती है।

दुखराम—क्या वह तारकी तरहसे है भैया ?

भैया—तार नहीं लगा रहता दुक्खू भाई ? जो यहाँ कनैलामें रेडियोबाजा आज आ जाय, तो यहीं बैठे-बैठे सब तुम्हें सुनाई देने लगेगा।

दुखराम—बड़े अचरजकी बात है भैया ? सोमारु राउत सुनेंगे तो कहेंगे कि इसमें जरूर कोई जादू है।

भैया—जादू नहीं है दुक्खू भाई ! देखो हम तीन हाथ परसे बोल रहे हैं। हमारे मुंहसे जो आवाज निकल रही है, वह तुम्हारे कान तक पहुँच रही है न ?

दुखराम—हाँ पहुँच रही है, मैं सुन रहा हुँ।

भैया—जो मैं सौ हाथसे बात करूँ, तो तुम्हें आवाज सुनाई देगी कि नहीं ?

दुखराम—बहुत कम, और शायद नहीं भी सुनाई दे।

भैया—आवाज तो तुम्हारे कान में आती है दुक्खू भाई, लेकिन कान कुछ ऊँचा सुनता है, माने कान अच्छी तरह पकड़ नहीं पाता, कानकी ताकत कमजोर हो जाती है। कानकी ताकत और बढ़ा दी जाय, या आवाजको और तेज कर दिया जाय, तब तुम सुनने लगोगे दुक्खू भाई ! कलकत्ता, दिल्ली या मास्को लंदन से जो आवाज निकलती है, वह हवा पर तैरती हमारे गाँवमें भी पहुँचती है, लेकिन वह इतनी मन्द हो जाती है, कि हमारा कान उसे पकड़ नहीं पाता। रेडियो बाजाका यही काम है, कि जो आवाज दुनिया भरसे चलके हमारे यहाँ आई है, उसे पकड़े और फिर तेज करके फोनोगिलाफ बाजाकी तरह निकाले। और कोई जादू-वादू नहीं है। रूसमें किसान जब खाना खाने बैठते हैं, तो उस वक्त रेडियो बाजा गाना सुनाता है, देस-देस की खबरें सुनाता है और अब तो वह ऐसी तदबीर कर रहे हैं, कि आवाज ही नहीं रूप भी दिखलाई पड़ने लगे ओर लोग बैठे-बैठे मास्को और लन्दनका नाच और नाटक देखें।

दुखराम—क्या भैया ! ऐसा भी होने लगेगा ?

भैया—देखते नहीं दुक्खू भाई ! दस हाथपर खड़े रहते हो और तुम्हारा मुंह दरपनमें दिखाई पड़ता है। इसी तरह रूपवाला बाजा भी तैयार हो गया है, लेकिन अभी रूप उतना साफ नहीं आता। कुछ दिनोंमें वह भी ठीक हो जायगा।

दुखराम—होगा भैया ! लेकिन हम लोगोंको तो रेडियो बाजा भी देखनेको नहीं मिलता। कब जोंकों का नास होगा ? और वहाँ भैया ! सब मेहरारू काम करती हैं ?

भैया—बड़े-छोटे सब घरकी मेहरारू, यही न पूछ रहे हो दुक्खू भाई ! लेकिन हमने बतलाया कि वहाँ कोई बड़ा-छोटा नहीं, कोई जात पाँत नहीं, सब बरा-

बर हैं, भाई-भाई हैं। जोंकों के राजमें मक्खन जैसे मुलायम हाथ की तारीफ की जाती है, सोवियतमें घट्टा पड़े-कड़े हाथों की तारीफ होती है। जोंकोंके मुल्कमें कामचोर-देहचोरकी इज्जत की जाती है, सोवियतमें मेहनती मजूर-किसान काम करनेवाले लोगोंकी इज्जत होती है। बीमार बूढ़े, बच्चोंको वहाँ काम करना नहीं पड़ता। नहीं तो कोई रानी बनकर बैठे तो उसे दूसरे दिन भूखा मरना पड़ेगा!

दुखराम—तो रानी फूलमती कुँअरिके लिए तो आफत हो जायगी, भैया।

भैया—इसीलिए न राजा-रानी, सेठ-सेठानी, महंथ-महंथिन, मोलवी-मोलवियानी सब एक ओरसे मरकस बाबाकी सिच्छाको बुरा कहते हैं, रूसको गाली देते हैं। लेकिन दुक्खू भाई! वहाँ जो काम करना पड़ता है, वह तकलीफका काम नहीं होता। गाँव भरकी औरतों को काम करना पड़ता है, लेकिन बच्चा पैदा होनेसे महीना पहलेसे उन्हें छुट्टी मिल जाती है और बच्चा होने के बाद भी डेढ़-दो महीने छुट्टी रहती है। उस बखत भी दूध-दवाई, डाक्टर-दाई सबका खरच पंचायतकी ओरसे मिलता है। औरतें खेत काटनेके लिए आती हैं, तो बच्चोंका तम्बू पहिले ही पड़ जाता है। और दाइयाँ बच्चों को सँभाल लेती हैं। वहाँ बच्चों के लिए खिलौना रहता है, पालना रहता है, दाइयाँ कहानी सुनाती हैं।

दुखराम—तो वहाँ बच्चोंको पीटा नहीं जाता?

भैया—बच्चोंके पीटनेका काम नहीं, क्योंकि जब माँ-बाप काम करते हैं, तो बच्चे दाइयोंके पास रहते हैं। जब काम नहीं रहता, तब बच्चोंको ले आते हैं। उनके साथ खेलते हैं, कहानी सुनाते हैं, लाड़-प्यार करते हैं।

दुखराम—सपना जैसे मालूम होता है भैया।

भैया—सरगको किसीने नहीं देखा, लेकिन हम हजारों सालसे सरगके नामपर ठगे जा रहे हैं। लेकिन मैं जिस सोवियत की बात कर रहा हूँ, वह सरग जैसी सपनेकी चीज नहीं। जोंकें हमारा रास्ता न रोकें, तो पाँचवें दिन उस देस में पहुँच सकते हैं और अब तो हमारे पड़ोसका चीन भी वैसाही हो गया।

दुखराम—हवाई जहाज, सुनते हैं दो-घंटेमें कलकत्ते से चला आता है।

भैया—हवाई जहाज से नहीं दुक्ख भाई, दो दिनमें रेलसे पेशावरी और वहाँ से काबुल होते तीसरे दिन कमेरोंके राजमें पहुँच जायेंगे। किराया भी ४०) से वेसी नहीं लगेगा।

दुखराम—तब तो भैया, बहुत नजदीक है।

भैया—नजदीक है, लेकिन जोंकोंने हजार तरहकी पहरा-चौकी बैठाई हैं जिसमें बाहरके कमेरे रूसको आँखोंसे न देख सकें, न वहाँकी बात ठीक तौरसे समझ सकें। वहाँकें लोग बहुत खुशहाल हैं दुक्खू भाई! गाँव-गाँवमें इस्कूल हैं, असपताल, पुस्तकालय हैं, सिनेमाघर हैं।

दुखराम—सिनेमाघर भी हैं गाँव-गाँवमें भैया?

भैया—हाँ! काम सब पंचायती होता है, इसलिए हर गाँवमें एक इतना बड़ा घर होता है, जिसमें वहाँके सारे नर-नारी बैठ सकें। उसी घरमें सभा होती है। जो बड़े गाँव हैं, उनमें तो रोज सिनेमाका तमासा होता है, लेकिन छोटे गाँवों में सिनेमा

मोटरसे घूमता रहता है। आज कर्नैलामें आया, और दो तरहका तमासा यहाँ दिखलाया, फिर तीसरे दिन यहाँसे भदया चला गया, वहाँ भी दो तमासा दिखलाया। इसी तरह वह आगे बढ़ता गया, दूसरे हफ्ते दूसरी सिनेमामोटर आई और वहाँ भी उसी तरह दो-दो तमासा दिखाती चली गई। गाँवमें पंचायतकी ओरसे दूकान होती है, जिसमें पचासों तरहकी चीजें बिकती हैं, और नफाका सवाल नहीं, क्योंकि दूकान गाँव भरकी है। गाँव भरके लोग मिलकर खेती करते हैं। जूता, मोजा सिलाईके भी कारखाने गाँवमें होते हैं। जिसने भी जितना काम किया, सबका काम बही-खाता पर लिखा हुआ है और कितना पैदा किया वह भी सामने है। मान लो दस लाख रुपयाका सामान गाँवमें पैदा किया गया और दो लाख दिन गाँव भरके लोगोंने मिलकर काम किया, तो इसका मतलब एक दिनके कामका ५)। लेकिन ५ लाखमें पहिले साझेका खर्च, अस्पताल, दाईघर, पुस्तकालय, नाटकमंडली आदिके लिए दो लाख या जितना हो, निकाल दिया जायगा। अब एक रोजके कामकी ४) पैदावार हुई। गाँवमें जिसने जितने दिन काम किया उसीके अनुसार पंचायत उन्हें पैसा दे देगी। उससे आदमी घर भरके लिए कपड़ा बनवायेगा, जूता खरीदेगा या फोनोगिलाफ बाजा खरीदेगा; मेला-तमासा देखेगा, खाना खायेगा।

दुखराम—गाँव भरका चूल्हा एक नहीं हो गया है ?

भैया—कहीं-कहीं हो गया है, लेकिन बहुत जगह नहीं हुआ है। सहरोंमें ऐसा हुआ है।

सन्तोखी—सहरोंकी भी एकाध बात बतलाएँ भैया ?

भैया—सहरों में जानते हो न सन्तोखी भाई, सब मकान-जमीन बड़ी-बड़ी जोंकोंकी होती हैं। राज सँभालते ही कमेरों की सरकारने जोंकों की जायदातको छीन लिया। सहरोंके सब घर कमेरोंकी सरकारके हैं। जो झोपड़ियाँ और गन्दी गलियाँ पहले थीं, उन सबको तोड़कर पाँच-पाँच छ-छ तल्लाके बड़े-बड़े मकान बन गये। जोंकोंके राज के समय राजधानीमें तेरह लाख आदमी बसते थे, जिनमें आधे सुअरकी खोभारों में रहते थे, आज उस लेनिनगराद की आबादी दुगुनासे भी अधिक तीस लाख है, लेकिन अब उन खोभारोंका पता नहीं है। अब सबके लिए अच्छे-अच्छे मकान, चौड़ी सड़कें, जगह-जगह लड़कोंके खेलनेके लिए बगीचे तथा खेलके मैदान हैं। मकानकी मरम्मत, बिजली-पानीका इन्तजाम लोगोंकी चुनी हुई छोटी-छोटी पंचायतें करती हैं। मुहल्ले-मुहल्लेके रसोईघर हैं, जिसमें हजार-दो हजारसे दस-दस बारह-बारह हजार आदमियोंका खाना बनता है। सिरिफ दाल-भात उबाल कर रख नहीं दिया जाता, बल्कि पचास-पचास साठ-साठ तरहके भोजन बनते हैं। जिन औरत-मर्दों को रसोई बनानेका काम है, वह रसोई-घरमें जाते हैं। सबेरेका जलपान और दोपहरका भोजन करा दिया बस छुट्टी, तिपहरी का जलपान और रातका भोजन बनानेका इन्तजाम आकर दूसरी टोली करेगी।

दुखराम—औरतोंको तो वहाँ और भी आराम है भैया ? हमारे यहाँ तो बेचारी पहर भर रात रहते ही चक्की पीसने लगती हैं, चौका-बासन करना, खाना बनाके खिलाना, बीचमें लड़का रोने लगा, तो उसे दो थप्पड़ लगाना, चावल कूटना, दाल दरना, फिर चौका-बासन करना, गोएँठेके धूएँसे आँख फोड़ते खाना बनाना,

खिलाते-पिलाते आधी रात हो जाती है। बेचारियोंको फिर पहर भर रात हीसे जागना पड़ता है। वहाँ तो इतना काम नहीं पड़ता भैया !

भैया—वहाँ इतना काम कहाँ ? बतलाया नहीं; सबेरे ६ बजे ड्यूटी पर गई तो बारह एक बजे तक उनकी छुट्टी। आटा पीसना; चावल कूटना तो कल-मसीनका काम है। बरतन धोनेके लिए भी बहुत जगह कल लगी हुई है; मसीन घूम रही है; एक ओरसे बर्तन डालते हैं; एक साबुन लगा देती है; बुरुसवाली मसीन मल देती है; दूसरी मसीन गरम पानीसे धो देती है; फिर साफ बर्तन दूसरी ओरसे बाहर चला आता है। औरतने जाकर छः-सात घन्टे रसोईघर में काम कर दिया। अब उसे अपने लड़केको लाड़-प्यार करना; मित्रोंसे बातचीत करना; किताब पढ़ना या कोई और मनबहलाव का दूसरा काम करना होता है। घरके लोग चाहे रसोई-घरके बड़े-बड़े मकानोंमें जाकर खाना खा सकते हैं और चाहे तो गरमागरम भोजन अपने घरमें खा सकते हैं।

सन्तोखी—दुकान-उकान तो वहाँ भी होगी भैया ?

भैया—दुकान बहुत हैं सन्तोखी भाई, और इतनी बड़ी-बड़ी कि जिसमें हजार-हजार आदमी गाहकोंको सौदा बेचते हैं। लेकिन सब दुकानें पंचायती हैं, कमेरोंके पंचायती राजकी, चाहे छोटी-सी सिगरेटकी दूकान हो चाहे बड़ी से बड़ी दूकान हो, जो लोग बेच रहे हैं, वह किसी साहू महाजनके नफाके लिए नहीं कर रहे हैं। सब लोगोंकी ड्यूटी है। घंटेसे काम करना पड़ता है, वही छ-सात घंटा। फिर अपना मौज करें। बीमार होनेपर डाक्टर मुफ्त, दवा मुफ्त, पथ मुफ्त, और तनख्वाह भी नहीं कटती। बूढ़ा होनेपर सबको पेन्सन।

सन्तोखी—तब काहे को वहाँ किसी को चिंता होगी।

भैया—चिन्ता बिल्कुल नहीं ! लड़के-लडकियों को पढ़नेके लिए फीस नही देनी पड़ती, और सात बरस तक सबको पढ़ना होता है। दोपहरका खाना लड़कों को स्कूलसे मिलता है और डाक्टर जैसा खाना बतलाए वैसा खाना। तीन बच्चोंके बाद जितने बच्चे पैदा होंगे, उनका सब खर्च कमेरा सरकार देती है। सात रुपया रोजसे कम किसीको मजूरी नहीं। जो घरमें मरद-औरत दो ही कमानेवाले हों, तो भी चौदह रुपया रोज या सवा चार सौ रुपया महीना तो जरूर ही आएगा। बताओ उनको क्या चिन्ता हो सकती है ?

सन्तोखी—तभी तो भैया ! शुरूवाले इतनी बहादुरीसे लड़े ? उन्होंने अपने हाथसे धरतीपर सरग रचा, जर्मन जोंकोंके रूसमें बैठने का मतलब क्या होता, इसे वह अच्छी तरह समझते थे।

भैया—इस्तालिन वीरने कह कर नहीं दिखा करके दिखाया। सत्ताइस बरस से रूसके कमेरोंका अगुआ है इस्तालिन वीर। मरकस बाबाने जोंकोंके जाल-फरेब को देखनेके लिए आँख दी और लड़नेका ढंग बतलाया। लेकिन महात्माने कमेरोंको लड़नेके लिए तैयार किया, फिर पाँच बरस तक लड़ाई लड़ी और दुनियाके छठे भागसे जोंकोंका नाम मिटा दिया। इस्तालिन वीरने सरगको धरती पर उतारा। गाँवोंको बदल दिया। कारखानोंसे देसको भर दिया। लोगोंको दिखला दिया, कि जोंकोंके हटानेसे दुनिया नरकसे सरग बन जाती है। लेकिन इस्तालिन वीरने यह भी आगेसे

सोच लिया था, कि जोंकोंसे हमें लड़ना पड़ेगा। इसीलिए अपने हथियारको मजबूत किया, हर नौजवानके लिए फौजमें दो-तीन बरस रहना लाजिम कर दिया। सब विद्या सिखायी गई। करोड़ोंकी पलटन तैयार हो गई। मरद ही नहीं औरतें तकने भी हथियार चलाना सीखा, हवाई जहाज उड़ाने लगीं। बच्चे बचपन हीसे सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ हाथ ऊँचे मीनारोंपरसे छतरीके सहारे कूद करके निडर होने लगे, जिसमें कि हवाई जहाजसे कूदनेमें उन्हें भय न मालूम हो। मोटरके हलोंको ऐसा बनाया कि थोड़ेसे हिस्से को हटाकर दूसरा रख देनेसे टंक बन जाता था।

दुखराम—टंक क्या है भैया ?

भैया—टंक आज-कलकी लड़ाईका बहुत जबर्जस्त हथियार है, जिसपर बन्दूक की गोली क्या तोपका गोला भी असर नहीं करता। उसके पहिएमें रबड़की टायर नहीं, मोटी जन्जीर होती है। चारों ओर तीन अंगुल मोटे फौलादकी चद्दर लगी रहती है, भीतर ही तोप रहती है। वह ऊँची-नीची सब जमीनपर चला जाता है। बड़े-बड़े पक्के मकानोंको तोड़ते हुए तो ऐसे घुसता जाता है, जैसे सूखे पत्तोंके ढेरमें हाथी। इस्तालिन वीरने चढ़ाईके लिए कमेरोंको पहले हीसे तैयार कर लिया था।

सन्तोखी—इस्तालिन वीरका तो बहुत बड़ा दिमाग है भैया।

भैया—कमेरोंके लड़कोंमें बहुतसे ही बड़े-बड़े दिमाग पैदा होते हैं, लेकिन उनको काम करनेका मौका ही नहीं मिलता। जब सारी दुनियाको पछाड़ने-वाली हिटलरी फौजको लाल फौजने तहस-नहस किया, उसे भगाकर जर्मनीके भीतर जाकर उसका सत्यानास कर दिया, तो सारी दुनियामें लाल फौजके महासेनापति वीर यूसुफ इस्तालिनका नाम लिया जाने लगा, सब उनकी बुद्धि और बहादुरीका लोहा मानते हैं। लेकिन इस्तालिन वीर मजूरी करके खानेवाले एक चमारका लड़का है, और गोरे नहीं काले चमारका लड़का है। इस्तालिनने चौदह बरसकी उमरसे ही जोंकोंकी जड़ काटनेका काम सुरू किया। चौदह-चौदह बार उसे कालेपानी की सजा हुई, तो भी वह जेलसे निकल भागता रहा और भेस बदलकर कमेरोंमें काम करता रहा। कमेरोंने रूसकी जोंकोंसे पाँच साल लड़ाई लड़ी। उसके जीतनेमें लेनिन महात्माके बाद जो सबसे बड़ा दिमाग था, वह इसी चमारके लड़केका।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया ! हम कितनोंको चमार कहकर अछूत कहकर पशु बनाकर रखे हैं और उनके साथ जरा भी दया-मायाकी बात कहने पर पंडित लोग पोथी लेकर मारने दौड़ते हैं। जो जोंकें न रहें, तो इनमें भी न जाने कितने-कितने वीर बहादुर निकलेंगे, कितने दिमाग़वाले दिखाई पड़ेंगे।

६. भस्मासुर भूतनाथ पर चढ़ दौड़ा था

भैया—उस दिन दुक्खू भाई, तुमने ठीक कहा था। सचमुच ही हिटलरने वही किया, जो भस्मासुरने भूतनाथके साथ किया। विलायत की जोंकोंने हिटलर को अपना लाड़ला बेटा बनाया था। जब (३० जनवरी १९३३ को) जर्मनीका राज्य

जोंकोंके इस गुण्डेके हाथमें आ गया, तो विलायतकी जोंकें फूली न समाती थीं। उन्होंने सोचा हमने हिटलरको इतना मजबूत कर दिया कि वह रूसके बोलसेविकोंपर टूट पड़े और हमारा यह सबसे बड़ा दुश्मन बरबाद हो जाय। पिछली लड़ाईमें जर्मनी ने जो खूनी जंग छेड़ा था, उसको देखकर अंग्रेज; फ्रांसीसी और उनके दूसरे मित्रोंने जर्मनीसे ऐसी-ऐसी सरतें मनवाई थीं, जिसमें वह फिर सिर उठाने लायक न रह जाय। हिटलर एक ओर अपने देसवालोंसे कहता था कि हमें पंगु नहीं रहना चाहिए; दूसरी ओर बाहरी देसोंकी जोंकोंको खुस करनेके लिए वह बोलसेविकोंके सत्यानाश करनेकी बात करता था। जर्मनी और फ्रांसके सरहदपर राइन नामकी एक नदी है। जर्मनीने यह सर्त मानी थी, कि वह राइनके इलाकेमें कोई फौज नहीं रक्खेगा। और यह भी लोगोंको जब्र-जस्ती फौजी विद्दा सिखाकर अपनी सेनाको नहीं बढ़ायेगा। हिटलरने कमेरोंको अपनी तरफ खींचनेके लिये झूठ बोलना सुरू किया, कि हम भी अपनी खोमका सामबाद (जोंक बिना राज) चाहते हैं, कुछ लोग आसा रखते थे कि हिटलर कमेरोंकी भलाईके लिए कुछ करेगा, लेकिन हिटलर तो जोंकोंके हाथकी कठपुतली था, उसने तो कमेरोंपर ही खूब जुलुम किया। इसपर झूठी आसावाले लोग तिल-मिलाने लगे। फिर तो राज सँभाले डेढ़ बरस भी नहीं हुआ, कि उसने ३०, १९३४ को हजारों अपने ही साथियोंको बड़ी बेदरदीसे कतल करवा डाला। इनमें उसके ऐसे भी साथी थे जिनकी मदतके बिना वह इतना बढ़ सकता था। विलायतकी जोंकें और भी खुस हुईं।

सन्तोखी—क्यों न खुस होतीं, उन्होंने सोचा होगा, कि हिटलर के आस-पास जो थोड़े-बहुत जोंकोंके विरोधी रह गये थे, वह भी खतम हो गये।

भैया—हिटलरने दो साल और तैयारी की और मार्च १९३५ में जबरजस्ती सेना बढ़ाने वाली सर्त भी तोड़ दी। पड़ोसी फ्रांस बहुत घबराया। बिलायती जोंकें कहने लगीं, कि जो हिटलर फौज न बढ़ायेगा, तो बोलसेविकोंसे लड़ेगा कैसे? हिट-लरने अब बड़े जोर-सोर से सेना और हथियार बढ़ाना शुरू किया। साल भर और बीता। ७ मार्च १९३६ को राइनके इलाकेमें उसने एक बहुत बड़ी फौज भेज दी। फ्रांस बहुत फड़फड़ाया। लेकिन विलायती जोंकें समझने लगीं कि बोलसेविकोंसे लड़नेके लिए हिटलरको ऐसा करना ही चाहिए। दुनिया के लोग आँख मलमलकर देखने लगे। उन्हें साफ मालूम होने लगा कि अब फिर दूसरा महाभारत होगा। बूढ़े बाल्डविन विलायतकी जोंकोंके बड़े सरदार वहाँ के महामन्त्री थे। बुढ़ापेके कारण उन्होंने गद्दी छोड़ी और उनकी जगह-पर जोंकोंका सरदार नेविल चेम्बरलेन ३१ अगस्त १९३७ को विलायतका महामन्त्री बना। जोंकोंका सरदार होनेके लिए जितने गुनोंकी जरूरत है, वह सब इस आदमीमें थे। और उसके साथी भी उसीकी तरह एकसे एक छँटे थैलीसाह थे। साइमन, होर और हेलीफाक्स (जो पहिले हिन्दुस्तान का बड़ा लाट इरविन था) सभी एक ही हाँड़ीके नहलाये हुए थे, "कोउ बड़ छोट कहत बड़ दोसू।"

सन्तोखी—इरविन वाइसराय। ऐसे ही ऐसे न हिन्दुस्तानमें बड़ा लाट बन आते रहे।

भैया—और क्या जोंकें बेवकूफ थोड़े ही हैं, छँटे आदमियों को वह हिन्दुस्तान भेजती रहीं। चेम्बरलेन और उसकी गुटका यही मन्त्री था "थैली माता थैली पिता,

थैली बन्धू थैली सखा"। चेम्बरलेनने हिटलरको और बढ़ावा दिया। वह समझ गया कि विलायतकी जोंकें हमारे रास्तेमें कोई वाधा न डालेंगी। उसने १२ मार्च १९३८ को आस्ट्रिया के राजपर कब्जा कर लिया। विलायतकी कुछ जोंकें घबराईं, लेकिन उनके सरदारोंकी चंडाल-चौकड़ी तो आसा बाँधे हुए थी कि हिटलर बोलसेविकोंके नास करनेकी वड़ी भारी तैयारी कर रहा है। हिटलरने पाँच वर्षोंमें अपने सारे कारखानोंको लड़ाईका सामान तैयार करनेमें लगा दिया, और नवजवानोंको फौजमें भरती कर लिया। उसके टंक, तोप, हवाई-जहाज और लाखों की पलटन का तमाशा देखने के लिए विलायत की भी जोंकें जर्मनी जाती थीं, और वहुत खुस होतीं थीं। छः महीने और बीते। सितम्बर १९३८ में हिटलरने अपने पूरबके पड़ोसी चेकोस्लोवाकियापर लाल-लाल आँख की। चेम्बरलेन बिलायतसे दो-दो बार उड़कर हिटलरके दरबार में गया। अन्तमें १९ सितम्बर को उसने, दलादिए (फ्रांस) आदि जोंक सरदारोंने चेकोस्लोवाकियाकी बलि दे दी। पहले हिटलरने थोड़ा-सा हिस्सा लिया, फिर १५ मार्च १९३९ को सारे चेकोस्लोवाकिया को हड़प गया।

सन्तोखी—दूसरे-दूसरे मुल्कोंको हिटलर हड़पता जा रहा था, तो क्यों विलायती जोंकोंको भय नहीं हुआ; आखिर यह देस भी तो जोंकों हीके थे।

भैया—चेम्बरलेन जैसे जोंक-सरदारों का ख्याल था, कि चेकोस्लोवाकियासे ही रूस नजदीक है, इसलिए बोलसेविकोंको नास करने के लिए हिटलरको वह मिलना ही चाहिए। चर्चिल जैसी कुछ जोंकें घबड़ा रही थीं, क्योंकि वह समझती थीं, कि जर्मनीकी तागत बहुत बढ़ जानेपर जो कहीं उसने हमारी ओर मुँह मोड़ा, तो कैसे जान बचेगी ?

सन्तोखी—यह बात चेम्बरलेन और उसकी चंडाल-चौकड़की समझमें क्यों नहीं आई।

भैया—स्वारथी अन्धा होता है। चंडाल-चौकड़ी करोड़पतियों की गुट थी। चेम्बरलेनका बाप अपने समयमें विलायत का एक मंत्री था। उसका अपना एक लोहेका कारखाना था। १९०० ई० में दक्खिनी अफरीकामें लड़ाई हो रही थी। चेम्बरलेन मंत्री भी था, उसने कारखानेकी चीजोंका दाम दुगुना-तिगुना कर दिया। फौजके लिए उसीके यहाँ से सामान खरीदा जाता। उसने दोनों हाथसे खूब लूटा। उस वक्त विलायत में कहावत थी, "जितना ही अँगरेज राज बढ़ता है, उतना ही चेम्बरलेनका ठेका बढ़ता है।" यह तो बाप चेम्बरलेनकी बात हुई। बेटे चेम्बरलेनकी भी सुनिए। उसके हथियार के एक कारखाने (बर्मिंघम स्माल आर्म्स) को १९३८ में दो-सौ गिन्नी नफा हुआ था, लेकिन उसी कम्पनी ने १९३८ में साढ़े चार लाख गिन्नी नफा लूटा—इस वक्त चेम्बरलेन विलायतका महामन्त्री था।

सन्तोखी—सरम होनी चाहिये थी भैया ! अपने ही सरकारका मुखिया और सरकारी खजानेसे इतना-इतना रुपया अपने रोजगारको दिलवाना।

भैया—जोंकोंके समाजमें ऐसी बातको सरम नहीं कहा जाता। इसे कहते है ईमानदारीका ब्यौपार ? चेकोस्लोवाकियापर हिटलरने जब दाँत गड़गया था, उस वक्त चंडाल-चौकड़ीको थोड़ा डर तो लगा; लेकिन चेम्बरलेन, बाल्डविन, होर, साईमन बरसोंसे रुपया बटोरने में लगे हुए थे। तोप, बन्दूक, टंक, हवाई-जहाज बनानेके

लिए करोड़ों रुपया चाहिए और यह रुपये जोंकोंकी ही तोंद काटनेसे आते, इसलिए वह उसके लिए क्यों तैयार होते ? उधर हिटलरके पास पलटन और हथियार अनगिनत थे, जब कि विलायती सूमड़ों ने मुट्ठी बांध ली थी, और अपने कारखानोंसे चौगुने दामपर खरीदे थोड़ेसे हथियार दिखलाने के लिए रख छोड़े थे। हिटलर जानता था, कि यह लोग बंदरघुड़की देनेसे और अधिक कुछ नहीं कर सकते। अब हिटलरने यूरपके एक बड़े भागपर कबजा कर लिया था। जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया सभी देशोंके हथियारोंके कारखाने उसके लिए काम कर रहे थे। बीस बरससे सिर झुकाए हुए जर्मनोंको यह सब जादू जैसा दिखाई पड़ने लगा। हिटलरने जर्मन अरिया जातिको सारी दुनियापर राज करने के लिए भगवानकी ओरसे भेजा गया था, और साथ ही यह भी कि हर जाति में नेता भी भगवान ही भेजते हैं। हिटलर सारी मानुख-जातिपर राज करने के लिए भेजा गया था। जर्मन जातिका इसका गर्व होने लगा। हिटलरनें मक्खनकी जगह बन्दूक बनवाने की बात कहकर जर्मनों को आलू खाने के लिए मजबूर किया। उसने दिलासा दिया था, कि जब संसार भरपर जर्मन जातिका झण्डा गड़ जायगा, तब दुनियाके सभी लोगोंका धरम जर्मन जातिके आराम और भोग के लिए काम करना होगा। हिटलर उतावला हो रहा था संसार विजयके लिए। अब उसके सामने दो रास्ते थे—एक तो अपने पहले कहे मुताबिक बोलसेविकों के ऊपर दौड़े और दूसरा रास्ता था बाहरी जोंकोंके ऊपर झपटनेका। फ्रांस, इंग्लैण्ड सब जगहकी जोंकोंने पैसा बचा-बचाकर रखा था। फौजके मदमें जो रुपया मंजूर भी किया था, उसे भी चौगुना दामपर रद्दी-सद्दी हथियार देखकर ले लिया था। जोंकोंके पास न हथियार था न पलटन जो हिटलर की फौजका सामना कर सकतीं। लेकिन बोलसेविकोंके यहाँ आँख में धूल झोंकनेकी कोई बात नहीं थी, वह समझते थे कि दुनिया की जोंकें हमें खा जानेके लिए तैयार बैठी हैं। हमारी तभी रच्छा हो सकती है, जब हमारे पास अच्छे-अच्छे हथियार और पलटन हों। उन्होंने बीस बरससे बराबर इसके लिए तैयार की थी। जिन वक्त जर्मनीको निहत्था बना दिया गया था और वह नाम मात्रके लिए थोड़ीसी पलटन रख सकता था और जर्मन जनरैल टके-टके पर मारे-मारे फिरते थे; उस वक्त बोलसेविकोंने उन्हें अपने यहाँ नौकर रखा और लड़ाईकी विद्या सिखानेके लिए कहा। यह जरनैल कई-कई साल रूसमें रह चुके थे ? उन्होंने वहाँकी लाल फौजको बहुत नजदीकसे देखा था कि लाल फौजकी ओर बढ़ना अक्लमन्दी नहीं है।

दुखराम—बेचारी जोंकें ताकती ही रह गईं।

भैया—पोलैंड, जर्मनी और रूसके बीचमें पड़ता है। पोलैण्डने बीस सालसे अपने यहाँ तालुकदारोंका ख़ूनी राज कायम कर रखा था और किसानों और मजूरोंका हर तरहसे पीसना ही अपना काम समझा था। हिटलरने दो-चार मरतबे इन तालुकदारोंको चाय पीने के लिए बुलाया, फिर क्या था, इनका मिजाज आसमान पर चढ़ गया। यह भी तीसमारखाँ बन गए। जब हिटलरने चेकोस्लोवाकिया पर कबजा किया, तो इन तलुकदारोंने भी बढ़कर एक परगना पर झपट्टा मारा। हिटलर मुस्कुरा रहा होगा, मेंढक मच्छर को निगलने के लिए मुंह बा रहा है; उसे यह मालुम नहीं कि उसकी पिछली टाँगें साँप के मुंहमें हैं।

दुखराम—तो हिटलर पोलैण्ड लेनेका निश्चय कर चुका था क्या ?

भैया—हिटलर जानता था कि अब आगेका कदम ऐसा होगा कि बिलायत और फ्रांसकी जोंकें चुप नहीं बैठ सकेंगी। वह फ्रांसपर हमलाकर सकता था लेकिन फ्रांसकी पलटनके बारेमें बहुत लम्बी-चौड़ी बातें कही जाती थीं। अंग्रेज कहते थे, कि दुनियामें तो दो ही पलटन है—धरती की पलटन फ्रांसके पास और समुन्दर की पलटन हमारे पास।

दुखराम—और धरतीकी सबसे बड़ी पलटन हिटलरसे कितने साल तक लड़ी भैया।

भैया—तीन हफ्ता ?

दुखराम—तीन साल भी नहीं, तीन महीना भी नहीं, तीन हफ्ता। और लाल पलटन के बारे में क्या कहते थे।

भैया—वह लड़नेवाली पलटन नहीं है, वह खाली तमासा देखने के लिए है। लेकिन आखिरमें बिलायत और फ्रांस और दुनियाकी सभी जोंकों को लाल-पलटनका लोहा मानना पड़ा। बिलायती जोंकोंके सरदार चर्चिलने कहा कि लाल पलटन न होती तो हमारा कहीं ठौर-ठिकाना न रहता। लेकिन हिटलर ऐसा नहीं समझता था। वह सोचने लगा कि बाकी दो रास्ते हैं—पोलैण्डकी ओर दौड़ा जाय तो पच्छिमकी जोंकें गला फाड़ती भले ही रहें, लेकिन वह मदद कुछ भी नहीं कर सकतीं। फ्रांस, बेल्जियम या हालैण्डकी ओर बढ़नेपर इन जोंकोंको कुछ करनेका मौका मिलेगा।

दुखराम—काँत (दाव) बैठा रहा था।

भैया—लेकिन पासा डालनेसे पहिले उसे कुछ और भी सोचना था। बोल-सेविकोंने सुरूसे ही दूसरी सरकारों को समझाया था, कि दुनिया की सांती के लिए सबको मिलकर कोसिस करनी चाहिए। लेकिन जोंकोंको सान्ती से क्या मतलब ? जब तक अपने घर में नहीं लगती, तब तक आग देसन्तर होती है; लेकिन जब हिट-लरका खतरा साफ दिखाई देने लगा, तब फ्रांस और इंग्लैण्डने रूसको अपनी ओर मिलाना चाहा। रूसने सोचा, कि जोंकोंका गुण्डा ज्यादा खराब होता है, इसलिए इस गुन्डे हिटलरको खतम करनेके लिए कुछ किया जा सके तो अच्छा है। फ्रांस और इंगलैण्डने अपने अफसर मास्को भेजे। लेकिन वह हिटलरसे लड़नेके लिए बात करने गए थे, बल्कि चाहते थे कि हिटलर उतावला होकर रूसपर दौड़ पड़े, लेकिन कमेरोंके नेता कच्चे गुइयाँ नहीं थे। इस्तालिन वीरने कह दिया, कि हम दूसरे की आगमें जलनेके लिए तैयार नहीं हैं। जोंकोंके मुखिया मास्कोसे खाली हाथ लौट आए। उधर हिटलरने २३ अगस्त १९३९ को अपने विदेस मन्त्री को मास्को भेजकर बोले-सेविकों से कहा कि न हम तुमपर हमला करें न तुम हमारे ऊपर करो। कागजपर दोनों ओर की दस्तखत हुई। ११ दिन बाद ३ सितम्बर १९३९ को हिटलरने पोलैण्ड पर हमला कर दिया। विलायत और फ्रांसकी जोंकों के लिए कोई चारा नहीं था। उन्होंने भी हिटलरके खिलाफ लड़ाई छेड़ दी, लेकिन पोलैंडके तालुकदारों को कोई मदद नहीं पहुँचा सके। कुछ ही दिनोंमें सारे पोलैण्डको हिटलरने ले लिया। लेकिन पोलैण्डने २१ साल पहिले रूस से कुछ जमीनको दबा लिया था। अब हिटलरकी फौज ने उधर बढ़ना चाहा, तो लाल फौजने आगे बढ़कर अपने पुराने इलाके को ले

लिया। हिटलर मुंह ताकता रह गया। बिलायती जोंकें बकने लगीं, कि बोलसेविकों ने तो पोलैंडकी जमीन ले ली और घायल पोलैंड की बेबसीको देखकर ऐसी कायरता दिखलाई। लेकिन इन जोंकोंको यह कहनेमें जरा सरम न आई, कि उन्हींके सरदार लार्ड कर्जनने रूसकी सीमा जहाँ तक ठीक की थी, लालसेनाने उतना ही लिया। हिटलरको इस तरह बढ़ते हुए देख बोलसेविकोंको अपनी सीमाकी रच्छाका पूरा ख्याल करना ही था। रूसकी पुरानी राजधानी और मास्कोके बाद सबसे बड़ा सहर लेनिनग्राद खतरे में था, फिनलैंड की सीमा उससे १४ ही मीलपर थी। फिनलैंड भी तालुकदारों के हाथमें था, जिन्होंने ४० हजार कमेरोंके खूनसे अपने हाथको रँगा था और जो हिटलरके छुटभैया बननेके लिए बराबर तैयार थे। सोवियतने फिनलैंडसे कहा, कि इस सीमा को थोड़ा और पीछे हटाओ हम तुम्हारी बगल हीमें तुम्हें तिगुनी जमीन बदलेमें देते हैं। लेकिन वह इसके लिए क्यों तयार होने लगे? वह भी तो समझते थे, कि जब तक पड़ोसमें कमेरों का राज है, तब तक हमारी गद्दीकी खैरियत नहीं। फिनलैंडने जब किसी तरह बात नहीं मानी और सरहदकी लाल फौजपर गोली भी चला दी, तब कोई रास्ता नहीं था। लाल फौजकी फिनलैण्ड के तालुकदारोसे लड़ाई छिड़ गई। उस वक्त चेम्बरलेनको फिर जोश आया।

दुखराम—हिटलरसे लड़नेके लिए?

भैया—हिटलरसे नहीं, रूससे लड़नेके लिए। लाखसे ऊपर पलटन फ्रांस और और इंगलैंडसे भेजी जाने वाली थी, लेकिन बीच हीमें फिनलैंडका दिमाग ठंडा हो गया और उसने सोवियतकी बात मान ली। कमेरोंका राज कायम होनेपर चार जातियाँ और बिछड़ गई थीं, जिनमें एस्तोनियाँ, लतबिया, लिथुअनियाँ इन तीनों देशोंकी जोंकोंने अपने मतलबके लिए अपने देशको अलग किया था। वहाँ के कमेरोंने देखा, कि उनकी सीमाके उस पार कैसा सरग तैयार हो रहा है। तीनों देसोंसे कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकोंको बिदा किया और वोट देकर तय किया कि हम भी सोवियत राजमें सामिल होंगे, और वे १९४० में सोवियतमें सामिल हो गये। दक्खिन-पच्छिममें बेसराबियाका इलाका था, जिसे रूमानिया की जोंकोंने दखल कर लिया था। सोवियत ने रूमानियाँसे अपनी जमीन लौटाने के लिए कहा, रूमानियाँकी जोंकें पसंद नहीं करती थीं, लेकिन करें क्या? बेसराबियाको छोड़ना पड़ा। सोवियतमें अब सब मिलाकर सोलह बड़े-बड़े पंचायती राज हैं।

दुखराम—नाम क्या-क्या है भैया?

भैया—(१) रूस, (२) उक्रइन, (३) बेलोरूसिया, (४) करेलोफीन, (५) एस्तोनिया, (६) लतविया, (७) लिथुवानिया, (८) मल्दाविया, (९) जार्जिया, (१०) आरमेनिया, (११) आजुरबाईजान, (१२) तुर्कमानिस्तान, (१३) उज्बेकिस्तान, (१४) ताजिकिस्तान, (१५) किरगिजिस्तान, (१६) कजाकिस्तान।

दुखराम—यह तो बड़े-बड़े परजातन्तर हैं और कितने ही छोटे-छोटे भी होंगे?

भैया—हाँ, लेकिन उनका नाम देनेसे क्या फायदा? कभी नकसा मिलेगा तो तुम्हें दिखला देंगे।

दुखराम—हिटलरने आगे क्या किया भैया!

भैया—हिटलर चुप तो नहीं बैठ सकता था। वह जानता था कि जब तक फ्रांस और इंगलैण्ड को नहीं पछाड़ते तब तक दुनियाके आधे भागको हम अपनी जोंकोंको चूसनेके लिए नहीं दे सकते।

सन्तोखी—तो हिटलर भी जोकों हीके लिए सब कुछ कर रहा था ?

भैया—जोंकों का ही तो आखिरी नायक था। इंगलैण्ड और फ्रांसकी पूंजी-पति जोंकोंने सौ बरस पहिले अपने यहाँ तालुकदारों (सामंतों) को पछाड़ने के लिए जनताकी गुहार उठाई थी। काम बन जाने पर उन्होंने जनताको चूसनेके सिवाय और कोई काम नहीं किया। लेकिन यह काम वह परदा डालकर करते आए थे और वोट और चुनाव का नाटक करते थे।

सन्तोखी—नाटक क्यों भैया ?

भैया—जानते हो न, जोंकोंके राजमें वोटकी बिक्री होती है। कोई करोड़-पति संसद एसंबलीके लिए खड़ा होगा, वह वोटरोंको रुपया बाँटता फिरेगा। अपने दलालोंको रुपया देकर वोट लेनेकी कोशिश करेगा। उसके सामने कोई किसान-मजूर कैसे खड़ा हो सकेगा।

दुखराम—उसकी जमा-पूंजी तो मोटरके तेलमें ही बिक जायगी।

भैया—इसीलिए मैंने कहा कि जोंकोंके राजमें ईमानदारीसे वोट नहीं दिया जा सकता। लेकिन, कभी-कभी इस वोटसे जोंकें घबराती भी हैं। जमंनीमें हिटलरने कहा—नेताको भगवान चुनते हैं, इसलिए उसको किसी पाखंडकी जरूरत नहीं, लेकिन तब भी अपनी गीत सुनानेके लिए वह कभी-कभी वोटका नाटक खेलता था। उसके गुंडे देखा करते थे कि कोई आदमी वोट देनेसे जी तो नहीं चुराता या गड़बड़ तो नहीं करता। जहाँ पता चला कि बेचारेपर आफत।

सन्तोखी—गुंडोंको भी भैया, जोंकें ही पैदा करती हैं ?

भैया—हिटलरने डेनमार्क और नारवे जीता। फिर वेल्जियम और हालैंड को खतम किया और तीन ही हप्तेमें फ्रांसकी जबरजस्त सेनाने भी हथियार रख दिया।

दुखराम—जबरजस्त सेना होनेपर जल्दी हथियार क्यों रख दिया भैया !

भैया—सुना है, हिन्दुस्तानके किसी राजाका अफसर अँगरेजोंसे मिल गया और उसने किलेमें बारूद की जगह भूसी भरवा दी थी।

दुखराम—इसी तरह का विश्वासघात फ्रांसमें हुआ क्या ?

भैया—फ्रांसका राज दो सौ जोंक परिवारोंके हाथ में था। यही वहाँके करोड़-पति थे। फ्रांसमें तीन बार कमेरोंने अपना जोस दिखलाया और आखिरी बार तो कई महीने पेरिसमें राज भी किया। फ्रांसकी जोंकोंको डर था कि फिर कहीं कमेरे उठ खड़े न हों, इसलिए भीतर ही भीतर वह जरमन जोंकोंसे मिल गए। फ्रांसीसी बहुत बहादुर जाति है। वहाँ सिपाही डरना नहीं जानते, लेकिन उनके हथियार निकम्मे थे और जरनैल तो और भी निकम्मे थे। जो तीन हफ्ते में हिटलर ने फ्रांसको हरा दिया; इसमें हिटलरी फौज की बहादुरी उतना कारन नहीं थी, जितना कि फ्रांसकी जोंकोंका बिसवासघात। फ्रांसके खतम होनेके बाद तो अब जर्मन गुंडोंको दौड़ लगानेकी जरूरत थी। मसोलिनी पहले ही गिद्धकी तरह ताक लगाए हुए था।

अभी वह इंगलैंड और फ्रांसके जंगी जहाजोंसे डरता था, लेकिन अब पीछे रहनेका मतलब था, लूटमें हिस्सा न पाना, इसलिए वह भी हिटलरके साथ मिल गया। हंगरी, रूमानियाँ और बोलगारियाने बिना लड़े ही हिटलरकी गुलामी मान ली। यूगोसलाविया और यूनानको उसने पीस दिया। लड़ाई अफ्रीकामे चली आई। अब सोवियतसे बाहरका सारा यूरप हिटलरके हाथमें था। सभी मुल्कोंके कल-कारखाने उसके लिए काम करते थे।

सन्तोखी—तो यूरपमें कोई नहीं बच रहा था ?

भैया—बच रहा था इंगलैंड, क्योंकि वह यूरपसे बाहर समुन्दरके बीचका टापू था। हिटलरके पास उतने जंगी जहाज नहीं थे। अपने हवाई जहाजोंको वह भेजकर लन्दन और दूसरे सहरोंको तहस-नहस करता है।

सन्तोखी—फ्रांसकी जोंकें तो हिटलरके जूते चाटने लगीं, लेकिन चेम्बर-लेनका क्या हुआ ?

भैया—जानते हो न जोंकोंमें भी बेसी धनी और कम धनीका फरक होता है। दोनों एक दूसरे से घिना करते हैं। हाँ, जोंकोंके धनपर कमेरे दाँत गड़ाने लगते हैं, तब सभी जोंकें एक हो जाती हैं। हिटलर और इंगलैंडके बीचमें एक पतलीसी खाड़ी रह गई थी। विलायतकी जोंकें घबरा गईं। फ्रांसकी दसा क्या हुई, इसको उन्होंने अभी-अभी देखा था। उन्होंने समझा सांतिके समय जिस जोंक से काम चल सकता है, लड़ाईके समय उसीसे काम नहीं चलता। चेम्बरलेनका पाप एक-एक करके गिनाया जाने लगा। बेचारेको गद्दी छोड़नी पड़ी और चर्चिल उसकी जगह महामन्त्री बना।

दुखराम—चर्चिल भी तो जोंक था भैया !

भैया—बड़ी जोंक और हिन्दुस्तान के लिए तो काला साँप था। लेकिन इसके बारेमें हम फिर किसी दिन कहेंगे। इतनी बात जरूर है, कि हिटलरको बहुत आगे बढ़ते देखकर चर्चिल पहिलेसे ही बोलने लगा था—हमें लड़ने के लिए तैयार होना चाहिए। जोंकोंमें वही आदमी था, जो इंगलैंडको कुछ आसा दिला सकता था। वह पिछली लड़ाईका मन्त्री था ?

दुखराम—उसीने न कमेरोंके राजको खतम करनेके लिए पलटन भेजी थी ?

भैया—और वह बीस बरस तक सोवियतको गाली देता रहा। लेकिन विलायती पारलियामेंट सभामें जोंकोंका ही जोर था। इसलिए उसको महामंत्री बना दिया गया।

७. पागल सियार गांव की ओर

भैया—दुक्खू भाई ! बहुत नाम कहनेसे समझमें गड़बड़ मच जाती है। यूरपके छोटे-मोटे कितने देसोंका नाम मैंने गिना दिया है। कहनेसे नकसा दिखानेमें

बात जल्दी समझमें आती। देखो जो कहीं नक़सा मिल गया, तो मैं ले आकर दिखाऊं। लेकिन एक नाँव और सुन लो। अमेरिका नाम सुना है ?

दुखराम—हाँ भैया ! नाम सुना है सोमारू काका कहते थे, कि परागराजमें अमेरिकाकी पलटन आई थी। लेकिन भैया ! अमेरिका अँगरेजोंकी इतनी मदद क्यों करता था ?

भैया—कमाके खानेवालों में सच्ची दोस्ती हो सकती है, लेकिन लुटेरोंमें कभी नहीं हो सकती। जब हिटलर इतना बढ़ने लगा, तो अमेरिकाको भी भय लगने लगा। उसने समझा जो फ्रांस और इङ्गलैण्डको चित करके आधी दुनियामें हिटलर का कबजा हो गया और फिर दलबलके साथ हमारे ऊपर झपटा, तो तेरह करोड़ आबादीका अमेरिका उसके सामने कितने दिनों तक टिकेगा ? इसलिए अमेरिका पहिले हीसे इङ्गलैण्ड और फ्रांसको हथियार बेंच रहा था।

सन्तोखी—बेंचने में तो नफा ही है न भैया ?

भैया—और खतरा भी। जो कहीं हिटलर जीत जाता, तब तो पहिले हीसे उसे नाराज कर लिया न ? अमेरिकाके परधान रुजवेल्टने कई बार हिटलरको जली-कटी भी सुनाई।

दुखराम—दोनोंकी भेंट हुई थी क्या भैया ?

भैया—दोनोंके भेंट होनेका क्या काम है दुक्खू भाई ! रेडियो बाजा एक की बात दूसरी जगह पहुँचानेको तैयार ही है। अब सुनो, हिटलर क्या सोच रहा था ? सारे फ्रांस और सारे यूरपके ले लेनेके बाद अब वह सोचने लगा कि इङ्गलैण्डकी ओर बढ़ें या क्या करें। अमेरिका इङ्गलैण्डकी ओरसे लड़ाईमें कूदनेके लिए तैयार दिखाई पड़ता था। उसने सोचा जो मैं इङ्गलैण्ड और अमेरिका से भिड़ गया तो समुन्दर पार करने के लिए उतने जङ्गी जहाज नहीं हैं, अमेरिकाकी तागत बहुत बड़ी है। उसके पास इतने बड़े-बड़े कारखानें हैं, कि वह पतंगकी तरह चुटकी बजाते-बजाते हवाई जहाज बनाता जायगा। जर्मनोंसे करीब-करीब दूनी अमेरिकाकी आबादी है। वहाँ तक पहुँचना मुश्किल है। जो कहीं लड़ाई जियादा दिन चली, लड़ते-लड़ते जर्मनी बहुत थौस (निरधन) गया। और इधर बोलसेविक चुपचाप अपनी फौज बढ़ाते रहे, हथियार पर सान लगाते रहे, फिर तो सब कुछ कर-धरके भी हमें मरना ही होगा। बात यह थी कि बोलसेविकों की कोई ऐसी नीयत नहीं थी। हाँ, वह हिटलरकी बातपर कभी विसवास नहीं कर सकते थे।

दुखराम—जब जोंकोंपर ही विसवास नहीं कर सकते थे, तब जोंकोंके गुंडेपर कैसे करते ?

भैया—यूरप जीतनेसे हिटलर का दिमाग बढ़ गया। उसने सोचा—फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकियाके बड़े-बड़े गोला-बारूद बनानेवाले कारखाने हमारे लिए हथियार बना रहे हैं। हमारे सामने फ्रांस तीन हफते नहीं ठहर सका। अब हमारी ताकत इतनी है कि बोलसेविकोंको पीस सकते हैं। उसके जरनैलों-मेंसे कुछने समझाया, कि लाल-पलटन के बारेमें ऐसा सोचना अच्छा नहीं है। लेकिन जरनैलोंकी बात नहीं मानी।

दुखराम—क्यों मानेगा ? भगवानने दुनियापर राज करनेके लिए जरनैलोंको भेजा था या हिटलरको ?

भैया—हिटलर यह भी ख्याल करता था, कि चारों खूंट तक विजयपताका गाड़े विना मेरे लिए खैरियत नहीं। जो इतने दिनों तक मक्खनकी जगह आलू खाते आये हैं, वह मुझे ही खाने लगेंगे। और इङ्गलैण्ड, अमेरिकाके हरानेमें कमजोर हो जानेपर हम फिर बोलसेविकों का कुछ नहीं कर सकेंगे।

दुखराम—और बोलसेविकोंके हरानेकी आसामें जर्मनीवाले पचीसों साल तक न आलू खानेके लिए तैयार होंगे और न यही आसा थी कि हिटलर अमिरतकी घरिया पीकर आया है।

भैया—हिटलरके लिए कागजपर दसखत करना कोई चीज नहीं। वह कह ही चुका था, कागजपर दसखतकी जाती है फाड़ने के लिए।

दुखराम—जोंकोंका यही धरम है।

भैया—आखिर २८ जून १९४१ को हिटलरने कमेरों की धरतीपर हमला कर दिया। हिटलरने जितनी तैयारी की थी, अभी लाल सेना उतनी तैयार न थी। लाल सेनाको पीछे हटना पड़ा, और कभी-कभी तो दस-दस बारह मील एक दिनसे पीछे हटना पड़ता। लाल सेना बहुत बहादुरीसे लड़ी। कितनी ही बार ऐसा देखा गया, कि लालसेनाने किले को तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि एक भी सिपाही जिन्दा रहा। लेकिन उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

सन्तोखी—उस वक्त तो भैया ! मैंने भी सुना था कि रूस कुछ ही दिनोंमें खतम हो जायगा।

भैया—हिटलरने खुद कहा था, कि मैं तीन मासमें रूसको पीस दूंगा। रूसके ऊपर हमला होते ही चर्चिलके जानमें जान आई। चेम्बरलेन वेचारा तब तक मर गया था, नहीं तो न जाने उसे क्या होता। चर्चिल को अभी तक पूरी आसा नहीं थी। लेकिन अब उसे विश्वास होने लगा, कि रूसके कारण इङ्गलैण्ड बच जायगा। हिटलरने अपने दाहिने हाथ हेसको बिलायत भेजा। हेस जिस बड़ी जोंकके घर उतरना चाहता था, वहाँसे दूर किसी जगहमें उसे हवाई जहाजसे उतरना पड़ा। लोगोंने पकड़ लिया। बात पहले हीसे खुल गई तब भी विलायतकी जोंकोको उसने बहुत समझानेकी कोशिश की—हिटलर इङ्गलैण्ड से दोस्ती करना चाहता है, वह सिर्फ बोलसेविकोंको खतम करना चाहता है। वह पक्का वचन देनेको तैयार है, कि हम कभी इंगलैण्ड और उसके राजकी ओर आँख नहीं लगायेंगे। लेकिन आप लोग हिटलरसे दोस्ती कर लें। उसने बहुत समझानेकी कोशिश की कि बोलसेदिक ही हम सबके सबसे बड़े दुसमन हैं। हिटलरके इस काममें सबको मदद देनी चाहिए।

दुखराम—तो विलायती जोंकोंने हिटलर की बात क्यों नहीं मानी भैया ! वह तो उन्हींके भलाईकी बात कह रहा था।

भैया—हिटलर की बात पर कैसे विश्वास कर लेते ? चर्चिल जानता था कि जो रूस भी खतम हो गया, तो हम अकेले हिटलरसे कभी नहीं बच सकते। उस वक्त अकेले लड़ना अपने ही हाथों अपने गलेमें फाँसी लगाना होगा।

सन्तोखी—यह तो ठीक है, लेकिन बिलायती जोंकें बोलसेविकोंको भी तो अपना दुसमन समझती थीं।

भैया—रूसपर हमला होते ही चर्चिलने रेडियोबाजामें तुरन्त कहा, कि इङ्गलैण्ड तन-मनसे रूसके साथ है। साथ ही उसने कहा था, कि बीस बरसमें मैंने बोलसेविकोंके खिलाफ जो कुछ कहा है, उसमेंसे एक अच्छर भी लौटानेके लिए तैयार नहीं। यह सब कहते हुए भी चर्चिल इतना जानता था, कि बोलसेविक हिटलरकी तरह दूसरे देसोंमें अपनी फौज भेजकर वहाँ के सहरोंको उजाड़ कर बच्चों-बूढ़ोंको मारकर रूसका राज कायम करने नहीं जायँगे। इसीलिए चर्चिलने उस बखत हिट-लरके छुटभैया हेसकी बातको ठुकरा दिया और इस्तालिनसे हाथ मिलाया।

सन्तोखी—और हिटलर की फौज जोरसे आगे बढ़ती गई।

भैया—जोरसे बढ़ती गई। और मैं कहूँ सन्तोखी भाई! मुझे एक छनके लिए भी कभी मनमें नहीं आया, कि हिटलर लाल सेनाको हरा सकेगा; किन्तु जितनी तेजीसे वह मास्को और लेनिनग्रादकी ओर बढ़ रहा था, उससे दिल घबरा रहा था। मास्कोके बीस मील नजदीक पहुँचकर जब लाल पलटनकी मार पड़ी और जिस बखत जोंक गुंडोंको पीछे हटना पड़ा, तो लोगोंको पता लगने लगा, कि लाल पलटनने पहिलेसे अपने लड़नेका ढंग सोच लिया था।

सन्तोखी—लेकिन भैया! लाल पलटन इतना पीछे क्यों हटती गई। पहिले ही क्यों नहीं पूरी ताकतसे लड़ी?

भैया—सन्तोखी भाई जो कोई आदमी जोरसे बेल फेंक रहा हो और तुम सीधे अपनी हथेलीके पर ओड़ने (रोकने) जाओ, तो पत्थर की तरह चोट लगेगी; लेकिन तुम दोनों हथेलीके बीचमें उसको आने दो और जैसे ही हाथको छुए वैसे ही हाथको बित्ता दो बित्ता पीछे हटा लो, तो फिर बेलका सारा जोर खतम हो जायगा। इसी तरह लाल पलटनने सोचा कि हिटलर अपनी सारी ताकतसे हमला कर रहा है। कहाँ ज्यादा हमला करना है और कहाँ कम यह बात भी वही जानता है, इसलिए इस बखत सरबसकी बाजी लगाकर लड़नेमें हमारा नुकसान ज्यादा होगा। वह हिट-लरकी चोटको सहते हुए पीछे हट गई। लेकिन कहाँ पहुँचकर फिर पीछे नहीं हटना है, यह भी वह जानती थी। हिटलरने गाल बजाया था, कि रूस को तीन महीने में खतम कर दूँगा। मास्को पहुंचनेका दिन तक धर दिया था और सिपाहियोंमें बाँटनेके लिए ढेरके ढेर तमगे भी ढाल लिये गए थे। लेकिन मास्कोके नजदीक पहुंचते ही जैसे लाल पलटन अपना पंजा बाहर निकालकर झपटी, कि हिटलरको लाखके करीब बढ़िया जवानवाली अपनी मजबूत पलटनको मरवाकर पचासों मील पीछे हट जाना पड़ा। लेनिनग्रादसे दस मीलपर हिटलरी पलटन पहुँच गई। और नौ-सौ दिन तक घेरा डालकर बैठी रही, लेकिन मजाल था कि एक कदम आगे बढ़े। इन दोनों बातों ने बतला दिया, कि लाल पलटनका पीछे हटाना हारे हुए जोधाका भागना नहीं था।

दुखराम—तो यह उसकी दाव-पेंच न थी भैया?

भैया—हाँ, दाव-पेंच थी। इस तरह हिटलरको जब सीधे मास्कोपर चढ़ाई करनेकी उम्मीद न रही, तो वह आगेसे घेर लेनेके लिए बोरोनेजपर कचकचाके पड़ा, लेकिन लाल पलटनने उसका दाँत तोड़ दिया और वहाँ से भी हिटलरी गुंडोंको

पीछे हटना पड़ा। यह तीसरी जगह थी जिसने बतला दिया कि लाल फौजके तरकस में अभी बहुत तीर हैं।

दुखराम—सचमुच ही भैया ? हिटलर और उसकी सेना गुंडोंकी सेना है, नहीं तो इस तरह बचन देकर तोड़ते।

भैया—बचन तोड़ने की ही बात नहीं दुक्खू भाई ? हिटलरने जो जुलुम रूसमें किया है, वैसा कभी नहीं सुना गया। वीरका काम है लड़नेवालेसे लड़ना, न कि बरस-बरसके बच्चोंको मारते जाना ?

दुखराम—क्यों भैया ? हिटलरने बच्चोंको भी मरवाया ?

भैया—एक दो नहीं पचासो हजार। कितनोंको बिखवाली हवा देकर मारा, कितनोंको खून निकाल-निकालकर मारा ?

सन्तोखी—क्या खून भी पीते हैं भैया ?

भैया—यह पीने ही जैसा था। लड़ाईमें जो बहुत घायल होते हैं, उनको ताजा खून पिचकारीसे देना पड़ता है। सव जगह आजकल खून जमा करनेका इन्तिजाम है। जवान हट्टे-कट्टे आदमीके शरीरसे खून लिया जाता है। दस सेर खूनमेंसे छटाँक दो छटाँक खून लेनेसे कोई आदमी नहीं मरता। मैं भी दो-तीन बार खून दे आया हूँ।

दुखराम—तो भैया ? तुम्हें तकलीफ नहीं हुई ?

भैया—तुमने कभी दवाईकी सुई ली है दुक्खू भाई।

दुखराम—हाँ भैया ? एक बेर तिल्ली (वरवट, पिलही) बढ़ गई थी, उसीके लिए चार-पाँच सुई ली थी।

भैया—तो सुई लेनेमें तकलीफ हुई थी कि नहीं ?

दुखराम—क्या तकलीफ होगी; जरा-सा छन्न-सा काँटा-सा लगा; और फिर सुईके पीछे पिचकारीमें भी दवाको नसमें डाल दिया।

भैया—उसी तरह सुई चुभाकर पिचकारी में खून निकालनेसे कोई तकलीफ नहीं होती, लेकिन जो ज्यादा खून निकाल लिया जाय तो आदमी मर जाता है।

दुखराम—तो राक्षसोंने ज्यादा-ज्यादा खून निकालकर बच्चोंको मार डाला ?

भैया—हजारों बच्चोंको खून निकालके मारा, हजारों बच्चों को गोली दाग के मार दिया, हजारों वेकसूर बूढ़ोंको मारा। औरतोंको तो लाखोंकी तादादमें मारा। हाथ बाँधकर लोगोंको सहरके बाहर ले जाते और हुक्म देते कि खाईं खोदो। खाईं खोदनेपर फिर तड़-तड़ गोली चला देते, और सब उसी खाईंमें गिर जाते।

सन्तोखी—आदमीका दिल कैसे इतना राक्षस जैसा हो सकता ?

भैया—मैं भी सन्तोखी भाई ! इन बातोंपर विश्वास नहीं करना चाहता था। जानते हो न लड़ाईमें झूठ-साँच भी बहुत चलता है, लेकिन जब लाल फौजने हिटलरी गुंडोंको पीछे ढकेलना शुरू किया और कमेरोंके शहर और गाँव फिर आवाद होने लगे तो उन खाइयोंको खोदा गया। पिघली हुई बरफके नीचे सैकड़ों लासें निकलीं। उनका फोटो लिया गया। मैंने उन फोटुओंको वम्बईमें देखा, तो सच कहता हूँ दिल खौलने लगा। नन्हें-नन्हें बच्चे, दो बरस, तीन बरस, चार बरसके एक नहीं,

दो-दो नहीं, पाँच-पाँच, सात-सात सौ मरकस सूखे पड़े हुए थे। औरतोंको पेट फाड़कर बेइज्जती करके मारा गया। सैकड़ों बेकसूर आदमियों को फाँसीपर झुलाकर महीने-महीने तक सहरके चौरस्तेपर लटका के छोड़ दिया गया।

दुखराम–तो इन राच्छसों को गुन्डा ही कहने से काम नहीं चलेगा, और कोई नाम ढूंढ़ना चाहिए।

भैया—उनका जुलुम भी ऐसा है दुक्खू भाई, कि जुलुम कहने से वह पूरा समझमें नहीं आ सकता। लेकिन जब गुन्डोंने इस तरह जुलुम करना शुरू किया, एक-एक सहरमें चालिस-चालिस पचास-पचास हजार निहत्थे आदमियोंको मार डाला, तो सोवियत-निवासियोंने भी जानपर खेलना शुरू किया। बारह बरसके लड़कोंसे सौ बरसके बूढ़ों तकने जान हथेलीपर रखकर गुन्डोंके साथ मुकाबिला करनेका निश्चय किया। जो इलाका जर्मनीके भी हाथ में चला गया था, वहाँके कितने ही नर-नारी जंगलोमें भाग गये। उन्हें तो अपने इलाकेका कोना-कोना मालुम था, गाँवकी गली-गली अँगुलीपर थी। वह रातको जिस वक्त भी मौका मिलता, जर्मन पलटनियों पर छापा मारने लगे। छापा मारके सिपाहियोंके बन्दूक, मसीनगन सब छीन लेते थे। कुछ ही समय में सारा इलाका छापामारोंसे भर गया और जर्मनों-को अपनी छावनियोंसे बाहर निकलने की हिम्मत न रही ?

दुखराम—छापामार क्या भैया ?

भैया—अपने दुश्मनोंसे बदला लेने के लिए वह बहादुर लोग दिन या रातको इक्के-दुक्के या गफलतमें पाकर हमला करते, इसीको छापा मारना कहते हैं। इसीलिए इन बहादुरों को छापामार कहते हैं।

सन्तोखी–हाँ भैया ! जब बराबरका जोर नहीं हो और एकके पास बड़े-बड़े हथियार और दूसरे के पास मुसकिल से कहीं एकाध बन्दूक हो, फिर यह छोड़ दूसरा रास्ता क्या था ?

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जर्मनोंके पास हजार-हजार पन्द्रह-पन्द्रह सौ मनके टैंक थे, अनगिनत हवाई जहाज थे, बड़ी-बड़ी तोपें थीं मिनट-मिनट में हजार गोली चलानेवाली मसीनगनें थीं। उधर लाल पलटन पीछे हट गई थी, और वहाँ रह गये थे गाँवों-सहरोंके निहत्थे नर-नारी। किन्हीं-किन्हीं गाँवोंमें तो बंदूकें भी न थीं, क्योंकि जर्मन गाँवमें पहुँचते ही बन्दूक छीन लेते थे, बादमें खाने-पीने की चीजें, रुपया-पैसा छीनते थे। लेकिन सोवियत के कमेरे जानते थे, कि हमारे सरगमें यह राछस घुस आए हैं। इनको सान्तिसे नहीं बैठने देना होगा। कभी-कभी तो बिना एक भी बन्दूकके छापामारोंने अपन काम सुरू किया। जंगलमेंसे आकर कहीं अँधेरेमें छिपे रहते। जोखिम तो था, लेकिन गाँवके लोग जंगल में छिपे छापेमारोंके पास खाना पहुँचाते थे, गुन्डे कहाँ-कहाँ हैं, इसकी खबर देते थे। गुन्डे सिपाही चौबीस घंटा तो सजग नहीं रह सकते और न चौबीसों घन्टा एक जगह एक हातेमें बन्द रह सकते थे। छापेमार अचानक उनके ऊपर कुल्हाड़ा, कुदाल, भाला कोई चीज लेकर टूट पड़ते। चार गुन्डोंको मारा तो चार बन्दूक और गोली-गन्ठा मिला।

सन्तोखी—फिर तो सूद-मूर लेकर इसी तरह बढ़ता चलता जायगा।

भैया—हाँ, दो बन्दूक छीनी, फिर दो बन्दूक लेकर छापे मारे और चार नई बन्दूकें हाथमें आईं। इस तरह सैंकड़ों, हजारों बन्दूकें, मसीनगनें, हाथके बम, पिस्तौल और बहुत से हथियार छापामारोंके हाथमें चले आए। टैंक और बड़ी तोप भी कभी-कभी पकड़ लेते थे, लेकिन उनको जङ्गल में ले जाकर छिपाना आसान नहीं था। बाकी हथियारोंको छापेमार खूब चलाते थे।

दुखराम—खूब जवाब दिया भैया ? रूसके कमेरों ने और खूब बहादुरी दिखलाई।

भैया—दुनिया चकित है दूक्खू भाई ? उनकी बहादुरीसे। जर्मन सिपाहियों हीको वह नहीं मारते, बल्कि रास्तेकी सड़कों, पुलों, रेलोंको तोड़ देते थे, जिसकी वजहसे जर्मनों को सामान पहुँचाना मुश्किल होता था। उनके सामनेसे लाल-पलटन लड़ रही थी, और पीछेसे लड़ रहे थे लाखों छापामार और छापामारिनें। इतने बहादुर लड़नेवाले साथी अँग्रेजोंको मिले, तब उनका भी हौसला बढ़ा।

सन्तोखी—भैया, रूसके कमेरोंकी बहादुरी और उनको मरकस बाबा रास्ते पर चलनेकी बात देखकर तो मैं समझता हूँ, कि दुनिया भरके कमेरे उनके साथ प्रेम करते हैं। सगे भाईकी तरह समूची दुनिया के कमेरेका दुख-सुख एक-सा हैं, और हैं भी वे सगे भाई। लेकिन अँगरेज जोंकें जो अबकी बच गईं, यह अच्छा नहीं हुआ।

भैया—जब पहले जोंकोंकी लड़ाई थी, तो सन्तोखी भाई, मैं तुमसे क्या कहता था ?

सन्तोखी—यही कि तालुकदारोंके झगड़ेसे हमको मरने की जरूरत क्या ? भले दोनों लड़ मरें।

भैया—हाँ, तो उस वक्त लड़ाई जोंकों-जोंकोंकी थी, विलायती जोंकें दो सौ बरसोंसे हमारा खून चूस रही हैं, उन्होने हमारी छाती पर कितना कोदो दला, उस सबको देखकर हम क्यों इन जोंकोंकी मदद करने जाते। लेकिन जब गुन्डा हिटलर कमेरोंके राजपर चढ़ दौड़ा, तो बिल्कुल रंग बदल गया। पानीकी नाली बह रही हो, तुम उसमेंसे अंजली भरकर पियोगे, प्यास बुझाओगे; लेकिन उस नालोंमें जैसे लाल जहरकी पुड़िया डाल दी जाय, तो उस पानीका गुन बदल गया न ?

दुखराम—हाँ भैया, हिटलरने जिस दिन हमारे कमेरे भाइयोंपर हमला किया, बच्चोंको खून निकालकर मारा, निहत्थोंको उनके हाथ कबर खुदाकर गोली चलवाई, तो दुनियामें कौन कमेरा—किसान-मजूर—होगा जिसकी आँखसे आग न निकलने लगे और हिटलरको कच्चा खा जाने के लिए तैयार न हो ?

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ? हिटलरने जिस दिन सोवियतके कमेरोंपर हमला किया, उसी दिन दुनिया भरके मजूरों-किसानोंपर हमला कर दिया। हिटलर जोंकोंका सबसे बड़ा खूनी राज कायम करना चाहता था, उसने अपने यहाँ के किसानों-मजदूरोंको पीसा। पहिले हीसे हम यह सब जानते थे और हिटलरको फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते थे, लेकिन जब तक उसकी लड़ाई सिर्फ जोंकोंसे रही, तब तक जोंकोंको छोड़कर दूसरी जोंकको हम कैसे पसन्द करते ? लेकिन अब बात वैसी नहीं थी। जो हिटलर रूसको जीत लेता, तो दुनियासे मजूर-किसान-राज खतम हो जाता।

हजारों बरसोंसे बड़े-बड़े महात्माओं और त्यागियों ने सपना देखा था, कि एक ऐसा मानुख-समाज हो, जिसमें जोंकोंका नाम न रहेगा। उनका सपना ठीक था, लेकिन वह ठीक रास्ता नहीं जान सके।

दुखराम—रास्ता तो भैया मरकस बाबा हीने बतलाया।

भैया—हाँ, मरकन बाबा हीने बतलाया। फिर पेरिसमें लाखों मजूरोंने प्राण दिया कमेरा राज्य कायम करनेके लिए; फिर रूसमें करोड़ों कमेरोंने लड़ाई और भूखसे जान दी, तब जाकर दुनियामें पहले पहल एक मजबूत कमेरा-राज कायम हुआ। पच्चीस बरसमें उसने दुनियाके छठें हिस्सेको बहुत कुछ सरग-सा बना दिया। उसको देखकर दुनिया भरके कमेरोंकी हिम्मत बढ़ी कि हम भी किसी दिन जोंकोंको निकाल बाहर करेंगे। जो रूससे कमेरा-राज खतम हो जाता, तो दुक्खू भाई ? यह सारी दुनिया के कमेरोंका नुकसान होता कि सिर्फ रूस ही वालों का ?

दुखराम—सारी दुनिया के कमेरोंका भैया ? मै तो जानता हूँ कि खूंटके बलसे बछरू (बछड़ा) कूदता है। जब हमने रूसके कमेरा-राजके बारेमें सुना, तो उसीसे हमारी भी हिम्मत बढ़ी, और हम भी लाल झंडा लेकर कूदने लगे।

भैया—एक सड़ी मछली सारा तालाव गन्दा कर देती है, दुनियामें एक भी जोंक बच जाय, तो भी कमेरोंके लिए खतरा है। और एक बार मानुख जातिमें जोंकें इतनी भारी हारके बाद जो फिर पहलेकी तरफसे सारी दुनियापर छा गईं जो लाल झन्डा फहराना सैकड़ों बरसोंकी बात हो जायगी। दुनिया जोंकोंके लिए अकण्टक हो जायगी।

भैया—इसलिए दुक्खू भाई, जिस दिन हिटलरने सोवियतपर धावा बोला, उसी दिन मैंने अपने दोस्तोंसे कह दिया, कि अब जोंकों-जोंकोंकी लड़ाई नहीं रही। हिटलरके हरानेका मतलब है, कि जोंकोंके सबसे बड़े गुन्डेको खतम करना; ऐसे गुन्डे-को खतम करना जिसकी ओर सारी दुनियाकी जोंकें आसा लगाये बैठी हैं। सोवि-यतकी जीत दुनिया भरके कमेरोंकी जीत है।

सन्तोखी—यह बात साफ मालूम हो रही है भैया ?

भैया—हिटलरने जब मास्को लेनिनग्राडका रास्ता बन्द देखा, तो वह दक्खिनसे बढ़ा और बढ़ते-बढ़ते वोल्गा-गंगाके किनारे बसे तालिनग्राद सहर तक पहुँच गया। इस्तालिन वीरने अपने लाल जरनैलोंको हुक्म दिया, कि अब एक कदम भी पीछे नहीं हटना है। और वह एक कदम भी पीछे नहीं हटे। यहींपर हिटलरको सबसे बड़ी हार खानी पड़ी। उसके दो लाख सिपाही मारे गये और एक लाख सिपा-हियोंको लाल पलटनने कैद किया। हिटलरकी जो वहाँ हार नहीं हुई होती, तो वह बाकू होते बाकूकी तेलकी खानोंको लेते ईरान में पहुँचता और फिर उसके बाद हिन्दुस्तान ही रह जाता था।

दुखराम—तब तो भैया इस्तालिनग्रादकी लड़ाई रूसके ही कमेरोंके लिए खतरेकी चीज नहीं थी, बल्कि हिन्दुस्तानके लिए भी खतरा हो गया था।

भैया—फिर हिटलरी गुंडे हिन्दुस्तान भी आते। यहाँ भी लाखों औरतों की इज्जत लूटते, बच्चे-औरतोंके खूनसे अपने हाथ रँगते और सैकड़ों सहर और गाँव

जलाकर छार कर डालते। लेकिन लाल पलटन हिटलर का दांत खट्टा करने के लिए तैयार थी। स्तालिनग्राद पर मार खाकर जो हिटलर पीछे की ओर भगा, तो भागता ही गया; फिर उसका पैर कहीं नहीं ठहरा। हिटलर एक हजार मील तक सोवियतकी धरतीमें घुस आया था, लेकिन अब पिटाई सुरू हुई। पागल सियार गाँव की ओर आया। जब लाठी पड़ने लगी, तो अपनी माँदकी ओर भागा। सोवियत की अंगुल-अंगुल धरतीसे पापी निकाले गये। अब वह अपनी धरतीपर भागकर गये लेकिन लाल फौजने इन सियारोंको मांदमें बैठकर भी जीने नहीं दिया। उसने तै किया था कि पागल सियारोंमेंसे एकको भी नहीं छोड़ेंगे।

दुखराम—और भैया, इन गुंडोंने जो बच्चोंको मारा, औरतोंकी इज्जत बिगाड़कर गोली मारी, इसका भी बदला खूब लेना चाहिए था। इन गुंडोंको कुत्ते की मौत मरना चाहिए था।

भैया—लाल पलटन बदला लेती नहीं है दुक्खू भाई, लेकिन पागल बनकर नहीं। इस्तालिन वीरने कह दिया कि जर्मनीके कमेरों को वहाँ की जनताको हम अपना दुसमन नहीं मानते। राछस आततायी हैं हिटलरी गुंडे, हम इन्हीं गुंडों को उनके किये का मजा चखायेंगे। फिर जर्मनीकी जनता गुंडोंके हाथसे छुट्टी पाएगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, जर्मनीमें भी अब जोंकों की खैरियत नहीं। वहाँ भी हिटलरी गुंडों के खतम होनेके बाद कमेरों का ही राज कायम होना था, लेकिन विलायत और अमेरिकाकी जोंकें इसको क्या पसन्द करने लगीं?

भैया—जोंकें क्यों पसन्द करने लगीं? लेकिन इस्तालिन वीरने कह दिया कि वहाँ कैसा राज कायम हो, इसे वहाँ हीके लोगोंपर छोड़ देना चाहिए। लाल पलटन अपने मनका राज कायम करने की कोशिश नहीं करेगी और न इंग्लैंड अमेरिकाको ऐसी कोसिस करनी चाहिए।

सन्तोखी—लेकिन भैया, बाहर की जोंकोंने जो मदद नहीं किया और उधर जर्मनीकी बड़ी-बड़ी जोंकें और उनके नायक हिटलरी गुंडे खतम हो गये, तो वहाँ कमेरोंका राज छोड़ दूसरा कौन राज कायम हो सकता था?

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई, इंग्लैंड अमेरिकाकी जोंकें चुप तो नहीं रह सकतीं। सोवियत और लाल पलटनको देखने ही से उनका प्राण निकल रहा था, जो सात करोड़के जरमनीमें भी कमेरा-राज कायम हो गया, तो दुनियामें जोंकें कै दिन टिकेंगी?

दुखराम—तो क्यों नहीं भैया, जोंकों ने हिटलर से सुलह कर ली?

भैया—सुलह नहीं कर सकती थी सन्तोखी भाई! जिस दिन चर्चिल सुलह की बात भी जीभ पर लाता, उस दिन ही विलायतके जोंकों की खैरियत नहीं थी। बिलायत के लोगोंने सैंतिस साल पहिले की लड़ाईमें भी अपने लाखों बेटों को मरवाया, उस वक्त भी विलायत की जोंकों ने उसके सामने बड़ी लम्बी-लम्बी बातें कहीं थीं जिससे मालुम होता था, कि अब कमेरोंकी जिन्दगी सरकारी जिन्दगी हो जायगी। लेकिन जब वह लड़ाई खतम हुई, उसके बाद के इक्कीस सालों में उनकी जिन्दगी और अधिक नरक बन गई। तीस-तीस, चालिस-चालिस लाख तक आदमी बेरोजगार

हो गए, उन्हें भूखे मरना पड़ता और बाल्डविन चेम्बरलेन जैसी-जैसी जोंकोंने हजारों की जगह लाखों का नफा कमाया । जब तक हिटलर खतम नहीं हो जाता, तब तक विलायती जोंकोंको पैंतरा बदलनेके लिए कोई जगह नहीं थी।

सन्तोखी—लेकिन हिटलर के खतम होने के बाद वह रूस से क्यों ना लड़ी ?

भैया—तुम यही ख्याल करके कह रहे हो न सन्तोखी भाई कि जोंकें नहीं चाहेंगी कि जरमनी जैसे बड़े मुल्कमें कमेरोंका राज हो, जिससे सारी दुनिया की जोंकोंके आगे अँधेरा छा जाय । लेकिन इस लड़ाईका फल क्या हुआ, इसके बारेमें हम किसी दूसरे दिन बतलायेंगे । अब तुमको यह जानना चाहिए कि क्या बात थी कि हिटलरी फौज के सामने फ्रांसकी जैसी जबरदस्त सेना तीन हफ्ते भी नहीं ठहर सकी । हिटलर तीन महीनेमें रूस ले लेनेकी बात कहकर गाल बजाता ही रहा, लेकिन वह रूसकी धरती छोड़कर अपने घर में भी नहीं लड़ सका ?

सन्तोखी—भैया, गुन्डे बहुत दिन तक कहाँ डट सकते थे ! उनके सिर पर काल नाच रहा था ।

भैया—ठीक है और इसका कारण यही हुआ कि पागल कुत्ता रूस की ओर दौड़ा । मैंने बतलाया कि सोवियतके कमेरे कितने थे । लाल सिपाही तनखाह के लिए नहीं लड़ता था।

दुखराम—तनखाह के लिए लड़ते हैं जोकों के सिपाही । जोंकें तनखाह छोड़कर कोई ऐसी चीज उनके सामने नहीं रखतीं, जिसके लिए वह जी-जानसे लड़ें ।

भैया—रूसमें कमेरे अपने ही अपनी पंचायत चुनते हैं और यही पंचायत राज चलाती है । गाँव में भी १८ बरससे बेसीके मर्द-औरत वोट देकर पंचायत चुनते हैं, जिले की भी पंचायत वही चुनते हैं, अपने-अपने प्रजातन्त्रकी भी पंचायत उन्हीं को चुनना होता है । फिर हिन्दुस्तान ऐसे सात देशोंके बराबर सारे सोवियत देश की सबसे बड़ी पंचायत यही चुनते हैं ।

दुखराम—तो नीचेसे ऊपर तक सब पंचायती ही काम है भैया ?

भैया—हाँ, सब पंचायत है । सबसे बड़ी पंचायत (महासोवियत) के लिए तीन लाख आदमी पर एक आदमी चुना जाता है । उस पंचायत के दो हिस्से या घर हैं, एक घरके लिए हर तीन लाखपर एक आदमी चुना जाता है, दूसरे घरके लिए खोमका बराबर आदमी चुना जाता है, चाहे कोई खोम पचास ही हजार आदमियोंकी हो । रूसी खोमकी आबादी बारह करोड़ के करीब है और हिन्दुस्तानके पड़ोसमें रहने वाली ताजिक खोम चौदह ही लाख है, लेकिन दोनों पचीसही पचीस पंच चुनते हैं; इसलिए जिसमें ज्यादा आदमी रहनेवाली खोमके ही पंच अधिक न चुन लिए जायँ । यही बड़ी पंचायत सारे सोवियत देसके मन्त्रियों को चुनती है । इस्तालिन वीरने सोवियत को जितना धनवान, बलवान बना दिया है, उसके कारन सोवियतका बच्चा-बच्चा उसे प्रान से भी अधिक प्यारा समझता है । लेकिन इस लड़ाईके पहिले इस्तालिन वीरने कोई सरकारी दर्जा नहीं लिया था । जब लड़ाई का खतरा बहुत बढ़ गया, तो बड़ी पंचायतने इस्तालिनको ही अपना महामंत्री और महासेनापति बनाया ।

दुखराम—और इस्तालिन वीरने वह करामत दिखाई, कि सोवियत क्या दुनियाभरके कमेरे कभी उसका उपकार नहीं भूलेंगे ।

भैया—सोवियतने अपने को फौलाद जैसा मजवूत वनानेका काम वहुत पहलेसे शुरू कर दिया था। जनरैल, जानते हो, पलटन का सबसे बड़ा अफसर होता है, उसके ऊपर मार्सल होता है। जोंकों के राजमें पचास बरसकी उमर से पहिले कोई जनरैल बननेका सपना भी नहीं देख सकता। लेकिन सोवियतमें वत्तिस-बत्तिस, तैंतिस-तैंतिस बरसके जनरैल हैं। पैंतिस-छत्तिसके तो वहाँ मार्सल हैं। कुछ साल पहले जो वात सुने होते, तो विलायत की जोंकें जानते हो क्या कहतीं ?

दुखराम—क्या कहतीं हैं भैया ?

भैया—कहतां, कि जिनको अभी माँका दूध पीना चाहिए, उन छोकरोंको जनरैल बना दिया।

दुखराम—तो जोंकोंके यहाँ बूढ़ों ही का मान ज्यादा है ?

भैया—सोवियतमें भी बूढ़ोंका मान करते हैं लेकिन जवानोंपर उनका बिसवास ज्यादा है। जानते हो न लड़ाईके हथियार और लड़ाईके दाँव-पेंचमें रोज नई बातें निकलती आती हैं। नई बातोंको नया दिमाग जितनी जल्दी पकड़ सकता है, उतना जल्दी बूढ़ा दिमाग नहीं पकड़ सकता।

दुखराम—हाँ भैया ! तीर-धनुसके जमानेके जनरैल जो आजकी लड़ाईमें जनरैल बना दिये जायँ तो उनके दिमागमें तीर-धनुस ही ज्यादा रहेगा, उनकी पैंतराबाजी भी उसी जुगकी होगी। जुमराती दादाको देखते नहीं, नब्बे बरससे इधरकी कोई बात ही नहीं करते तड़के साबुन लगाते हैं, तो उस पर भी गाली देते हैं। बहुओंके साबुन लगानेकी बात सुनते हैं तो कह देते हैं—बस बस बेसवा हो गई। बूढ़ों का दिमाग ऐसा ही होता है न ! मैं तो समझता हूँ भैया ! फ्रांसके इतना जल्दी हारनेके भी कारण ऐसे ही बूढ़े जनरैल रहे होंगे।

भैया—यह बात बिल्कुल ठीक है दुक्खू ! विलायतके जनरैलोंकी भी वही हालत थी। पाँच हिस्सामें चार हिस्सा हिटलर की फौज लाल सेनासे लड़नेमें लगी हुई थी लेकिन पाँचवें हिस्से की पलटन से भी लड़नेमें यह बूढ़े जनरैल चींटी की चालसे बढ़ते थे। अफरीकामें यही देखा, इटली में यही देखते रहे और फ्रांसमें भी अँग्रेजोंकी पलटन यही करती रही। एक तो इनके जनरैल पचास साठ बरसके बूढ़े होते थे, ऊपरसे तालुकदारों और करोड़पतियोंके बेटे !

दुखराम—एक तो करैला दूसरे नीमपर चढ़ा, लेकिन जोंकों का इसमें भी मतलब होगा कुछ भैया !

भैया—कुछ नहीं, बहुत मतलब है। एक तो बिलायतके तालुकदारों-जमीदारोंमें बापकी मिल्कियतका मालिक सिर्फ बड़ा लड़का होता है, छोटे लड़कोंको कोई नहीं पूछता; उनके लिए भी खाने-चबानेका कोई इन्तजाम होना चाहिए। कमेरोंके बेटे हो गये, तो पलटन हमारे हाथमें न रहेगी। पलटन हीके बलपर न जोंकें कमेरोंका खून चूस रही हैं ? इसी वास्ते तालुकदारों ओर जोंकोंके ही लड़कोंको अफसर बनाया जाता है। जो कहीं मामूली आदमी किसी तरह घुसकर छोटा लफ्टेन्ट हो गया, तो बिना बड़े अफसरों के सिफारिसके तरक्की होती नहीं और बेचारे को कप्तान और मेजर तक ही जिन्दगी बिता देनी पड़ती है। दूसरी ओर सिफारिसके बलपर तालुकदारोंके नालायक लड़के भी खट-खट ऊपर चढ़ते चले जाते हैं।

दुखराम—तब तो भैया पलटनमें भी जोंकोंने 'छीया-छीया' कर दिया ?

भैया—ऊपर-भीतर, अगल-बगल सब जगह जोंकोंकी लास सड़ रही है। नाक बिना लोग परख नहीं पाते। यही भाग्य समझो कि लाल पलटन लड़नेके लिए आई, नहीं तो ये नवाबजादे कहींके नहीं रहते। अँग्रेज कमेरों के लड़के लड़नेमें किसीसे कम नहीं। लेकिन सोवियत का कुछ दूसरा ढंग है। वहाँ जवानोंपर बिसवास किया जाता है। वहाँ तालुकदार, नवाब जोंकें रह ही नहीं गई हैं कि उनके लड़के पलटन में आवें और सिफ़ारिस के बलपर जनरैल बन जायँ। वहाँ सिपाही से लेकर जनरल-मार्सल तक सभी कमेरोंकी सन्तान हैं। तरक्की होनेमें कोई देर नहीं लगती, जो आदमी लायक है। कोयले की खानका मजूर वोरोसिलोफ मारसल बन गया। सोवियतमें लड़कोंके पढ़ने-लिखनेका इन्तजाम ऐसा ही है, जिसमें की जिस कामके लायक काब्लियत है, वह बस वहाँ पहुँच जाते हैं।

सन्तोखी—क्या बात है भैया ?

भैया—मैंने पहले बतलाया है न, कि वहाँ लड़के-लड़की को जबरदस्ती पढ़ाया जाता है। मास्कोमें नौ बरसकी जबरजस्ती पढ़ाई है और बाकी सारी सोवियत भूमिमें सात बरसकी—सातवें बरससे पढ़ाई सुरू होती है और चौदहवें में खतम होती है।

सन्तोखी—हिन्दुस्तानसे सातगुना बड़ा सोवियत देश है न भैया ? तो क्या वहाँ सब जगह एक-एक गाँवमें मदरसा है ?

भैया—हाँ, जैसे हवा, पानी वैसे ही वहाँ पढ़ाई समझी जाती है। फिर लड़के तो मदरसामें सात बरसके होकर जाते हैं, लेकिन उनकी पढ़ाई पैदा होते ही होने लगती।

दुखराम—पैदा होते कैसे लड़का पढ़ेगा भैया ?

भैया—हमने कहा था न, कि वहाँ बच्चों के रखने के लिए दाईघर बने हुए हैं। माँ जब काम करने जाती है, तो बच्चोंको दाईघरमें दे आती है। दाईयाँ बेपढ़ औरतें नहीं हैं। वह भी पढ़ी-लिखी रहती हैं और यह भी सीखे रहती हैं, कि बच्चोंको कैसे रखना चाहिए। पालनेवाला बच्चा पालने में झूलता है, आँख से जिस चीजके देखने, कानसे गाना सुनने या तरह-तरहके खिलौनों को देकर उनको बहलाया ही नहीं जाता, बल्कि हर तरह की चीज का ग्यान कराया जाता है। जब लड़के बोलने और बात समझने लगते हैं तब उन्हें ग्यान बढ़ानेवाली छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाई जाती हैं। लड़कोंके खेलने के लिए हरेक दाईघरमें सैकड़ों खिलौने होते हैं, मोटर होती हैं, जो चाभी देने से चलती हैं। रेल और हवाई जहाज होते हैं, वह भी चलते हैं। कुछ बड़ा होने पर लड़कों की अपनी रेलवेलाइन है, जिसमें इंजन चलानेवाला भी लड़का है, गार्ड भी लड़का ही है। रेलवे तीन-तीन चार-चार मील तक वह अपनी रेल चलाकर लौटा लाते हैं।

दुखराम—भैया ! इतने छोटे-छोटे बेबूझ लड़कों को इंजन थमा दिया जाता है तो खतरा नहीं होता !

भैया—खतरे की बात उनको पहले बतला दी जाती है और उनका इंजन भी पाँच-छः मीलसे बेसी घन्टेमें नहीं चल सकता। लड़के तो देखते ही हो कि पहले खड़े होते हैं, तो गिरते भी हैं तो क्या पैर टूटनेके डरसे उनको खेलने न दिया जाय।

कितने माँ-बाप लड़कोंको पेड़पर चढ़ने नहीं देते, पानीमें तैरने नहीं देते, लेकिन यह ठीक नहीं है। आदमी का बच्चा पान-फूल बनाकर रखने केलिए नहीं है। जवान होनेपर जाने वह कहाँ जायगा; कहीं जंगलमें जान बचानेके लिए उसे पेड़ पर चढ़ना होगा। नाव डूबने पर तैरना पड़ेगा।

दुखराम—तो सन्तोखी भाई, तुम भी सामूको पान-फूल बनाकर रखते हो न?

सन्तोखी—हाँ, भैया, हमें भी यह बात ठीक नहीं मालूम होती, हाथ-पैर तो चारपाई से गिरकर भी टूट सकता है।

भैया—लड़कोंको बहुत तरह का खिलौना मिलता है, फिर कागज-पेंसिल मिलता है, वह अपने मनकी तसवीर खींचते हैं, गाने का खेल खेलाया जाता है। तरह-तरह के गानोंको सीखते हैं, नकलका खेल खेलते हैं, लेक्चर (व्याख्यान) देते हैं, गिनती सीखते हैं और मुंहजबानी हिसाब लगाते हैं। फिर लड़कोंके अपने सिनेमा होते हैं।

सन्तोखी—अपने सिनेमा क्या भैया?

भैया—चार-छः बरसके सयानोंके सिनेमाको देखकर क्या समझ पाएँगे? इसलिए इनके सिनेमामें कुत्ते, बिल्ली, भालू, गदहा इत्तादि आते हैं। और तरह-तरह की हँसने वाली बात कहते हैं। गाना गाते हैं, हँसी-हँसीमें ही जोंकों और कमेरोंके गढ़ेंकी बात चली आती है। छः बरस तक उनको अच्छर सिखलाया जाता है। अपने जो कहीं लुक छिपकर किसी बड़े लड़केसे अच्छर सीख लें तो दूसरी बात है। दाईघरमें रहते बखत ही गजब की जेहनवाले बच्चे छाँट लिये जाते हैं। चार-चार साल तक उनकी खींची तसवीरें और उनकी तरक्की को देखकर पारखी पहचान लेते हैं, कि यह लड़का आगे चलकर गजब का तसवीर बनानेवाला होगा।

सन्तोखी—हाँ, भैया! लड़के बहुत चीन्हा खींचना चाहते हैं, लेकिन हम लोग डाँट देते हैं कि कागज-पेंसिल खराब करेगा।

भैया—वहाँ डाटते नहीं, उन्हें रंग-बिरंगी पेंसिल और कागज देते हैं। दाईघर में एक उमरके लड़के एक कोठरीमें, तीन बरस वाले तीसरी कोठरी में। जो तुम किसी दाई-घरमें पहुँच जाओ सन्तोखी भाई, तो बहुत हँसोगे। चार-चार बरस के दस-बारह लड़के कागज पेंसिल लिये तस्वीर खींच रहे हैं। कोई बिल्ली बना रहा है, कोई कुत्ता। कोई साँप बना रहा है कोई चिड़िया। बीचमें एक दूसरे की तस्वीर की ओर झाँक भी लेते हैं, फिर अपनी तस्वीर बनाने में लग जाते हैं। दाई छड़ी लेकर तस्वीर नहीं बनवाती। अपने "अम्मा? मुझे कागज-पेंसिल दो, मुझे कागज-पेंसिल दो" कहकर कागज-पेंसिल लाए हैं और सब अपने मन से तसवीर बना रहे हैं। अम्मा यह चालाकी जरूर करती हैं, कि उनके समझने लायक चीन्हेवाली कुत्ता-बिल्लींके छपे कागजको जब तब फेंक देती हैं। बच्चे कितने ही बार समझते हैं, कि पड़ा हुआ कागजको रद्दी कहते हैं, सबको फेंका नहीं जाता, एक-एक लड़केके कागज को नाम लिखकर जमा किया जाता है। तीन-चार बरसके बाद कौन लड़का गजब का तसवीर बनानेवाला होगा, यह समझना आसान हो जाता है। तसवीर की तरह गाने, नकल करने, लेक्चर

देने, हिसाब लगानेमें गजबकी जेहनवाले लड़कोंको छाँट लिया जाता है। लड़कोंके झगड़ेका फैसला पंचायत करती है और वह अपने ही अपना नेता भी चुनते हैं। दाई घरमें रहते ही उन गजबकी जेहनके लड़कोंको पहचान लिया जाता है, जो कभी हजारों-लाखों आदमियोंके नेता बनेंगे।

दुखराम—भैया ! हमारे यहाँ तो गरीब घरमें, चमार और अछूत कहे जाने वाले माँ-बाप के घरमें, न जाने कितने गजब की जेहनवाले बच्चे पैदा होते हैं, लेकिन कूड़ेपरके फूलकी तरह वहीं पैदा होकर बिना फूले ही कुम्हला जाते हैं।

भैया—यह समझो दुक्खू भाई, कि २० करोड़ आदमियोंमें एक भी गजब की जेहनवाला बच्चा न मुरझाने पायेगा, न जेहनवाला मुरझाने पायेगा, न कम जेहन-वाला। गजबकी जेहनवाले लड़कोंके पढ़नेका अलग इन्ताम होता है। घुड़-दौड़में दौड़नेवाले घोड़ोंको बैलके साथ नाधनेमें नुकसान है। यह बत्तीस बरसके जो जरनैल थे, वह कमेरा राज्य कायम होते समय चार-पाँच बरसके रहे होंगे। उनको भी सिच्छा पानेका मौका नहीं मिला, और पीछेके लड़कोंको तो और भी।

सन्तोखी—जो ऐसा इन्तिजाम हमारे देसमें हो, तो हमारी ३५ करोड़की आबादीमें न जाने कितने गजबके तसबीर बनानेवाले, गजबके गानेवाले, गजबके नाटक खेलने, गजबके हिसाब लगाने वाले, गजबके नेता मिलेंगे ?

भैया—यह है सन्तोखी भाई, जो लाल पलटन जरनैल लड़नेका इतना जबर-जस्त दाँव-पेंच जानते हैं। जब दुसमन और दुनिया जानती थी कि लाल पलटन हार-के भाग रही है, उस बखत वह दुसमनपर जाल फैलाकर चुपचाप बैठे हुए थे। जोंकोंकी पलटनमें छोटा लपटेन या थानेदार भी मामूली सिपाहीसे रण छोड़कर दूसरी तरहसे बात नहीं करेगा; लेकिन लाल पलटनका सबसे बड़ा अफसर जरनैल और मामूली सिपाही दोनों सगे भाई जैसे हैं। जब उरदी डिउटीपर हैं तब वह सिपाही और वह जरनैल, बाकी बखतमें दोनों एक चारपाईपर बैठेंगे, साथ खेलेंगे; कूदेंगे-नाचेंगे, हँसी-मजाक करेंगे। उस बखत देखनेवालेको पता ही न चलेगा, कि यह जरनैल है और यह सिपाही।

दुखराम—जोंकों तुम्हारा सत्यानास हो।

भैया—इस्तालिन बीरने अपने जरनैलों को एक बार कहा था, कि वह अफ-सर ठीक अफसर नहीं हो सकता, जो सिपाहीसे ऐसा काम कराना चाहता है; जिसे वह खुद नहीं कर सकता। अमेरिकाका एक अखबारवाला सोवियतकी लड़ाई देखने गया था। मैदानके पास पहुँचा, तो वहाँ मोटरका कोई ठीक रास्ता नहीं था। मोटर रुक गई। उसी बखत एक आदमी आया। उसने फावड़ेसे काटकर रास्ता ठीक कर दिया। अमेरिकन अखबारवालेने आदमीकी उरदीको देखा, तो मालूम हुआ वह मेजर है। उसको बड़ा अचरज हुआ।

दुखराम—भला जोंकोंके मुलुकमें कपतान और मेजर फावड़ेपर थूक भी सकते हैं।

८. लाल चीन

गांवकी चौपालमें आज फिर तीनों सयानोंकी बात चल पड़ी।

सन्तोखी—भैया, आज तो चीनकी बात बताओ। खबर कागजमें बहुत झूठ-सांच सुनते हैं।

दुखराम—भैया, ई चीन और महाचीन एकई है कि दो? और चीनी लोग वहीं के रहवइयाँ हैं न? कलकत्तेमें तो उनका एक मुहल्ला ई है।

भैया—महाचीन और चीन एकई है। हमारे देसके लोग पहले इसे चीन को जानते हैं। वहांके लोगोंमें बौद्ध धर्म बहुत चलता है। हमारे देसको ऊ लोग अपना एक बड़ा तीरथ मानते हैं। दू हजार बरससे चीन और भारतमें भाईचारा चला, सो अब तक चलता ही जा रहा है।

दुखराम—दू हजार बरस से? तब तो बहुत दिनका सम्बन्ध है।

भैया—चीनसे बड़े-बड़े जातरी लोग हिन्दुस्तान आते रहे। हमारे देसमें ऐसी पोथी नहीं है, जैसी पोथी चीनके साधुओंने हिन्दुस्तानको देखके अपनी भाखा-में लिखा।

सन्तोखी—तो चीनी भाखामें हमारे देसके बारेमें लिखा है।

भैया—हमारे देसकी हजारों पोथी चीनी भाखामें उल्था करके आज भी मिलती हैं। उनमें बहुत थोड़ी ही पोथी अब हमारे देशमें बँची है।

सन्तोखी—तब तो भैया चीनी लोंगोंका बड़ा उपकार मानना चाहिये।

दुखराम—महाचीन कहनेसे तो मालूम होता है, कि कोई भौत बड़ा देस होगा।

भैया—भौत बड़ा देस है। हमारे देससे चौगुनासे कम नहीं है। औ वहाँ सैंता-लीस करोड़ आदमी बसते हैं।

सन्तोखी—और हमारे इहाँ पैंतीस करोड़, माने हमारे इहाँसे बारह करोड़ से वेसी बेकत परानी चीनमें हैं।

दुखराम—सुनते हैं भैया, कि चीन भी अब मरकस बाबाके रहता पर चलता है।

भैया—हाँ, बाइस बरस तक चीनके कमेरोंको जोंकोंसे लड़ना पड़ा। लाखों मरद-मेहरारू, लड़का-बच्चा लड़ाईमें मारे गये और भूख-अकालसे जितने मरे, सो अलग।

सन्तोखी—जब रूसमें मरकस बाबाका पंथ चला, तब दुनिया भरकी जोंकोंने उसके दबानेके कोसिस की, मुदा उनका कुछ नहीं चला, खाली लाखों परानियोंकी जान गई। चीन तो बेकतपरानीमें रूससे भी बेसी है।

भैया—रूस में बीस करोड़ आदमी बसते हैं, और चीनमें सैंतालीस करोड़, दूनासे भी बेसी।

दुखराम—तो भैया, जोंकोंसे लड़नेमें बाईस बरस काहे लगा ?

भैया—जोंकें भी वहाँ भौत थीं। औ दुनियाँकी सबसे बड़ी जोंकें चीनी जोंकोंके पीठ पर थीं।

सन्तोखी—अमिरिका तो जरूर पीठ पर रहा होगा ?

भैया—ई जो बड़ी लड़ाई थी, उससे पहले तो अँग्रेज और दूसरे मुल्कोंकी जोंकोंने पीठ ठोंका; हथियार से मदद किया, अपने-अपने देसके जरनैल औ बड़े-बड़े लड़ाईके पंडितोंको भेजा। लड़ाईके बाद तो सबसे बेसी मदद अमिरिकाने दिया। उसका सोलह अरब रुपया इस मददमें गया।

सन्तोखी—इतना रुपया लगाते बखत मोह नहीं लगा ?

भैया—जोंकें बड़ा जुआ खेलती हैं, जुआड़ी लालचके फेरमें पड़के दाँव पै जानते हो न रुपया लनानेमें आगा-पीछा नहीं करता। औ अमिरिकाने इतने रुपयेमें बेसी बढ़िया-बढ़िया लड़ाईके हथियार दिये !

सन्तोखी—तो मरकस बाबाके चेलोंके पास तो इतने हथियार थे नहीं, औ पलटन ?

दुखराम—भागनेमें तो भौत नुकसान हुआ होगा ?

भैया—लाखों मरद-मेहरारू, बूढ़े-बच्चे मारे गये। रास्ते में बड़ी तकलीफ हुई। जोंकोंकी पलटन चारों ओरसे घेरना चाहती थी। विदेसी जोंकोंने लड़ाईके उड़नखटोला दिये थे, जिनमें बम-गोला गिराते थे, सब कुछ नुकसान सहकरके अन्तमें जैमाला उन्हींके गलेमें पड़ी ?

भैया—दुक्खू भाई, मरकस बाबाने कहा था कि जनता पर विजय कोई नहीं पा सकता, कमेरोंका बल कोई नहीं तोड़ सकता। कमूनिस्त उसी जनता औ कमेरों के लिये अपना परान देते हैं।

सन्तोखी—हाँ भैया, ई तौ मालूम है। इतने बेसवारथके आदमी कहीं नहीं मिलेंगे। बड़े-बड़े पढ़वैयासे लेके मजूर तक जोभी मरकस बाबाके चेलोंमें नाम लिखाता है, वह सब कुछ तकलीफ सहने, फाँसी पर झूल जानेके लिये भी तैयार रहता है।

भैया—मरकस बाबाके चेले रकत-बीज हैं रकज-बीज। सन्तोखी भाई, रकत-बीज की कहानी तुमने सुनी है। उसको ऐसा बरदान था, कि जो धरतीपर एक बूंद गिरेगा, तो उससे सौ बीर-बंका उसी तरहके और पैदा होंगे। बस यही बात है।

दुखराम—मुझको एक परतोख याद आता है। हमारे यहाँ बरसातमें सूरन (जमींकन्द) पैदा होता है। एक सालका सूरन खोद लिया जाय, तो छटाँक दो छटाँकका ही होगा। मुदा हम लोग उसे एक सालमें नहीं खोदते, तीन-चार साल रहने देते हैं। गरमीमें उस जगह खोदें, तो मालूम होता है, कि वहाँ सूरन-ऊरन कुछ लगा ही नहीं था, सब अलोप हो जाता है, मुदा रोहिनीका छींटा परते ही फिर वह जम आता है। चितरा, स्वाती तक तो खूब बड़ा-बड़ा, हरा-हरा पौधा दिखाई पड़ता है। फिर गरमीमें वह अलोप हो जाता है। मुदा साले सालाऊ बढ़ता ई रहता है। पहिले सालकी बरसात के बाद खोदने पर जो दो छटाँकका निकलता, तो दूसरे साल

पाव-डेढ़ पावका, तीसरे साल सेर-डेढ़ सेरका औ कोई-कोई तो अन्त में तीन-तीन सेरका निकलता है। सूरन हर साल गलनेको गल जाता है मुदा फिर दूना-तिगुना होके अगले साल निकलता है। जान पड़ता है, मरकस बाबाके पंथ, उनके चेलों—कमूनिस्तोंकी भी यही बात है। एक बेर उनको अलोप देखके जोंकें बड़ी खुसी मानने लगती हैं, घिउका दिया जलाती हैं, ई खुसिहाली भौत दिन नहीं चलती।

भैया—ई कोई जादू-मंतर नहीं है दुक्खू भाई! लोग रोटी-कपड़ाके मुहताज हैं। दुनियामें जिन्दगी उनको भार मालूम देती है। जब ओ सोचते हैं, कि मरकस बाबाका रहता छोड़ कोई दूसरा रहता नहीं है, तो हजार बिपता झेलने पर भी धूर झाड़के उसी रहते पँ चले आते हैं।

दुखराम—हाँ भैया, पेटकी भूख ऐसी ही होती है, उसे कैसे कोई भूल सकता हैं? सालमें छा: महीना जब लड़का-परानीको आधा-पेट खानेके लिए अन्न नहीं जुरता; छोटे-छोटे बच्चोंका मुँह झुराया, आँखें भीतर गड़ी, पेट सटका, हाथपैर हड्डी-हड्डी देखता है, तो साचैं कहूँ भैया, आदमी पागल हो जाता है। सोचता है—क्या करूँ कि इनके मुंह में दाना अन्न पड़।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई, कमूनिस्त तो परलोकका भी लालच नहीं देते, खाली यही पेटकी जो तकलीफ है, उसीका रहता बताते हैं। और उनका रहता बिलकुल ठीक है, ई बात भी जानने-समझनेवाले ईमानदार आदमी मानते हैं। आज देखो हमारा देस दाने-दानेके लिए मोहताज है। इस साल तीन अरब रुपया का अनाज बाहर से मँगाया गया जिसमेंसे आधा करज पर अमिरिकासे लिया गया।

सन्तोखी—अमिरिका तो बड़ा भारी जोंक देस है भैया? अपने देसको उसके हाथमें बंधक रखना क्या अच्छा है?

भैया—मुदा, बिना बंधक रखे अमिरिका अनाज थोड़े ई देता। हमारे देसकी जोंकें चाहे चीन और रूससे अनाज सस्ता हि मिलै, औ बिना बंधक औ कड़ी सरतके मिलै, तो भी जोंकें चाहती हैं कि अमिरिकनके ही हातमें अपने देसको दे दें।

दुखराम—'चोर-चोर मौसियाउर भाई' ठीक ही कहा है।

भैया—हमारे देसकी जोंकें पागल हो गई हैं पागल। उनको कंसकी तरह सब जगह कन्हैया ही कन्हैया दिखाई देते हैं। वह समझती हैं, कि अमिरिकाके साथके गठबंधन होनेसे हमारी रच्छा होगी, हिन्दुस्तानके कमेरे उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।

सन्तोखी—मुदा चीनकी जोंकोंने तो अमिरिकासे गठबंधन किया था, वहाँ काहे नहीं अमिरिकाने उनको बचा लिया?

भैया—जोंकोंका जिव बड़ा कठोर होता है, वो अन्त तक मरना नहीं चाहतीं। चीनी जोंकोंका सरदार चांकैसक भागकर फारमूसा (तैवान) के टापूमें अपने भाड़ेके आदमियोंके साथ जाके बैठा है। अमिरिका उसको घी-मलीदा खिला रहा है औ दोनोंको अव भी भरोसा है, कि चीनमें जाके फिर जोंकोंका राज बनायेंगे।

सन्तोखी—ई खाली मनका लड्डू है। एक बार जोंकोंका राज जो मिटा, तो फिर लोग उसको आने नहीं देंगे।

भैया—जोंकोंके राजके हटते ही सन्तोखी भाई, आदमी समझने लगता है, कि परान कैसे संकटसे बचा। हमारे देसमें जैसे अन्नका आज अकाल है, दो बरस

पहले यही दशा चीन की भी थी। वहाँ भी अमिरिकासे ढो-ढो कर अनाज जाता था। औ अमिरिकासे जो कुछ आता, उसमेंसे बेसी तो चांकैसकके भाईबन्द चोरबजरिहा दूना-चौगुना पर बेंचके पैसा बनाके रख लेते थे। अनाज ही नहीं, पलटनके लिए आया हथियार भी वह कमूनिस्तोंके हातमें बेच डालते थे।

सन्तोखी—हाँ भैया, जोंकोंका तो टका ही धरम है, टका ही करम है, वो काहे न ऐसा करेंगी। उनको पैसा मिले तो अपने बाप-मतारीको बेंच डालें। तो चीनमें कमूनिस्ताको हथियार इसी तरह मिला?

भैया—नहीं, कमूनिस्तोंके पास इतना पैसा कहाँ था, मुदा अमेरिकाका भेजा हुआ हथियार अन्तमें गया उन्हीके हातमें।

दुखराम—बिना दाम दिये? सो कैसे भैया?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई लड़ाईमें लड़नेवाले सौ में नब्बे किसानोंके ही पूत होते हैं। कमेरोंके पूत ही अपना परान देके जोंकों की रच्छा करते हैं। जब जोंकों-जोंकोंकी लड़ाई होती रही तब तो उनको भेद नहीं मालूम हुआ, मुदा जब जोंकों और कमेरोंमें रन छिड़ जाता है, तो उनको बहुत दिनों तक धोखेमें नहीं रखा जा सकता। गुसाँई जीकी चौपाई जानते हो न? 'उभय भाँति जानेसि निज मरना, तब ताकेसि रघुनायक सरना।' जब कमेरोंके पूत देखने लगे कि जिन्दगी भर उनका खून चूसनेवाली जोंकें हमें उरदी-पेटी पहनाके, हथियार देके अपने भाइयोंके सामने भेजके मरवाना चाहती हैं, तो उनके मनमें आता है, कि मरना है, तो अपने भाइयोंके लिये मरें, जोंकोंके लिये काहे मरें।

सन्तोखी—और कमूनिस्तोंके पास भाड़ेकी पलटन तो नहीं है।

भैया—अपने लिए लड़ना और परायेके लिए सो भी दुसमनके लिये लड़ना एक नहीं है, ई तो बराबर अपने गाँवमें भी देखते रहते हो। अपने हक-पदके लिये आदमी सरबस दाँवपर लगा देता है। जोंकोंकी ओरसे भेजी जानेवाली हजारों नहीं, लाखों पलटन अमिरिकाके दिये बढ़िया-बढ़िया हथियारोंके साथ जाके कमूनिस्त फौज में मिल गई।

दुखराम—लाल फौजमें न?

भैया—हाँ, कमुनिस्तोंकी फौजको लाल कहते हैं, तुम जानते ही हो।

सन्तोखी—जोंकें बड़ी सवारथी होती हैं भैया! अपना सवारथके आगे उनको कुछ नहीं सूझता। तभी तो अपनी रच्छाके लिये मिला हथियार भी कमूनिस्तोंको बेच देतीं, औ अपने देशके लिये अन्न और जो कुछ मिलता रहा, उसको भी बेंचके पैसा लेतीं।

भैया—ठीक कहा सन्तोखी भाई, देसमें अन्नका अकाल था, लोग भूखों मर रहे थे। अमिरिकासे करोड़ों मन अनाज औ खानेकी चीजें आती थी, उनमेंसे भी आधा चोर-बाजारमें चला जाता। चोर-बजारी इतनी बढ़ी थीं कि अन्तमें अमिरिकाने अनाज बाँटनेके लिये अपने बहुत से आदमी चीन भेजे। मुदा अमिरिकाके आदमी अपने हालसे बाँटने के लिये सब जगह जा नहीं सकते थे और सब जगह, चांकैसकके भाई-बन्ध औ दूसरे घूस-रिसवत खानेवाले सब कुछ चुराके बेचनेके लिए तैयार थे।

छीछालेदर हो गई। लोग एक ओर भूखके मारे तराहि-तराहि करते, और दूसरे देखते कि ऐसे ठगों, लुटेरों, घूस-रिसवत खानेवालों औ चोरबजारिहोंके मारे कोई रहता नहीं। सब जगह जोंकोंकी सड़ती लास दिखाई देती थी।

सन्तोखी—भैया, ई तो मालूम होता है, कि कुछ-कुछ हमारे ही देसकी दसा चीनमें भी हो गई थी फिर चीन कैसे इस साल हमको तीन करोड़ मन अनाज दे रहा है ?

भैया—तीन करोड़में दस-लाख टन ही नहीं, अऊ तो बीस लाख टन अनाज देने के लिये तैयार था। तुमको अचरज होगा कि दो ही बरस पहिले हमारी तरह दाना-दानाके मोताज चीनके पास इतना अन्न कहाँसे आ गया ? जानते हो न, एक अकतूवर १९४९ में ही चीनपर पूरी तौरसे कमेरोंकी सरकारका राज कायम हुआ। इतने थोड़े समयमें अपने यहाँका उन्होंने अन्नका अकाल हटा दिया, और अब छै-छै, आठ-आठ करोड़ मन अनाज बाहर भी भेजने को तैयार हैं। यह सब जादू-मंतरसे नहीं हुआ। जोंकोंके चरन जहाँ पहुँच जायँ, वहाँ सोना भी माटी हो जाता है, और कमेरोंका चरन जहाँ पहुँच जाय, वहाँ माटी भी सोना हो जाती है। गेहूँ, चाउर, सोना ही है, सन्तोखी भाई।

सन्तोखी—सोनासे बढ़के भैया, सोना बाँधे आदमी भूखसे मर जायगा, सोना खाके पेटकी आग थोड़े ही बुझेगी। मुदा, सुनते हैं एक ही बरिसमें उन्होंने अपना अनाजका टोटा पूरा कर लिया। ई तो जादू-मंतर जैसा ही मालूम होता है। सैंतालिस करोड़ आदमी भुखमरी में जीते थे, इतने आदमियोंके लिए कैसे पूरा अन्न उपजा सके ?

दुखराम—भैया. जो चीनके कमेरोंने अनाज़का दुख अपने यहाँसे दूर कर दिया, तो हमारे देसमें क्या वैसा नहीं हो सकता ?

भैया—चीनने जो कुछ कर दिखाया है सो सब हमारे यहाँ हो सकता है, मुदा जिस देसमें चोरबजारियों, घूस-रिसवत खानेवालों पर कोई रोक-थाम नहीं हो सकती राजकाज सब उन्हींके हातोमें है, वहाँ कैसे कुछ हो सकता है ? सब जानते हैं काँगरेसने गला फाड़-फाड़के परतिग्गाँ की थी, कि अपना राज होते ही जिमींदारी, जागिरदारी नहीं रहने देंगे। मुदा, जब राज हाथमें आया तो जानते हो न खून पानीसे गाढ़ा होता है, अपने भाई-बन्धों की चिन्ता करने लगे। जिमीदारी उठा देंगे तो हमारे बेटा-दमादों, साले-ससुरोंमें भी तो वहुतसे छोटे-बड़े जिमींदार हैं. यही सोचके नाकर-नूकर करने लगे, बहाना बनाने लगे। कानून वनानेमें ही बरसों लगा दिये, जो कानून बनाया भी वो भी हाईकोटने बे-कानून वतला दिया।

दुखराम—सो क्यों भैया ?

भैया—एक कानून होता है और दूसरा महाकानून होता है, दुक्खू भाई ! जो कोई ऐसा कानून बने, जो महाकानूनके खिलाफ हो, तो बेकानून हो जाता है।

दुखराम—तो जिमीदारी हटानेके कानूनसे पहिले महाकानून बन चुका होगा, तभी न ऐसा हुआ ?

भैया—हाँ महाकानून (संविधान) बन चुका है, औ बनानेवालों में जोंकों के ही आदमी बेसी थे। उनको बहुत डर था कि कहीं मरकस बाबाके चेले आके; हम

लोगोंने जो चोरबजारी, घूस-रिसवत और बेईमानी-सैतानीसे लाखों-करोड़ रुपयेकी धन-सम्पत्ति बटोरी है, उसे कानून बनाके छीन न लें। इसलिये उन्होंने महाकानूनमें ऐसी बात रखी; जिसमें चाहे जैसे धन-सम्पत्ति किसीने बटोरी हो; उसको छीना न जा सके।

संतोखी—तो इसीसे जिमिंदारी कानून बेकानून हो गया ? और सुनते हैं; कि उसमें भी जिमिंदारीकी जिसमें बेसी हानि हो; ऐसा रसता निकाला गया था।

भैया—हाँ जिमिंदारी उठाना नहीं—यह तो जिमिंदारी खरीदनेका कानून है। कमेरोंको करोड़ों-अरबों रुपया कमा-कमाके जिमिंदारोंको देना होगा; तब जाके जिस खेतको वह जोतते है; वह उनका होगा। चीनमें मरकस बाबाके चेलोंने राजकी बागडोर सँभालते ही कानून बनाके ढिंढोरा पिटवा दिया कि खेत उसका है जो उसे जोतता है। जब किसान जानता है, कि हम अपने खेतमें अपने और अपने देस भाइयों-के खाने के लिए अनाज पैदा करते हैं; तो वह क्यों नहीं जान लड़ाके काम करेगा।

दुखराम—हाँ भैया; अपने कामको सभी लोग खूब मन लगाके करते हैं; काहेसे कि उसका नफा-नुकसान अपना होता है।

भैया—और यह भी कानूनमें कह दिया है कि किसीके पास बहुत बेसी खेत नहीं रहेगा। जिसके पास बेसी-बेसी खेत हैं, उसे बिना खेत या कम खेतवाले कमेरोंमें बाँट दिया जायगा। उन्होंने बरसों तक कागजी घोड़ा नहीं दौड़ाया। बस गाँवकी पंचायतें बनाके तड़ाक-भड़ाक इस कामको कर दिया।

संतोखी—अन्नका अकाल था, करोड़ों आदमियोंके सिर पर मौत नाच रही थी, फिर कमेरोंकी सरकार कैसे कागजी घोड़ा दौड़ाती ?

भैया—हाँ संतोखी भाई, जिस कामके किये विना चलनेवाला नहीं है, जिसको करना ही है, उसमें धिसिर-फिसिर क्या ? लेकिन चीनमें जोंकोंको पीसने के लिये तो सरकार नहीं बनी थी, इसलिए उन्होंने बेलाग होके जनताकी भलाई का जो भी काम हुआ, उसे तड़ाक-फड़ाक कर डाला। हमारे इहाँ तो अंग्रेज गये, मुदा सरकार चलानेके लिये जो इंतजाम अंग्रेजोंने किया था, और पहिलेसे भी ज्यादा घिना देने वाले रूप में। पहिलेके नोकरसाह बड़ी-बड़ी तनखाह लेते थे, अपने ऊपरके हाकिमोंके सामने पूँछ हिलाते और नीचे वालोंको आँख दिखाते थे। अब ई सब जुलुम औ बेईमानी पहिलेसे कई गुना बेसी हो गई, ऊपरसे काम भी बहुत ढीला हो गया है। एक दिनका काम एक महीनेमें होना मुसकिल है। घूस-रिसवतका तो पूछो ई मत फिर कैसे बेड़ा पार होगा।

दुखराम—तो चीनमें उन्होंने काम बड़ा किया भैया ?

भैया—सबसे बड़ा काम यह किया, कि जो सैकड़ो बरस का कूड़ा-करकट और गंदगी चीनमें जोंकोंने जमाकर रक्खी थी, उसे उन्होंने एक बुढ़िया आँधी में उड़ाकर साफ कर दिया। हमारे इहाँ सब कूड़ा-करकट उड़ाने नहीं, बचाके रखनेकी कोसिस की जाती है। जहाँ देखो तहाँ निकम्मे लोगोंकी पलटन दुगना-तिगुना कर दी गई है। चीनमें जिमिंदारी हाटके बेसी जमीनको लोगोंमें बाँटके किसानोंको एक ओर तैयार कर दिया गया कि वह खूब अन्न उपजावें। दूसरी और जोंकोंके सरदार चांकैसेक और उसको पलटनसे लड़नेके लिए जो धीरे-धीरे पचास-साठ लाख लाल फौज तैयार हो गई थी, उनको भी काम में लगा दिया गया।

दुखराम—कौन काममें भैया ? पलटनका काम लड़ना ही है न ?

भैया—जोंकोंके इहाँ पलटनका काम लड़ना है । वलुक लड़ाई न होती हो तो जोंकें रार करके किसीसे लड़ाई छेड़नेकी कोसिस करती हैं । जब लड़ाईका समय नहीं होता, तो पलटनका काम है, छावनीमें बैठके कवायत-परेड करना, महीनेमें अपनी तनखाह ले लेना । मुदा, कमेरोंकी पलटनका ढंग दूसरा ही है । लड़ाई हो औ अपने देस पर संकट हो, तो वह खूब लड़ना जानती है, कवायतपरेड भूलने न पावे इसका भी विचार वहाँ किया जाता है, मुदा, कमेरोंकी पलटन समझती है, कि चुपचाप बैठके अपने जाँगरको (देह की मसक्कत) ऐसे ही बेकार खोना और जनताके कसालेकी कमाई बैठे-बैठे खाना ठीक नहीं है । चीनमें जब चांकैसेक भाग गया और देशमें उसके गोइन्दोंसे ही निपटना रह गया, तो बहुत-सी पलटन खाली हो गई । पलटनने बन्दूक खड़ी कर दी और फावड़ा हाथोंमें ले लिया । पचास-पचास साठ-साठ लाखकी पलटन जब दिनको न दिन, रातको न रात जान, फावड़ा लेकर काममें डट जाये तो वह कितना काम करेगी, इसके बारेमें क्या पूछते हो । पलटनने नदियोंमें बड़े-बड़े बाँध बनाये, पहाड़ों को घेरकर पानी के समुन्दर तैयार कर दिये । हजारों मील लम्बी नहरें बना दीं, जंगल और परती जमीनको काट-कूटके करोड़ों बीघा नये खेत तैयार करके किसानों को दे दिये ।

दुखराम—हमारे इहाँ क्या यह नहीं होगा, भैया ?

भैया—जोंकोंके राज में नहीं, यह तो कमेरोंके राजमें ही होता है । पलटन के बड़े-बड़े इन्जीनियर होते हैं, बड़े-बड़े इलिमदार लोग होते हैं । उनकी विद्दा अब बाँध, ताल और नहर बनानेमें लगी । बाँधों और समुन्दर जैसे तालोंके बना देनेसे बाढ़का डर कम हो गया, किसानोंको राम-भरोसे राम-भरोसे खेती करनेकी जरूरत नहीं रही, उनको सिंचाईके लिए पानी सब जगह मिलने लगा । ऊपरसे खेतीकी विद्दाके इलिमदार लोग जल्दी जल्दी तैयार किये गये, और उन्होंने नये ढङ्गसे खेती करनेका रस्ता गाँव-गाँव में बताया । सरकारने अच्छे बीजका इन्तिजाम किया, किसानोंने खाद गोबर-को चूल्हेमें जलानेकी जगह खेतमें डाला, इस तरह डेढ़ बरससे पहले ही चीनमें अन्नका दुख मिट गया ।

सन्तोखी—भैया, सुनते हैं पाँच बरस तक गरीबोंकी छाती पर कोदो दलने वाले फिर वही काँगरिसवाले रामनामी ओढ़के हम लोगोंका वोट माँगने आ रहे हैं ।

भैया—हाँ, बड़ा रामनाम (चुनाव घोषणा) अबकी तैयार हुआ है । कहा जा रहा है कि अबकी पाँच सालके लिए जो हमको राज-काज मिल गया, तो गरीबोंका सब दुख दूर कर देंगे ।

सन्तोखी—भाई, भतीजे, भानजे और सात पीढ़ी तकके रिश्तेदारों का घर तो भर दिया । अभी कुछ कोर-कसर होगी ?

दुखराम—मुदा कितना ही रामनामी पहनके आवे, हम उनको खूब पहिचानते हैं । अब फिर-फिर सियार गूलर तर नहीं जायँगे । "एक बार डँहकावै तो लाखों बीर कहावै ।" एक बेर थोड़ा दे दिया, सो दे दिया ।

भैया—सो तो देखा जायगा, मुदा मालूम हुआ न की चीनवालोंने कैसे अपने इहाँ जोंकों का टाट उलट दिया, बाईस बरस तक लड़ते रहे और एक दिनके लिए भी

हियाव नहीं छोड़ा। लड़ाई जीतके भी चुपचाप बैंठ नहीं रहे। जीतके साथ ही उन्होंने अपने इहाँके चोरबजरिहों और घूस-रिसवत खानेवालोंको जड़-मूलसे खतम कर दिया। जमींदारी तालुकदारी उठा दी, सूदखोरों का मुँह काला कर दिया। औ खाली अपनों-को ही नहीं चीनके कमूनिस्तानोंने कमेरों के लिये जीने मरनेवाली सब पार्टियों और दलोंका एक गोल बना लिया।

सन्तोखी—सब दलोंका एक गोल भी बना लिया ? हमारे इहाँके कमूनिस्त ऐसा क्यों नहीं करते ?

भैया—हमारे इहाँके कमूनिस्तोंने कुछ गलती की, और गलती किससे नहीं होती। हुसियार आदमी वह है जो गलती करके सीखता है। अब हमारे इहाँके भी कमूनिस्त कमेरोंकें लिए जीने मरनेवाली समी पाटियों और दलोंका एक गोल बना रहे हैं।

सँतोखी—भैया, हमारे गाँवों-बाजारोंमें तो आजकल कमूनिस्त कहीं देखनेमें नहों आते, मुदा स्कूलके पाठसालाके माहटर-गुरु लोगोंके मुँहसे सुनो, चाहे डाकिया और सिपाही लोगोंकी बात सुनो, सभी जगह लोगोंका नाकों दम है। तनखासे खरची नहीं चलती। दौरी दुकान रखनेवाले हमारे जैंसे छोटे-छोटे बनियाँ अपना मूर खा खाके किसी तरह लड़का वालोंको पोस रहे हैं। सब लोग कमूनिस्तोंका नाम लेते ही आसरा लगाये हैं, कि क्या जाने चीनकी तरह हमारा भी दिन लौटे। चीनको मुनते हैं कोरियामें भी लड़ना पड़ा।

भैया—आजकल दुनिया भरकी जोंकोंकी रच्छाका बीड़ा अमिरिकाने ले लिया है। अमिरिका समझता है, कि चीन और रूस जैंसे दुनियाके सबसे बड़े दो देसोंमें तो कमेरोंका राज कायम हो गया, जोंकोंका राज उठ गया और यूरपके पूरपवाले चार-पाँच देसोंमें भी मरकस बाबाकी ही बात चलती है। वह समझता है, जो राज अब भी जोंकोंके हाथमें है, उनको मजबूत न करेंगे, तो हमारे इहाँका जोंक-राज्य भी एक दिन खतम हो जायगा। वह तो बहुत चाहता है, कि किसी तरहका झगड़ा पैंदा करके दुनियामें इसी बखत तीसरा महाभारत छेड़ दिया जाय तो अच्छा।

सन्तोखी—बहुत जल्दीमें है, देर होने से डरता है।

भैया—हाँ, रमायनमें सुने हो न। रामकी सेनाका पराकरम देखके रावणका बेटा मेघनाथ डर गया। वह लड़ाईका मैंदान छोड़के गुफामें जाके मन्तर सिद्ध करने लगा। भभीखनने पता लगा लिया, औ रामजीसे कहा कि 'जो इस वखत बिघन नहीं किया गया औ मेघनाथने मन्तर सिद्ध कर लिया, तो फिर उसको जीता नहीं जा सकता।' परितोख तो ठीक नहीं है। रावन और उसका बेटा जोंकोंमें ही हो सकते हैं, मुदा इहाँ उस बातको छोड़ दो, अमिरिका जानता है कि पहले तो बीस करोड़ और हिन्दुस्तानसे सात गुना बड़ा रूस ही था, जिसके मारे दुनियाकी जोंकोंकी खैंरियत नहीं थी, अब तो हिन्दुस्तानसे चौगुने औ साठ करोड़ आदमीवाला चीन भी उसी ओर है। चीनने जब एक सालके भीतर अपने यहाँका अन्नका दुख हटा दिया, तो अमिरिका और काँपने लगा। वह जानता है, कि चीनमें जल्दी-जल्दी नये कारखाने खुल रहे हैं—सूती कारखाना, ऊनी कारखाना, चमड़े का कारखाना, लोहे का कारखाना, कल-मसीन का कारखाना, रेल इंजन, मोटर बनानेका कारखाना, हजारों तरहके कार-

खाने बन रहे हैं। रूस औ दूसरे कमेरोंके देसके हजारों बड़े-बड़े इलिमदार चीनमें आके मदद कर रहे हैं। जो उसे दस ही बरस और काम करने को मिला, तो चीन भी रूस जितना ही मजबूत हो जायगा। फिर तेरह करोड़ आदमियोंका अमिरिका अपनी जोंकोंके लिए भाड़ेकी पलटन से कैसे चीन और रूसके सामने खड़ा हो सकेगा ?

सन्तोखी—चीन, रूस ही क्यों भैया पैंतीस करोड़का हमारा हिन्दुस्तान भी अपने भाई चीनके साथ रहेगा। वह कभी अमिरिकाकी जोंकोंके आगमें नहीं कूदेगा।

भैया—हमारे देसकी जोंकें तो सन्तोखी भाई, अमिरिकाकी जोंकोंकी आगमें देसको झोंकना चाहती हैं। जैसे भी हो वह देसकी भुखमरी दूर नहीं होने देंगी।

भैया—सो तो होगा ही, जो हम अभीसे सजग नहीं हुए। देसको अपने पैर पर खड़ा करनेके लिये चीनका दिखाया रास्ता भी हमें लेना होगा। अमिरिका चीनको बरवाद करना चाहता था, जब चांकैसेकसे काम नहीं चला, तो कोरियामें उसने झगड़ा उठा दिया और अपनी पलटन वहाँ उतार दी। कोरियाके तो गाँव-शहर सब पर अमिरिकाने उडनखटोलोंने बमगोला गिरा-गिराके उसको तहस-नहस कर दिया। आधे कोरियामें जोंकोंका राज था और आधे में कमेरोंका। अमेरिकाने कमेरोंके भागको भी जोंकोंके राजमें मिलाके चाहा कि चीनके सिवाने पर पहुंच जाय, तब चीनके सपूत समरमें कूद पड़े।

सन्तोखी—अभी भी अमेरिकाकी जोंकोंका मन चीनसे भरा नहीं है।

सन्तोखी—वह तो चाहती थी कि हिन्दुस्तानको भी चीनसे भिड़ा दें। जानते हो न, महादेव बाबा कैलाशमें रहते हैं। कैलास मानसरोवर भोट (तिब्बत) देसमें है और भोट देस, डेढ़ हजार बरससे चीनके साथ रहा है, चीनके भीतर बसनेवाली पाँच जातियोंमें भोटके लोग भी हैं। जब चांकैसेककी पलटन पीठ दिखाके मैदानसे भाग गई औ वहाँके कमेरोंकी सरकारने तिब्बतके राज चलाने वालोंसे कहा, कि तुम भी हमारे पाँच जात वाले परिवारमें आके मिल जावो, तो तिब्बतकी जिमिदारी-जागिरदार जोंकोंने इसे पसन्द नहीं किया औ चारों ओर हाथ-पैर मारने लगीं। अँग्रेजों औ अमेरिकाके गोइंदे तिब्बतमें पहुँचकर आगमें घी डालने लगे। मुदा अपने थोड़े सिपाहियोंके बल पर वह चीनकी लाल सेनासे लड़ नहीं सकती थीं। अमेरिका औ अँग्रेजोंकी सरकारोंने हिन्दुस्तान को बहुत साम-दाम दिखाया। कहा—रुपया-पैसा औ गोला-बारूद अमेरिका देगा, हिन्दुस्तान अपनी पलटन दे दे, तो तिब्बतको कमूनिस्तोंके हाथमें जानेसे बचा लिया जाय। हिन्दुस्तानकी सरकार जानती थी, कि इस दलदलमें फँसनेका नतीजा बहुत बुरा होता। हिमालयके पार उस देसमें अपने लाखों आदमियोंको लेजाके कटवाना बड़ा महँगा सौदा था। नफेकी कोई उमेद न थी, नहीं तो क्या जाने हिन्दुस्तानी जोंकोंने दबाव डालके वैसा करवाया होता।

सन्तोखी—तो अमेरिकाकी जोंकोंका काम हमारी सरकारने नहीं किया।

भैया—इससे अमेरिकाकी जोंकें नाराज हो गईं।

दुखराम—अपने देसको बचानेके लिये अपने पैरों पर खड़ा होना होगा जैसा चीनने किया। औ अब तो महादेव बाबाके घरमें कमेरोंका राज लाल पताका आ गया। कहो सन्तोखी भाई, महादेव बाबाने जब मरकस बाबाका रहता मान लिया तब तो अब किसीको नाक़रन्नूकर नहीं करना चाहिये।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, हम तो पहले महादेव बाबा औ रामजीकी बहुत पूजा करते थे। मुदा जबसे भैयाकी बात सुनी और तुम बात मानने लगे, तबसे ऊ कुल सरधा-भगती न जाने कहाँ बिलाय गयी। अब तो हमारे पड़ोस तक कमेरों का राज चला आया। भैया, बनारस से अब कितनी देरका रहता है?

भैया—बनारससे जो सोझे उत्तरकी ओर उड़ा जाय, तो घण्टा, डेढ़ घंटामें उड़नखटोला वहाँ पहुँच जाये। हमारा सिवाना औ चीनका सिवाना एक ही है, दोनोंमें एक अँगुल का भी फरक नहीं है। भोट देस अब कमेरोंका हो गया औ एक लाखसे वेसी भोटिया लोग हिन्दुस्तानके भीतर बसते हैं, जो बहुत गरीब हैं।

सन्तोखी—तब तो भैया, अपने भाइयोंकी खुसहाली सुन-सुनके इनका मन भी ललचायेगा।

भैया—इसलिये हमारे राज चलानेवालोंने वहाँ पुलिस-थाना बैठा दिया है जिसमें उस पार की बीमारी इस पार न आने पावे। मुदा, जब तक अपने देसके भुखमरी, गरीबी, वेरोजगारी नहीं हटती, तब तक कौन उसे रोक सकता है? चीन हमारा दो हजार बरसका पुराना भाई है। उसने रहता दिखा दिया, जितना जल्दी पुरानेका मोह छोड़ के हम उसी रहताको पकड़ें, उतना ही अच्छा।

९. सान्तीका रहता

बरखाका एक महीना वीत गया। एक दो बार मामूली छींटाके पानीका कहीं पता नहीं था। गाँवके किसान व्याकुल थे। महँगीके दिनमें घरके भीतरका अनाज खेतमें डाल आये थे, अंकुर जम आया था, मुदा पानी बिना जहाँ-तहाँ खेती सूख रही थी। आज रात भर खूब बरखा हुई, सूखे-रूखे बिरछ हरे दिखाई पड़ रहे थे, झुलसे पौधोंमें भी जान आ गई थी।

बादल आज दिनमें भी चारों ओर घिरे थे। आज भैया, दुखराम औ सन्तोखी तीनों सयाने पेड़के नीचे नहीं, दुखरामके ओसारेमें बैठे थे। बात चलानेके लिये सन्तोखी ने कहा—भैया अच्छी तरह कमाना धरतीसे। अन्न पैदा करना, कपास पैदा करना और जो कुछ कामकी चीज है, सबको बनाके तैयार करना, पेट-भर अपने खाना, अपने बाल-बच्चोंको खिलाना और गाँव-पुरके लोगोंको भी भूखा न देखना, ऐसी जिन्दगी ही तो हम लोगोंको चाहिये।

भैया—मुदा जब ले जोंकें हैं तब ले सान्तिसे दिन काटना नहीं हो सकता सन्तोखी भाई! दुनियाके किसान मजूर, कमेरे लोगोंको इसीमें आनन्द है, कि सांतीसे कमाया-खाया, मुदा जोंकें जो सान्तिसे रहने दें तब न।

दुखराम—हाँ भैया, जोंकें खून चूसनेवाली हैं न? उनको सान्ति काहे पसन्द आयेगी? वे तो ढूंढ़-ढूंढ़के रार करना चाहती हैं। आजकल दुनिया सांति के पाछे ही गोलमें बँट गई है।

सन्तोखी—कौन-कौन दो गोल भैया ?

भैया—यह भी कहने की बात है ? एक ओर जोंकोंका सिरताज अमिरिका है, औ हर जगह ताल ठोंक रहा है। लड़ाईके बाद अपने देसकी जोंकोंको हटानेके लिए जहाँ-तहाँ कमेरोंने कोसिस की, सभी जगह अमिरिका अपना डालर और हथियार लेके पहुंचा।

सन्तोखी—कोरिया में तो भैया अपनी पलटन भी उसने उतार दी थी।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई, मुदा अमिरिका अपनेको चालाक कहता है न। वो चाहता है, कि अपने आदमीको न मरवावैं। ई कोई दया-मयाके खयालसे नहीं, ऊ जानता है कि जो अपने देसके आदमी मरवायेंगे, तो अमिरिका की जनतामें गुस्सा पैदा होगा, फिर काम मुश्किल हो जायगा।

दुखराम—हाँ भैया, जोंकें तो कहीं पर भी सौ में पाँच-दससे बेसी नहीं होतीं, नब्बे पंचनाबे तो कमेरे ही होते हैं।

सन्तोखी—हाँ, चाहे हाथ-पैर चलानेवाले कमेरे, चाहे कलम घिसाई करने वाले कमेरे, चाहे हमारे जैसे चार पैसा का नून-तेल बेचनेवाले, सब कमेरे ही हैं। आज किसी तरह लड़के-बालोंका पेट चला, तो कल ठिकाना नहीं।

भैया—अमिरिकाकी जोंकें दुनियामें घूस-रिसवत देने, चाहे लड़ाई के लिये तैयार करनेके वास्ते अरबों डालर वो रही हैं, फेंक रही हैं कहना चाहिये। सारे दुनियाके हाट-बाजारमें अमिरिका का माल बिक रहा हैं, जोंकोंको बहुत मुनाफा है। धन सम्पत्ति जो कुछ है, उसमें दू-आना जोंकें चौदह आना की मालिक हैं। मजूर को तो खाली गुलामी भर करना और किसी तरह पेट चलाना है। जोंकोंका क्या लगता है, जो जोंकें गरीबों की कमाईमें से अरबों डालर अपनी रक्षा के लिए फेंक दें।

सन्तोखी—तो कहे कमेरोंकी आँखमें पट्टर बँधा हुआ है, उनको सूझता नहीं।

भैया—कैसे सूझे, सौ दो सौ बरिस नहीं हजारों बरिससे ये ही समझाया गया है कि धनी-गरीब भगवान बनाते हैं, अपने भाग पर भरोसा करना चाहिये किसीके धनको देखके लोभ नहीं करना चाहिये।

दुखराम—धन इन चोरों, डकैतोंका है, कि धन कमेरे पैदा करते हैं।

भैया—धन कमेरे ही पैदा करते हैं, मुदा पोथी-पतरा भगत भगवानके नामसे दुनियाके सभी कमेरों की आँखों पर पट्टी बाँध दी है।

सन्तोखी—मरकस बाबाने तो आँख का पट्टर खोल दिया। मरकस बाबाके चेले अमिरिका में नहीं पहूँचे क्या ?

भैया—चेले तो पहुँचे हैं; अमिरिका में कोई बेपढ़ नहीं है। मुदा पढुआ होनेका जोंकोंने बेसी फायदा उठाया है। वो खूब सस्ता अखबार और पोथी छापके निकालती हैं, जिनमें लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकने की बात रहती है।

सन्तोखी—तो पढ़ने-लिखनेसे ग्यान नहीं होता क्या ?

भैया—पढ़ने लिखनेसे ग्यान होता है, मुदा ई दुधारी तलवार हैं। पोथी-गियान भी देती हैं औ आँखोंपर पट्टी भी बाँधती हैं। बाभनोंकी पोथी देखते हो न, कितनी बड़ी-बड़ी है, और रिसि-मुनि छोड़के दूसरोंकी बात बतलाई नहीं जाती। मुदा, उसमें खून चूसने वालोंके मुनाफे की बात छोड़के और क्या है ? सौ में पन्द्रह

आदमीको उन्होंने अछोप-अछूत बना दिया, जिसके छूनेमें भी पाप लगता है। सबसे निरघिन काम उनसे लिया जाता है। जो काम कोई नहीं करता सो काम मन मारके अछोप लोग करते हैं। बड़ी जात वालोंका पैखाना उठाते हैं। मरे डाँगरको उठाके न ले जायँ, तो बाबू लोगोंका गाँव सड़ने लगे। ई सब करने पर भी सबसे गरीबये ही लोग हैं। सौ में पैंसठ-सत्तर आदमीके लिए पोथीमें लिखा है कि खाली बाभन-छत्री-लालाकी सेवा करना उनका धरम हैं।

दुखराम—हाँ भैया, हमरी अहिरकी जातिमें जब थोड़ेसे लोग पढ़-लिख गये तो इन्हें पहिले सनक सवार हुई, कि जो हम लोग भी जनेऊ पहिन लें तो बड़ी जात बालोंमें हो जायेंगे। अहिर छोड़के उन्होंने दुसरा-दुसरा बढ़िया नाम भी रख लिया। मुदा, बाम्हनोंकी पोथीमें तो हमारे भाग का फैसला पहिलेई कर दिया गया है।

भैया—दुक्खू भाई, पाँकके धोने से पाँक नहीं छूटती। बाम्हनोंकी पोथीमें जितना चालाकी है, उतना किसी धरमकी पोथीमें नहीं है।

सन्तोखी—बाकी भैया हैं तो सभी फंदे वाली ही धरम पोथियाँ ? ईसाई धरमकी पोथी हो चाहे मुसलमान धरमकी पोथी, किसी धरमकी पोथी हो, सबमें कमेरोंके, गलेमें फन्दा डालने का जतन किया गया है।

भैया—ठीक कह रहे हो, मुदा एक ही बोली बोलने वाले एक ही देसमें रहने वाले, एक ही रंग-रूपके लोगोंको हजार जातमें बाँटना औ उनमें भी ऊँच-नीच बनाके एक दूसरेके साथ झगड़ा लगाये रखना, ऐसी चालाकी कहीं नहीं पाओगे। जैसे-जैसे बाम्हनोंकी पोथी तैयार हुई, इसी तरह आज भी जोंकोंके देशोंमें हर साल हजारों पोथियाँ छपती हैं। इनका काम खाली लोगोंकी आँखों में धूल झोंकना है। मुदा जब बेटे-पोते मरने लगते हैं, लड़ाईमें फतिंगेकी तरह उन्हें झुलसा-झुलसाके मारा जाता हैं और घर-घरमें रोना-काँदना मच जाता है, तब लोग सोचने लगते हैं। फिर कुछ बतलाने लगते हैं, कि लड़ाई रोपने वाली हमारे देसकी जोंकें हैं। तब उनको डर पैदा हो जाता है। सुना है न सन्तोखी भाई, पहले महाभारतमें जब रूसके लाखों जवान जोंकोंकी लगाई आगमें मर गये, तो वहाँके लोग उपाय ढूंढ़ने लगे। फेर मरकस बाबाके बड़े चेला लेकिन महातिमाने मन्तर दे दिया—अपनी बन्दूकें घरके दुश्मनों याने जोंकों की ओर फेर दीं। कमेरोंके बेंटोंके पास पैसा कहाँ ? औ पैसाभी जमा करें तो कानून के खिलाफ, बन्दूक रक्खें ? ई तो जोंकोने लड़ाईकेलिए मुफतमें बन्दूकें दे दीं और उनको ठीकसे चलाना भी सिखा दिया। देसके लाखों जवानोंके मरनेसे सबका मन बिगड़ गया था। ऐसा मौका कहाँ मिलता, औ कमेरोंके लड़कोंने अपनीं बन्दूकोंको सचमुच ही अपने देसकी जोंकोंकी ओर कर दिया। औ आजसे ६८ बरस पहिले दुनियाके छठें भागमें जोंकोंका टाट उलट गया, कमेरोंका राज खड़ा हो गया।

सन्तोखी—इसलिये भैया, अमिरिकाकी भी जोंकें डरती होंगी। सोचती होंगी, जो अमिरिकाके घर-घरके लड़के मरवाये गये, तो इहाँ भी कहीं रूसवाली बात न हो जाय। इसलिये अमिरिकाकी जोंक चाहती हैं, कि रुपया और हतियार हमारा लगे औ मरनेवाले हों दूसरे।

दुखराम—तो कोरियामें काहे अपने आदमियोंको ले जाके मरवाया अमिरिकाने?

भैया—गलती कर बैठा, सोचता था, कि डालरसे खरीदे गुलाम देसोंकी जोंकें सिपाही देंगी औ अमिरिकाका काम थोड़ेसे सिपाहियों औ बहुतसे रुपया-हतियारों से चल जायगा। मुदा अमिरिकाके गुलाम देस वैसे तो जीहजूरी और चापलूसीमें बहुत आगे बढ़े थे, मुदा गुसाईं जी कह गये हैं—"सरबसि खाई भोगकरि जाना। समर भूमि भा दुरलभ प्राना।"

सन्तोखी—अंगरेजोंने अमिरिकाकी बहुत मक्खन-रोटी खाई, उन्होंने कितने जवान कोरियाकी आग में झोंके ?

भैया—मक्खन रोटी खानेवालोंमें अंगरेज ही नहीं थे, फ्रान्स, इटली और न जाने और बहुत से कितने देसोंने खूब परमुंडे फलहार किया। मुदा, जब कोरियामें अपने देसके जवान भेजने की बात आई, तो किसीने पाँच सौ, किसीने हजार आदमी भेजके कुल भीर अमिरिकाके ऊपर डाल दी। बारा-तेरा महीनोंकी लड़ाईमें अमिरिकाके अस्सी हजारसे बेसी जवान कट गये, चाहे अंग-भंग होके बेकार हो गये। अमिरिकाने समझा था, कि हमारे अणुवा बमके धमकाने और उड़नखटोलोंसे दस-बीस हजार बमगोला गिरा देनेसे कोरियावाले हतियार धर देंगे। मुदा 'इहाँ कुम्हड़ बतिया कोऊ नाही।' एक बेर तो कोरिया के जवानों ने ढकेलते-ढकेलते अमिरिकाको समुन्दरके तीर पहुँचा दिया था औ मामूल होता था कि अब इन जोंकोंको को बोरिया-बँधना बाँधके समुन्दर पार भागना पड़ेगा।

दुखराम—तो कैसे भागना रुक गया भैया ?

भैया—अमिरिकाने पहिले अपने थोड़े ही आदमी भेजे और दूसरे गुलाम देसोंके भी आमदनी बेसी आदमी नहीं गये थे। अमिरिका ने देखा कि जो अब हात सँकोचा तो सब रोब-दाब मट्टी में मिल जायगा। तब उसने यहाँके जवानोंको आँख मूँदके झोंकना शुरू किया। बेचारे आधे कोरियाके कमेरे कैसे सामना करते। लोगोंने समझाया, कि पुराने सिवानें पर चलके लड़ाई बन्द कर दो, मुदा अमिरिकाने चाहा कि कोरियामें कमेरा-राजका चीन्ह न रहने पावे। जब अमिरिकाकी पलटन आगे बढ़ते-बढ़ते चीनके सिवाने पर पहुँच गई, तो चीनके कमेरोंको डर मालूम होने लगा। जानते हो न, अमिरिकाने कोरिया से जो कमेरों का राज खतम करना चाहा, उसका एक भेद यह भी था, कि इस तरह चीनके कलेजके पास चलके बन्दूक तानेंगे। औ समूचे कोरियामें अपनी पलटनकी छावनी—अड्डा बनाके फिर चीन पर हल्ला बोल देंगे।

सन्तोखी—हाँ, दरवाजे पै सतरूको देखके गाफिल रहना अच्छा नहीं है भैया !

भैया—तो भी चीन सरकारने लड़ाईके लिये कदम नहीं बढ़ाया। हाँ, अपने यहाँके कमेरोंको छुट्टी दे दी, कि जो चाहे सो कोरियाके भाइयों को मददके किये चला जाय ! फिर चीनके भी जवान कोरियाकी मदद करनेके लिये आए औ अमिरिकाकी पलटनको पहिलेके सिवानाके पार लँघा आये। अब अमिरिका और उसके पिछलग्गू देसोंकी जोंकें समझने लगीं कि लड़ाईका फैसला जल्दी नहीं होगा। अमिरिका हुकुम पर हुकुम लिखके भेजता मुदा उसके पिट्ठू देस खाली जबानी जमा खरच करके बहादुरी दिखाते। आदमी भेजनेकी बेरा अंगरेज कहते हैं, कि हम मलाया-सिंहापुरमें कमूनिस्तों से लड़ रहे हैं, बड़ी भीरमें। फ्रान्स कहता है कि हम हिन्दी-चीन और कम्बोजमें कमुनिस्तोंको रोके हुए हैं।

दुखराम—तो सब कोई न कोई बहाना ढूंढ़के कहती हैं, 'लड़ो भतीजो पाछ दो पुतो।''

सन्तोखी—इसलिए तो भैया, अमिरिकाको लड़ाईबन्दीकी बात माननी पड़ी।

भैया—दुनिया भरकी जोंकें समझती हैं, कि इन दो-चार बरसोंमें जो कमेरों-की सरकारोंके साथ लड़ाई करके उनको नास नहीं कर पाये, तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अमिरिका तो लड़ाई करानेके लिये पागल हो गया है। उसने अपनी जानमें लड़ाई छेड़ भी दी। कोरियामें सीधे अपनी पलटन पहुँचा दी। उसके जनरैल और गोला-बारूद तो सारी दुनियामें लड़ाई कराने का जतन कर रहे हैं। अमिरिका, जानते हो न, दो समुन्दरोके पार चीन और रूस दोनोंसे बहुत दूर है। अंगरेजोंके टापूकी तरह बीचमें दस-बीस कोसकी खाड़ी नहीं, बड़-बड़े समुन्दर रास्तेमें पड़ते हैं। 'लंका अस दीप समुन्दर अस खाड़ी' कहके रावन अपनेको अपरबल समझता था, मुदा हिन्दुस्तान औ लंकाके बीचकी खाड़ी हनुमान जीके लाँघनेके मान की थी। अटलांटिक औ पसिफिक जैसे महासमुन्दरको लाँघना किसी हनुमानके लिए आसान नहीं है। तो भी अमिरिका कहता है, कि हमारा सिवाना दोनों महासमुन्दर नहीं है।

सन्तोखी—तो भैया, अपना सिवाना कहाँ मानता है?

भैया—चीन औ रूसके अपने सिवानेको सिवानेसे मिला मानता है।

सन्तोखी—ई तो बड़ी बेहयाई है भैया!

भैया—जोंकें तो लाज-सरम धोके पी गई हैं। अमिरिकाने यही कहके कोरियामें अपनी पलटन रक्खी, चीनमें चांकैसेकको मदद की। हिन्दी-चीनमें चीनके सिवाने पर वह लड़ाईमें फ्रान्सीसियोंको हर तरहकी मदद दे रहा है। अपने जहाज, हवाई जहाज, गोला-बारूद, पैसा-कोड़ी, जनरल सब भेज रहा है। हिन्दुस्तानको भी चाहता है कि वह अमिरिकाका हुकुम मानके भोटदेस औ चीनकी नाकाबन्दी करे। पाकिस्तानको रूस औ चीनके सिवाने पर कस्मीरमें बैठाके अपना मतलब सिद्ध करना चाहता है।

सन्तोखी—भैया, सुनते हैं कि पाकिस्तान अमिरिकाके बल पर कूद रहा है?

भैया—अँगरेज तो सिखंडी है, 'सबै नचावें राम गुसाईं', असली नचाने वाला और खरच-बरच देने वाला अमिरिका।

दुखराम—तब भैया जवाहरलाल काहे अमिरिकाकी बात में पड़ते हैं?

भैया—जवाहरलाल हो चाहे कोई हो, जब तक ऊ जोकोंके फ़ंदेसे बाहर नहीं निकलते, तब तक चाहे जितना गाल बजा लें, मुदा 'करिहैं सोइ जो राम रचि राखा' राम जानैं जोंकोंके हाथमें देसकी गरदन है। औ कर क्या सकते हैं। जिमिंदारों, तालुकदारोंको खतम करो, सभी बड़ी-बड़ी जोंकोंको लाल भवानीके सामने बलि चढ़ावो, देसके सभी कमेरों और उनके साथी समाजियोंको काम पर लगा दो, तब हमारे देसमें रोटी, कपड़ेका दुख दूर होगा, तब लोग अपना बल-बौसाय दिखायेंगे, तभी अमिरिकाका मुँह नहीं देखना पड़ेगा।

सन्तोखी—मुदा हमने तो अपने सेठके लड़केको कहते सुना, कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की लड़ाई होने वाली है।

भैया—सेठ क्यों नहीं कहेंगे। झूठ कहनेमें क्या लगता है ? जो झूठ बोलनेमें नफा हो, तो कौन सेठ साँचकी कंठी तोड़नेके लिये तैयार नहीं है। जानते हो न कि कि कोरियाकी लड़ाई होतेही सेठोंने चीजोंका दाम बढ़ा दिया।

सन्तोखी—हाँ भैया, हमीं सवाया दाम देके सौदा ले आये। औ, अब सेठके लड़केने रुपया पीछे दो आना बढ़ा दिया।

भैया—पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानकी लड़ाईके नाम पर ना ?

दुखराम—तो भैया, लड़ाई सेठोंके लिये कलपब्रिरिच्छ है।

भैया—लड़ाई होतेही सेठोंकी पाँचों अँगुली घीमें हो जाती हैं। सौदा चाहे बरस भर पहिलेका खरीदा या तैयार किया हुआ हो, मुदा वह झट से दाम सवाया-डेवढ़ा कर देते हैं। हमारे यहाँके सेठोंको जो मुनाफा हुआ; वह अमिरिकाकी जोंकोंके मुनाफाके सामने कुछ नहीं है। जो कोरियाकी लड़ाई छिरी होती, तो अमिरिकाके लोहा इसपात, गोला-बारूदके कितनेही कारखाने दिवालिये हो जाते, लड़ाईके बाद जितने-लड़ाईका सामान वहाँ बना था, वह माल गोदाममें इतना भर गया था, कि आगे जगह नहीं थी। मालगोदामका गोला-बारूद जब मार-काटके लिये जाय, तब दूसरे मालके रखने की जगा हो ?

दुखराम—इसीलिए भैया जोंकें सांतिसे डरती हैं औ रात-दिन लडाईका जाप करती हैं।

भैया—टाट उलनेकी बात है दुक्खू भाई। औ लड़ाई हो जाने पर करोड़ों का मुनाफा घरमें आता है। मुदा पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों तो आजकल अमिरिका के दहिने-बाएँ हातमें हैं। तित्तर तब लड़ेंगे जब मालिक उनको लड़ने के लिए छोड़ेंगे।

सन्तोखी—तो काहे पाकिस्तान औ हिन्दुस्तानके बड़े-बड़े लोग लड़ाईकी बात कहते हैं ?

भैया—पाकिस्तानका एक टुकड़ा पच्छिममें है और एक टुकड़ा पूरबमें बंगाल है। पाकिस्तानमें सबसे देसी रहने वाला इलाका पूरब वाला है। मुदा घी, मलीदा खाने वालोंमें गरीब बंगालियोंको कोई पूछता नहीं। बड़ी-बड़ी गद्दी बाहरसे भाग कर आये लोगों के हातमें हैं। पंजाबी मुसलमान इसे देखके जलते हैं।

सन्तोखी—इसीलिये तो पंजाबी पाकिस्तानी जनरैलों और बड़े-बड़े आदमियों को पकड़के जेहल में डाला गया ?

भैया—लेकिन, चांडाल चौकड़ी पाकिस्तानियोंकी छाती पर कोंदो कब तक दलेगी। पाकिस्तानी बंगालमें जाके देखो, बड़ी-बड़ी तनखा पानेवाले हाकिम सब पंजाबी मिलेंगे। पलटन देखो तो सब पंजाबियोंकी है। पंजाबी कहीं ऐस-जैसमें विघन ना डालें, इसलिए पाकिस्तानी बंगालकी जागिरदारी दे दी गई। बंगाली अलग जल रहे हैं। पठानोंको जिस तरह पीसा जा रहा है, उससे पठान नराज हैं, उनकी नराजी दूर करनेकेलिये कास्मीर पर लूट-मार करनेके लिये पठानोंको भेज दिया। बस धोखा-धड़ीसे काम निकालते, मालिक चाहते हैं, कि पाकिस्तानी जनताकी आँख खुलने न पाये। उनके मनमें है, कि जो कहीं जनता के हाथमें फैसला करने को दे दिया गया, तो हमारे जैसोंका कहीं ठौर-ठिकाना नहीं लगेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया !

भैया—अपने पैरमें कौन अपनेही कुलाड़ी मारता है। बंगालकी जनताने इन मालिकोंको खूब दिखा दिया, जब साढ़े तीन सौमें दस भी उनके आदमी नहीं चुने गये।

दुखराम—हाँ भैया !

भैया—पाकिस्तानके बाद फिर पच्छिम चलो, तो रूसके सिवाने पर ईरान और तुर्कीके मुलुक हैं। दोनों में अमिरिका पहुँचा हुआ है। अपने सिवानेकी रक्षा करनेके बहाने दोनोंको करोड़ों रुपयाका हतियार दे रहा है। अपने जनरल भेजके वहाँ की पलटनको अपनी मुट्ठीमें कर रक्खा है औ जोंकोंको कमेरोंके खूनकी होली खेलने की छूट दे रखी है। तुर्कीसे पच्छिम ग्रीस देस है। जर्मन फसिहोंको लड़के निकालनेमें वहाँके कमेरोंने अपने हजारों बेटोंकी बलि चढ़ाया। फसिहोंके राजके खतम होने पर कमेरोंने अपना राज बनाना चाहा, तो जोंकोंकी मददके लिये अँगरेज और अमिरिकाने पलटन भेज दी। हमारे दो जिलेके बराबर का ग्रीस देस चार-पाँच बरस तक जान हथेली पर रखके अपने देस और परदेसकी जोंकों की भाड़ेकी पलटनसे लड़ता रहा। उसके पच्छिम जुगोसलावियामें मरकस बाबाके चेलोंने बड़ी बहादुरी दिखलाई और वहाँ कमेरोंका राज भी कायम कर लिया। मुदा जोंकोंने वहाँ भी अपना जाल फैलाया और पच्छिममें इटली, फ्रान्स, पच्छिमी जर्मनी, नार्न, स्वीडन, जितने देश कमेरोंके राज के सिवाने पर हैं, सब जगा अमिरिका लड़ाईकी तैयारी कर रहा है। लड़ाईका फल इन देसोंके लोगोंने खूब भोगा है। वहाँके कमेरे नहीं चाहते, कि फिर तीसरा महाभारत हो, मुदा अमिरिकाकी जोंकें वहाँकी जोंकोंकी पीठ ठोंक रही हैं।

सन्तोखी—जर्मनीकी जोंकोंके गुन्डे सरदार हिटलरकी पीठ भी अँगरेज औ फ्रांसीसी जोंकोंने ठोंकी थी, मुदा पीछे उनको पछताना पड़ा, जब वरदान पाके भस्मासुरने भूतनाथकी ओर ही हाथ बढ़ाया।

भैया—गरजमें आदमी बावूला हो जाता है। जोंकें देखती हैं, कि हर जगह कमेरे अब उनको रखना नहीं चाहते। जो लड़ाई होगी तो सबसे बेसी मरेंगे कमेरोंके, सबसे बढ़कर दुर्गति होगी कमेरोंकी। इसीलिये कमेरे सांती चाहते हैं। जोंकोंके राजमें लड़ाईकी तैयारी अंधाधुन्धकी जा रही है औ कमेरेके राजमें सान्ती की परितिग्गा कराई जा रही है। करोड़ों आदमी सान्तीके परितिग्गा पत्र पर दसखत कर रहे हैं।

दुखराम—कहीं इस सान्तीसे फायदा तो नहीं उठायेंगी ?

भैया—सो, उससे गाफिल कमेरे नहीं हो सकते। मुदा वो जहाँ तक हो सके, सान्ती रखनेका जतन कर रहे हैं।

सन्तोखी—सात समुन्दर पारसे आके दरवाजे पर अमिरिकाकी जोंकें ताल ठोंक रही हैं, इस पर भी कमेरोंकी सरकारें धीरजसे काम ले रही हैं। जो इन्होंने सबुर न किया होता तो अब तक तिसरा महाभारत छिड़ गया होता ?

भैया—मुदा सान्तीका हतियार लड़ाईके हतियारसे भी बढ़के है।

सन्तोखी—भैया ई तो गांधी बाबा वाली बात कर रहे हो।

भैया—गांधी बाबाने सब जगह गलती नहीं की है, सन्तोखी भाई। औ जहाँ गलती भी की, वह न समझनेके कारन। मरकस बाबाके पास न आ वो दूसरोंका

गुरुमन्तर ले लिये थे, उसीके मोह-मायामें पड़के रोगीकी असली दवाका पहिचान नहीं कर पाये। जो दुनियाके सौमें नब्बे आदमियोंको दुखी नही देखना चाहता है, उनको सुखी रखना चाहता है, वह कभी सान्तीका रसता छोड़के लड़ाईका रसता नहीं लेगा। जोंकोंके देसकी भी जनता लड़ाई नहीं सान्ती चाहती है। वहाँ भी लाखों-करोड़ों आदमी सान्तीकी परितिग्गा कर रहे हैं। इसको देखके जोंकोंका कलेजा काँपने लगा है। जो कमेरे सान्तीकी परतिग्गा कर लिये, तो तोपोंमें झोंकनेके लिये उनके लड़के कैसे मिलेंगे ?

दुखराम—कमेरोंकी आँख तो खुलनी चाहिये।

भैया—कमेरोंने लड़ाईमें सवा करोड़से वेसी आदमियोंको निरघिन मौत मरते देखा। गाँव-गाँव और सहरके सहर उजड़ते देखा। बेवा-अनाथोंको मारे-मारे फिरते देखा। सारे देसको भूखके मारे हाय-हाय करते देखा। जोंकोंके देसके कमेरे, वहाँकी सौमें नब्बे जनता, फिर लड़ाई चाहेगी ? दो महाभारतोंको देखके उनका मन भर गया।

दुखराम—और कमेरे जहाँ राज कर रहे हैं, वहाँ तो कोई काहे लड़ाई चाहेगा।

भैया—हाँ दुक्खू भाई, रूसके कमेरे दस साल लगके अपने देसको फिरसे बसा सके हैं। लड़ाईके पहिले जितना धन पैदा करते थे, उससे अब वह दूना पैदा कर रहे हैं, मुदा उनका अभी वड़ा-वड़ा मंसूबा है। आमू दरियाकी दुनियामें सवसे वड़ी नहरें बना रहे हैं, पनबिजली तैयार करनेके कारखाने खड़े कर रहे हैं। रेगिस्तानके पेटमेंसे करोड़ों एकड़ खेत निकालने के लिए रात-दिन एक करके काम कर रहे हैं। वह अगले दस सालमें लोहा, कोयला, विजली, तेल, सब चीजें आदमी पीछे अमिरिकासे भी बेसी पैदा करना चाहते हैं। गरीव और वेरोजगारीको उन्होंने अपने देससे खतम कर दिया है, मुदा वो चाहते हैं कि सभी नर-नारी अन्न-धनसे भरपूर हों, सब आरामसे रहें औ पोथीवाले सरगका सुख जिसको कहते रहे, वह इसी धरती पर भोगनेको मिले।

दुखराम—तब भैया ऊ काहे लड़ाई चाहेंगे ? इसीलिए तो उसकाने पर भी वह लड़ाई करने के लिए तैयार नहीं होते।

भैया—वो जानते हैं कि लड़ाईसे फायदा खाली जोंकोंको है। दुनियाकी जोंकोंके दिन अब इने-गिने रह गये हैं। लड़ाई छेड़के वो अपनी जिन्दगी बढ़ाना चाहती हैं। चीन भी अपने यहाँ जोंकोंके राजको उठाके देसको अन्न-धनसे भरपूर करना चाहता है। वहाँके सब मरद-मेहरी—पलटनिया जवान तक अपने घरको बनानेमें लगे हुए हैं। डेढ़ही सालमें उन्होंने अपने यहाँ से अन्नका अंकाल हटा दिया। और तीन करोड़ मनके करीब अनाज हमारे देसको भी उस साल दिया। अभी उनको अपने देसमें सब जगह रेलकी सड़कोंका जाल बिछाना है, सिंचाईके लिए नहरें खोदनी हैं, हर जगह कल-कल-कारखाने खड़े करने हैं। एक-एक बेफत—परानीको पटुआ बनाना है। वह काहे लड़ाई चाहेंगे ?

सन्तोखी—तो जोंकें जानती हैं, कि कमेरोंकी सरकारें लड़ाईसे भागना चाहती हैं, तो खदेड़के क्यों नहीं उनको लड़ने लिए तैयार करतीं ?

भैया—जोंकें यह भी जानती हैं, कि खदेड़ने पर जो कमेरे खड़े हो गये, तो लेनेके देने पड़ेंगे। कमेरोंकी सरकारें अतिको बरदास्त नहीं कर सकतीं। और कमेरों जैसे वीर-बंके दुनियामें और कहीं नहीं हैं।

सन्तोखी—तो जोंकोंके लिए अब दोही रास्ता रह गया है: कमेरोंको फुसला के उनके लड़कोंको तोपोंका चारा बनाना औ रुपया दिखाके लोगोंको खरीदना ?

भैया—हाँ, इसमें क्या संदेह है। हमारे देसमें आजकल अमरिकाकी जोंकोंने हजारों पढ़ुवा लोगोंको खरीद लिया है। हिन्दीमें औ दूसरी देसी भाषाओंमें सैकड़ों पोथियाँ औ अखबार लिख-लिखके मुफुत बँटवा रही हैं, जिनको बहुतसे लोग पढ़ते भी हैं।

सन्तोखी—झूठके पोथोंको कौन पढ़ेगा भैया ?

भैया—झूठका पोथा तैयार करनेके लिए उसने कई हजार हिन्दुस्ताननियोंको खरीद लिया है। और भेदिया तो उसके सारे देसमें फैले हुए हैं। मंतिरी लोगों की सभाओंमें जो सलाह-मसविरा होता है, उसकी बात अमिरिकाके गोइंदोंके पास पहुँचते देर नहीं होती।

सन्तोखी—तबतो भैया मंत्रियोंमें भी कुछ अमिरिकाके हाथमें बिके होंगे।

भैया—पानीकी तरह रुपया बहा रहा है, कितने लोगोंको किराया औ खरचा देके अमिरिकाकी सैर करनेके लिए भेज रहा है जिनमें कुछ हमारे मंतिरी भी हैं।

दुखराम—तो घूस-रिसवत, भेंट-नजराना चारों, ओर जाल फैला हुआ है अमिरिकाकी ओरसे। एक भभीखनने लंका ढा दिया था, हमारे देसमें तो अमिरिकाने न जाने कितने भभीखन तैयार किये हैं ?

भैया—चीनमें भी अमिरिकाने बहुत भभीखन तैयार किये थे और सोलह अरब रुपया भी पानीकी तरह बहाया। मुदा जानते हो न, चीन के भभीखनोंकी क्या दसा हुई। जब जोंकोंके राजमें पिसते-पिसते नाकमें दम आ गया और उन्होंने सब कुछ अपनी आँखों के सामने देखा, तो जनताकी नजर अमिरिकाके हाथमें बिके मंतरियों, मुखियों और लिखाड़ों की ओरसे फिर गई।

सन्तोखी—तब उन्हें मरकस बाबाके चेलों की बात सच्ची मालूम होने लगी। तब उन्होंने समझा कि मरकस बाबाका रहता छोड़ सुख और सांतिका दूसरा कोई रहता नहीं है।

१०. हिन्दुस्तान की आजादी

सन्तोखी—सोहनलाल ! तुम्हारे आनेसे हम लोगोंका कुछ नुकसान भी हुआ कुछ फायदा भी। नुकसान तो यह हुआ कि भैया जो कुछ कहते हैं, वह पहिलेकी तरह

सोलहों आना मेरी समझमें नहीं आता। कौन-कौनसे नाम; जिनके कहनेमें जीभ लुटपुटाती है। लेकिन कई बातें तुमने ऐसी खोदके कहवाईं, जिन्हें हम सुन न पाते।

दुखराम—हाँ; सन्तोखी भाई ! थोड़ा-सा नुकसान तो जरूर होता है।

भैया—देसोंका नाम तो नकसा देखनेसे ही साफ-साफ समझमें आता है। हमारे लिए बनारस-परयाग बिल्कुल परकट है लेकिन फ्रांस-अमिरिकावालोंके लिए वह उसी तरहके बेकार नाम हैं, जैसे हमारे लिए उनके शहरों के नाम। अच्छा अब चलो हिन्दुस्तानकी आजादी के बारेमें कुछ बात करें। रूस, जीन, जैसे लाल झण्डेवाले दोनों को छोड़कर सारी दुनिया नरकमें हैं। हिन्दुस्तान तो सबसे बड़े नरकमें है, क्योंकि इसके ऊपर विलायती जोंकों की भी गुलामी है और अपनी भी। लेकिन दुक्खू भैया प्याजका पहले ऊपरका छिलका निकाला लाता है या भीतरका ?

दुखराम—पहिले भैया ऊपरका छिलका छुड़ाया जाता है, तब नीचे न छुड़ाया जायगा ?

भैया—लेकिन चाकू चलानेमें कुछ नीचेका भी छिलका कट जाता है, तो भी हमें पहिले ऊपरके छिलकेके हटानेमें सबसे ज्यादा जोर लगाना पड़ेगा। भीतरके छिलकोंपर भी चोट इसलिए लगानी पड़ती है, कि बिना जमींदारों और पूँजी-पतियोंसे टक्कर लिये किसान-मजूर मजबूत भी नहीं होंगे, और न यही समझ पायेंगे कि हम नरकमें इन्हों जोंकोंके कारन पड़े हैं। हिन्दुस्तानवालोंने आजसे ९८ बरस पहिले अपने देसको आजाद करने की कोसिस की।

सन्तोखी—१८५७ के गदरके वखतमें न भैया ?

भैया—और उसीके चार बरस पहिले मरकस बाबाने लिखा था, कि अंगरेज सार्जन, जिन हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको अपने कामके लिए कवायद-परेड सिखा रहे हैं, वही सिपाही अपनी आजादीके भी सिपाही तो बन सकते हैं।

दुखराम—तो बाबाके कहनेके ४ ही साल बाद तो उन्होंने कोसिस की। लेकिन आजादी क्यों नहीं मिली भैया ?

भैया—सिपाहियोंको यह पूरी तौरसे ग्यान न था, कि वह क्या चाहते हैं।

सोहनलाल—पता क्यों नहीं था, वह जानते थे कि हिन्दुस्तानसे अँगरेजी राजको खतम करना है।

भैया—तुम्हारे पास एक पुराना घड़ा है, तुम उसको फोड़ रहे हो, तो क्या तुम्हारा यह जानना काफी है, कि "मै घड़ेको फोड़ रहा हूँ" या यह भी जानना चाहिए कि इसे फोड़कर मैं किससे पानी पियूँगा।

दुखराम—हाँ भैया, सिर्फ घड़ा फोड़नेसे काम नहीं चलेगा, पानी पीनेका भी इन्तजाम होना चाहिए।

भैया—सिपाही घड़ा फोड़ना चाहते थे, नये घड़े का उन्हें ख्याल भी नहीं था। उनके नेता थे सड़े-सड़े जमींदार, राजा और नवाब, जिनको लड़ाई की विद्याका, उस समयके हथियारोंका ग्यान नहीं था। कम्पनीने किसीकी पेन्सन जपत कर ली थी, किसीका राज छीन लिया था, कोई समझता था कि हम भी छोटे-बड़े

राजा-नवाब हो जायेंगे । बस इकट्ठा हो गये थे। सिपाहियोंने बहादुरी की, हिन्दू-मुसलमान दोनों जी-जानसे लड़े, लेकिन उनके पास आँखें नहीं थीं ?

दुखराम—आँख नहीं थी ? क्या वह सब अंधे थे ?

भैया—पलटन की आँखें अफसर होते हैं दुक्खू भाई ! सौ-सौ, पचास-पचास सिपाही अपने मनसे जिधर चाहें, लड़ने लगें, तो दुसमन उन्हें जल्दी तबाह कर देगा। पाँचों उँगलियाँ बाहरकी ओर खुली हैं, लेकिन हथेलीसे जुड़ी हैं। इसी तरह अलग बिखरे हुए सिपाही तभी मजबूत होते हैं जब हजारों-लाखोंको एकसे एक नत्थी कर दिया जाय। अफसर यह काम करते हैं। दूसरा दोस यह था, कि जो राजा-नवाब उनके अगुआ बने थे, वह लड़ाईके अगुआ होने लायक नहीं थे। सब अपना-अपना स्वारथ देखते थे। तीसरा दोस था कि जनता इन विदेसियोंसे लड़ने वाले अपने सिपाहियोंको अपना नहीं समझती थी।

दुखराम—क्यों भैया, वह हमारे भाई-बन्द तो थे ही ?

भैया—भाई-बन्द कह देनेसे नहीं काम चलेगा दुक्खू भाई, जब वह गाँवों और सहरोंको लूटते थे, लोग उनके आनेकी खबर सुनते ही घर-दुआर की सुध छोड़ भाग निकलते थे, तो कैसे कह सकते हो कि वह भाई-बन्द थे ?

सोहनलाल—लेकिन लोगोंसे पैसा न लें तो उनका खर्च कैसे चले।

भैया—लेकिन वह डकैत तो नहीं थे। वह अंग्रेजोंको इसलिए निकालना चाहते थे, कि लोग ज्यादा सुखी रहें। लोगोंको यह बात अच्छी तरहसे मालूम होती, तो लोग तन-मन-धनसे उनकी मदद करते। इन सबसे यही मालूम होता है कि जो लड़के जान देने वाले थे, उनको मालूम नहीं था कि वे अँगरेजोंको निकालकर क्या करेंगे, इसलिए वह जनताको भी नहीं समझा सकते थे—क्यों तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए। हो सकता है जो और कुछ दिन लड़नेका मौका मिला होता तो खुद गलती करके सीखते। लेकिन कुछ बागी राजाओं नवाबोंको छोड़कर बाकी सारी जोंकें, राजा-महाराज-नवाब अपने भाइयोंके खिलाफ अँगरेजोंकी मदद कर रही हैं। बेचारों को सीखनेका मौका नहीं मिला। कैसे खूनकी नदी बहाकर जुलम करके उस लड़ाईको दबा दिया गया, यह कहनेकी जरूरत नहीं। और दबाया भी बीस सालके लिए।

सन्तोखी—बीस सालके बाद फिर सुतन्तर होनेका ख्याल क्यों आने लगा ?

भैया—हिन्दू समझते थे कि समुन्दर पार जानेपर धरम चला जाता है और दूसरे के हाथका खाना खा लेनेसे आदमी किरिस्तान हो जाता है इसीलिए वह कुएँके मेंढक रहे। अब एक-एक करके कुछ लोग विलायत जाने लगे, कितने ही लोग हिन्दुस्तान हीमें अँगरेजी पढ़कर किताबोंसे दुनियाके बारेमें जानने लगे। उन्होंने देखा कि आदमी भेड़ नहीं है, राजा भगवानकी ओरसे भेजा नहीं जाता। विलायतमें राजा हैं, लेकिन राजाका काम देखती है पचायत—पार्लमिंट। अमेरिकामें तो राजा भी नहीं है, वह पंचायती राज है। अँगरेजोंको अपना राज चलानेके लिए सस्ते क्लर्कों और नौकरोंकी जरूरत है, इसलिए अँग्रेजी पढ़ाना जरूरी था, अँगरेजीकी किताबोंके पढ़ने पर साहब बहादुर नंगे दिखाई देने लगे और दुनियाके और देसोंकी बातें पढ़कर उनके दिलमें भी आजादीका ख्याल आने लगा। कुछ होसियार अँगरेजोंने सोचा कि

कहीं यह हिन्दुस्तानी हाथसे बाहर न हो जायँ । उनकी मददसे कांगरेसकी अस्थापना की

दुखराम—क्या भैया ! बिलायती जोंकोंने कांगरेसको अस्थापित किया ?

भैया—हाँ, गोरे साहबोंने काले साहबोंको बढ़ावा दिया । पचीस साल तक तो कांगरेसमें इन्हीं काले साहबोंका जोर रहा। इनका काम था, सालमें एक वार किसी बड़े सहरमें इकठा होना और हाथ जोड़कर अँगरेजी सरकारसे परार्थना करना "भगवान हमें यह नौकरी दो, हमें वह नौकरी दो।" सिच्छा और बढ़ने लगी। नौकरियाँ कम पड़ने लगीं। लोगोंकी तकलीफ बढ़ गई, धीरे-धीरे गोरे भगवान से परार्थना करना वहुत-से लोग बेकार समझने लगे। उनमेंसे कुछ लोगों ने वम-पिस्तौलसे एकाध अँग्रेजों या काले अफसरोंको मारा। कुछको फाँसी हुई, लोगोंने सहीद कहके उनका सम्मान किया ।

दुखराम—उससे कुछ फायदा हुआ कि नहीं भैया ?

भैया—सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके नौजवान निरभय होने लगे। मौत उनके लिए डर नहीं परेमकी चीज बन गई। बाकी तो मैं कही चुका हूँ कि एक्के-दुक्के अफसरोंके मारनेसे जगह खाली नहीं होती। फिर पिछला (१९१४-१८) महाभारत आया। लड़ाईने सारी दुनियामें उथल-पुथल मचा दी। रूसमें कमेरोंका राज कायम हो गया, इसका भी असर पड़ा । दच्छिनी अफ्रीकामें गाँधीजी गोरी सरकारसे लड़ चुके थे। लड़ाईके बीचमें वह हिन्दुस्तान आ गये।

सोहनलाल—गाँधीजी जब हिन्दुस्तान आये तो देसकी सुतंतरताईके लिए यहाँ कौन-कौन काम कर रहे थे ?

भैया—तीन तरहके लोग थे : एक तो सपरू जैसे पुराने ढर्रेके कांगरेसी नेता जिनका काम था सरकारसे परार्थना करना, भिच्छा माँगना। वह किसी तरहका जोखिम उठानेको तैयार नहीं थे। यह खूब अँगरेजी पढ़े-लिखे होते थे। चमड़ेके रंगसे मजबूर थे, नहीं तो जहाँ तक बन पड़ता था वह साहब बहादुरका ठाट-बाट रखते थे। इनमें से चलते पुरजेके लोगोंको अँग्रेज कोई नौकरी या पदवी देखकर अपनी ओर खींच लेते थे। इनका बिसवास था, कि अँगरेजोंको न्यायसे बड़ा परेम है। उन्हें जोंकोंके स्वभावका पता नहीं था, इसलिए समझते थे, कि बिलायती जोंकें किसी दिन अवढर-दानी संकरकी तरह हिन्दुस्तानको निहाल कर देंगे । दूसरी ओर कुछ नौजवान थे; जो समझते थे कि बम-पिस्तौलसे दो चार सरकारी नौकरोंको मार देनेसे बिलायती जोंकें हिन्दुस्तान छोड़कर चली जायेंगी। तीसरी तरहके लोग थे, जो कभी कभी गरम-गरम लेक्चर दे देते थे और अँगरेजीको बुरा-भला कहकर कभी-कभी जेल चले जाया करते थे। इन तीनों तरहके लोगों में से किसीको आम जनतासे कोई वास्ता नहीं था। वह समझते थे, कि जनता न किसी राजनीतिको समझ सकती है, न निरभय होकर बलिदान कर सकती है, हम नेता ही हिन्दुस्तानका बेड़ा पार कर सकते हैं। गाँधीजी जनताकी ताकतको दक्खिनी अफरीकासे कुछ-कुछ समझने लगे थे। उन्होंने हिन्दुस्तानी कुलियोंको वहाँ देखा था, कि वह कैसे लड़ाके हैं। पहिली लड़ाई खतम हो रही थी। युद्धके लिए अँग्रेजोंने भारत रच्छा कानून बना लिया था, लेकिन युद्धके बाद वह कानून चल नहीं सकता था । वह जानते थे कि लड़ाईके बाद दुनिया भरमें जबरजस्त

उथल-पुथल होगी। रूसमें उन्होंने देख ही लिया था, कि कैसे कमेरोंने जोंकोंको मसल डाला। इसलिए अँग्रेरेजोंने हिन्दुस्तान में एक ऐसा कानून बनाया, जिससे उथल-पुथल मचाने वालेको मनमानी सजा दी जाये। बोलक्कड़ लोगोंने इस कानून का बहुत विरोध किया, लेकिन सरकार क्यों सुने? गाँधीजीने इस बखत आगे कदम बढ़ाया और जनताकी तागतको इस काममें लगाया।

सोहनलाल—गाँधीजीका यह बड़ा काम है न भैया?

भैया—बहुत बड़ा काम है। इतना बड़ा काम है, जिसके लिए हिन्दुस्तान उन्हें कभी नहीं भूलेगा। जनता की तागतके सामने अँगरेजी सरकार घबराई। हजारों आदमियोंको जेलमें डाला। लोगोंके दिलसे जेलका डर बिल्कुल जाता रहा। अँगरेजोंने जो कानून बनाया था, वह रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया गया। अब चिन्ता जेल जानेवालोंको नहीं, बल्कि चिन्ता थी अंग्रेजोंकी इतने लोगोंके रखनेके लिए जेल कहाँसे आयेंगे। गाँधीजीने साल भरमें सुराज पानेकी बात कही, जोंकोंके दिलको बदल देनेकी बात कही। लेकिन कोई जादू-मन्तर थोड़े ही है कि सालमें सुराज चला आवे।

दुखराम—और जोंकोंका दिल तब न बदले जबकि उनके पास दिल हो।

भैया—गाँधीजीकी लड़ाई बन्द हो गई, लेकिन पहिले ही से कितने ही नौजवानोंने रूसके कमेरोंकी बात सुनी। मरकस बाबाकी सिच्छाको भी वह पढ़ने लगे। हिन्दुस्तान में भी उस सिच्छाका बीज पड़ा। अँगरेजी सरकार घबराने लगी, यह बोलसेविक हिन्दुस्तानमें कैसे पहुँच गए? उन्होंने डाँगे और दुसरे कमूनिस्तोंपर १९२४ में कानपुरमें मुकदमा चलाया और उन्हें कड़ी सजा दी। कमूनिस्त मजूरोंमें काम कर रहे थे। अपने हक्के लिए मजूर लड़ने लगे और मजूरी बढ़ाने या किसी मजूरके निकालने पर बड़ी-बड़ी हड़तालें होने लगीं। १९२९ में ४ लाख मजूरोंने कलकत्ताकी गलियों में घूमते हुए विलायतसे भेजे साइमन कमीसनका विरोध किया।

दुखराम—साइमन कमीसन क्या था भैया?

भैया—विलायती जोंकें बहुत चालाक थीं भाई! जब लोगोंमें ज्यादा असंतोस देखती हैं, तो पाँच-सात आदमियोंकी गुट्टको यह कहकर भेज देती हैं, कि यह लोग जाकर जाँच-पड़ताल करेंगे, फिर हम तुम्हारे लिए जरूर कुछ करेंगे। इसी को कमीसन कहते हैं। उस वक्त जो कमीसन आया था, उसका मुखिया था साइमन—जोंकोंका एक छँटा सरदार। इसीलिए उस कमीसनको साइमन कमीसन कहा जाता था। कमूनिस्तोंकी इस तागतको देखकर सरकार और घबराई और देस भरके कोने-कोनेसे गिरफ्तार करके, जोसी, अधिकारी, डाँगे, आदि उनतिस कमूनिस्तोंपर मेरठमें मुकदमा चलाया।

दुखराम—तो भैया, मरकस बाबाकी सिच्छा फैलानेसे बिलायती जोंकें बहुत घबराईं?

भैया—उतनेसे भी सन्तोष नहीं हुआ दुक्खू भाई! १९३४ में तो सरकारने कानून निकाल दिया कि कमूनिस्त पार्टीमें जो भी जायेगा, उसे जेलमें भेज दिया जायगा। लेकिन मरकस बाबाकी सिच्छा न फूस-सज्जापर सोनेवालोंके लिए और न गोबर गनेसोंके लिए ही है। वह हवामें सिच्छा नहीं देती, नरक-सरगका लोभ भी

वहाँ नहीं । जो गरीव हैं, मजूर हैं, रोज तकलीफोंको भुगत रहे है, उनको यह सिच्छा बहुत जल्दी समझमें आने लगती है। जनताको इस तरह मैदानमें आते देखकर विलायती जोंकोंके पेटमें पानी कैसे पचता ? जोंकें घबराती थीं, विलायती ही नहीं हिन्दुस्तानी भी । इसलिए नहीं कि गाँधीजी वोलसेविक थे और धनिकोंका धन छीन-कर पञ्चायती बना देते । गाँधीजीका साथ करनेका मतलब जेहलखाना-जुरमाना था, इसलिए वह घबराती थीं । लेकिन गाँधीजीके "विलायती माल न छुओ" कहनेसे हिन्दुस्तानी मिलोंका माल खूब विकने लगा । खूब नफा होने लगी, तो सेठ लोग भी गाँधीजीकी आरती उतारने लगे, जमींदार भी दण्डवत् करने लगे, और अव गाँधीजीने भी वार-बार कहना सुरू किया, मैं सेठों-जमींदारोंका धन छीनना नहीं चाहता, मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि सेठ-जमींदार किसान-मजदूरोंके माँ-बाप वन जायँ ।

दुखराम—इसीको कहते हैं भैया, "नदिया (दूध के बरतन) की साखी विलाई ।"

भैया—यह सव कथा पुरानी हो गई दुक्खू भाई ! विलायती जोंकोंने देखा कि कमेरोंका राज रूसमें कमजोर होनेकी जगह और वढ़ता ही जा रहा है, मरकस वावाकी सिच्छा भी दुनियामें फैलती जा रही है, हिन्दुस्तानमें भी उसे दवाया नहीं जा सकता । उधर हिन्दुस्तानी भी सुराज-सुराज कह रहे हैं, अगर कुछ नहीं करेंगे तो, सव हमारे खिलाफ हो जायँगे ।

सन्तोखी—वन्धन (रेहन) से वूड़ा (वैं) हो जायगा ।

सोहनलाल—और हिंन्दू-सभावाले भी तो लड़ाके थे ।

भैया—रहनेदो हिन्दू-सभाकी वात ।

सोहनलाल—सावरकर क्या लड़े नहीं, क्या उन्होंने अपनी जवानी अंगरेजों के साथ लड़नेमें नहीं बिताई ?

भैया—क्या उन्होंने अपने वुढ़ापेको अँगरेजोंके राजको मजवूत करनेके लिए नहीं विताया ? भाई परमानन्दको भी किसी वक्त फाँसीकी सजा मिली थी, लेकिन उसका यह मतलव नही है, कि वह पुरानी आग बाद भी उनके भीतर रही । सोहन भाई ! अंडमनके काले पानी में उनकी सारी आग ठंडी हो गई । बासी खानेवाला बहादुर नहीं होता ।

दुखराम—ऐसे ही हिन्दू सभाके नेता रहे, जो गरीवोंका खून कच्चा पी जाते । सिपाही सवार छाँट-छाँट कर गुंडे रखते और एककी डेढ़ मालगुजारी दिये विना पिंड नहीं छूटता । कभी मोटरका चन्दा लगता, तो कभी हाथी का । व्याह-वरातके लिए हजारों रुपया वसूल करते ।

भैया—वस हिन्दू-सभामें या तो इसी तरहके गरीवोंके खूनको चूसकर मोटे हुए राजा-महाराजा, जिमीदार हैं, या उनके टुकड़ेसे जीनेवाले, क्या जाने दो चार पागल भी निकल आयें ।

दुखराम—तो अब यह लोग जोंकोंके सरदार बनकर अपनी वीरता दिखलाना चाहते हैं ।

भैया—देखो तो दुक्खू भाई ! जोंकें अभी कितने-कितने तरहके नाटक खेलती हैं । धरमके नामसे उन्होंने हजारों बरसोंसे पागल कर रखा है, अव "हिन्दू धर्म डूबा" कहकर वह गाँधीजी को गाली देने चले हैं ।

सोहनलाल—तो भैया ! तुम चाहते हो कि हिन्दू अपना धर्म न बचावें ?

भैया—जिनको गुलामीसे इतना प्रेम है, वह भारत माताकी कितनी इज्जत करते हैं, यह खुद समझ सकते हो ।

सोहनलाल—तो हिन्दू क्या बाधा डालते हैं ?

भैया—हिन्दुओंका वरताव । हिन्दुओंने दस करोड़ आदमियोंको चमार, मुसहर, डोम बनाकर उन्हें जानवरसे भी बदतर कर दिया । जब कोई उनमेंसे मन्दिरोंमें जाता है, तो कह देते है कि पोथीमें इसके खिलाफ लिखा है । पोथियाँ किसने बनाईं । उन्होंने, जो कहते हैं कि जोंकें भगवानकी ओर से भेजी गई हैं । जमींदार और सेठ किसानों-मजूरोंको चूसते हैं, तो यह भी वह धरम करते हैं । पहिले जनमका पुन्न है, इसीलिए उनको धन मिला है । लेकिन दुक्खू भाई ! तुम्हें मालुम है न कि जोंकोंके घर में भगवान सोनेकी बरसा नहीं करते, एक आदमीको धनी बनानेके लिए ही निन्नानबे आदमियोंको भूखा मरना पड़ता है ।

दुखराम—हाँ भैया ! सब पोथी-पत्रा जोंकोंके फायदेके लिए बना है ।

भैया—अभी ३० बरस पहिले (१९२५ई०)तक नेपालके हिन्दू-राजमें आदमी खरीदे-बेचे जाते थे और पोथी-पत्रेवाले कहते फिरते थे, कि यह सब भगवानकी पोथीमें हुआ है ।

दुखराम—तो भैया ! नेपालमें आदमियोंका बेचना-खरीदना कैसे बन्द हुआ ?

भैया—दुनिया में थू-थू होने लगी, इसीलिए । और नेपाल राजकी सावरकर और भाई परमानन्द तारीफ करते नहीं थकते थे । असल बात है कि जो-जो हिन्दू-हिन्दूके नामपर चिल्लाते थे, उनमें बहुत ज्यादा अँगरेजोंके खुसामदी थे—"करन चहत निज प्रभु कर काजा" । रूसमें भी जब जोंकोंका राज था तो इस तरहके लोग वहाँ भी बराबर झगड़े उठाया करते थे ।

दुखराम—रूसमें भी तो भैया १८२ जाति हैं । वहाँ कैसे रास्ता निकाला गया ?

भैया—वहाँ पहिले ही मान लिया गया, कि कोई जाति दूसरी जातिकी गुलाम नहीं है, जिस जातिकी जो भूमि है, उसका कर्त्ता-धर्ता वही है । इसलिए एक-एक जातिका एक-एक पञ्चायती राज बनाया गया है, जहाँके राज-काजको उसी जातिके लोग चलाते हैं । अपनी भूमिमें अपने कर्त्ता-धर्ता होनेसे उनको डर नहीं है, कि दूसरी जाति दबायेगी । इसीलिए एक सौ बयासी जातियों ने मिलकर बीस आदमियोंका एक बड़ा पंचायती राज बनाया है । यहाँ भी उसी बातको मान लो तो सारा झगड़ा मिट जाये ।

सोहनलाल—लेकिन पाकिस्तान बन जाने पर वहाँके मुसलमान ईरान, तुर्की अफगनिस्तानसे मेल करके हिन्दुस्तान पर हल्ला बोल दें तो फिर क्या होगा ?

भैया—सोहन भाई ? दुनियामें जितने मुसलमान देस हैं, सब पाकिस्तानसे चौथाई-तिहाई ही हैं । पञ्जाबकी ओरके पाकिस्तानके मुस्लमानों की आबादी ३ करोड़ होगी जब कि ईरान की १ करोड़ ८० लाख हैं, अफगानिस्तान १ करोड़, तुर्कीकी १ करोड़ ७८ लाख; मिस्रकी १ करोड़ ६०लाख; बताओ दूसरे मुस्लिम देस पाकिस्तान-की पूंछ बन जायेंगे या पाकिस्तान दूसरे देसोंका ? मरकस बाबाने तो ऐसा रास्ता बतलाया है, कि उनमें देस-जाति-धरम का अड़ंगा ही नहीं लग सकता । हम रोटी-

कपड़ाके लिए लड़ते हैं, कोई धरम हमारे रास्तेमें बाधा न डाले। जो बाधा डालेगा, उसे ही नुकसान उठाना पड़ेगा। हिन्दूके नामपर, मुसलमानके नामपर जोंकोंको छिपाया नहीं जा सकता।

दुखराम—भैया! बरसातके मेंढकोंकी तरह से जान पड़ता है जोंकें न जाने कितने धरम निकालेंगी और कौन-कौन-सी खुराफात जोड़ेंगी। लेकिन मरकस बाबाने जो कसौटी दे दी है, उससे खरे-खोटेका पहचानना बहुत आसान है। मैं देख चुका हूँ, कितने राजा-महाराजा लोग कौंसलमें वोटके लिए खड़े हुए थे और कितने पंडित और पुरोहित बड़ा-बड़ा टीका लगाकर लोगोंको समझाते फिरते थे, कि कांग्रेसवाले जो गये तो हिन्दू धरम नहीं बचेगा, वह हिन्दू-मुसलमान सबको एक करना चाहते हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई, कागरेसवालोंमें जो किसीने मुसलमानके साथ खाया होगा, तो रोटी-दाल, लेकिन इन राजा-महाराजाओंकी लीला अपरम्पार है। यह साहब बहादुरके साथ बैठ न जाने क्या-क्या खाते हैं।

दुखराम—इसीको कहते हैं "छप्पन चूहा खाईके बिलारी भई भक्तिन"।

सोहनलाल—लेकिन भैया! फलाने सासतरी, फलाने राजा जैसे बड़े-बड़े दिग्गज लोग भी हिन्दू-धरमकी बात करते हैं?

भैया—तुम बूढ़े-बूढ़े नामोंको देकर डराना चाहते हो। मैंने कहा नहीं कि बूढ़ोंका दिमाग मरनेसे पहिले ही मुरदा हो जाता है। ऐसे बहुत कम बूढ़े देखनेमें आते हैं, जिनका दिमाग मरते दम तक गंगाकी धाराकी भाँति बहता रहे, नहीं तो वेसी सठिया जाते हैं। फिर तुम ऐसे नामोंको भी ले रहे हो जिनके केस अंगरेजोंकी गुलामीमें पक गये। जिन्होंने अपने पेटके लिए अंगरेजोंके हाथको मजबूत किया। पाँच रुपयेकी नौकरी करनेवाले सरकारी चपरासीसे आप कुछ आसा भी रख सकते है, सोहन बाबू, क्योंकि उसको पाँच रुपयेकी नौकरी दूसरी जगह भी मिल सकती हैं, आधा पेटको तो आधा खाना कहीं न कहीं मिलता ही है। लेकिन जिसने दो हजार-पाँच हजारके लिए अँगरेजोंकी ताबेदारी कबूल की थी, उसके भीतर उतनी हिम्मत कभी नहीं हो सकती। नौकरी छूट जानेपर कौन इतनी मोटी तनखाह देगा? फिर घरमें जो इतना बड़ा-बड़ा लिफाफा है वह कैसे रहेगा? कहाँ नवाबी ठाट और नवाबी मिजाज और कहाँ अब दर-दरके भिखारी! क्या तुम कभी ऐसे लोगोंसे उम्मेद रख सकते, कि वह अँग्रेजोंके खिलाफ जायँगे?

दुखराम—पिनसिनिहाँ, भैया और लीचड़ (डरपोक) होते हैं। पिनसनिहाँका क्या कबुरमें पैर लटकाये सभी बूढ़े लोचड़ होते हैं। जवानोंको तो जल्दबाज कह देते हैं, लेकिन जल्दबाज होनेपर भी जवान अपनी इज्जत-बातपर जान दे देते हैं; लेकिन बूढ़ोंकी चली तो बेसरमी की बिद्दा जवानोंको भी सिखा दें।

११ . पण्डा, मुल्ला, सेठ

सन्तोखी—पुरोहितों और मौलवियोंके बारेमें बताओ भैया !

भैया—वे खुद जोंक हैं और जोंकोंके दलाल भी । देखते नहीं जब कोई राजा कौन्सिलके लिए खड़े होते थे तो पुरोहित लोग चारों ओर चक्कर काटने लगते, भगवान और धरमकी दुहाई देते-देते कान बहरा कर देते । पुरोहितों और मोलवियोंने कभी गरीबोंका पच्छ नहीं लिया !

सोहनलाल—भैया, तुम भी कबीर साहबकी तरह मोलवियों और पण्डितोंके पीछे पड़ गये ।

भैया—पण्डित सरगका एक रास्ता बताते थे, मोलवी दूसरा रास्ता, मोलवीके मतसे गायका मांस खाकर सरग जाता है, पंण्डितके मतसे गायका गोबर खाकर। पंडित सिरपर चुटिया बाँधकर सरग पहुँचाता है, मोलवी दाढ़ीमें चुटिया बाँधने को कहता है । फिर यह भी नहीं कि कह दें कि "मारत सोइ जाकहँ जो भावा," वह एक दूसरेका सिर भी फोड़नेको तैयार थे । कबीरसाहबको वह बुरा लगता था, वह इस खून-खराबीको पसन्द नहीं करते थे, चाहते थे हिन्दू-मुसलमान एक होकर रहें । इसलिये उन्होंने कहा "सोई राम सोई रहीम" बेचारे समझाते थे कि है कोई अलख निरंजन इस दुनियाकी सुध लेनेवाला, इसलिए नहीं चाहते थे कि दुनियाकी सुध लेनेवाले (राम-रहीम) पर बिसवास करनेवाले एक-दूसरेका गला काटें । उन्होंने सोचा था कि राम-रहीमको एक मान लेनेसे काम बन जायगा लेकिन झगड़ेका दोसी राम-रहीम नहीं था ।

दुखराम—राम-रहीम दोसी नहीं था तो कौन था भैया ?

भैया—जो राम-रहीम होता और उसमें उतनी तागत होती जितनी पंडितोंकी पोथियों और मुल्लोंकी किताबमें लिखी हुई तो हजारों बरसोंसे अपने नाम पर करोड़ों आदमियोंको कटते-मरते देखकर वह चुपचाप बैठा न रहता । असलमें मजहबके पैदा करनेवाले भी जोंकें हैं । भगवानको भी पैदा करनेवाली जोंकें हैं । मैंने पहले कहा था कि एक निठल्ले आदमीको कोई क्यों अपना सरबस देकर भूखे मरनेके लिए तैयार होता ? इसीलिए उन्होंने राम-रहीमको पैदा किया, जिसने उन्हें राजा बनाया । राम-रहीम हैं, कबीर साहब यह बिसवास रखते थे, फिर पंडित-मुल्लाके झगड़ेको मिटाना चाहते थे । उनको पता ही नहीं था कि जब तक दुनियाको नरक बनानेवाली जोंकें हैं तब तक राम-रहीम एक कह देनेसे झगड़ा नहीं मिटेगा ।

दुखराम—मैं भी एक बात कहूँ भैया !

भैया—कहो दुक्खू भाई ।

दुखराम—तुमने भैया जो उस दिन कहा था न कि मजहब और भगवान को गाली देनेमें हम लोगोंकी अपनी तागत नहीं लगनी चाहिए, हमें देखना है कि कैसे कमेरोंको रोटी-कपड़ा मिलेगा ? मैंने अपने मुँहमें जाबा लगा लिया लेकिन जानते हो न भैया, मरकस बाबाकी बातने दिलमें ऐसी आग लगा दी है कि जोंकोंके जाल-फरेब-

को कहना ह। पड़ता है। उसमें जब कोई भाई बीचमें भगवानकी बात कहता है तो नाहीं कहना ही पड़ता हैं। नाहीं कहना खराब तो नहीं है भैया !

भैया—नहीं दुक्खू भाई, साँच कहना खराब नहीं है। मैंने इतना ही कहा था कि रोटी-कपड़ेकी बात छोड़कर जो तुम देवी-देवता और ओझा-सोखाके खिलाफ कहनेमें अपनी सारी ताकत लगा दोगे, तो असली काम पड़ा रह जायगा।

दुखराम—मैं इसे अच्छी तरह समझ गया हूँ भैया ! एक दिन मैं वलीदपुर-में था। रमजान भइयवा मेरा यार है। रमजान, मैं औ सोवरन राउत तीनों बगीचा में बैठकर बात कर रहे थे। उसी वक्त हरखू पंडित उधरसे जा रहे थे। सोबरनने बावा पालागी किया, हरखू पण्डितने पासमें आकर मेरे बारेमें पूछा तो सोवरनने कह दिया कि दुखराम राउत हैं। हरखू पंडित का मुँह उतर गया और आँख वड़ी-वड़ी कर मेरी ओर देखने लगे। मैंने भी पालागी कहकर उनको बैठनेके लिए कहा। उन्होंने कड़ककर कहा—"जा तेरी पैलगी नहीं लेंगे। भगवानको नहीं मानता, देवी-देवताको गाली देता है।" मैंने बहुत नरमीसे कहा—"देवता ! दूरबासा रिखीं ? गरीबपर काहे नाराज होते हैं, मैं किसी देवी-देवताको गाली नहीं देता।" हरखू पण्डितने कहा—"तो तुम भगवानको मानते हो ?" मैंने कहा—"मैं तो बाबा ? भगवानको नहीं मानता लेकिन भगवानके पूजनेवालोंसे मेरा बहुत प्रेम है। इसीलिए भगवानको मैं गाली नहीं देता।" हरखू पण्डितने मुँह फाड़कर कहा—"जो तू खुद नहीं मानता, तो जरूर गाली देता होगा।" मैंने कहा—"बावा ? हमारा बच्चा है, वह हाथी-घोड़ा लेकर खेलता है, हम सयाने जानते हैं कि वह असली हाथी-घोड़ा नहीं है, लकड़ी-मट्टीका है। लड़केको जो यही बात हम कहने लगें तो लड़का रोने लगेगा। बच्चेसे हमको प्रेम है, और बच्चेको काठ-मट्टीके घोड़ेसे, इसीलिए बच्चेके प्रेमका ख्याल करके हम उस खिलौनेको भी भला-बुरा नहीं कहते।" मैंने ठीक कहा न भैया ?

भैया—हाँ, ठीक कहा दुक्खू भाई ?

दुखराम—हरखू पण्डितने कहा—"तू भगवानको नहीं मानता, तो तेरी गति नहीं होगी, लेकिन तू भगवानको गाली नहीं देता तो यह अच्छा है।" हरखू पण्डितकी टेढ़ी भौहें कुछ सीधी हुईं लेकिन जब वह चलने लगे, तो उनका मुँह उसी तरह उतरा हुआ था। दूसरे दिनकी बात है मैं और रमजान खटियापर बैठे थे; उनके यहाँ गाँवके जुलाहोंको नमाज पढ़ानेके लिए एक मोलवी आते हैं। रमजानने किसी दिन कह दिया था। मोलवी को देखकर हम दोनों खड़े हो गये और उन्हें चारपाई पर बैठाया। मोलवीको किसीने कह दिया था कि दुखराम रमजानके दरवाजेपर बैठा हुआ है, वह राम-रहीमको नहीं मानता। मोलवी साहब ने कहा—"सुना है दुखराम राउत तुम करतारको नहीं मानते। हिन्दू मुसलमान बहुत-सी बातें अलग-अलग मानते हैं। लेकिन दुनियाके बनानेवालेको सभी मानते हैं, तुम क्यों नहीं मानते ; मैंने कहा—दुनिया वड़ी खराब बनी है मोलवी साहब, हजारों आदमी जी लड़ाकर काम करते, उनका पेट नहीं भरता और एक आदमी निठल्ला बैठा रहता है, वह ऐस-जैस करता है, जिस करतारने ऐसी नरक दुनिया बनाई है, उसे माननेसे क्या फायदा !" मोलवीने कहा —"करतारसे दुआ माँगोगे, उसके सामने गिड़गिड़ाओगे तो वह तुम्हारी बिगड़ी बना देगा।" मैंने कहा—"मैंने क्या कसूर किया था कि हमें बिगाड़ा, और जो बिना कसूर ही

इतना बिगाड़ सकता है, उससे मैं किसी चीजकी उम्मेद नहीं करता।" मोलवीने कहा—"तो करतार, सरग दोजख कुछ नहीं मानते।" मैंने कहा—"मैं नहीं मानता मोलवी साहब, लेकिन आप या दूसरा जो कोई करतारको, मानता है, उसको मैं बुरा नहीं कहता। मैं इतना ही चाहता हूँ कि रोटी-कपड़ेकी दुनियामें किसीको चिन्ता नहीं रहे, बस इस काममें हम लोग सब एक रहें, क्योंकि भूख सबको एक तरह सताती है, जाड़ा-गरमी एक तरह लगती हैं।" मोलवी हरखू पंडित के इतना उजड्डे नहीं थे। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—"तो रोटी-कपड़ेके लिए काम करनेको कौन रोकता है!" मैंने कहा "न रोके तो इससे मुझे बड़ी खुसी होगी मोलवी साहब, फिर तो मैं कहूँगा कि रोटी-कपड़ेका काम लोगोंको सौंप दें जो कि जोंकोंका राज हटा हम कमेरोंका राज कायम करना चाहते हैं!"—मोलवीने कहा—"और हम क्या करें।" मैंने कहा—"आपको बहुत बड़ा काम है, जिनगी तो चार दिनकी है न, सरगमें आदमी वे अन्त समय तक रहता है, बस सरगका काम आप सँभालो।" मोलवीने कहा—"जो हम खाली सरग हीकी बात करें, तो हमें कौन पूछेगा। हमें गंडा देना पड़ता है, तबीज देनी पड़ती है।" मैंने कहा—"गंडा भी आप दीजिये, तबीज भी आप दीजिये, लेकिन सरग जानेके लिए।" मोलवी ने कहा—"और जो किसीको लड़का-लड़की चाहिये तो।" मैंने कहा—"गंडा-तबीजको मैं नहीं पसन्द करता। लेकिन मैं जानता हूँ कि जब तक वह नरककी दुनिया रहेगी तब तक गंडा-तबीज देने-लेनेवालोंको कोई रोक नहीं सकता।" क्यों भैया मैंने ठीक कहा न?

भैया—ठीक कहा तुमने दुक्खू भाई। बेठीक होनेका तुम्हें कैसे सक हुआ।

दुखराम—सक इसीलिए हुआ भैया। कि इसके बारेमें बात नहीं की थी। खाली मरकस बाबाने जो आँख खोल दी है, उसीके बलपर मैं बोल गया।

भैया—और तुम्हारा बोलना ठीक रहा दुक्खू भाई!

दुखराम—और जोतिसके बारेमें तुम्हारी क्या राय है?

भैया—जोतिस दो तरहका है दुक्खू भाई, एक तो वह जोतिस है जो गिनती करके बतला देता है, कि सुरुज-गरहन कब होगा; चंदर-गरहन कब होगा। अकासमें मंगल, बुध आदि-आदि गरह और हमारी धरती भी सुरुजके किनारे घूमती है। जितने आकासमें तारे छिटके देखते हो, उनमें आँखसे दिखाई देने वाले पाँच ही छः तारे जो सुरुजके किनारे घूमते हैं, नहीं तो बाकी सभी तारे सुरुज हैं।

दुखराम—तो सब तारे सुरुज हैं भैया? फिर वह उतने छोटे क्यों मालूम होते हैं?

भैया—हमसे बहुत दूर हैं, दो आदमी बराबर-बराबरसे हों, एक हमसे पाँच हाथपर खड़ा हो दूसरा पाँच सौ हाथपर, तो पाँच सौ हाथवाला छोटा मालूम होगा कि नहीं?

दुखराम—हाँ, छोटा मालूम होगा भैया?

भैया—यह तारे क्या चीज हैं, यह हमसे कितना दूर हैं, वगैरह बातें पचास-पचहत्तर सालसे ही हमें मालूम हुई हैं।

दुखराम—सुरुज-गरहन, चंदर-गरहनकी बात लोग बहुत पहलेसे जानते थे तो तारोंके बारेमें क्यों नहीं जान सके?

भैया—दूरकी चीज देखनेके लिए आँखको मदद करनेवाली दूरबीन उस वक्त नहीं थी, और बहुत दूर रहनेवाली चीजोंको आँख देख नहीं सकती। अँधेरेमें रोशनी होनेसे कुछ तारे जरूर दिखाई पड़ते थे, लेकिन वह भी बहुत कम दिखाई पड़ते थे। लेकिन मामूली दूरबीन लगाकर देखनेसे भी पचास हजार तारे दिखाई पड़ने लगते हैं। अढ़ाई इंची दूरबीनसे तीन लाख तारे दिखाई पड़ते हैं। आजकल सबसे बड़ी दूरबीन (सौ इंची) विल्सनगिरि अमेरिकामें है, उससे डेढ़ अरब तारे देखे जाते हैं?

दुखराम—तो दूरबीनसे आँखकी तागत बहुत बढ़ जाती?

भैया—हाँ, उसी तरह जैसे रेडियो बाजासे कानकी तागत बढ़ जाती है। तीन सौ बत्तीस बरस (१३१२ई०) से पहिले दुनियामें कोई दूरबीन नहीं जानता था। अकबरके मरनेके सात बरस बाद गलेलियोने पहिली दूरबीन बनाई।

दुखराम—तो जो यह जोतिसी सबका आगा-पीछा बतला देते हैं, किसीको क्या होनेवाला है, सब कह देते हैं; ऐसी बातें तो वह न जाने कै हजार बरससे जान गये थे, लेकिन मामूली दूरबीन भी तीन सौ बरससे पहले नहीं बना सके। मुझे तो भैया? यह भाग बतलानेवाला जोतिस भी जोंकों हीका फरेब मालूम होता है। पचास बरस बाद मुझे क्या होनेवाला है, यह पहले हीसे पक्की हो गई, तभी तो जोतिसी मेख-बिरिख कहके बता देता है, फिर जब एक-एक दिन क्या बीतनेवाला हैं सभीको पहलेसे ही लिख दिया गया है, तो हाथ-पैर हिलाना बेकार है।

भैया—तुम्हारी जिन्दगी भरकी बात पहलेके नहीं लिख दी गई, तुम्हारा लड़का कब किस नच्छत्तरमें पैदा होगा, यह भी जोतिसमें लिखा दिया है। और जब नच्छत्तर मालूम हो गई तो उसकी भी कुंडली जोतिस तैयार कर देगा और उसे एक-एक दिन क्या बीतेगा, यह भी जोतिस बतला देगा।

दुखराम—माने हमारी कुंडली तो बनी है। लड़केकी कुंडली भी बापकी कुंडलीसे तैयार हो सकती है, क्योंकि पुत्र जनम जोतिससे मालूम ही हो जायगा, और दो पोते-पर पोते और साठ पीढ़ी आगे तककी कुंडली और एक-एक दिन क्या बीतेगा, सब बतलाया जा सकता है, जोतिसमें सब लिखा ही हुआ है। यह तो भारी चाल है भैया! जोकोंकी। बारह सौ बरस आगे तककी जब बातें पहलेसे ही पक्की हैं, तो आदमी हाथ-पैर हिलावे या न हिलावे, बात होकर रहेगी। तब तो आदमी भाग्यका बनानेवाला नहीं रहा। नहीं-नहीं भैया। यह हम कमेरोंके हाथ-पाँवको बाँधकर जोंकोंके सामने पटक देने का जाल-फरेब है, जोतिस और कुछ नहीं।

भैया—लेकिन जोंकोंने कैसा ढंग निकाला दुक्खू भाई? तुमको भी पछाड़ दिया, अपना काम भी बनाया और जोतिसीकी भी पाँचों घीमे है।

दुखराम—मुझे तो भैया? आदमी की बुद्धिपर अफसोस होता है। अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी कुंडली और हाथ दिखानेके लिए दौड़ पड़ते हैं, जान पड़ता है काबुलमें भी गधे होते हैं।

भैया—यह कहनेसे कोई फायदा नहीं। दुक्खू भाई? जब तक आदमीकी जिन्दगी निश्चित नहीं है, आज भी उसको खाने-कपड़े की चिन्ता है, लड़के-लड़की के ब्याहकी भी चिन्ता है, कल उससे भी अधिक चिन्ता है, तब तक आदमीको

जोतिसियोंके पास जानेसे कोई नहीं रोक सकता। इसलिए भाग बतानेवाले जोतिसी के पीछे लाठी लेकर पड़नेकी जरूरत नहीं। सबकी जड़ जोंकें हैं, उनको काट दो बस सारा काम हो जायगा।

सन्तोखी—भैया महातिमा लोग भी तिरकालकी बात बताते हैं और उनके जालमें भी लोग फँस जते हैं।

भैया—एक जाल नहीं है, यहाँ पग-पगपर जाल है दूक्खू भाई! एक भाईने मुझे चिट्ठी लिखी है। इधर कुछ दिनोंसे मुझे यहाँ एक प्रधान मत जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी के आचार्य का सत्संग होनेके पश्चात्...आधुनिक समयमें जब कि मनुष्यने सुखकी प्राप्ति भौतिक साधनों-द्वारा सम्भव मान ली है, जब कि विलासिता और ऐश्वर्य का बोलबाला है; जब कि सभ्यताके नामपर हमने मनुष्यको, देवत्वको तिलांजलि दे दी है, इन साधुओंकी तत्परता, इनका त्याग, इनका वैराग्य, इनका संयम इत्यदि देखकर मनुष्योंको चकित रह जाना पड़ता है। मैं दावेके साथ कह सकता हूँ, जितनी सच्चाई और दृढ़ताके साथ इनका पालन ये करते हैं, वह अद्वितीय है; संसारमें रहते हुए जो विरक्ति ये लोग सांसारिकोंसे रखते हैं। वह अद्वितीय है, श्री भूलाभाई देसाई और हिन्दू महासभाके सहायक-मन्त्री चकित रह गये। उन्होंने यहाँ तक कहा कि इनकी अहिंसाके सामने तो गीताकी अहिंसा भी फीकी पड़ जाती है।...हिन्दू-महासभा के सहायक मन्त्री तो यहाँ तक मुग्ध हो गये, कि उन्होंने स्प[ष्ट] शब्दोंमें कह दिया, कि अगर मैंने कभी धर्म ग्रहण किया तो इसको छोड़कर दूसरा कदापि न करूँगा। इनका त्याग इतना जबर्दस्त है कि गृहस्थ लोगोंके साथ सम्पर्क तो दूर इनको यह पता चल जाय, कि कोई वस्तु हमारे लिए खरीदी या तैयार की गई है, तो भिक्षामें भी उसे कदापि ग्रहण न करेंगे। संयम इतना कि साध्वियाँ पुरुष-मात्र और साधू स्त्रीमात्रके स्पर्शको पाप मानते हैं। पचासी आजन्म ब्रह्मचारी आपको मिलेंगे। जिन-जिन लोगोंने इनकी जाँच की है, उनकी एक मतसे यही राय रही है, कि यही पूर्वकी एक आदर्श संस्था है। मेरा भी झुकाव इस तरफ होनेके बावजूद मैं इसको उस वक्त तक नहीं मानना चाहता, जब तक आप इसकी जाँच न कर लें। (२९ जुलाई, १९४४ ई०)

दुखराम—भैया संसकिरतमें किसीने लिखा है क्या, मुझे तो कुछ समझमें नहीं आया?

भैया—नहीं आया वही अच्छा है दुक्खू भाई, समझमें आया होता तो न जाने क्या कह डालते।

दुखराभ—आप कहेंगे तो मैं जीभको बाँधकर रखूंगा भैया! लेकिन सुनायें तो क्या बात है?

भैया—एक बात यह है कि खाते-पीते आदमी हैं, उनके पास पक्का मकान है, नौकर-चाकर हैं, देखा तो नहीं शायद उनकी बीबी भी हों; बच्चे भी हों, उनकी बदनपर सोनेका गहना और रेशमी नहीं तो अच्छी बारीक सूत की साड़ी रहती हो, खानेके लिए दूध-घी और फल-मेवा भी मिल जाता हो। कलकी चिन्ता उनको उतनी ही है, जितनी किसी करोड़पति सेठको, दूसरे दिन दिवालिया हो जानेकी।

दुखराम—भैया ? जोंकें कलकी परवाह नहीं करतीं, वह नगद धरम मानती हैं, "आज नगद कल उधार।"

भैया—तो भी दुक्खू भाई, जिसने यह खत लिखा है, वह चाहे जोंकोंका ही अंडा-बच्चा हो, लेकिन उसका दिल उतना कठोर नहीं है। बेचारा बड़ी कोसिस करता रहा है, कि जोंकोंके जालसे निकले, लेकिन जोंकोंका जाल कहाँ-कहाँ फैला है, इसको जानना बहुत मुश्किल है, चिड़िया हवामें उड़ना चाहती थी, उसने भी समझा कि निरमल अकासमें कोई डर नहीं, लेकिन बहेलियाने वहाँ भी जाल टाँग रखा है। और उसी जालमें फड़फड़ा रही है। बेचारा भाई एक साधूको देखता है, जो दुनियाके लोगोंसे बिल्कुल वैराग रखते हैं जिनके वैरागको देखकर हिन्दुस्तानके आरामसे जिन्दगी काटने-वाले कुछ बड़े-बड़े लोग...

दुखराम—बड़ी-बड़ी जोंकें।

भैया—बड़े-बड़े लोग अचरज करते हैं और एक बड़े आदमी तो ऐसे हैं कि हिन्दू धरमका बेड़ा-पार करते हैं, लेकिन अभी तक वह कोई धरम नहीं मानते। इन महातिमाको देखकर उन्हें भी धरम माननेकी साध लगी।

दुखराम—वही सावरकरवाली हिन्दू सभा न भैया, जो बड़ी-बड़ी जोंकोंकी मुट्ठीमें है।

भैया—अच्छा, ये महातिमा इतने त्यागी हैं कि जो इनके लिए कोई चीज खरीदकर भी दे तो वह भिच्छा में नहीं लेते।

दुखराम—तब तो वह महातिमा खाली हवा पीते होंगे। क्योंकि दुनियामें जोंकोंकी कोई ऐसी चीज ही नहीं है, जिसे खरीदा-बेंचा न जाय।

भैया—और मैं यह भी समझता हूँ दुक्खू भाई कि वह महातिमा ऐसे गरीबोंके घरोंमें नहीं रहते होंगे, खून-पसीना एक करके धरतीसे अनाज पैदा करते हैं, कपास पैदाकर अपने हाथसे कपड़ा बनाते हैं; क्योंकि महातिमाके पचासों चेलों और चेलियों को बैठे-बैठे खाना-कपड़ा देना गरीबके बसकी बात नहीं है।

दुखराम—पचासों चेले-चेलियाँ! और वह क्या करते हैं भैया ?

भैया—यह तमाम जिनगी भर बरमचारी रहते हैं, न औरत मर्द को छूती है न मर्द औरतको छूता है।

दुखराम—हिजड़ा-हिजड़ी होंगे भैया! इसमें कौन बात है ?

भैया—हिजड़ा-हिजड़ी होंगे। न भी हों तो भी दुक्खू भाई! मैं साधू-साधुनियों की लीला जानता हूँ। बरमचारी तो क्या होंगे, लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकते हैं। बस यही ध्यान रखते हैं, कि बात खुलने न पाये। एक-दो आदमी बात कहते, तो मैं समझता कि पागल होंगे या जैसा तुम कह रहे हो उसी तरहके हिजड़े होंगे, लेकिन जब पचास-पचास चेले-चेलियोंके तमाम जिनगी बरहमचारी रहने की बात कहते हैं, तो मुझे इसमें जरा भी सक नहीं, कि यह खूब जबर्दस्त ढोंग है। ऐसे बरहमचारी-बरमचारिनियाँ रिखीकेसमें हजारों हैं, उत्तर-कासीमें भी हैं। किन्तु ले गंगोत्तरीके हाड़ चीरनेवाले जाड़े में बिल्कुल नंगे दिगम्बर रहते हैं। उनमें एक हैं महातिमा किसन

आसरम । आज बीसों बरससे वह हिमालयमें नंगे रहते हैं, उनकी तपस्याके बारेमें क्या पूछते हो, हिन्दूधरमके सबसे बड़े नेता मालवीजीको अपने बीस लाखवाले मन्दिर के नींवरखने के लिए हिन्दुस्तान भरके बड़े-बड़े महात्माओंकी खोज होने लगी । उस वक्त मालवीजीको महात्मा किसन आसरम ही ऐसे दिखाई पड़े जो कासीमें आकर दूसरे बिस्वनाथ बाबाकी नींव डालने लायक हैं । उन्होंने ही बिस्वनाथ की नींव डाली और महात्मा किसन आसरम के बड़े बरहमचारी हैं, उन्होंने सिरिफ राजाराम बरहमचारी हैं, के गूँगे लड़केकी बहू भानदेको गीता पढ़ाया और और बेचारे पहाड़ी गीत गाते फिरते हैं—

"चवन्नीको पेरा; तें क्या बुरा मानो राजारामको डेरा ।
झाका बुनी खाट रे । तें भलीसीक्यों गीताको पाठ रे ।
चीणे तू बँगला भान दे ! चीणे तू बँगला तेंने कानों छोड़ी हरसिलको
जँगला गूँगानीको गोली, तें ना भालो मान दे ! अबोलाके बोली ।"

दुखराम—किसन आसरम और भानदे न जाने कितने पड़े हुए हैं भैया !

भैया—एक आदमी और एक औरत साथमें रहें, यह कोई बुरा नहीं है, लेकिन वह बरहमचारी-बरहमचारीका ढिंढोरा क्या पीटा जाता है । मान लो दुक्खू भाई कोई मरद रहते भी हिजड़ा बन जाता है, तो दुनियाको इससे क्या फायदा ?

दुखराम—दुनियाको न फायदा हो, जोंकोंको तो फायदा है, वह कहती फिरेंगी कि छोड़ो दुनियाके सुख-दुखको, इसी तरह तुम भी महात्मा बन जाओ ।

भैया—दुनियामें हजारों बरसोंसे ऐसे बरहमचारी होते आये हैं, इनसे भी बढ़कर त्यागी हुए हैं, लेकिन उससे दुनियाका नरक जौ भर भी कम नहीं हुआ ।

दुखराम—और इन हजार बरसोंमें जबसे कि जोंकोंका राज कायम हुआ, लोग बराबर इस तरहके जालमें फँसते रहे ?

भैया—मैं तो समझता हूँ दुक्खू भाई ! ऐसे साधुओंमे कुछ ईमानदार भी रहे होंगे, वह दिलसे धनिकोंको पसन्द नहीं करते थे, हाँ, बेसी धोखेबाज और पागल ही रहे हैं, लेकिन ईमानदारोंकी ईमानदारी और सच्चाई किस कामकी जो कि गरीबोंके गलेके फन्देको और मजबूत करती है ? जो इन महात्माओंमें ईमानदारी है, और इनमें सोचने-समझनेकी तागत है, तो क्यों नहीं समझ लेते कि जो हजारों बरससे नरककी जिन्दगी बिताते हैं, उन ९९ सैंकड़ा लोगोंके दुख को दूर करना है। वह ब्रह्मचर्य किस कामका, जो आदमीको खुदगरजी सिखाये, वह दुनियाको चूल्हे-भाड़में पड़ने दे और, अपने निवारनके पीछे दौड़ता फिरे । मैं तो महात्मा उसे कहूँगा, जो प्रतिज्ञा कर ले, कि जब तक करोड़ों आदमी पीढ़ी-के बाद पीढ़ी नरककी जिनगी बिता रहे हैं, तब तक मेरे लिए निरवान नहीं चाहिए, मुकती नहीं चाहिए; सरग नहीं चाहिए । वैसे तो कितने ही घोड़े-घोड़ियाँ थानपर बँधे जिनगी भर बरहमचारी रह जाती हैं । लेकिन जिस दिन वह महत्मा यह बात तय कर लेंगे, उस दिन उन्हें आटे-चावलका भाव मालुम हो जायगा फिर सेठ-सेठानियाँ उनकी आरती नहीं उतारेंगी, फिर राजा-नवाब उनका चरनामिर्त नहीं लेंगे ।

सोहन लाल—तो भैया तुमने क्या जवाब दिया चिट्ठीका, क्या महात्माका दरसन करने जाओगे ?

भैया—अपने एक दोससे कहा कि आप चलें तो मैं भी चलूं उन्होंने जवाब दिया—"मैं ३५ साल तक जंगल-जंगल की धूल फाँकता फिरा, न जाने कितने महात्माओंको देखा है और उनमें दो ही तरहके आदमी मिले हैं, या तो छटे बदमास जादूगर, या पागल। मैं अब जिन्दगीका एक दिन भी ऐसी दौड़धूपमें नहीं लगाना चाहता।

सोहनलाल—लेकिन भैया, तुम्हें जो उन्होंने महात्माकी जाँचके लिए बुलाया है, जो जाँचकरके बतला नहीं दोगे, तो वह महात्माके चेले बन जायेंगे ?

भैया—सोहन भाई, मनमें बुरा मत मानना। मैं जोंकों और जोंकोंके लड़कों-पर तनिक भी विश्वास नहीं करता और यह भी बतला दूँ, कि पढ़े-लिखे बाबुओंपर भी मेरा विश्वास नहीं है।

सोहनलाल—तो पढ़ना-लिखना बुरा है भैया ?

भैया—जो मैं पढ़ने-लिखनेको बुरा मानता, तो कहता कि मोटर, हवाई जहाज को छोड़कर पत्थरके हथियारोंके युगमें चले चलो। मैं चाहता हूँ इससे भी अच्छी हवाई जहाज बने, इससे भी बढ़िया रेडियो-बाजा और रेडियो-दरपन निकले। लेकिन जानते हो न आज हवाई जहाज जोंकें दुनियाको गुलाम बनानेके लिए रखती हैं। रेडियो बाजाके बलसे बिना आदमीका हवाई जहाज चलाकर हिटलर बिलायतके सहरों और गाँवोंको मार रहा है। अँगरेज जिन जवानोंको अपना कलक्टर और डिप्टी बनाते हैं, वह बहुत पढ़े-लिखे हैं, गजबकी जेहनवाले हैं। हजार-हजार पढ़ाकू जवानोंमेंसे छाँट-छाँटकर २५ को लेते हैं और जानते हो न, वह क्या करते हैं ? इसीलिए मेरा इनपर बिसवास नहीं है। बिसवास ही नहीं, कभी-कभी तो मैं इनके आचरनको देख-कर जल-भुन जाता हूँ। मुझे यह आदमी भी नहीं मालूम होते।

सोहनलाल—और जो वह भाई कुछ-कुछ रास्ता देखने लगा था, वह फिर भूल जायेगा ?

भैया—ऐसे एक नहीं हजारों भूलते-भटकते रहें, मुझे उनकी कोई परवाह नहीं। यह लूले-लँगड़े, अपाहिज लोग क्या काम कर सकते हैं, जिनको अपनी मुक्ति, अपना भवन और पेट सबसे पहिले सामने आता है।

दुखराम—जोंकोंके लड़कोंमें कोई अच्छा भी निकल सकता है भैया, लेकिन लाख-करोड़में बिरला ही कोई लाल निकलेगा, "जाके पैर न फटी बेवाई; सो का जाने पीर पराई।"

भैया—जोंकोंके खानदानने, दुक्खू भाई, हमेशा धोखा दिया। रूसमें हजारों जोंकोंके लड़के थे, जो पहले बहुत मजूरों-किसानोंके राजकी बात करते थे, लेकिन जब मजूरों-किसानोंका राज कायम हो गया, तो वह दुसमनोंसे मिल गये। जो वह दुसमनोंसे न मिले होते, तो पाँच बरस तक लेनिन महात्मा और उनके साथियोंको लड़ना न पड़ता और न लाखों युद्ध और करोड़ों भूख-अकालकी भेंट चढ़ते।

सोहनलाल—तो क्या हिन्दुस्तानमें हमें जोंकोंके लड़कोंको पासमें नहीं आने देना चाहिये ?

भैंया—बापके कसूरके लिए बेटेको सजा जोंक ही दे सकती है। हिटलरने किसी सहरसे अपने एक आदमीके मारे जानेपर सौ-सौ आदमियोंको पकड़कर जहाँ-तहाँ फाँसीपर लटका दिया, यह उन्हींका न्याय है। हम मरकस बाबाके चेले, जोंकों और फसिहोंके आदमी नहीं हैं, इसीलिए जोंकोंके कसूरके लिए उनके बेटे-पोतोंको सजा नहीं देते या कहेंगे कि तुम हमारे पास न आओ। लेकिन उनसे यह जरूर कहेंगे कि बाबू ! तुम हैजा-पिलेगवाले गाँवसे आ रहे हो, अभी बीमारी नहीं दिखाई पड़ती, लेकिन मालूम नहीं किस अँतरा-कोठरीमें बीमारीका कीड़ा चला आया, इसलिए हमको भी इसका ख्याल करना पड़ेगा और तुमको भी करना पड़ेगा।

दुखराम—भैया ! यह बात भी बाबाने बतलाई है क्या ?

भैया—हाँ, मरकस बाबाने बतलाई है, लेनिन महात्माने बतलाई है, इस्तालिन वीरने बार-बार सजग कराया।

सोहनलाल—जोंकोंके लड़कोंके लिए तो भैया ! तुमने साफ बतला दिया, लेकिन हिन्दुस्तानके बहुतसे सेठ लोग हैं, जो गाँधीजीका वचन मानते हैं, लाखों का दान देते हैं और मौका पड़नेपर जेहल जानेसे भी नहीं हिचकिचाते, उनके साथ कैसे बरताव करना चाहिये।

भैया—सोहन भाई ! मैंने कहा था, कि पहले पियाजके बाहरका छिलका तोड़ना है, तब भीतरका। सबसे पहले हमें बिलायती जोंकोंसे लोहा लेना था, लेकिन इसका मतलब यह नरक नहीं, कि हम देसी जोंकोंके जुलुमको आँख मूँदकर सहते जायँ।

१२. औरत की जाती

दुखराम—"सन्तोखी भाई ! रजबल भइवा हम लोगोंकी आँख खोल रहा है, आँख। मैं तो मुँह बन्द करके भी रखना चाहता हूँ तो पेट फूलने लगता है। जहाँ भी कोई भाई मिल जाता है, तो जोंकोंका जंगल उनके सामने कहने लगता है। किसी जाति, किसी धरमका कमेरा हो, बात सुनकर सबका मन हरा हो जाता है। बन्धू चमार पूछता था भैया, दुक्खू हम लोगोंकी झोंपड़ी सूअरकी खोभारसे भी खराब है। कब हम लोगोंका दिन लौटेगा ? अबदुल मेहतर कहने लगा—हमने समझा कि हिन्दूसे मुसलमान ही जाने पर आदमी बन जायेंगे, लेकिन यहाँ भी वही बात। सबसे गन्दा काम करते हैं, और जूठी-रोटीभी भैया ! महमदाबादमें कोई देने के लिए तैयार नहीं ?"

सन्तोखी—तुमने क्या कहा दुक्खू भाई !

दुखराम—मुझे जो समझमें आया, वह उनसे कहा। लेकिन मैं एक दिन रजबली भैंयाको उनके यहाँ ले जाऊँगा, तभी ठीकसे समझाते बनेगा।

सन्तोखी—आज कौन बात सुनना चाहिए दुक्खू भाई ?

दुखराम—सबके कहने लायक बात तो अब कुछ-कुछ मालूम हो गई है सन्तोखी भाई ! लेकिन औरतोंको कैसे समझाया जाय, यही बात समझमें नहीं आती।

सन्तोखी—तो आज रजबली भैंयासे यह पूछा जाय कि मरकस बाबाने औरतोंके लिये क्या रास्ता बताया और यह देखो सोहनलालके साथ रजबली भैंया आ गये।

भैंया—क्या बात हो रही है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—आज भैंया यही बतलाओ कि औरतोंके लिये मरकस बाबाने क्या कहा।

भैंया—औरतोंका उद्धार बहुत जरूरी है, काहेसे कि आधी तो वही हैं। और उनको सबसे बेसी तकलीफ है।

दुखराम—जोंकोंकी औरतोंको खाने-पीनेकी क्या तकलीफ है भैंया ?

भैंया—खाना-कपड़ा जब नहीं मिलता, तब आदमीको भूख-जाड़ा तकलीफ देती है। खाना-कपड़ा मिलता है, लेकिन दूसरा आदमी हाथ उठाकर देता है तब आदमी समझता है कि हमें दूसरेके सामने हाथ पसारना पड़ता है। और औरतको जिन्दगी भर हाथ पसारना पड़ता है।

सोहनलाल—मेहरी तो घरकी रानी होती है भैंया !

भैंया—रानीके साथ महिला कहो सोहन भाई ! महिला सबदसे ही (महिली, महिरी) मेहरी सबद भी बना है, लेकिन देखते हैं न किसी सहरकी पढ़ी लिखी औरतको मेहर कह दिया जाय तो जल-भुन जायेगी, और महिला कह दिया जाय, तो फूलके कुप्पा हो जायेगी। लेकिन औरत आज दुनियामें हाथकी खरीदी सादी-लौंड़ी है। मरद जबतक राजी है, तबतक तो दासी भी जो चाहे कर सकती है लेकिन जैसी ही मरदकी तेउरी बदली, वैसे ही रानी सिंहासनसे धूलमें पटक दी जाती है। देखा न, सीताके साथ रामने क्या किया, मनमें आया, घरसे निकालकर बाघके मूँहमें ढकेल दिया। सीता कभी रामके लिए वैसा कर सकती थीं ? या रामकी इच्छा बिना सीता उनसे पाखानेमें भी एक रात बिता सकती थी। साहेब लोगोंको साथ-साथ मेम घुमाते देखकर दुक्खू भाई ! तुम समझते होगे कि साहेबकी मेमको बहुत अक्तियार है।

दुखराम—भैंया ! पहिले सच ही मैं ऐसा समझता था, लेकिन एक दिन देखा हमारे चटकलका इंजीनियर कोड़ा लेकर अपनी मेमको पीट रहा था, बेचारी चिल्लाती थी। लेकिन पास-पड़ोसमें कोई साहेब रहता तब न जाता ? हम कुली-मजूर थे, सोचा छुड़ाने जायँगे तो हम भी चार बेंत खायँगे।

भैंया—औरत किसी समय परिवार भरकी मुखिया थी, महामाया थी, उस वक्त कोई उसे मार सकता था ?

दुखराम—नही भैया ! वह तो जब मरद पसु पालने लगा, खेती करने लगा और कमाऊ बनकर धन जमा करने लगा, तब मेहरका मान हेठा हो गया; आदमियोंमें धनी-गरीब होने लगे, जोंकें पैदा हो गईं।

भैया—जितना ही जोंकोंका जोर बढ़ता गया दुक्खू भाई ! उतना ही मेहरियोंका गला फँसता गया। बेचारियोंको देह बेंचके खानेके सिवा कोई अवलम्ब है ?

सन्तोखी—देह बेंचना क्या कहा भैया ?

भैया—सन्तोखी भाई ! तुम समझते हो कि देह बेंचना वेस्याका काम है। इसलिए मैंने कैसे इस बातको मुँहसे निकाला। मेरी बात कुछ कड़वी लगी होगी, और मेहरिया सुने तो और बुरा मानेगी, लेकिन बताओ वेस्या किसे कहते हैं ?

सन्तोखी—जिसकी देह उस आदमीके लिए है जो पैसा दे।

भैया—रोज-रोज पैसा दे-या एक दो बार।

सन्तोखी—कितने लोग भैया पैसा देके एक-दो बार वेस्याके देहके मालिक बनते हैं और हमारे राजाने तो बसन्तियाको अपने घर ही में बैठा लिया था।

भैया—वेस्या पैसा काहेको लेती है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—न ले तो खायेगी क्या, पहिनेगी क्या ?

भैया—और वह कुछ बेसी पैसा लेती है सन्तोखी भाई ! काहेंमे चालिस-ब्यालिस बरसमें उसकी दूकान उठ जाती है।

सन्तोखी—उसका भी कुछ ठिकाना नहीं है भैया ! दूकान है, किसी गाहक-को नकार तो सकती नहीं। बिमार हो जाती है, गरमी सुजाक बढ़ गई, तो नाक कटकर गिरने लगती है, हाथ पैरकी अँगुलियाँ झड़ जाती हैं।

भैया—जो अँगुलियाँ झड़ीं, नाक नहीं कटी, तो आधी जिन्दगी रहते ही वह रोजगारसे बेरोजगार हो जाती है। जो उसने पहलेसे कुछ पैसा नहीं बचाया तो बाकी आधी जिनगीमें क्या खायेगी, क्या पहनेगी ?

दुखराम—ठीक कहा भैया, जोंकें न पैदा हुई होतीं तो औरतको क्यों देह बेंचना पड़ता ?

भैया—दुक्खू भाई वेस्या कैसे बनती हैं, इसके लिये मैं एक कथा सुनाता हूँ। यह किस्सा नहीं है, सच्ची-सच्ची बात है। एक बड़ी जातिके आदमी थे, हिन्दू थे और बाम्हन-छत्रीके बीचकी जाति। उनके घरमें पूरा धन था, जमीदारी थी, खेत थे और दस-बीस हजारका सूद-बेवहार भी करते थे। गाँवमें भी अच्छा घर था और सहरमें एक पक्का घर था। कुछ किताब पढ़ी, कुछ लेच्चर सुना, अरिया समाजकी बात उन्हें मालूम हुई। उसके एक लड़की हुई, पहिली स्त्री मर गई, दूसरा ब्याह किया उससे लड़का पैदा हुआ। भाई-बहिनोंमें बचपन हीसे बहुत प्रेम था, वह जानते ही नहीं थे कि उनकी माँ एक नहीं है। बापने अरिया समाजके लेच्चरमें लड़कियोंके पढ़ानेकी बात सुनी थी, उन्होंने भी अपनी लड़कीको सहकारी कन्या पाठशालामें पढ़ने बैठा दिया। अब वह ज्यादा सहरमें ही रहते थे, पीछे लड़का भी इसकूल जाने लगा। लड़की पढ़नेमें बड़ी तेज थी, अपने दरजेमें हमेशा अव्वल आया करती थी !

बाप भी लड़कीकी पढ़ाईसे बहुत खुस था। मैभा (सौतेली) माँ भी अच्छी औरत थी, लड़कीका सुभाव भी मीठा था। लड़की अब अँगरेजी पढ़ रही थी। उसकी उमर बारह-तेरहकी हो गई थी। भैया माँ व्याह करने को रोज कहती, लेकिन बहुत गरीब घरकी तो लड़की थी नहीं कि बेंच-बाँच देते। अपनी बराबरी या बड़े घरमें लड़का ढूंढ़ना था, और सो भी अपनी जाति-बिरादरीके भीतर। कहीं लड़का छोटा मिलता, कही वूढ़ा, कहीं अपढ़ मिलता, कहीं गरीब।

भैया—आदमीका बच्चा है जमात से अलग कैसे रहेगा। सरकारी कानूनसे आदमी किसी तरह बच भी जाय, लेकिन बिरादरीके कानूनसे कौन बच सकता है। हाँ बच भी जाता है जो लोगोंसे पकड़ाई न दे। कितने ही टीकाधारी हैं जो छिपकर सराब पीते हैं, कितने ही लोग जानते भी हैं, लेकिन उनके पास पैसा है। न उनका हुक्का-पानी बन्द होता है न ब्याह-शादी। विधवा-ब्याह बाम्हन, छत्री, बनिया कायथ में वर्जित है। जब साठ बरस के बूढ़ेसे हम उमेद नहीं कर सकते तो बारह बरसकी बिधवासे कैसे आसा करेंगे कि जिनकी भर बरमचारिन रहेगी। जानत हो न दुक्खी भाई क्या-क्या होता है?

दुखराम—गुपुत सम्बन्ध हुए बिना नहीं रहेगा भैया! जो गरभ नहीं हुआ, मामला ऐसे ही चलता रहता है। गरभ हुआ तो गिराकर हाड़ीमें कसकर फेंक दिया जाता है और जो बस नहीं चला, तो ले जाकर बनारसमें छोड़ आते हैं। कहीं-कहीं खून भी कर डालते हैं लेकिन, यह बहुत कम होता। जातिवाले बस इतना ही चाहते हैं कि जरा-सा हल्का-सा परदा रखो, सब बात नंगी न हो जाय।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई, हम उस अभागिनके बापको ही सारा दोस नहीं दे सकते। वह हिम्मत करता, उसको तकलीफ होती लेकिन वह दूसरों को रास्ता दिखाता। अब जात-पात ज्यादा दिन तक नहीं रह सकती दुक्खू भाई! भात और पानी अपनी जातमें होना चाहिए, यही जातिका कानून है न, लेकिन आज देख रहे हो न कि भात-रोटीको कोई नहीं मानता। सहरोंमें होटल खुले हुए हैं। जाकर लोग खा लेते हैं। जातिमें जो धनी हैं, सरकारी दरजा पा गये हैं, तो उनकी तो कुछ पूछो ही नहीं, वह हिन्दूके होटलमें खा सकते हैं, मुसलमानके भी होटलमें खा सकते हैं। विलायत जा सकते हैं। राजपूतोंके सिरताज जो राजा लोग हैं, उनको अँगरेजोंके साथ खानेमें कोई रोक-टोक नहीं है, न इसके लिए वह जातिसे निकाले जाते हैं, न उनकी ब्याह-शादी रुकती है, जातिका बड़ा आदमी खानेकी छुआछूत छोड़ दे तो कोई नहीं पूछता है, गरीबोंको सब लोग दबाते हैं, लेकिन आजके समाजमें बड़े आदमी रास्ता निकालते हैं। होटल पिछली लड़ाईसे पहिले कहीं था? आटा-चावल बेचने-वाले दूकानदारकी ही उस वक्त बहुत चलती थी। यह बीसके भीतर ही भीतरकी बात है जो सब जगह होटल ही होटल दिखाई पड़ते हैं।

भैया—बाँधमें सुई भर जानेका छेद होना चाहिए, फिर तो पानी अपने ही रास्ता निकल लेता है।

दुखराम—सुई जाने भरको नहीं, अब तो कोल्हू जाने भरके एक नहीं हजारों छेद हो गये हैं। खानेकी छुआछूतका तो अब सवाल ही नहीं है।

भैया——ब्याहके बारेमें अभी कड़ाई है दुक्खू भाई ! लेकिन रोटीकी छुआछूत की तरह यह भी टिक न सकेगी। देसके सिरताज लोगोंने रास्ता शुरू किया है। बाम्हन राजगोपालाचारी की बेटी गाँधी बनियेके लड़केसे ब्याही गई। जवाहरलाल नेहरूकी बड़ी बहनका ब्याह दूसरी जातिवाले पंडितके साथ हुआ। छोटी बहनने तो बाम्हन नहीं, बनियेके लड़केसे सादी की, और जवाहरलालकी एकलौती बेटी इन्दिराने हिन्दू नहीं, पारसी लड़केसे सादी की। मुन्सी ईश्वरसरन कायस्थोंकी नाक हैं, यू०-पी०, बिहार दोनों में। वह उनके चौधरी माने जाते हैं, उन्हींके छोटे लड़के सेखरने मुसलमान लड़कीसे सादी की।

सन्तोखी—हिन्दू बनाके किया होगा न भैया ? जैसे आर्य-समाजी करते हैं ?

भैया—हिन्दू बनाके नहीं किया है, सन्तोखी भाई ! हिन्दू लड़कीको मुसलमान बनाके तो ब्याह बहुत समयसे होता चला आया है, लेकिन ऐसे ब्याहसे हिन्दू मुसलमान तक सम्बन्धमें नहीं आये, बल्कि और विरोध बढ़ा। मुसलमानोंकी देखा-देखी मुसलमान लड़कीको सुद्ध करके आरियाने ब्याह करना सुरू किया। इससे भी झगड़ा ही बढ़ा। ब्याह सम्बन्धसे पीढ़ियोंके झगड़े मिटाये जाते हैं, लेकिन यहाँ पीढ़ियोंके लिए झगड़े उठाये गये।

दुखराम—तो भैया ! जिसको हिन्दू मुसलमानमें ब्याह करना हो, उसे नाम या धरम नहीं बदलना चाहिये यही न ?

भैया——नाम धरम बदलनेसे फिर वह सम्बन्ध नहीं हुआ, वह तो अँगुली को सड़ी समझकर काट देना हुआ। अब देसमें पचीसों मुसलमान लड़कियोंने हिन्दू के साथ और हिन्दू लड़कियोंने मुसलमानोंके साथ ब्याह किया। मैं उन्हें जानता हूँ। आगा, पीछा करनेवाले नक्कू होते हैं, लेकिन वही रास्ता दिखलाते हैं। पचास बरस बीतते-बीतते देखोगे कि ब्याहके मामलेको न जात-बिरादरी रोक सकेगी, न धरम। यहाँ कहनेका मौका नहीं है, मैंने सुना है कि हिन्दुओंकी पोथियोंमें जाति-धरम तोड़के हुए ब्याहोंकी बहुत-सी बातें लिखी हैं।

सन्तोखी—मलाहिनकी लड़कीके गरभसे ब्यास पैदा हुए, बेस्याके गरभसे वसिष्ठ रिखी पैदा हुए, चंडाल कन्यासे परासर पैदा हुए, यह असलोक तो मैं भी जानता हूँ ?* भैया !

भैया——यह सब बंधन टूटेगा सन्तोखी भाई ? दादा-दादीके सामने होटलका भात खानेपर भी यह कुआँ-तालाब देखने लगते, लेकिन यह काम नाती-पोताके जमानेमें सुरू हुआ जब कि दादा-दादी आँख मूँद चुके। हर पीढ़ी एक-एक कदम आगे बढ़ रही है, कौन रास्तेको रोक सकता है। लेकिन देखा न, वह लड़की जो दरअसल जैसी बातकी पक्की थी, वैसी ही आचरनकी भी पक्की होती, लेकिन उस बिरादरीने कहाँ तक पहुँचाया, उसे बेस्या बनाके छोड़ा। उसका पति उतना बुरा नहीं था, नहीं तो हजारों का गहना न छोड़ता। भाईके लिए तो तुम्हीं सोचो, क्या कहोगे ?

---

*जातो व्यासस्तु कैवर्त्यां, श्वपाक्यां तु परासरः।
वेश्याया गर्भ संभूतो, वशिष्ठस्तु महामुनिः॥

सन्तोखी—वह देवता हैं भैया देवता। यह तो आप कह रहे हैं कि वह अभी जिन्दा हैं, तभी बिस्वास होता है, नहीं तो मालूम होता था, कि कोई कथा-पुरान की बात है।

भैया—देवता है, ठीक ! बहिन जिन्दा रही तब उसने हिम्मत भी की थी, बिरादरी की परवाह न करके साथ रखनेकी। बहिनने बात मान ली होती, तो वह वैसा ही करता भी। उसके बादकी उसकी जिन्दगी, तपस्या गजब की है। लेकिन उसके दिलमें जो आग जल रही थी, उसको जात-पातके सत्यानासमें लगना चाहिए था। उसने अपनी अभागिन बहिनका बदला नहीं लिया, इसीलिए मैं समझता हूँ कि उसने भाईके धरमका पूरी तरह पालन नहीं किया। और लड़कीके बारेमें क्या कहते हो दुक्खू भाई ?

दुखराम—औरतोंका तो मैं हाथ-पैर इतना बँधा देखता हूँ कि उनके बारेमें कुछ कहते ही नहीं बनता।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! औरतोंको सबसे ज्यादा पीसा गया है। पन्द्रह सौ बरसों तक उन्हें आगमें जलाया जाता रहा और एक-दो नहीं, सालमें दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह लाख।

दुखराम—सचमुच भैया ! औरतें होलीकी तरह जलाई जाती थीं।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! इसीको कहते थे सती होना, पति मर जाता, तो बिधवाको भी उसकी लासके साथ फूंक दिया जाता था।

सन्तोखी—लेकिन भैया ! लोग तो कहते हैं कि सती अपने मनसे होती हैं।

भैया—झूठ बोलते हैं सन्तोखी भाई ! कोई एकाध पागलपन भले ही करे लेकिन पन्द्रह सौ बरसके भीतर जो डेढ़ अरब औरतें फूंकी गई हैं, वह सब अपने मनसे जलने गई थीं, यह कहना झूठ है। आदमीको अपने परानते बहुत प्रेम होता है। जो मरनेके लिए तैयार भी हुई होंगी, वह सोकसे पागलपनसे ही। जवान औरतके लिए रँडापा एक-दो दिनका सोक नहीं है, उसके लिए दुनियामें सभी जगह काँटे ही काँटे बिछ जाते हैं। उसकी जिन्दगीको और भी भारी नरक बना दिया जाता है, उसका मुँह देखनेमें असगुन होता है, ब्याह-सादी या मंगल काममें कोई उसको देखना नहीं चाहता। सब उसपर सक करते रहते हैं। हिन्दू हवा, पानी, पत्ता, खाकर रहनेवाले बिसवामित्र, पारासर ऋषिसे जिस बातकी आसा नहीं कर सकते, उसकी आसा यह जवान विधवासे करते हैं, तो सचमुच ही वह पानीमें विन्हाचलको तैराना चाहते हैं।

दुखराम—सो कैसे हो सकता है भैया ?

भैया—यह सब बातें विधवा समझती है, इसलिए जिन्दगी भर जलते रहनेकी जगह कोई वक्त मर जाना चाहती हो तो अचरज नहीं। लेकिन डेढ़ अरबमें ऐसी कितनी रही होंगी। और जानते हो दुक्खू भाई, राजपूतोंमें छः-सात सौ बरससे लड़कियाँ जनमते ही मार डाली जाती थीं।

दुखराम—हमारे सामने ही भैया, वेलहामें लड़कीके पैदा होते ही उसके नाक-मुँहपर नाला रख दिया जाता, और कुछ छन हीमें बेचारी मर जाती थी।

भैंया—अभी ऐसी जगहें हैं जहाँ लड़कियों को मार दिया जाता है। जो माँ-बाप अपने हाथसे अपनी बच्चों को मारते हैं, उनका दिल कैसा होगा ?

दुखराम—पत्थर और लोहेसे भी कड़ा भैंया ! यह तो अपने ही बच्चेको चबा जाना है।

भैंया—काहे ऐसा होता ? औरतका दुनियामें कितना मोल है। लड़की पैंदा होते ही घर भरपर सोक छा जाता है, जान पड़ता है घरका कोई मर गया।

दुखराम—और भैंया लड़का होनेपर सोहर गाया जाता है, खुसी और उछाह मनाया जाता है; लेकिन लड़की होनेपर सोहरका भला कोई नाम ले सकता है ? लेकिन एक बात देखकर मुझे हैरानी होती है भैंया !

भैंया—कौन बात है दुक्खू भाई ?

दुखराम—सोहर तो औरत ही गाती हैं, तो औरत जाति पैंदा होने पर उनका मुँह बन्द क्यों हो जाता है और मरद जातिके पैंदा होने पर बहुत खुस हो जाती हैं।

भैंया—औरतका मोल मरदने लगाया है, औरत मरदके हाथकी कठपुलती है। हजारों बरससे औरत मरदकी गुलाम है। मालिक जो सिखाता है, गुलाम उसीको अच्छा मानता है। मरद ठीकसे बोलना नहीं जानता, तभीसे उसके मन में ठोंक-ठोंककर बैंठाया जाता है कि वह मरद बच्चा है। उसी वक्तसे वह अपने बहिनों-पर रोब जमाने लगता हैं, औरतको जिनगी भर गुलाम रखनेकी सिच्छा यहींसे दी जाती है। पाँच बरसके लड़केको गुड़िया खेलनेको दो तो वह क्या लेगा दुक्खू भाई !

दुखराम—नहीं भैंया ! वह उसे फेंक देगा, कहेगा कि क्या मैं लड़की हूँ।

भैंया—लड़केको हाथी-घोड़ा खेलने को मिलता है, वह गुल्ली-डंडा खेलता है। पेड़पर चढ़ता है, तैंरता है, कंधेपर लाठी लेकर चलता है, तीर-धनुही चलाता है। लेकिन लड़की को यही गुड़िया, वही चूल्हा-चक्की।

दुखराम—याने बचपन हीसे लड़कोंको बतला दिया जाता है कि तुम्हारी जगह कहाँ है ?

भैंया—मरद अकेला-दुकेला जाता है, तो क्या कोई छेड़नेकी हिम्मत कर सकता है ? लेकिन जवान औरत चले तो किसी सड़कपर, देखो फिर सभी घूर-घूरकर ताकने लगते हैं। इतना ही होता, तबभी खैंरियत थी, लेकिन वह तो मजाक करने लगते हैं और गन्दे-गन्दे। औरतको सिर्फ सिर नवाकर चले जानेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। अकेले-दुकेले मिले तो जबरदस्ती करनेसे भी बाज नहीं आते। औरत की देहमें मरदके इतना बल नहीं होता, लेकिन जो कोई बलवान औरत भी हो, तो अपनी इज्जत बचानेके लिए बदमाससे लड़नेकी जगह भागना ही अच्छा समझेगी। औरत कायर होती है, यह बात नहीं है। बदमाससे लड़कर जीतने पर भी वह बदनाम तो हो ही जायगी, उसके मुखपर कालिख पुत ही जायेगी। और अपनी रच्छाकेलिए खुलकर जोर नहीं लगा सकती। चुप रहनेके कारन उसे अपनेको बचाना मुस्किल होता है। औरतकी यह अवस्था किसने की ?

दुखराम—मरदने भैंया !

भैया—मरदने ही, लेकिन मरदोंमें भी जोंकें हैं मूल कारन, काहेसे कि उन्होंने-ही धनपर मरदका हक कायम किया है। औरतको पतिकी जायदादमें सिर्फ रोटी-कपड़ा पाने भरका अधिकार है। एक ही पेटसे भाई-बहिन दोनों पैदा होते हैं, लड़का चाहे कितना ही नालायक हो, उसको जायदाद मिलती है, और लड़कीको पतिके घरमें दासी बनकर रहनेके लिये भेज दिया जाता है। औरतको आज निरवलम्ब बना दिया गया है। वह अपने पैरपर खड़ी नहीं हो सकती। हजारों बरससे वह यह जुलुम सहती आई है। लेकिन यह जुलुम तभीसे सुरू हुआ जबसे जोंकें पैदा हुई। जोंकोंकी औरतें और भी बेबस हैं। यह इसलिए कि वह अपने हाथसे कुछ कमाती नहीं।

दुखराम—उनके मरद भी तो जोंक ही हैं, वह भी नहीं कुछ कमाते?

भैया—वह दूसरोंको लूटते हैं, दूसरोंका खून चूसते हैं, उसीको वह कमाना कहते हैं। कोई बाबू दफ्तर में जाकर ६ घन्टे काम करता है, महीनेमें ४०) ले आता है, इसे कमाई करना कहेंगे। उसकी औरत दो घड़ी रात उठेगी, चक्की पीसेगी, चावल कूटेगी, चौका बासन करेगी, खाना पकाके परोस देगी, फिर बैठकर पङ्खा करेगी, बाबू दफ्तर जाएँगे। औरत बचा-खुचा जूठ खायेगी। फिर चौका-बासन करेगी', चक्की-ओखल पकड़ेगी। लड़कोंको खिलाना, पोसना-पालना सब औरतके ऊपर है। मरदके ऊपर इसका कोई भार नहीं है। सामको खुद जलपान बनायेगी, फिर रसोई पकायेगी, फिर बेनिया डोलायगी। मरदको दफ्तरसे लौटकर फिर कोई काम नहीं। औरत ६ घड़ी रात तक बराबर खटती रहेगी। फिर उसे पतिका पैर दबाना पड़ेगा दो घड़ी रातसे आधी रात तक औरत खटती रहती है, लेकिन उसके काम की कोई गिनती नहीं और मरद ६ घंटे कामकर लेता है, तो समझता है कि वही कमाकर घर भरको खिला रहा है। देखो दोनोंमें कितना फरक हैं, क्या इसको न्याय कहेंगे?

भैया—मरद औरतको गुलाम बनाके अपने घरमें लाता है और इसको कहते हैं, ब्याह। बाप लड़कीके लिए बर ढूँढ़ता है किस लिए? इसलिए कि लड़की-को रोटी-कपड़ेका कोई अवलम्ब मिलना चाहिए। मरदको अवम्लबकी जरूरत नहीं, क्योंकि बापकी सब जायदाद उसको मिलती है, वह दूकान खोल सकता है, दफ्तर में काम कर सकता है, उसके कमानेके सारे रास्ते खुले हुए हैं, लेकिन औरतके लिए सारे रास्ते बन्द हैं, इसलिए उसे खाना-कपड़ा देनेवाला कोई चाहिये। खाना-कपड़ा हीको पैसा कहते हैं न दुक्खू भाई!

भैया—हाँ भैया! पैसे हीसे न खाना-कपड़ा मिलता है?

भैया—तो इसका मतलब हुआ ब्याह भी पैसेके लिए औरतका देह बेचना है। दूसरे देह बेचनेमें और इसमें यही अन्तर हुआ न कि यह बेच-खरीद जिन्दगी भरके लिए है। इसे प्रेमका सौदा नहीं कह सकते दुक्खू भाई! यह साफ पैसे का सौदा है।

दुखराम—तो क्या भैया! ब्याह करना ही बुरा है?

भैया—मैं ब्याह करने को नहीं बुरा कहता दुक्खू भाई! लेकिन ब्याह के नाम पर पैसे का सौदा होना औरतकी बेइज्जती समझता हूँ। ब्याहकी नींव प्रेमपर होनी चाहिए, और प्रेम दो बराबर आदमियों में होता है। खरीदी दासी और मालिक में प्रेम नहीं होता। औरत तब तक बराबर नहीं हो सकती जब तक कि कमानेमें, माँ-बापकी जायदाद में उसका कोई बराबर हक नहीं होता।

सन्तोखी—सुनते हैं भैया ! बड़े लाटके यहाँ कानून बननेवाला है जिसमें कि औरत को जायदाद में हक मिले ।

दुखराम—तुमने कहाँ सुना सन्तोखी भाई !

सन्तोखी—परसों हाटमें सभाकी नोटिस बँट रही थी ?

दुखराम—नोटिसमें क्या लिखा था, सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—लिखा क्या था, लो न नोटिस देख लो—

हिन्दू अप्रदत्त उत्तराधिकार बिल विरोध सभा

धार्मिक हिन्दू जनताकी ता०..................१९४४ वार...............को स्थान............में हिन्दू समाज नाशक उत्तराधिकार बिल एवं विवाह विषयक बिलके विरोधमें सभा होगी, जिसमें बाहरके आये हुए विद्वानों एवं स्थानिक सज्जनों के भाषण होंगे । उक्त बिलोंसे हिन्दू समाजपर कितनी बड़ी कठिनाई तथा सामाजिक दुर्व्यवस्था होनेवाली है, इसका पूर्ण परिचय देंगे । अतः धार्मिक सज्जनोंसे निवेदन है कि सभामें अपने इष्ट-मित्रोंके साथ अवश्य पधारें ।

निवेदक—"

प्रबोध प्रेस बनारस

दुखराम—यह तो भैया ! संसकिरतमें कुछ लिखा हुआ है, समझमें नहीं आता ।

भैया—यही लिखा है कि सरकार औरतको जायदादमें हक देनेका कानून पास कर रही है, इसके खिलाफ सभी हिन्दुओंको विरोध करना चाहिए, नहीं तो हिन्दू धरम रसातलको चला जायगा ।

दुखराम—देहमें आग लग गई भैया, यह हिन्दू धरम है कि निसाचर धरम है, जो अपनी माँ-बहिनोंको हक देनेमें धरमके रसातल जानेकी बात करता है। सन्तोखी भाई ! चाहे तुम नराज हो जाओ मैं तो कहूँगा कि ऐसा हिन्दू धरम चार दिनके बाद नहीं इसी छन रसातलमें चला जाय तो मुझे बड़ी खुशी होगी ।

भैया—हिन्दुस्तानमें ३२ करोड़ हिन्दू हैं, उसमें आधी १५ करोड़ औरतें हैं, कभी औरतोंसे भी इन धरमवालोंने पूछा, कि तुम्हें जायदाद मिलनी चाहिए कि नहीं ?

दुखराम—उन बेचारियोंको तो मालूम भी नहीं है । यह पीठमें छुरी भोंकना है जो वह समझ पायें, तो मरदकी सब जायदात और कमाई ताकपर रखी रह जायगी। एक ही दिन १५ करोड़ने चूल्हा जलाना छोड़ दिया, तो सभा करनेवालों को आटा-चावलका भाव मालूम हो जायगा ।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! औरतें हमेशा भेड़-बकरी नहीं बनी रहेंगी। पढ़ी-लिखी औरतें जगह-जगह सभा कर रही हैं और लड़के आदमीके पेटसे निकलते हैं और लड़की क्या इमलीके खोढ़रसे निकलती हैं ।

सन्तोखी—जहाँ-तहाँ भैया ! कसाई सब औरतोंसे अँगूठेका निसान लगवा रहे हैं ।

भैया—काहे वास्ते सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—समझा रहे हैं कि कानून पास हो गया तो सब जायदाद लड़कियाँ ले जायेंगी और लड़के भीख माँगते फिरेंगे।

भैया—सब जायदाद तो देनेकी बात नहीं सन्तोखी भाई ! हजारों बरसोंसे हिन्दू मरदोंने जो उनका हक छीन लिया है, बस उतने हीके देनेकी बात है। मुसलमानों के यहाँ लड़कीके लिए हक मिलता है, इसाईके यहाँ भी लड़कीको हक मिलता है, उनका धरम तो रसातल नहीं गया तो हिन्दू मरद इतना क्यों छटपटा रहे हैं।

दुखराम—यह हिन्दू धरम क्या है भैया ! वह तो जान पड़ता है कि आदमी के देहका कोढ़ है। लेकिन यह कितने दिनों तक रोकेंगे ?

भैया—तो मालूम हुआ न, औरतोंपर कितना जुलुम हो रहा है। मरकस बाबाकी शिक्षा है कि मरद और औरत गाड़ीके दो पहिये हैं, जब तक दोनों बराबर नहीं होंगे जब तक गाड़ी चल नहीं सकती। दुक्खू भाई ! हम जोंकोंको खतम करनेके लिए तैयार हैं, इसलिए न कि आदमी-आदमी बराबर हों। आदमी-आदमी के बराबर होनेपर औरतोंको गुलाम नहीं रखा जा सकता। औरतको आगमें जलाना भी हिन्दू धरम कहलाता था। औरतकी देहको रोटी कपड़ेके लिए बेचना भी हिन्दू धरम कहला रहा है। बराबर का होगा, तब औरतको देह बेचना नहीं होगा, तभी दुनियाका नरक मिटेगा।

१३. अछूत और सोसित

दुखराम—भैया तुमने उस दिन जो औरतोंकी गुलामीके बारेमें कहा था; उसपर मैं बहुत सोचता रहा, लेकिन उसी तरहकी और कुछ बातोंमें उनसे भी सताई जमात है, उन लोगोंकी जिनको बड़ी जाति अछोप, अछूत कहते हैं।

भैया—और उन्हींको गाँधीजीने नया नाम दिया—"हरिजन।"

दुखराम—मैंने सोचा अब्दुल और सुखारीको साथ लेकर बात करो तो और अच्छा होगा। मैं उनसे मरकस बाबाकी बातें करता हूँ, और अभी तो वह दुनिया कहाँ है, इसका कहीं पता नहीं है, तो भी बात सुनके ही दोनों तुमसे भेंट करनेके लिए आना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि रजबली भैयाको मैं तुम्हारे ही घरपर लाता हूँ, वही सामने है अब्दुल भाईकी झोपड़ी, देखते हो न, क्या यह आदमी का घर है ? हिन्दू भंगी होता, तो बगलमें एक सुअरकी खोभार भी होती है और दोनोंमें कोई फरक नहीं दिखाई पड़ता। अच्छा अब हम आ गये, अब्दुल भाईने आमके नीचे पुआल बिछा दिया। सलाम अब्दुल भाई !

अब्दुल—सलाम दुक्खू भाई ! और यह राजबली भैया तो नहीं हैं ?

दुखराम—हाँ, हमारे रजबली भैया हैं। सलाम सुखारी भाई !

सुखारी—सलाम दुक्खू भैया, सलाम रजबली भैया ! आओ इसी पुआल पर बैठें ।

अब्दुल—हाँ, भैया ! बैठो । जोंकोंने हमें और किस कामके लायक छोड़ा है यह तो थोड़ा-सा कोदों का पुआल कहींसे माँग-जाँच कर ले आये हैं । जाड़ेमें लड़के-वाले इसीमें घुसकर दिन काटेंगे ।

सुखारी—पुआल भी मिल जाय भैया ! तो जनुक हम लोगोंको साल-दुसाला मिल गया ।

दुखराम—हमारे ही साथ साल-दुसाला बनाते हैं, लेकिन भकुआ बनाकर दूसरे उसे पहनते हैं । हमने अपने रूपको नहीं पहचना सुक्खू भाई ! कोई बाघका बच्चा था। बचपन हीमें किसी गड़रिये ने पकड़ लिया और भेड़-बकरीका दूध पिलाकर पोसा। जब वह बढ़कर पूरा बाघ हो गया, तब भी कोई उसका कान पकड़ता, कोई मारता, जैसे अब भी कुत्ते ही का पिल्ला है । फिर किसी दूसरे बाघने देखा; उसको बड़ा अचरज हुआ और अफसोस भी हुआ । जब वह समझानेके लिए उसके पास गया तो सब भेड़-बकरियाँ भाग गईं, और उन्हींके साथ वह बाघका बच्चा भी भाग निकला । कई दिनके बाद बाघने जवान बाघको पकड़ पाया । बाघ समझाने लगा कि तुम भी हमारी तरह बाघके बच्चे हो, काहे मार खाते हो, काहे बेइज्जत होते हो ? बाघ बच्चेने कहा—कि नहीं हमको छोड़ दो नहीं तो गड़रिया मार-मारकर बेदम कर देगा । बाघ उसे पानीके पास ले गया । परछाईं दिखाके कहा कि देखो तुम्हारा भी रूप मेरे ही ऐसा है । अब बच्चेने देखा तो बात उसे सच्ची मालूम हुई लेकिन तब भी उसका डर नहीं जा रहा था । बाघने कहा कि गड़रियोंके सामने मेरी तरह जरा गुर्राना और जब गड़रिया जान लेके भाग जाय तब तो मेरी बात मानोगे न । बाघ बच्चे ने वैसे ही किया, गड़रिया भाग गया । बाघ बच्चा जंगलका राजा बन गया । वही बात तो है सुक्खू भाई ! हम लोगोंकी । हजार आदमी मर-मरकर कमाते हैं और पाँच जोंकें सब खा जाती हैं, कमाने वालोंको उन्होंने छत्तीस खोममें बाँट दिया है. उस परसे हम लोगोंको भेड़ बना दिया । लेकिन जिस दिन हम लोग अपना रूप पहचान लेंगे, उसी दिन जोंकोंका अन्त समझो ।

सुखारी—दुक्ख भाई, जो तुम कहते हो वह सब हमारे घटके भीतर उतर जाती है । छोटा भइयवा सुआरथ काल्ही तो यहाँसे गया है । पलटनमें सिपाही है न भैया । वहाँ अच्छा-अच्छा पहनना मिलता है दुक्खू भाई । तुमने जो दो अच्छर बताया है, उसे सुआरथसे भी कहा । उसने कहा कि रूसके पलटन इतनी वीर दुनियामें कहीं नहीं है, लेकिन उसको यह नहीं मालूम था कि रूसमें जोंकें नहीं हैं, वहाँ कमेरोंका राज है ।

दुखराम—तो तुमने कुछ बताया कि नहीं सुक्खू भाई ?

सुखारी—जो कुछ समझमें आता है, वह बतलाया दुक्खू भाई । कह रहा था कि मैं पलटनमें जाकर और पता लगाऊँगा । अच्छा यह बात तो अब रजबली भैया कुछ बतावें ?

भैया—दुनिया भरमें सुक्खू भाई जोंकोंका राज है, जोंकें कारखाना खोलती हैं, सौदा बेंचती हैं, जिसमें कोई गड़बड़ न करे, इसलिए राज भी अपने हाथमें रक्खा है ।

गरीब सब जातिमें है सुक्खू भाई ? बाभनमें भी गरीब हैं, राजपूतमें भी गरीब हैं, भुँइहारमें भी गरीब हैं, जो गरीब है, उसकी जिन्दगी नरक है, धरती पर हमारा देस सबसे बड़ा नरक है। काहे से कि इतनी गरीबी चारों खूँटमें कहीं भी नहीं है और बड़ी जातियोंमें तो दो-चार खुसहाल भी होते हैं, लेकिन अछूत जातिमें तो एक ओरसे सभी गरीब ही गरीब हैं। मदरासमें पढ़ने जायँ तो सबकी तिउरी चढ़ जाती। मेहतर-का लड़का हमारे लड़केके साथ बैठा करे। चमारका लड़का हमारे लड़केके साथ पढ़े। रोजगार से लोग पैसा पैदा करते हैं, लेकिन अब्दुल भाई। तुम मिठाई की दुकान खोलो तो कोई आयेगा ?

अब्दुल—देह तो छुआते ही नहीं हैं भैया ! हमारे हाथकी मिठाई कौन खायेगा ? कपड़ाकी दुकान खोलो तो वही बात। नौकरी में तो और मुश्किल ! सब बड़ी-बड़ी जातियोंके हाथमें है।

भैया—जोंकोंने वैसे तो सारी दुनियामें सब कुछ अपने हाथ में रखा लेकिन हिन्दुस्तानमें उन्होंने और गजब ढाया है। तीस करोड़ हिन्दुओं को ही ले लो। दस करोड़ अछूत हैं, बड़ी जातिवाले जो उन्हें आदमी कहते तो जनुक बड़ी दया करते हैं। बाकी बीस करोड़में दस करोड़ औरतें हैं जिनको कहनेके लिए तो अरधांगिनी नाम दिया जाता है। लेकिन कहावत है—"बहुरिआका बहुत मान लेकिन हाड़ी-बरतन छूने न पाये।" दुक्खू भाई ! उस दिन बात हो रही थी न जायदातमें औरतों का भी हक होना चाहिए ?

दुखराम—हाँ भैया ? सन्तोखी भाई जो सभाकी नोटिस दिखाई थी।

सुखारी—किस बातकी नोटिस थी भैया ?

भैया—आजकल बड़े लाटके यहाँ एक कानून बनानेकी बात हो रही है। औरतोंको न बापकी जायदाद में हक मिलता है न पतिकी। इसीलिए कानून बना देना चाहते हैं कि औरतोंको भी हक मिले। लेकिन हिन्दू कहते हैं कि औरतोंको हक मिलनेसे हिन्दू धरम खतम हो जायगा। हिन्दू धरम बढ़ेगा कैसे ? दस करोड़ आद-मियोंको अछूत रखो, उनको न साथमें पढ़ने दो, न उन्हें कुयें की जगतपर चढ़ने दो, न मन्दिरके भीतर घुसने दो, एक है यह रास्ता। दस करोड़ औरतोंको कोई हक मत दो जिससे वह मरदोंकी दासी बनी रहें। हिन्दू धरमकी बढ़ोतरीका यह दूसरा रास्ता है, बीस करोड़को तो इस तरह जानवर बनाया, फिर दस करोड़ हिन्दू आदमी रह जाते हैं। लेकिन उस दस करोड़में कितने भी बाम्हन हैं, जिनका दिमाग आसमानपर रहता है, वह अपनेको बर्म्हाका बेटा कहते हैं, कुछ हैं राजपूत, फिर हैं खत्री, अगरवाल, बरनवाल, रस्तोगी, कायथ और भी पचासों जातियाँ हैं, सबकी अलग-अलग दुनिया है, मरना-जीना, सादी-ब्याह सबका अपनी-अपनी जातिमें। हिन्दू सिरिफ एक नाम है, नहीं तो यह सैकड़ों जातियोंका अपना अलग संसार तो देख रहे हो न दुक्खू भाई ! २० करोड़ औरत और अछूत कहकर जानवर बना दिया। फिर १० करोड़ सैकड़ों जातियोंमें तोड़-फोड़कर बिलकुल कमजोर कर दिया। इससे फायदा किसको हुआ ? बाहरवालोंको। घर फूटे गँवार लुटैं, आज बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं क्यों ? इसीलिए कि हिन्दुस्तान फूटके कारन दुरबल है और दुरबलकी मेहरी गाँव भरकी भौजाई है। और दूसरा नफा उठानेवाले हैं हमारे देसके निकम्मे लोग,

जोंकें जो हाथ-पैर हिलाना नहीं जानतीं, जो दूसरोंका खून चूसती हैं, किसान उनके लिए अनाज पैदा करता है; मजूर उनके लिये कपड़ा बुनता है।

दुखराम—इन्हीं जोंकोंने भैया जात-पात बनाई है क्या ?

भैया—एक कहावत है दुक्खू भाई—जब गंगा हहाके समुन्दरके पास पहुँची तो समुन्दरको बड़ा डर लगा। उसने सोचा जो गंगा इतने जोरसे चलेगी तो मुझे भी लाँघ जायेगी। उसने हाथ जोड़के कहा—"गङ्गा महारानी एक बातका बरदान माँगता हूँ। एक धारा से आनेपर मुझे बहुत तकलीफ होगी, आप हजार धारा बनकर आयें तो मुझपर बड़ी दया होगी। गंगा हजार धारा बन गई, उसका जोर हजार टुकड़ोंमें बंट गया और कहते हैं, इसलिये समुन्दर गङ्गाको खा गया। हमारा देश भी वैसे ही है। हजारों जातियोंमें बँटा है, इसीलिये हमारे यहाँकी जोंकें हजारों बरससे हमें खा रही हैं, हमारे लिए ये जोंकें मजबूत हैं लेकिन यह भी हजारों टुकड़ोंमें बँटी हैं, इसलिये विलायती जोंकें हिन्दुस्तान में पहुँच गईं। तुमसे सुक्खू भाई पूछा जाय कि तुम तो इतना काम करते हो। बड़ भोरे ही हल नाधते हो, बरसा हो या जाड़ा हो या गरमी हो, कुछ नहीं गिनते। अढ़ाई पहर तक खेतमें हर जोतते हो, जमीन खोदते हो, खेत काटते हो, और मिलता तुम्हें क्या है ?

सुखारी—चार पैसा, और पाव भर पनपियाव, न कुल। चार पैसाके साँवाँमें भी आज-कल पेट नहीं भरता, क्या अपने खायँ और बाल-बच्चेको खिलायें। सबकी हड्डी-हड्डी निकली हुई है। परसाल १२ बरसका लड़का झुक (मर) गया।

भैया—१२ बरसका लड़का मरनेके लिए नहीं पैदा हुआ था दुक्खू भाई ! जिसको आध पेट भोजन नहीं मिलेगा, उसको तो बीमारी ढूंढ़ती ही रहती है। खाने का ठिकाना नहीं है तो दवाई कहाँसे लाके पिलाओगे ?

भैया—आज-कल भी भैया आठ सालका गदेला (लड़का) महीना भरसे जड़ैयामें पड़ा है। बस भागवानपर छोड़ दिया और क्या करे। पहिले चार पैसेकी कुनैनकी पुड़िया मिलती थी तो कहींसे माँग-जाँचकर खरीद लाते थे। लेकिन अब तो उसका कहीं पता ही नहीं है।

भैया—यह आदमीकी जिन्दगी नहीं है दुक्खू भाई, दो सौ पीढ़ीसे तो भगवान पर छोड़ा, लेकिन भगवानने आज तक तुम्हारी ओर झाँका भी नहीं।

सुखारी—तो जानता हूं भैया ! लेकिन अब आदमी का कुछ भी नहीं चलता तो क्या करे ? सुनते हैं गाँधी महात्मा हम लोगोंकी सुध ले रहे हैं।

भैया—अपनी सुध न लोगे सुक्खू भाई तो कोई तुम्हारी सुध न लेगा। और गाँधीजी भी जो हरिजन-हरिजन कहने लगे तो इसमें भी दूसरा मतलब है।

दुखराम—दूसरा मतलब क्या है भैया और हरिजन क्या ?

भैया—हरि भगवानको कहते हैं और जनका माने है, आदमी, भगवान का आदमी, नाम तो अच्छा है, लेकिन नामसे कुछ नहीं होता।

दुखराम—एक खिस्सा सुना दें, किसी लड़केका नाम ठठपाल था अच्छा नाम रखनेसे जम उठा ले जाता था, इसलिए मतारीने खराब नाँव रख दिया। लड़का पढ़के हुसियार हुआ। दूसरे लड़के ठठपाल कहके मजाक करते। उसने अपने गुरुसे कहा कि

मेरा नाम बदल दें। गुरुने कहा—नाममें कुछ नहीं है। ठठपालने फिर-फिर जोर देकर कहा तो गुरुने कहा, जाओ तुम्हीं कोई अच्छा-सा नाम ढूंढ़ लाओ। ठठपाल नाम ढूंढ़ने चला। किसी खेतमें फटे चीथड़े लपेटे कोई औरत पिछुआ (छूटदाना) बीन रही थी। ठठपालके पूछनेपर उसने अपना नाम लछमिनिया बताया। ठठपाल सोचने लगाकि लछमिनिया ऐसा अच्छा नाम है, लेकिन इससे उसे क्या नफा है? ठठपाल और आगे बढ़ा, चैत-बैसाखकी दुपहरियामें कोई आदमी नंगे बदन हल जोत रहा था, पूछनेपर नाम बतलाया धनपाल। ठठपाल फिर सोचने लगा। लेकिन, फिर आगे बढ़ा। कुछ आदमी कंधेपर मुर्दा उठाये "राम नाम सत्त है" कहते गाँवसे बाहर निकल रहे थे। ठठपालने नाम पूछा तो मालूम हुआ अमर। ठठपाल वहींसे गुरुके पास लौट आया। गुरुने पूछा कोई नाम ढूंढ़ लाये? ठठपालने कहा—"बिनिया करत लछमिनिया देखा, हल जोतत धनपाल। खटिया चढ़ै हम अम्मर देखा सबसे भला ठठपाल।"

दुखराम—हाँ नाम बदलनेसे क्या होता है भैया?

भैया—और नाम भी कैसा बदला है हरिजन, भगवानका आदमी। भगवानने अछूतोंकी ओर फूटी आँख भी कभी देखा? जोंकें अपने सारे चूसनेको भगवान हीकी कृपा बतलाती हैं। सुखारी क्यों भूखे मरते हैं। भगवानकी कृपा, सुखारीका १२ सालका लड़का पथ दवाईके बिना क्यों मर गया? भगवान की मर्जी। सालमें १० महीना सुखारीको क्यों भूखा और आधा पेट रहना पड़ता है?—भगवानकी इच्छा। इनके दो करोड़ चमार भाई काहे नंगे-भूखे मरनेके लिए पैदा हुए हैं? भगवान की खुसी। राजा सरेमनपूर काहे २० लाख रुपया हर साल अतिसबाजी, रंडी और मोटरपर फूंकते हैं?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल मोटाईके मारे चारपाईपरसे उठ भी नहीं सकते। उन्होंने चोर बाजारमें अनाज बेंचकर एक करोड़ रुपया काहे मार लिया? भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल के भाई-बन्दोंने अनाज छिपाके उसे मँहगाकर बङ्गालमें २० लाख आदमियोंको भूखा क्यों मार डाला? भगवानकी दया। कोई काम करते-करते मर जाता, लेकिन उसे एक साँझ भी पेटभर अन्न न मिलता, यह भी भगवानकी दया। किसी के कुत्ते हलुवा-मलीदा खाते हैं और कोई भूखके मारे कुत्तोंका जूठ छीनके खाता है, यह भी भगवानकी दया।

दुखराम—जिनके कुत्ते हलुवा-मलीदा खायँ, वह भले ही भगवानकी दयाकी तारीफ करते फिरें, लेकिन जिनके ऊपर भगवानके नामसे हमेशा ही बज्र गिराया गया है; वह काहेको भगवानके आदमी बनने जायँ?

भैया—गाँधी जी ने अछूतों को हरिजन—भगवानका आदमी बनाया और एक काम और किया।

सुखारी—सो क्या है भैया?

भैया—हरिजनोंके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देना चाहिए। जब हरिजन हैं तो इनको हरिका दरसन जरूर मिलना चाहिए। लेकिन बाभन पोथी खोल-खोलके दिखाते फिरते हैं कि चमारके मन्दिरके भीतर जानेसे मन्दिर असुद्ध हो जाता है, मैं तो उनसे कहता हूँ दुक्खू भाई कि हिन्दुस्तानमें गायका गोबर और मूत नहीं है, क्यों नहीं खिला-पिलाके भगवानको सुद्ध कर लेते।

दुखराम—चमारके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देनेसे क्या उसका पेटभर जायेगा ?

सुखारी—बड़े होकर नहीं भैया।

भैया—दस करोड़ अछूत भाइयोंको जानवरसे आदमी बनाना है। दसों करोड़ आदमी अपने मनसे जानवर नहीं बने, जोंकोंने उन्हें जानवर बनाया।

सुखारी—किस तरह हम लोगोंको आदमी बनाना चाहते हैं भैया ?

भैया—कहते हैं हिन्दुओंमें एक-तिहाई अछूत हैं, उनको भी बड़ी-बड़ी नौकरी मिलनी चाहिए। काहे जज, कलट्टर, मजिट्टर सब बड़ी-बड़ी जातिके ही लोग बनेंगे। हम एक तिहाई हैं, नौकरी में एक-तिहाई हमारा हिस्सा होता है।

सुखारी—तो भैया, क्या हमारी जातिमें भी अब कलट्टर-मजिट्टर बन रहे हैं ?

भैया—हाँ, दस-बीस काहे नहीं बने हैं। लेकिन सुक्खू भाई जो तिहाई नौकरी मिल जाये, तो यह भी ऊँटके मुँहमें जीरा होगा। दस करोड़में एक हजार को नौकरी मिल जानेसे दसों करोड़की भूख भाग जायेगी ?

सुखारी—कहाँ भागेगी भैया! राजपूत, बाभन, कायथ में हजारों नोकरिहा हैं, लेकिन हर गाँवमें तो पेटमें पत्थर बाँधके ढेला पीटने वाले भरे पड़े हैं।

भैया—मैं यह नहीं कहता, अछूतोंको नौकरी नहीं मिलनी चाहिए, लेकिन ओसके चाटेसे प्यास नहीं बुझेगी सुखारी भाई !

सुखारी—और भी कोई रास्ता बतलाते हैं भैया ?

भैया—राज-काज चलानेके लिए जो छोटे लाट बड़े लाटकी पंचायत (एसेम्बली, कौंसिल) है, उसमें भी एक-तिहाई हमारे भाइयोंको जाना चाहिए।

सुखारी—तो इससे भैया हम लोगोंको रोटी-कपड़ा मिलेगा ?

भैया—बड़ी जातिके लोग पंचायतमें गये हैं। देख रहे हो न उनकी जातिके ढेला फोड़नेवालोंको कितना खाना-कपड़ा मुवस्सर हो रहा है।

सुखारी—तो यह भी बेकार ही हुआ न भैया ?

भैया—बेकार नहीं है सुक्खू भाई, अछूतोंको उस पंचायतमें जाना चाहिए, तभी न बड़े लोगों को मुँहतोड़ जवाब मिलेगा और छाता-जूता उतरवानेका नाम नहीं लेंगे। लेकिन सींक बोरके पानी देनेसे कंठ नहीं भीगेगा सुक्खू भाई ?

सुखारी—तो भैया, कौन उपाय है, जिससे हम लोगोंका दुख-दलिद्दर जाय ?

भैया—बस रोगोंकी एक ही दवा है सुक्खू भाई और वह दवा मरकस बाबा बतला गये हैं।

सुखारी—मरकस बाबाकी बात दुक्खू भाईने बतलाई है।

भैया—ताल-तलैया, डबरा-गड्ढा चाहे गड़हा-गड़ही, चाहे गाय भैंसके खुरका दाग; एक-एक चीजको लोटासे पानीके भरनेमें जिनगी बीत जायगी लेकिन वह नहीं भरेंगे और एक बेर बाढ़ आ जाय, तो सब भर जायेंगे। मरकस बाबा कहते हैं कि खून चूसनेवाली सभी जोंकोंको निकाल बाहर करो और खेत-बारी, बाग-बगैचा, खान-

कारखाना सब साझेमें करके मिलकर काम करो, बस सबका दुख-दलिद्दर दूर हो जायगा ।

सुखारी—हमारे नेता इसे क्यों नहीं मानते भैया ?

भैया—इनको बाढ़के आनेपर बिसवास नहीं ।

सुखारी—बाढ़ के आनेपर विश्वास नहीं है, तो क्या लोटा-लोटा पानीसे भर देनेका बिसवास है, यह तो और अनहोनी बात है ।

भैया—वह सोचते हैं कि अबकी साल सौ नौकरी मिलेगी, अगले साल दो सौ आदमी हाकिम हो जायँगे । इसी तरह कुछ दिनमें हमारी जातिके दस-वीस हजार आदमीको नौकरी मिल जायगी । कोई दो हजार महीना पायेगा, कोई हजार, कोई पाँच सौ, कोई सौ ।

सुखारी—दो हजार या सौ महीना लेके अपने ही अंडे-बच्चेको पालेगा न भैया ? बहुत हुआ तो दो लाख आदमियोंका इससे काम चल जायगा, लेकिन दस करोड़में दो लाख क्या है ?

भैया—बड़ी जातिवालोंके पास तो भैया जमीन-मकान भी है, कल-कारखाना भी है, हमारे पास तो मँड़ई डालनेकी भी जमीन नहीं, तो दस-पन्द्रह हजार नौकरियों-के मिल जानेसे हमारा क्या बनेगा ?

भैया—नौकरीवाले जमीन-मकान खरीदेंगे, कारखानोंमें भी हिस्सेदार बनेंगे । हो सकता है, पचास बरसमें अछूतोंमें भी कुछ हजार भूमिदार और कारखानेदार बन जायँ ।

दुखराम—लेकिन इससे तो भैया ? जोंकें ही बढ़ेंगी न ? जोंकोके बढ़ानेसे हमारा दुख जायगा या खतम करने से ?

भैया—यही तो ये लोग नहीं समझते । उन्होंते खुद सब तकलीफ और अपमान भोगा है । उनके दिलमें अपने भाइयोंके लिये बड़ा दर्द है । वह अछूतोंको उठा रहे हैं, यह सब अच्छा है । वह गाँधीजीके हरिजन उद्धार या अछूत उद्धार को बेकार समझते हैं, यह भी ठीक हैं । और गांधीजी जो मन्दिर में अछूतोंको भेजना चाहते हैं तो यह मायाजाल है । मन्दिर और भगवान सब धोखेकी टट्टी हैं । चारा देकर बहेलिया मारता है । अछूतोंको भगवानको दूर हीसे सलाम करना चाहिये और कह देना चाहिए—"बाबा ? जाओ, बहुत दिनों तुमने छाती पर मूँग दला ।"

सुखारी—मरकस बाबाके रस्तासे चलनेसे हम लोगोंका कैसे उद्धार होगा भैया ?

भैया—सुक्खू भाई ? यही अपने दाउदपुरकी बात ले लो । बाभन-चमार सब मिलाकर १०० घ्र हैं । तुम्हारे वहाँ ५०० बीघा खेत हैं और सब रब्बीका । अभी तो १०० घरमें २० घर चमारोंके पास कुल मिलाकर ३-४ बीघासे ज्यादा जमीन नहीं, और उसके लिए भी मालिककी गाली-मार सहनी पड़ती है, और भी कितने ही बाभनों, अहीरों और दूसरी जातिके घर हैं, जिनमें किसी-किसीके पास नामके लिए थोड़ी सी जमीन है । ८-९ घर हैं, जिनके पास जमीन भी बेसी है और

मुँहमें गाली भी। मरकस बाबाके रस्ते का मतलब है कि पाँचों सौ बीघा इकट्ठाकर दिया जाय, कोले-कोलियोंकी मेड़े तोड़ दी जायँ, और पाँचों सौ बिगहामें सभी घरकी साझी हो। जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं, सब काम करें।

सुखारी—लेकिन भैया, सुखलाल तेवारी के घरकी बुढ़िया भी चौखटसे बाहर नहीं निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने लगेंगी।

भैया—सात परदेके भीतर रहना, चौखट नहीं लाँघना, हाथमें मेंहदी लगा के बैठना, यह सब जोंकोंका धरम है भाई! कमेरोंका धरम है, काम करना। सुखलाल तेवारी और उनके घरकी औरतोंको दोमेंसे एक बात चुननी पड़ेगी। जो वह जोंक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नहीं तो रोटी नहीं" वाली बात होगी, और एक हफ्तामें सब पटपटाके दाउदपुरको छोड़ जायँगे। जोंकोंके मरनेसे धरतीका भार उतरता है दुक्खू भाई! और जो कमेरा धरमपर चलना चाहेंगे, तो सबके भाई हैं, सबके साथ मिलके काम करें। खूब धन पैदा करें, और सब बाँट-चोंटकर खायें-पियें।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामें भैया, काम पियारा होता है, चाम नहीं, यही न भैया!

भैया—जो दाउदपुरमें सभी घर चामसे पियार करने लगें तो धरती माता एकहू अच्छत अनाज देंगी?

सुखराम—धरती माताका दिल तब तक नहीं पसीजता, जब तक चोटीका पसीना एड़ी तक नहीं पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमें सब घर काम करेगा। खेतोंमें मोटरका हल चलेगा, सिंचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमें बिलायती खाद पड़ेगी। २०० बीघा गेहूँ बोनेमें लोगोंका साल भरका खाना हो जायगा। ३०० बीघा जो सिगरेट वाला तमाकू बो दो, तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमें ३ लाख रुपया आ जाय। लेकिन तमाकू काहे बेचोगे सुक्खू भाई! दाउदपुरमें सिगरेटका कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोड़कर मरद-औरत अपने कारखानामें रोज ६ घन्टा काम करेंगे। बीस लाखका सिगरेट सालमें बिक जायगा और गाँववाले जितना सिगरेट पियेंगे, उतना मुफुत रहेगा।

सुखारी—भैया तो इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख सालाना निकलेगा न?

भैया—और यह २०-२५ लाख सुक्खू भाई सब घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमें कोई सुअरकी खोभार नहीं दिखाई पड़ेगी, कोई छान और खपड़ैल भी नहीं बच रहेगी। उसकी जगह दाउदपुरमें होगी—एक चौड़ी जिसके दोनों ओर ईंट, सीमेन्ट और लोहेसे बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमें नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, और अबदुल भाईको उठाना नहीं पड़ेगा; नलसे पानी छोड़ा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर बहा ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउदपुरमें नहीं दिखाई पड़ेंगे। सब

साफ कपड़ा पहिनेंगे। लड़के-लड़की सब पढ़ेंगे। सुखलाल तेवारीके पोते और सुखारी चमार के पोते एक दूसरेको भाई समझेंगे और एक परिवारके बेकति (आदमी)।

अबदुल—लेकिन भैया, यह सपना जैसी बात मालूम होती है।

भैया—सपना वह होता है अबदुल भाई, जिसे धरतीपर कहीं न देखा जाय, लेकिन जो बात धरतीके किसी कोनेमें देखी जाय, उसे भी क्या सपना कहेंगे ?

अबदुल—धरतीपर ऐसी बात कहीं हुई है भैया ?

भैया—हाँ अबदुल भाई ! और बहुत दूर नहीं। दो दिन रेल और ३ दिन मोटर से चलनेपर तुम उस देसमें पहुँच जाओगे जहाँ सब कारबार साझेके परिवारका है, जहाँ कोई अछूत और बड़ी जातिका नहीं है, जहाँ कोई जोंक नहीं है, उस देसका नाम है सोवियत भूमि, किसानों-मजूरोंका पंचायती राज, और उसको पहले रूस भी कहा करते थे।

अबदुल—तब भैया ! सपनाकी बात नहीं, लेकिन अपनी जिनगी में हम सब देख लेंगे ?

भैया—तमासा देखना चाहोगे तो कभी नहीं, लेकिन वैसा बनानेमें लग जाओगे, और खूब जिउजानसे लग जाओगे तो जरूर देख लोगे। अड़तीस बरस पहिले रूसको भी जोंकोंने नरक बनाके रखा था, लेकिन किसान-मजूर भिड़ गए और अब उन्हें मरके सरगमें जानेकी जरूरत नहीं, अब सरग उनके घरपर उतर आया।

सुखारी—लेकिन भैया हमारे नेता इतना पढ़-गुनकर काहे मरकस बाबाके रास्तेको नहीं मानते ? जो वह भी दस-बीस लाख के जोंक बनना चाहते हैं तो हम लोगोंका क्या उपकार करेंगे ?

भैया—हिन्दुस्तान भरके कमेरे जब जोंकोंको उखाड़ फेंकनेके लिए उठ खड़े होंगे, तब उनके मनमें भी आसा बँधेगी, अभी तो वह इसे अनहोनी समझते हैं। इसी-लिए जड़में पानी न देकर पत्तोंको सींचते हैं।

दुखराम—लेकिन सुनते थे भैया ! गाँधीजी भी अछूतोंके उद्धारके लिए लाखों रुपया जमा कर चुके थे और उन्होंने जगह-जगह हरिजन आसरम खोले। वह क्या करना चाहते थे ?

भैया—करना तो चाहते थे हरिजनोंका उद्धार, लेकिन हो रहा था कंडेसे आँसू पोंछना। बस, इतना ही हो रहा था, कि कुछ सौ हरिजन लड़कोंको चरखा कातना सिखाया जाया, जिससे बहुत मेहनत करनेपर भी आदमी दो आना रोजसे बेसी नहीं कमा सकता, जिससे एक आदमीका भी पेट नहीं भर सकता। दूसरी बात यह हो रही थी कि बड़ी जातिके सौ-दो-सौ आदमियोंको नौकरी मिल जाती।

१४. मरकस बाबा का रास्ता विदेशी है ?

सोहनलाल—लोग कहते हैं भैया, कि मरकस बाबाने जो कुछ कहा है, वह ठीक हो सकता है; लेकिन एक देसके लिए जो बात ठीक है, वह दूसरी जगहके लिए बेठीक भी हो सकती है।

दुखराम—"ठाँव-गुने काजर, ठाँव-गुने कारिख," वही चीज आँखमें लगकर काजल बन जाती है, और सोभा देती है, वही गालमें लग कालिख कही जाती है और लोगोंको धोना-पोंछना पड़ता है। यही बात है सोहन भैने ?

सोहनलाल—हाँ दुक्खू मामा ? रूसमें जो बात ठीक उतरी, यही बात हिन्दुस्तानमें भी ठीक उतरेगी, इसपर कैसे बिस्वास किया जाय भैया ?

भैया—"ठाँव गुने काजर, ठाँव गुने कारिख" को मैं मानता हूँ, सोहन भाई ? रूसमें इतनी सरदी पड़ती है कि नदी-नाले सब जम जाते हैं, वहाँ जाड़े के मौसिममें हर घरको गरम पानीके मोटे नलोंसे गरम किया जाता है। हिन्दुस्तानमें भी मरकस बाबाका कोई चेला मकान गरम करनेके लिए गरम पानीका नल लगवाने लगे, तो उसे मैं पागल कहूँगा, उसकी जगह यहाँपर गर्मियोंके दिनों में बिजली के पंखेकी जरूरत पड़ेगी। मासको और लेनिनग्रादमें रूसी भाखा बोली जाती है, जो हिन्दुस्तानके ३५ करोड़ आदमियोंको भी अपनी भाखा छुड़वाकर रूसी भाखा सिखलाने की कोसिस करे, तो उसे भी मैं पागल कहूँगा। रूसके कवि वोल्गा माई और दोन बाबा (नदियों) के गीत गाते, हिन्दुस्तानमें जो कोई कवि गंगा माई, सिन्ध और कावेरी माताओं को छोड़कर वोल्गा माई और दोन बाबा का गीत गाये, तो उसे भी मैं पागल कहूँगा, और मरकस बाबा भी उसे अपना चेला नहीं मानेंगे। ऐसी सैकड़ों चीजें हैं, जो रूसकी अपनी हैं और हिन्दुस्तानमें नहीं हैं। जो कोई आदमी अंधाधुंध नकल करना चाहेगा, तो उसे मैं बेकूफ कहूँगा। लेकिन मरकस बाबाने जो बातें जोंकोंके हटाने के लिए बताईं, कमेरोंके राज कायम करनेके लिए बताईं, सबको एक परिवारका भाई बननेके लिए कहा, उसमें तो कोई ऐसी बात नहीं दिखाई देती।

सोहनलाल—सबसे बड़ी बात यही है, कि वह विदेसी चीज है।

भैया—तो हिन्दुस्तानमें कोई विदेसी चीज नहीं चलनी चाहिये, यह कौन कहता है?

सोहनलाल—गाँधीजी कहते हैं, गाँजीजी के चेले लोग कहते हैं।

भैया—गाँधीजी नहीं कह सकते सोहन भाई ? गाँधीजी रूसके तालस्तायको अपना गुरू मानते हैं, विलायतके रस्किनका अपनेको रिनिया मानते हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा, छापाखाना विलायतसे आया है, इसलिए उसमें छपी गीताको नहीं पढ़ना चाहिये। घड़ी भी विलायतसे आई है, और गाँधीजी उसको बाँधे-बाँधे फिरते हैं, चसमा विलायत से आया है, लेकिन उसे लगाते हैं। ईसामसी का धरम विदेससे आया है, लेकिन गाँधीजी उसका बहुत आदर करते हैं। हिन्दुस्तान के चार आदमीमें एक आदमी जिस मुसलमान धरमको मानता है और वह भी दूसरे देससे आया, लेकिन उन्होंने नहीं कहा कि अरबके पैगम्बरको हिन्दुस्तान से निकाल बाहर करना चाहिये।

सोहनलाल—लेकिन वह कहते हैं, कि मरकस बाबाके रस्तेमें हत्याकी बात आती है और हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्या का रस्ता बताते हैं।

भैया—यह दोनों बात गलत है । मरकस बाबा हत्याका रस्ता नहीं बताते, वह ऐसा रस्ता बताते हैं कि दुनियामें फिर आदमीको आदमीको हत्या करनेकी कभी जरूरत ही न पड़े । अकाल, महामारीमें करोड़ों आदमी मर जाते हैं । वह चाहते हैं कि दुनियामें अकाल महामारीका नाम ही न रहें । जोंकें अपने स्वारथ के लिए बराबर लड़ाई करवाती हैं; हमारे सामने ही दो बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ हुईं, जिनमें करोड़ों आदमियों की हत्या हुई, जोंक गुण्डोंने लाखों बेकसूर बच्चों और औरतोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला । मरकस बाबाने ऐसा रस्ता बतलाया है कि जोंक ही न रह जायँ और दुनिया भरके सारे आदमियोंका एक परिवार बन जाय । गाँधीजी जोंकोंको भी रखना चाहते हैं और यही जोंकें हत्याकी जड़ हैं । दुक्खू भाई, बताओ कौन हत्याका रस्ता बताता है, कौन वेहत्याका ?

दुखराम—इससे तो मरकस बाबाका ही रस्ता वेहत्या (अहिंसा) का हुआ और गाँधीजीका रास्ता दुनियासे कभी हत्याको नहीं हटा सकेगा ।

सोहनलाल—लेकिन यह तो तब होगा न जब सारी दुनिया मरकस बाबाके रस्ते पर चलने लगेगी । लेकिन यह तो अनहोनी बात मालूम होती है ।

भैया—जो दुनियामें जोंकें रह जायँगी तो हत्या भी रह जायगी, सोहन भाई ! लेकिन इसका दोष तो जोंकोंको रहेगा, मरकस बाबाके रस्तेको नहीं । फिर सोहन भाई आप मरकस बाबाके रस्तेके ऊपर सारी दुनिया आ जायगी, इसे तो अनहोनी समझते हैं, और तब जब कि अपने सामने देख रहे हैं कि ३८ बरस पहले दुनियाका छठवाँ हिस्सा मरकस बाबाके रस्तेको अपना चुका और ६ बरस पहिलेके भी नहीं । जिसे अभी दुनिया अपना चुकी, उसे तो तुम अनहोनी कहते हो । और जोंकें बनी रहेंगी; जिनका जीनाही दूसरेके खूनपर होता है, लेकिन वे भगत बन जायंगी और सेर-बकरी एक जगह पानी पियेंगे । है यह होनेवाली बात ?

सोहनलाल—जोंकोंके हटानेकी बात तो गाँधीजी भी कहते हैं, लेकिन हत्याके रस्तेसे नहीं, वेहत्याके रस्तेसे ।

भैया—बुद्ध गाँधीजीसे बहुत बड़े आदमी थे । उन्होंने भी वेहत्याके रस्ते जोंकोंको भगत बनाना चाहा, लेकिन नहीं हो सका । ईसामसीने भी वेहत्याके रस्तेसे सबको ले जाना चाहा, लेकिन देख रहे हो न, उनके चेले क्या कर रहे हैं ? गाँधीजीके चेलों हीकी ओर नहीं देखते ? मिलवाले सेठ क्या कर रहे हैं ? उनके चेलोंने बम्बईमें मजदूरोंपर गोलियाँ चलवाईं । उनके चेलोंने किसानोंपर घोड़े दौड़वाये । वेहत्याकी बात उसी दिन खतम हो गई जिस दिन लड़ाईके समय गाँधीजीने कहा था कि कांगरेस सरकारमें जायगी तो पलटन, गोला-बारूद सभी तरहसे फसिहोंका संहार करेगी । जरमन-जापान फसिहोंके सामने निहत्था बन वेहत्याके रस्ते काम नहीं चलेगा, इसीलिए गाँधीजीने भी हथियारके साथ फसिहोंका मुकाबला करनेके लिए कहा । मरकस बाबा भी हथियार लेकर जोंकोंका मुकाबला करनेके लिए कहते हैं । बताओ दुक्खू भाई ! है दोनोंमें कोई फरक ?

दुखराम—कोई फरक नहीं मालूम होता भैया ?

भैया—और मरकस बाबा हथियार लेके मुकाबला करनेके लिए क्यों कहते, इसीलिए कि जोंकें सिरसे पैर तक हथियारसे लैस हैं, तुम्हें निहत्था देखकर वह भून देंगी। जोंकोंमें दया-मया है, इसे वही विस्वास कर सकता है जिसको जोंकोंकी करनी मालूम नहीं, उनका स्वभाव नहीं मालूम। फिर हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रस्ता बताते हैं। यह बिलकुल गलत है। अठारहों अध्याय गीता हत्या करनेके लिए कही गई। अर्जुन बेचारा तो तीर-धनुष छोड़कर बैठ गया था, उस लड़ाई करनेसे इनकार कर दिया था, लेकिन किरसनने उसे तरह-तरह से समझाया और लड़ने को तैयार किया। वह लड़ाई भी गरीबों-कमेरोंकी भलाईके लिए नहीं हुई थी, कुरुक्षेत्रमें दोनों ओर जोंकें ही आमने-सामने खड़ी थीं। जिरजोधन (दुरजोधन) राजमें हिस्सा नहीं देता था, इसीलिए पांडव लड़ रहे थे। जिरजोधन सारे राजके किसानों, कारीगरों, मजदूरोंकी कमाईको छीनके ऐसजैस करना चाहता था। पांडवने उसी ऐसजैसके लिए कौरवोंको मारा, लाखोंका संहार किया। गीताको गाँधीजी बहुत मानते हैं। गीताको जो कहे कि वह बेहत्या (अहिंसा) का रस्ता बताती है, इसके लिए हम यही कहेंगे कि वह दिन दोपहर का अंधा है। और दूसरे कौन रिसि-मुनि हैं जो बेहत्याका रस्ता बतलाते हों ?

सोहनलाल—बुद्ध और महावीर।

भैया—बुद्धको तो हिन्दुस्तानने निकाल बाहर किया, इसीलिए उनकी सिच्छा को स्वदेसी कौन मुँह लेकर कहेंगे। रहा महावीर, लेकिन उन्होंने किसी राजाको युद्धमें हथियार डाल देनेके लिए कहा, इसका तो हमें कोई पता नहीं। हाँ, आदमी अपनी मुकती और निरवान चाहे तो उसे सब जीव-जन्तु पर दया करनी चाहिये। वहाँ एक देसको दूसरे देसकी गुलामीसे छूटने या एक जमातको दूसरी जमातके खूनी हाथोंसे बचनेके लिए, हथियार रखकर बेहत्या मान लेनेकी बात तो कहीं देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—पोथी-पतरा बहुत है भैया ! क्या जाने कहीं रिसि-मुनिके मुँहसे ऐसी बात निकली हो।

भैया—बुद्ध और महाबीरसे पहिले किसी रिसि-मुनिने बेहत्याकी बात कही हो, इस पर मुझे बिलकुल विस्वास नहीं, उस समयके रिसियों-मुनियोंका रसोईखाना पूजाघर नहीं, कसाईघर होता था; वहाँ बीचमें बछिया या बकरेको रिसि-मुनि अपने हाथसे मारते थे।

दुखराम—क्या कहा भैया ! रिसि-मुनि बछिया मारते थे, राम-राम ऐसी बात कभी हो सकती है ? हिन्दू गौ माताके इतने भगत हैं तो उनके रिसि-मुनि भला कैसे गाय मार सकते हैं ?

भैया—बुद्धसे पहिले और कुछ सौ बरस पीछे तक हिन्दू रिसि और सभी लोग गायका मांस खाते थे, उससे उनको कोई परहेज नहीं था। हिन्दुओंकी एक-दो नहीं,

पचासों पोथियोंमें लिखा है, रन्तिदेव राजाकी कथा महाभारत* में आती है। उनके घरमें रोज दो-दो हजार गायें मेहमानों, मुसाफिरोंके खानेके लिए मारी जाती थीं।

दुखराम—लेकिन भैया जो हिन्दुओंकी पोथीमें गाय मारनेकी बात लिखी है, और पहिलेके मामूली नहीं—रिसि-मुनि तक गाय खाते थे, तो आज गोकसी के लिये काहे हिन्दू लोग मुसलमानोंका सिर फोड़ते फिरते हैं।

भैया—हिन्दुओंसे पोथीकी बात छिपा दी गई, इसीलिये नहीं तो क्या ६० पीढ़ी पहलेके उनके अपने गौ-भच्छक पुरखा मिल जायँ, तो क्या यह उनका सिर फोड़ते फिरेंगे ? मैं यह नहीं कहता दुक्खू भाई, कि पहिलेके पुरखा गाय खाते थे, तों हम आज भी खायें। इसकी कोई जरूरत नहीं। लेकिन लाठी लेकर दूसरोंको मारने दौड़ना यह तो जबर्जस्ती है न ?

दुखराम—जबर्जस्ती ही नहीं भैया यह तो भारी झगड़ेकी जड़ है।

सोहनलाल—लेकिन भैया ! हम लोगोंकी सारी खेती-बारी, दूध-घी गाय हीसे मिलता है, इसलिए गायकी रक्षा करनेको बुरा कैसे कहा जाय।

भैया—गायकी रक्षा करना अच्छा है सोहन भाई। हम लोगोंको अच्छी-अच्छी नसलके वल-गाय पैदा करना चाहिये, उनको बढ़ाना चाहिये। ३० करोड़ आदमीमेंसे बहुत थोड़े हीको पीनेको दूध मिलता है। जब दूध-घी खानेको मिलता था, तो आदमी खूब तगड़े होते थे। दूध-घीकी इफरात हो इसकी जरूर हमें कोसिस करनी चाहिए। यह हमारे फायदेकी बात है और मुसलमानोंके भी। मुसलमान भाइयोंको समझाइये—हमारे भी पुरखा गायका बलिदान करते थे, गायका मांस खाते थे, लेकिन पीछे समझा कि गायकी रच्छासे हमारा ज्यादा फायदा है, इसीलिए उन्होंने गायका मांस त्याग दिया। देस भरके लोगोंको खूब घी-दूध खानेको मिले, हल-गाड़ीके लिए अच्छे-अच्छे वैल मिलें, इसीलिए हमें गायोंकी रच्छा करनी चाहिए।

सोहनलाल—गाँधीजीकी अहिंसा और दूसरी बातोंके वारेमें तो आपने बतलाया, तो भी बहुत लोग कहते हैं कि रूस और हिन्दुस्तानमें इतना फरक है कि वहाँकी वात यहाँ चलाना उलटी गंगा वहाना है। वह यहाँ चलेगी नहीं, नाहक झगड़ा-झंझट बढ़ेगा।

---

*"राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विजः।
अहन्यहनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा।"
"समांस ददतो ह्यन्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः।
अतुलाकीर्त्तिरभवन्नृपस्य द्विजसत्तम !"—वनपर्व २२८।८-१०
"महानदी चर्मराशेरुत्क्लेदात् संसृजे यतः।
ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्याता सा महानदी।"—शान्ति पर्व २९-३०
सांकृतिं रन्तिदेवं च मृतं संजय ? शुश्रुम।
आसन् द्विशत-साहस्रा तस्य सूदा महात्मनः।
गृहानभ्यागतान् विप्रान् अतिथीन् परिवेषकाः।—द्रोण पर्व ६७। १-२।
तत्रास्या सूदाः क्रोशन्ति सुमृष्ट-मणि-कुन्डलाः।
सूपं भूयिष्ठमश्नीध्वं नाद्य मांसं यथापुरा"—द्रोण पर्व ६७। १७-१८।
शांति पर्व २७-२८।

भैया—नहीं चलेगी, तो अपने ही बेकार हो जायेगी, उसके लिए चिन्ता करनेकी जरूरत क्या ? और झगड़ा-झंझटकी बात जो कहते हो, वह तो जोंकें करती हैं। गाँधीजी सेठों और जमींदारोंको समझा दें कि वह हथियार रख दें और १० बरस किसानों-मजूरोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें। जो साझेकी खेती, मोटरके हल, पानीके पाइप और बिलायती खादसे हरा-भरा खेत ऊसर बन जाने लगे, तो किसानोंको भूखे मरना पड़ेगा। फिर तुरन्त ही जमींदार आकर काम सँभाल ले।

दुखराम—बस यही भैया ! गाँधीजी जमींदारोंसे मनवा दें तो हम महात्माजीको सबसे बड़ा अवतार मान लेंगे।

भैया—सेठ लोगोंको भी गाँधीजी मना लें कि बेसी नही पाँच बरसके लिए अपने द्वारपर लिखे "लाभ-सुभ" को मिटा दें।

दुखराम—"लाभ-सुभ" क्या है भैया ?

भैया—बनिया लोगोंकी गद्दीके ऊपर दीवारमें "लाभ-सुभ" सिन्दूरसे लिखा देखा है कि नहीं। सेठ लोगोंकी जिनगीका सबसे बड़ा मन्तर यही लाभ-सुभ है। मजूर २०) की चीज रोज पैदा करें, उन्हें ७५ पैसे देकर टर्का दें, और बाकी रुपया हुआ लाभ-सुभ, और रखें उसे गोलकमें। सेठ लोग २०) में ७५ पैसे ही नहीं, कुल रुपया मजूरोंके हाथमें दे दें और कह दें कि देखो तुम लोग बड़े जोखिममें हाथ डाल रहे हो। अब हम चीनीकी मिल, कपड़े की मिल, जूटकी मिल, लोहेका कारखाना, किसीका इन्तजाम नहीं करेंगे, हम 'लाभ-सुभ' छोड़ते हैं और इन्तजाम भी। जो मजूर कारखानेको ठीकसे नहीं चला सके, तो उनको ही भूखा मरना पड़ेगा। फिर सेठजी आकर कारखानोंको सँभाल लेंगे, झगड़ा-झंझट मिटानेका यह रास्ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! बेसी नहीं पाँच ही बरसके लिए जमींदार और कारखानेवाले सेठ राम-नामा ओढ़कर माला फेरें, और हम लोगोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें, इससे तो बिना झगड़ा-झंझटके फैसला हो जायगा। जब हम देखेंगे कि मरकस बाबाका रास्ता हिन्दुस्तानमें नहीं चल सकता, तो क्या पागल हुए हैं, कि देसभरका संहार करेंगे।

सोहनलाल—लेकिन जमींदार और सेठ गाँधीजीकी बात मानेंगे थोड़े ही ?

भैया—चार हजार बरससे जोंकोंने अपना रस्ता चलाया और उसके कारण पंचानबे सैकड़ा कमेरोंके लिए नंगे-भूखे मरनेके सिवा कोई चारा नहीं। हम तो सिरिफ पाँच बरस ही चाहते हैं। जो जोंकें उतना भी देनेके लिए तैयार नहीं हैं, उनके गुन्डे लाठी-छूरा लेकर घूमते-फिरते रहेंगे, पुलिस-पलटनको उन्होंने अलग तैयार कर रखा है, अदालत-कचहरी सब उनके हाथमें है, इतना होनेपर भी महात्माजी कहते हैं कि किसान-मजूरो ! तुम हमारा रस्ता ले लो, फुफुकार भी मत छोड़ो; तो इसके लिए हम लोग तैयार नहीं हैं। यह तो सोलहो आना जोंकोंकी मदद करना है।

सोहनलाल—क्या समझते हो भैया, गाँधीजी जोंकोंकी मदद करना चाहते थे ?

भैया—इस बातको अब किससे पूछें। मैं तो समझता हूँ, वह इन्कार न करते, हाँ, उसके साथ यह भी कहते कि मैं सबकी भलाई चाहता हूँ। कोई चाहता है,

इसे वही जान सकता है, दूसर। आदमी दिलकी बातको क्या जाने ? लेकिन गाँधीजी कहते थे, उससे सबसे ज्यादा नफा सेठों को हुआ । दूसरे नम्बरपर जिमींदारोंको, और तुरन्त नफा तो उतना नहीं, हाँ आगे के लिए किसान-मजूरों को बहुत मदद मिली । तुम समझते होगे सोहन भाई, कि मैं गाँधीजीके कामको बहुत बुरा समझता हूँ, और मानता हूं कि उन्होंने हिन्दुस्तानके लिये नहीं किया । गाँधीजीके उपकार को बहुत मानता हूँ । उन्होंने ही चम्पारनके निलहे साहबोंके मदको चूर किया और सैकड़ों बरसोंसे भेड़ बने सिकारोंको सेर बनाया । उन्होंने ही हिन्दुस्तानकी भुक्कड़ जनताको अपने पैरपर खड़ा होनेमें सबसे अधिक मदद की । जनताने अपने बलको समझा और अब वह सो नहीं सकती, जब तक कि वह अपने सतानेवालोंको हमेसाके लिए खतम नहीं कर देगी ।

दुखराम—तो गाँधीजीकी कौन बात है जो हिन्दुस्तानके कमेरोंको नुकसान पहुँचानेवाली है ?

भैया—सबसे बड़ी बात तो यह कि जमींदारों, कारखानेदारोंको कायम रखना चाहते थे । वह उनसे इतना ही चाहते थे कि किसानों और मजूरोंका अपनेको माँ-बाप समझें । सवाल यह है कि माँ-बाप महलोंमें रहेंगे या झोंपड़ी में, बीस हजारकी कारमें चलेंगे या पैदल । लड़के-लड़कियोंके ब्याहमें दस-बीस लाख खर्च करेंगे या धरम-विवाह करेंगे । सिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, उटकमंड, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, बनारसमें बिड़ला हाउस बनाकर रहेंगे कि १०) भाड़ेकी कोठरीमें ।

दुखराम—मुटिया धोती पहिरने और जौकी रूखी रोटी खानेके लिए यह जोंकें कभी नहीं तैयार होंगी ।

भैया—मैं भी समझता हूँ इसके लिए कोई तैयार न होगा । क्या जाने ख्याल हो कि किसान-मजूर माँ-बाप बनानेकी आसरापर हाथपर हाथ धरकर बैठे रहें । लेकिन यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि यह अपने पेटकी भूखको कैसे भूला सकते हैं । दूसरी बात गाँधीजी कहते थे कि कल-कारखाना नहीं, हमें चरखा चाहिये, लेकिन यह भी होनेवाला नहीं । लोहेके जमानेसे आदमी लौटकर पत्थरके जमानेमें नहीं जा सकता । खद्दरसे जो मिलोंके बन्द हो जानेका डर होता, तो बिड़ला-बजाज-साराभाई जैसे करोड़पति कपड़ामिलवाले लाखों रुपया खद्दर-फंडमें दान न देते । गाँधीजी गुड़ खानेके लिए कहते हैं लेकिन उनके चेला, बिड़ला और साराभाईकी चीनीकी मिलोंने चीनीको इतना सस्ता कर दिया, कि कोई गुड़ खाना चाहेगा नहीं । किसान ऊख बेचकर पैसा कमा लेते, उसकी जगह वह गुड़ बनाने नहीं जायँगे । बिड़लाने लाखों रुपया लगाकर हिन्द-साइकिल का कारखाना खोला । वह पाँच लाख नफेमेंके पाँच हजार गाँधीजीको दान में दे सकता था, लेकिन कारखाना नहीं बन्द कर सकता । बिड़लाने करोड़ों रुपये लगाकर मोटर कारखाना खोला है, उसी नफेमें धरमसाला बनवा सकता है, मालवीजीके विस्वविद्यालयको दान दे सकता है, लेकिन कारखाना छोड़कर वह सतजुगकी ओर नहीं लौटेगा । चर्खेकी बात करना हथियारोंकी ओर आदमीको ले जानेकी कोसिस करना है ।

दुखराम—बह तो नहीं हो सकता भैया ! और लोहा बिना चरखेका तकुवा कहाँसे आएगा।

भैया—गुड़, हाथके कूटे चावल और चरखेको अपनानेकी बात कहकर छुट्टी नहीं मिल सकती। जो पीछे लौटना है, तो सभी बातोंको साफ-साफ कहो, चरखेका तकुवा लोहेका रखोगे या लकड़ीका। चरखेको लोहेके बसूलेसे बनाओगे या और किसीसे। जो लोहा रखना ही पडेगा तो ताताके बिजली और पत्थरके कोयलेसे बने लोहेको लोगे या लोगों को कहोगे कि बबूलका कोयला तैयार करो और पत्थरको गलाकर लोहा निकालो। लेकिन बबूलके कोयलेवाले लोहेको कौन खरीदेगा, जब कि उसीसे भी बढ़िया फौलाद उससे भी सस्ते दामोंमें मिल रहा है। पत्थरका कोयला भी चाहिये, बिजली भी चाहिए, लोहा और बड़ी-तड़ी मसीनें एक जगहसे दूसरी जगह भेजी नहीं जा सकतीं। और विद्दाके लिए क्या कहेंगे? छापाखानाके कारण आज किताब बहुत छपती हैं, बहुत सस्ती बिकती हैं। लेकिन उनको छुड़ाकर क्या हमें फिर ताड़के पत्तेपर हाथसे लिख-लिखकर किताबें पढ़नी चाहिए।

दुखराम—यह तो भैया जुम्मन दादी-की बात है, जिसे हम लोग हँसीमें उड़ा देते हैं।

भैया—हँसीमें उड़ानेकी बात नहीं है दुक्खू भाई! जब लड़ाईका जमाना था, कपड़ा कम मिल रहा था और बहुत महँगा, ऐसे समयमें जो हम चरखेसे कपड़ा तैयार करते तो यह अच्छी बात थी। रेलकी लाइन उखड़ जाय, पिटरौल बिना मोटर-लारी बन्द हो जाय, तो इक्का-बैलगाड़ी या पैदल चलनेको कौन नहीं कहेगा। लेकिन करोड़पति कारखानेवाले जो चरखामें भगती दिखाते हैं, उसके भीतर दूसरी ही बात है। वह समझते हैं कि किसान चरखा उठायेंगे तो गाँधीजीके रस्तेको भी अपनायेंगे और हमको माई-बाप समझेंगे फिर मरकस बाबा का नाम नहीं लेंगे, रूसकी बात नहीं सुनेंगे। लाल झण्डा लेकर "किसान-मजूर राज कायम हो" चिल्लाते नहीं फिरेंगे। "रघुपति राघव राजाराम" का कीर्त्तन करेंगे और इस दुनियासे बेसी परलोकका आसरा करेंगे।

दुखराम—तो चरखेवाली बातके भीतर भी भैया बहुत धोखा चल रहा है।

भैया—गाँधीजी धोखा देना न चाहते हों; लेकिन सेठ लोग तो जरूर आँख-में धूल झोंकना चाहते हैं। जो उनका चरखेपर विश्वास है, तो कपड़ेके कारखानों को क्यों नहीं तोड़ देते? जो उनका गुड़पर विश्वास है तो अपनी चीनीकी मिलोंमें आग क्यों नहीं लगा देते? जो उनका सेवागाँवकी बैलगाड़ीपर विश्वास है, तो क्यों मोटरका कारखाना खोल रहे हैं। जो उनको ताड़के पत्तेकी पोथीपर विश्वास है, तो बिड़ला औ डालमियाने क्यों कागजकी बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ खोलीं?

दुखराम—ढोलके भीतर सारा पोल मालूम होता है भैया?

भैया—सेठ लोग और कूद-कूदकर कह रहे हैं कि मरकसका रास्ता विदेसी है, हिन्दुस्तान धर्मात्मा देस है, वह यहाँ नहीं चलनेका, इनको कहते हैं कि आँखकी लाज जो छोड़ दो, मुँहमें जो आये कहते फिरो। पंचरुखीकी चीनी मिल, उसकी मसीनें और कारीगरी सब अहमदाबादकी बनी हैं और वहींके दिमागसे निकली हैं न, जब पंचरुखी मिलके लिये मसीने मँगाने लगे तो उस वक्त ख्याल किया था कि यह स्वदेसी है या विदेसी? हिन्दुस्तानमें सतजुगसे क्या अखबार निकलते आये थे जो बिड़ला लाखों रुपया लगाकर "हिन्दुस्तान टाइम्स" (दिल्ली), "सर्च लाइट", (पटना), "लीडर" (इलाहाबाद), "(हिन्दुस्तान" (दिल्ली) जैसे रोजाना अखबारोंको चला रहे हैं।

दुखराम—यह अखबार क्यों चलाते हैं भैया ?

भैया—सेठोंके दरवाजेपर दो ही सबद लिखे रहते हैं दूक्खू भाई "लाभ-सुभ" लाखों रुपया लगाते और लाखों रुपया पैदा करते हैं। यह बात तो हुई है, लेकिन एक इससे भी बड़ा नफा है।

दुखराम—इससे बड़ा नफा क्या है भैया ?

भैया—अखबार तोप, टंक और हवाई जहाज से भी बढ़कर खतरनाक हथियार हैं। बिड़लाके अखबार तो अभी तीस-तीस, चालिस-चालिस हजार तक छपते हैं, लेकिन बिलायती करोड़पतियोंके अखबार पन्द्रह-पन्द्रह सोलह-सोलह लाख रोजाना छपते हैं। उनमें जो कुछ लिखा जाता है, वह अपने मतलबका ख्याल करके। किसानोंके ऊपर जमींदार जुलुम कर रहा है, उनकी जमींन छीन लेना चाहता है। किसान जीविका छोड़ते नहीं हैं, जमींदार उन्हें गुन्डोंसे पिटवाता है। किसानों की ओर से इसकी खबर अखबारोंमें भेजी जाती है, जोंकोंका अखबार उसे क्यों छापने लगे ? वह छापेगा जिमींदारीकी ओरसे भेजी गई खबरको जिसमें किसानों को गुण्डा-बदमास कहा गया है। किसान पिटे हैं, घायल हो गये हैं, कोई मर भी गया है, अभी थानेमें खबर भी नहीं पहुँचने पाई कि राजधानीमें जोंकोंके अखबारने जमींदारों की बात छाप दी। सूबाके पुलिसके बड़े अफसरने उसे पढ़ लिया। कलट्टर-मजिट्टरने उसे पढ़ लिया। एक तो वह स्वयं जोंकोंकी जातिके हैं, दूसरे उन्हें खबर भी एक ओरकी मिली है। अब वह मनमें बैठा लेंगे कि किसान जरूर बदमास हैं। इसी तरह कोई कारखानेवाला जुलुम कर रहा है, मजूर अपनी तकलीफ लिखकर भेजते हैं, तो जोंकोंका अखबार उन्हें छापता नहीं। कारखानेवाला लारी दौड़ाकर कितनोंको घायल और एक मजूर मार भी डालता है, लेकिन वह मजूरोंके खिलाफ जो कुछ लिखके भेजता है, वह सब जोंकवाले अखबारमें छपता जाता है, हाकिम और दूसरे भोले-भाले पढ़ने वाले एक ही ओरकी बात सुन पाते हैं और उसे ही सच्ची मान लेते हैं।

दुखराम—तब तो भैया यह अखबार नहीं, हम लोगोंके गलेकी फाँसी हैं।

भैया—और जोंकोंके अखबार स्वदेसी धरमका खूब प्रचार करते हैं। किसी सेठने निहायी (अहरन) की चोरी की है, और सुईका दान दिया है। बस सुई के दानको सेठकी तसवीर देकर बड़े-बड़े अच्छरोंमें छापा जायगा, भोली-भाली जनता समझेगी कि सेठ बड़ा धरमातमा, बड़ा दानी है, हे भगवान तुम इसकी रच्छा करो। जब लाखों आदमी अन्न बिना मर रहे, हैं उस वक्त कोई पागल या मक्कार सैकड़ों मन अनाज और पचासों मन घी आगमें फूँक देता है, उसकी भी खबर खूब गोल-मटोल अच्छरोंमें छापी जाती है, भोली-भाली जनता समझती है कि अब भी बड़े-बड़े धरमात्मा दुनियांमें हैं। अब भी जगका अलोप नहीं हुआ।

दुखराम—कितना बड़ा फरेब।

भैया—किसीने झूठी-सच्ची खबर उड़ा दी कि दिल्लीमें ऐसी लड़की पैदा हुई है, जो अपने पहले जनमकी बात बतलाती है। फिर महीनों तक जोंकोंके अखबार उसके बारेमें लिखते रहेंगे। कितने ही लोग कसम खाकर गवाही देंगे, वह भी छपेगी। किसीने उसके खिलाफ लिखा तो नहीं छापा जायगा। जोंकोंको तो यह मनवाना है कि आदमी मरकर फिर दुनियामें जनम लेता है, और जैसा करम वैसा फल। सेठ लोगों ने

पहले जनम में अच्छा करम किया था, इसीलिये वह आज करोड़पती बने हैं। जोंकोंके अखबारों में जोतिस की बातें भी छपती हैं, जोतिसी लोग बालकी खाल निकालते हैं, दुनियाका आगम (भविष्य) बतलाते हैं। उनके पत्रमें जोंकोंके मारनेवाले गरह कभी नहीं मिलेंगे। जोंकें उसे इसलिए छापती हैं कि भोली-भाली जनता समझे कि हमारे आगमका बनना-बिगड़ना अपने हाथमें नहीं गरहोंके हाथमें है; इसलिए जोंकोंके साथ लड़ने-झगड़नेसे कुछ नहीं मिलेगा। जोंकोंके अखबारमें तसवीरके साथ किसी एक नंबरके बदमास, लंपट, ठगका जीवन-चरित्र छपेगा और उसमें उसे बड़ा सिद्ध महात्मा बतलाया जायगा। भोली-भाली जनता उसे पढ़कर समझेगी, अब भी भगवानके दरसन करनेवाले महात्मा दुनियामें मौजूद हैं। अब भी भगवान हैं। और वह दुनियाकी खोज खबर लेते हैं, इसलिए छोड़ो दुनियाका झंझट और भगवानकी ओर लौ लगाओ।

दुखराम—दिलमें तो आग ही लग जाती है लेकिन तुम कहते हो दिमाग ठंडा रखना चाहिए, इसलिए मनको समझाता हूँ। इससे तो मालूम होता है कि सचमुच ही अखबार बड़ा जबर्जस्त हथियार है।

भैया—और दुक्खू भाई जोंकें जो किसानोंके घरोंमें दस पैसा रखवाने और बीस पैसा खानेका इंतजाम सोच रही हैं, तों फिर गाँव-गाँवमें नहीं, घर-घरमें अखबार आने लगेंगे। फिर जोंकोंके अखबार हजारों नहीं लाखों रोज छपेंगे। अभीसे बिड़ला मनसूबा बाँध रहा है कि सारे हिन्दुस्तानमें जगह-जगहसे हिन्दी, अँगरेजी और दूसरी भाखाओंमें अपना अखबार निकाले। सिंहानियाँ,डालमियाँ और दूसरे करोड़पति भी अब अखबारों की ताकतको समझने लगे हैं लेकिन दुक्खू भाई देखा न ? अखबार विदेसी चीज है, लेकिन उससे पूँजीपतियों को नफा है, उनसे उनकी ताकत बढ़ती है, इसलिए अब वह स्वदेसी हो गया। अमेरिका और बिलायतके दिमागसे वहाँके कारखानोंमें बनी छापेकी मसीन भी स्वदेसी हो गई। बिलायतके लोगोंने भाप और बिजलीवाले कारखानेको दिमागसे निकाला और उन्हें कायम करके हजारों मजूरोंका खून चूसना शुरू किया। वह लखपतीसे करोड़पती और करोड़पतीसे अरबपती हो गये। हिन्दुस्तानी सेठ जब उन्हीं कारखानोंको हिन्दुस्तानमें खोलकर करोड़पती बन गये तब उनको स्वदेसी-विदेसीका कुछ ख्याल नहीं आया। लेकिन जब बिलायती मजूरोंने अपने मालिकोंके खिलाफ मरकस बाबाकी जिस सिच्छाका सहारा लिया, उसीको जब हिन्दुस्तानके मजूर अपनाने लगे तो वह विदेसी बन गयी।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानी जोंकें यह भी कहती हैं कि हिन्दुस्तान धरमात्माओं का देस है, यहाँ मरकसकी सिच्छा नहीं चलेगी।

भैया—यह धरमात्माओंका देस है, इसमें क्या सक है। यहाँ १६०० बरस तक डेढ़ अरब औरतें सती के नामपर आगमें जलाई जाती रहीं। यहाँ सरग जाने के लिए लोग हिमालयमें गलते और अछयबटके बरगदसे त्रिबेनीमें कूदकर धरम कमाते थे। वहाँ १० करोड़ आदमियों को अछूत और जानवर बनाना धरमका सबूत है। यहाँ गायका पेशाब-पाखाना खाना धरम है! यहाँ औरतोंको कोई अधिकार न देना जरूरी समझते हैं, पत्थर, बन्दर, सुअर, कुत्ता, गदहा, उल्लू सबके लिए यहाँ आदमीका सर झुकनेके लिए तैयार है। यहाँ एक ओर बरहमचारीपनका ढोंग है, दूसरी ओर अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करनेमें भी पुन्य माना जाता है। यहाँ एक

ओर सराबको हराम कह करके भगवतीका जूठ मिलने पर पबित्तर समझा जाता है। यहाँ गाड़ीके गाड़ी पोथे पढ़के भी आदमी गदहा बनता है, भूगोल पढ़के भी हिमालयके पास सरग ढूँढ़ता है । सायंस पढ़के भी राहुके कारण चंदर गरहन, सूरज गरहन मानता है, और गंगामें नहाकर उद्धार करता है, मुँहसे "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ती" बोलते हैं, आदमीसे छू जानेसे, या छुआ रोटी-पानी खा लेने से पतीत हो जाना मानते हैं। सोहन भाई यह देस जरूर धरमात्माओंका है, लेकिन १० करोड़ अछूतों को धरमात्मा मानते हैं कि नहीं।

दुखराम—मानते तो उन्हें भी न धरम करनेके लिये मंदिरमें जाने देते ?

भैया—१० करोड़ औरतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मानते तो उन्हें भी जनेव देते।

भैया—कायथोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—उन्हें सराबी, कबाबी, सुद्दर कहकर हटा देते हैं।

भैया—राजपूतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मानते तो "रजपुत भगत न मूसल धनुही" कहके उन्हें भगत बनने के अंजोग न कहते ?

भैया—बंगाली बरहमनोंको धरमात्मा मानते हैं या नहीं ?

दुखराम—कन्ठी पहनकर जो मछली-मांस खाय, वह क्या धरमात्मा होगा भैया !

भैया—पंजाबी बरहमनको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मैं नहीं कह सकता भैया !

भैया—मैं कहता हूँ दुक्खू भाई, वह भी धरमात्मा नहीं, क्योंकि वह चौका-चूल्हा नहीं मानते और कहा के हाथकी रोटी-दाल खाते हैं। गौड़, कनौजिया, जुझौतिया, सनाढ्य बरहमन भी धरमात्मा नहीं हैं क्योंकि वह हल चलाते हैं। दक्खिनवाले बरहमन भी धरमात्मा नहीं हैं, काहेसे कि वे मामा, बुआ, बहिन तककी लड़कीसे ब्याह करते हैं।

दुखराम—तो भैया, हिन्दुस्तानमें धरमात्मा है कौन ? यह तो प्याजके छिलके की तरह सब अधरमी ही बन जाते हैं।

भैया—अच्छा जो मोट़-मोटी धरमात्मा मान लो तो मानना पड़ेगा कि यहाँ-के हिन्दुस्तान के हिन्दू भी धरमात्मा हैं, मुसलमान भी धरमात्मा हैं, ईसाई भी धरमात्मा हैं, बौद्ध भी धरमात्मा हैं। फिर तो रूसमें ईसाई धरमात्मा हैं, मुसलमान धरमात्मा हैं, यहूदी धरमात्मा हैं। वहाँ भी उनके बड़े-बड़े मठ, गिरजा और मसजिद बनी हैं। वहाँ मुसलमान को तो, बल्कि कई बड़े-बड़े पीर समरकन्द-बुखारामें पैदा हुए।

दुखराम—तब उनका यह कहना निलज्जताई ही है न कि मरकस बाबाकी सिच्छा रूसमें इसलिए चली कि वहाँके लोग धरमात्मा नहीं थे।

१५. ग्यान और भाखा

सोहनलाल—दुक्खू मामा ! अभी तक हमने भैंया से बहुत सँभल-सँभल के सवाल पूछा है, अब एकाध अपने मनका भी सवाल पूछ लेने दो ।

दुखराम—पूछो भैंने ! हम भी सुनेंगे, लेकिन दो-चार आना हम भी समझें, ऐसे पूछना ।

सोहनलाल—नहीं समझ पाओगे दुक्खू मामा, तो दो ही चार आना भर, नहीं तो सभी समझोगे । अच्छा तो भैंया ! जोंकें जो कहती हैं, कि जितना ग्यान-विग्यान दुनियामें है, वह सब हमने ही पैदा किया है, हम न रहेंगे तो दिया बुझ जायगा ।

भैंया—हम कब कहते हैं कि जोंकोंने कभी अच्छा काम किया ही नहीं। लेकिन जो दिया बुझ जानेकी बात कहते हैं, वह गलत है । हम दिया बुझने नहीं देंगे। हमारे कमेरोंके राजमें ग्यान-विज्ञान बहुत चमकेगा । वहाँ ग्यानके बिना कुछ भी हो नहीं सकता । जोंकोंके राजमें आज अपढ़-अबूझ हलवाहेसे भी काम चल सकता है, लेकिन हमारे लिए तो मोटर-हल चलानेवाले हलवाहे चाहिये । राज सँभालते ही पहला काम हमें यह करना पड़ेगा कि देस भरमें कोई बेपढ़ नहीं रहे ।

दुखराम—लेकिन भैंया ! कितने लोगोंमें तो जेहन ही नहीं होती, वह कैसे पढ़ेंगे ?

भैंया—जोंकोंकी जैसी पढ़ाई होगी, तब तो सबको पढ़ू नहीं बना सकते। जोंकें विद्या पढ़ानेके लिए भाखा पढ़ाती हैं । अपनी भाखा पढ़ावें तो उतनी मेहनत नहीं, लेकिन वह पढ़ाती हैं अंगरेजी, फारसी, अरबी, संस्कीरत । जो हम देस भरको अंगरेजी पढ़ा देनेकी परितिग्या करेंगे तो बस सात जनमका काम है दुक्खू भाई । हम तो बल्कि भाखा पढ़ायेंगे ही नहीं । क्या कोई आदमी गूँगा है, कि भाखा पढ़ाये। लोग कथा-कहानी कहते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, देस-बिदेसकी बात बतलाते हैं, सब अपनी ही भाखामें कहते हैं न ? बस हम पहले तो यही कहेंगे कि दो-तीन दिनमें अच्छर सिखला देंगे । अड़तालिस अक्षर तो कुल हुई हैं । दो-तीन नहीं तो पाँच-छः दिन लग जायेंगे, फिर आदमी जो भाखा बोलता है, उसीमें छपी किताब हाथमें थमा देंगे ।

दुखराम—ऐसा हो भैंया ! तब पढ़ना काहेका मुस्किल हो ।

भैंया—ढोला-मारू, सारंगा-सदाब्रिच्छ, लोरिकी, सोरठी, नैका, कुअंर विजयमल, बेहुलाके कितने सुन्दर-सुन्दर खिस्से और गाने हैं । इन्हींको छापके दे दिया जाय, तब कहो दुक्खू भाई !

दुखराम—तो बूढ़े सुग्गे भी राम-राम करने लगेंगे । क्या किसीको पढ़नेमें परिश्रम मालूम होगा ।

भैंया—बिद्दा अलग चीज है दुक्खू भाई ! भाखा अलग चीज है । लेकिन जोंकें हमको सिखलाती हैं कि भाखा पढ़ लेना ही ग्यान है । यह ठीक है, कि ग्यान

सिखाते वखत उसे किसी भाखामें बोला जाता है लेकिन अँगरेजीमें काहे बोला जाय, अरबी-संसकीरतमें काहे बोला जाय, उसे अपनी बोलीमें काहे न बोला जाय।

सोहनलाल—लेकिन बोली तो पाँच कोसपर बदल जाती है, ऐसा करनेसे तो हजारों भाखा बन जायेंगी, कौन-कौनमें किताब छापते फिरेंगे ?

भैया—पाँच कोस नहीं जो ५ अंगुलपर ही भाखा बदल जाय, तो भी हमको उसीमें किताब छापनी पड़ेगी। तभी हम दस बरिसके भीतर अपने यहाँ किसीको बेपढ़ नही रहने देंगे।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दी तो अपनी भाखा है।

भैया—जिसकी अपनी भाखा हो, उसे हिन्दी हीमें पढ़ाना चाहिए, तुम्हारे बनारसमें सब लोग घरमें हिन्दी ही बोलते हैं ?

सोहनलाल—किताब वाली भाखा तो नहीं बोलते भैया ? बोलते तो हैं वही बोली जो बनारस जिलाके गाँवमें बोली जाती है।

भैया—जो क-ख अच्छी तरह सिखा दिया जाय, तो अपनी बोली में आदमी कितने दिनोंमें सुद्ध-सुद्ध लिखने लगेगा ?

सोहनलाल—अपनी बोलीको तो भैया ! असुद्ध कोई बोल ही नहीं सकता। अच्छरमें चाहे भले ही एकाध गलती हो जाय, लेकिन ब्याकरनकी गलती कभी नहीं होगी।

भैया—और हिन्दी कितना दिन पढ़नेपर ब्याकरनकी गलती नहीं करेगा।

सोहनलाल—कोई-कोई आदकी तो भैया जिन्दगी भर पढ़नेपर भी न सुद्ध बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं।

भैया—लेकिन अपनी बोलीको तो आदमी चाहे भी तो असुद्ध नहीं बोल सकता, यह तो मानते ही हो। अच्छा जिनगी भर हिन्दी न बोलनेवालोंकी बात छोड़ो। मामूली तौरसे सुद्ध हिन्दी लिखने-बोलनेमें कितना समय लगेगा। हमारे गाँवके एक लड़केको ले लो, जिसकी भाखा हिन्दी नहीं बल्कि भोजपुरी या बनारसी है।

सन्तोखी—मैं कहूँ भैया। हमारे यहाँ लड़के आठ बरस पढ़के हिन्दी मिडिल पास करते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं।

भैया—सोहन भाई ? तुम इन्ट्रेन्स पासवालोंकी बात कहो।

सोहनलाल—जब पूछते ही हो, तो मैं बतलाता हूँ कि कितने तो बी० ए० पास करके भी सुद्ध हिन्दी लिख-बोल नहीं सकते।

भैया—न मैं आठ साल पढ़े मिडिलवालेको लेता हूँ, न बी०ए० की चौदह सालकी पढ़ाई। मैं इतना समझता हूँ, कि आदमीकी जेहन बहुत खराब न हो और भाखा ही भाखा पड़ता रहे, तो हिन्दीमें पाँच बरस तो जरूर ही लगेंगे। लेकिन हिसाब और दूसरी चीज साथ ही साथ पढ़नी हो, तब काम नहीं बनेगा, हमारे मरदसोंमें जो हिसाब, जुगराफिया सब कुछ अपनी ही भाखामें पढ़ना हो, तो पाँच बरस क्या भाखा सीखनेमें एक दिन भी नहीं देना होगा। ग्यान है हिसाब, जुगराफिया, इतिहास, खेतीकी बिद्दा, इंजनकी बिद्दा, सड़क पुल-मकान बनानेकी बिद्दा और पचीसों तरहकी बिद्दा। ग्यान

पढ़ानेके लिए जब हम यह सरत रख देते हैं, कि जब तक तुम पराई भाखा न पढ़ोगे, तब तक ग्यानमें हाथ नहीं लगा सकते, तब वह बहुत मुश्किल हो जाती है।

सन्तोखी—हम लोगोंकी भाखा तो भैया ! लोग गँवारू कहते हैं।

भैया—"आइल-गइल", "आयन-गयन", "आयो गयो", "एल-गेल" बोलनेसे तो गँवारू भाखा हो गई, और "आये-गये" कहनेसे वह बहुत अच्छी भाखा होगी और "कम्-वेन्ट" कहनेसे वह बहुत अच्छी भाखा हो गई काहेसे वह साहेब लोगोंकी भाखा है। साहेब लोगोंका डंडा सिरपर था, उनका राज था, इसलिए अँगरेजी बोली बहुत अच्छी भाखा थी, वह देवताओंकी भाखासे भी बढ़कर थी, जब गँवार किसान मजूर अपना पंचायती राज कायम कर लें तो क्या तब भी उनकी भाखा गँवारू रहेगी ? गँवारू कह देने से काम नहीं चलेगा। जिस बखत इसी गँवारू भाखामें बिद्दा पढ़ाई जायेगी, उसीमें हजारों किताबें छपेंगी, उपन्यास, कविता, कहानी सब कुछ गँवारू भाखामें मिलने लगेगा। रोजाना, हफ्तावार, माहवारी, अखबार निकलने लगेंगे, तब इस भाखाको कोई गँवारू नहीं कहेगा।

दुखराम—क्या ऐसा होगा भैया ?

भैया—जो तुम लोग हमेसा गँवार बने रहना चाहोगे, तो नहीं होगा; जो तुम हमेसा गुलाम बने रहोगे, तो भी नहीं होगा; जो हिन्दुस्तान के आधे आदमियोंको बेपढ़ा बनाये रखना है, तो नहीं होगा, नहीं तो इसमें अनहोनी कौन-सी बात है ? बल्कि अपनी बोली पकड़नेसे तो छः बरसका रस्ता एक दिनमें पूरा हो जाता है।

सोहनलाल—लेकिन अपनी-अपनी बोली पढ़ाई जाने लगी, तो दरभंगा, बनारस, मेरठ और उज्जैनके आदमी एक जगह होनेपर कौन-सी भाखा बोलेंगे ?

भैया—आज भी गौहाटी, ढाका, कटक, पूना, सूरत, शिमलाके आदमी एकट्ठा होनेपर क्या बोलते हैं ?

सोहनलाल—हिन्दी बोलते हैं, टूटी-फूटी हिन्दी से काम चला लेते हैं।

भैया—लेकिन इकट्ठा होने का ख्याल करके उनसे यह नहीं न कहा जाता कि तुम असामी, बँगला, उड़ीया, मराठी, गुजराती, छोड़के सिरफ हिन्दी पढ़ो, नहीं तो कभी जो इकट्ठे होओगे तो बात करनेमें मुसकिल पड़ेगा। जैसे उन लोगोंको अपनी भाखामें सब कुछ पढ़ाया जाता है, उसी तरह दरभंगावालोंको मैथिली, भागलपुरवालोंको भागलपुरिया (अंगिका), गयावालोंको मगही, छपरावालोंको छपरही (भोजपुरी), लखनऊवालोंको अवधी, बरैलीवालोंको बरैलवी (पंचाली), गढ़वालवालोंको गढ़वाली, मेरठवालोंको मेरठी (खड़ी-बोली या कौरवी), रोहतकवालोंको हरियानवी (यौधेयी), जोधपुरवालोंको मारवाड़ी, मथुरावालोंको व्रजभाखा, झाँसीवालोंको बुन्देलखंडी, उज्जैनवालोंको मालवी, उदयपुरवालोंको मेवाड़ी, मालवाड़वालोंकी बांगड़ी, खँडुआवालोंको नीमाड़ी, छत्तीसगढ़वालोंको छत्तीसगढ़ी—सबको अपनी-अपनी भाखामें पढ़ाया जाय।

सोहनलाल—पढ़ानेमें तो सुभीता होगा भैया ! हर आदमीका पाँच-पाँच साल बच जायेगा और डरके मारे जो बीचमें पढ़ाई छोड़ बैठते हैं, वह भी बात नहीं होगी, लेकिन हिन्दी भाखावालोंका एका टूट जायगा।

भैया—एका टूटनेकी बात तो इस बखत नहीं कह सकते सोहन भाई ! इस बखत तो एका सिर्फ दिमागमें है । मध्य देस अलग है,उत्तर प्रदेश और बिहार भी अलग है, हरियाना भी पंजाबमें है ।

सोहनलाल—लेकिन हम तो चाहते हैं कि सबको मिलाकर हिन्दका एक बड़ा सूबा बना दिया जाय ।

भैया—सूबा नहीं पंचायती राज, गणराज और हमारा पंचायती गणराज रहे, जो एक नहीं बहुतसे पंचायती राजोंका संघ हो । जो लोग चाहेंगे तो दरभंगासे बीकानेर, और गंगोत्तरीसे खँडुवा तकका एक बड़ा प्रजातन्त्र संघ कायम कर लें जिसके भीतर पचीसों प्रजातन्त्र रहें ।

सोहनलाल—तो भैया ! मल्ल प्रजातन्त्रकी बोली मल्लिका रहेंगी और मालव प्रजातन्त्रकी मालवी, यौधेय (अंबाला कमिश्नरी) प्रजातन्त्रकी हरियानवी, फिर जब वह हिन्द प्रजातन्त्र संघकी बड़ी पंचायत (पार्लमिंट) में बैठेंगे तो किस भाखामें बोलेंगे ?

भैया—हिन्दीमें बोलेंगे और किसमें बोलेंगे ? इन्हींकी बात क्यों पूछ रहे हो, मदरास, कालीकट, बेजवाड़ा, पूना, सूरत, कटक, कलकत्ता, और गोहाटीके मेम्बर भी जब सारे हिन्दुस्तानके प्रजातन्त्र संघकी बड़ी पंचायतमें इकट्ठा होंगे, तो क्या वह अँगरेजीमें लेच्चर देंगे ? अँगरेज जोंकोंके जुवाके उतार फेंकनेके साथ ही अँगरेजीमें भाखाका राज हिन्दुस्तानमें खतम समझो । तब हिन्दुस्तानमें एक दूसरे के साथ बोलने-चालने और सारे देसकी सरकारके काम-काजके लिए एक भाखा हिन्दी ही होगी ।

सोहनलाल—तो भैया । हिन्दी भाखाको तुम उजाड़ना नहीं चाहते हो न ।

भैया—हम उजाड़ेंगे कि उसे और मजबूती से बसावेंगे । सारे हिन्द प्रजातन्त्र-संघकी वह संघ भाखा होगी । मदरसोंमें जैसे अंगरेजीके साथ दूसरी भाखा पढ़ाई जाती है, वैसे ही बारह बरसकी उमरसे ३-४ साल तक लड़कोंको हर रोज एक घंटा हिन्दी पढ़ाने का कायदा बना दें । उस बखत हिन्दीका जोर और बढ़ेगा कि घटेगा ?

सोहनलाल—आज तो हिन्दी ही हिन्दी सब कुछ है, फिर तो ब्रिज, मालवी, मैथली, न अपने घरकी मालकिन बन जायेंगी ? फिर बेचारी हिन्दीको जब कोई बुलायेगा, तभी न चौखटके भीतर आयेगी ।

भैया—आजकल यह कहना तो गलत है कि हिन्दी सब कुछ है, काहेसे कि सब कुछ तो अब अँगरेजी है । दूसरे हिन्दीके चौखटके भीतर बैठानेकी बात भी ठीक नहीं है । मेरठ कमिश्नरीके सवा तीन जिले (मेरठ,मुज्जफरनगर, सहारनपुर, बुलंदसहर $\frac{1}{4}$) की भी तो जनम भाखा वही है । उसक बाद सारे हिन्दुस्तानमें घर-घरमें उसकी आवभगत रहेगी ।

सोहनलाल—तो लोग अपनी-अपनी भाखाका प्रजातन्त्र बना लेंगे, फिर तो हिन्दुस्तान सौ टुकड़ोंमें बँट जायेगा ।

भैया—सोवियतकी आबादी हम लोगोंसे आधी है, २० करोड़ ही है, लेकिन वहाँ तो १८२ भाखा बोली जाती है और सबका अपना छोटा बड़ा पंचायती राज है । तुम चाहते हो कि पाँचों उंगलियोंको खुला नहीं रखा जाय, बल्कि मिलाके सी दिया

जाय, लेकिन इससे हाथ मजबूत नहीं होगा सोहन भाई ! सोवियत १८२ प्रजातन्त्र-वाला होनेपर भी एक प्रजातन्त्र है। हिन्दुस्तान भी १०० प्रजातन्त्रोंवाला एक बड़ा प्रजातन्त्र हो तो कौन-सी बुरी बात है।

सोहनलाल—अच्छा तो यही होता कि सारे हिन्दुस्तानका एक ही प्रजातन्त्र होता।

भैया—अच्छा तो होता, कि हिन्दुस्तानके लोग एक ही बोली बोलते होते लेकिन वह तो अब हमारे हाथमें नहीं है। क्या सारे हिन्दुस्तानको तुम एक सूबा बनाना चाहते हो ?

सोहनलाल—नहीं सूबा तो हम अलग-अलग चाहते हैं। बंगाल, उड़ीसा, सबको मिटाकर एक सूबा तो बनाया नहीं जा सकता।

भैया—अनेक सूबोंको तो तुम मानते ही हो, उसका मतलब ही है कि अनेक प्रजातन्त्र हिन्दुस्तानमें रहें और हिन्दुस्तान प्रजातन्त्रका संघ रहे। अब झगड़ा यही है न कि १४ प्रजातन्त्र रहें या सौ ? मैं कहता हूँ कि उतने ही प्रजातन्त्र हों जितनी भाखा लोग बोलते हैं और अपने-अपने प्रजातन्त्रमें पढ़ाई-लिखाई, कचहरी पंचायतका सब कारबार अपनी भाखामें हो, लेकिन सौ प्रजातन्त्र होनेका मतलब यह तो नहीं है कि उनका एक दूसरेसे कोई वास्ता नहीं और कछुएकी तरह मूँड़ी समेटकर अपनी खोपड़ी में घुस जाएँ। हमारे महाप्रजातन्त्रके ये सभी प्रजातन्त्र हाथ-पैर नाक-कानकी तरह अंग हैं। सब एक दूसरेकी मदद करें। जब रेलकी लाइनें आजसे भी ज्यादा बढ़ जायेंगी; पक्की सड़कें गाँव-गाँवमें पहुँच जायँगी। हर प्रजातन्त्रमें हवाई अड्डे होंगे। लोगोंकी जेबमें पैसा रहेगा। सालमें महीने डेढ़ महीनेकी सबको छुट्टी मिलेगी। तो बताओ लोग कुएँके मेढक बनकर बैठे रहेंगे या अपने महादेसमें घूमने-फिरने जायेंगे ?

दुखराम—घूमने फिरने जायँगे भैया ! देस-परदेस देखनेका किसका मन नहीं कहता, नातेदारों रिस्तेदारोंसे मिलनेकी किसकी तबियत नहीं होती।

भैया—जनम भाखाको कबूल करनेसे हिन्दीको नुकसान होगा यह ख्याल गलत है सोहन भाई ! उस बखत बनारसवाले कानपुरवालोंसे बहुत नगीच रहेंगे, टेलीफून भी नगीच कर देगा, हवाई जहाज भी और जेबका पैसा भी। हिन्दी सीखना लोग बहुत पसन्द करेंगे, क्योंकि सारे देसकी साझेकी भाखा वही है, फ़िर हिन्दीमें पोथियाँ सबसे अधिक निकलेंगी। आजकल देखते हैं न हिन्दी के सिनेमा फिलम जितने निकलते हैं, उतने बँगला, मराठी, तामिल, तेलगू, सारी भाखाओंके मिलके भी नहीं निकलते। हिन्दी भाखाकी किताबोंकी भी वही हालत होगी; उसके पढ़नेवाले देस भरमें मिलेंगे मुझे उमेद है, कि जैसे चौपटाध्याय फिल्म हिन्दीमें निकल रहे हैं, वह किताबें वैसी नहीं होंगी।

सोहनलाल—चौपटाध्याय फिलम क्यों कह रहे हो भैया ? जो चौपटाध्याय होते तो इतने लोग देखने क्यों जाते और फिलमवालोंको लाखों रुपयेका नफा कैसे मिलता ?

भैया—देखनेवाले तो इसलिए जाते हैं, कि दूसरा अच्छा फिलम है कहाँ ? दूसरे नाच-गाना और सुन्दर मुँहके देखनेकी आदत लोगोंकी पहिले हीसे है, बस

वह समझते हैं, कि चलो दो आनेमें तवायफका नाच ही देख आएँ, लेकिन सिरिफ सुन्दर मुंह और सुरीले कंठ तकमें ही फिलमको खतम कर देना अच्छी बात नहीं है, सोहन भाई ! उसमें बातचीत, हाव-भाव और तसबीरोंसे दुनिया का असली रूप दिखलाना होता है, साथ ही साथ लोगोंको रस्ता भी दिखलाना होता है । लेकिन रस्ता दिखलानेकी बात छोड़ दो, काहेसे कि जोंकोंके राजमें वह अनहोनी बात है । लेकिन हिन्दी फिल्मोंमें सब चीजोंमें बेपरवाही देखी जाती है । फिल्म बनानेवाले तो जानते हैं कि उनके पास रुपया चला ही आयेगा, फिर क्यों परवाह करें ?

सोहनलाल—हिन्दी फिलमों में आपको क्या दोस मालूम होता है भैया ?

भैया—पहले गुन बताता हूँ तब दोस बताऊगा । गुन तो यह है कि हमारे फिलमके खिलाड़ी अभिनेता और खिलाड़िनें (अभिनेत्रियाँ) अपना करतब दिखलानेमें दुनियाके किसी भी खेलाड़ी-खेलाड़िनीसे कम नहीं हैं । और अच्छे फिलम के लिए यह बहुत अच्छी चीज है । वह अपनी बातचीत, हाव-भाव, गीत-नाच सबमें अच्छे हैं—मैं सभी खेल-खेलाड़िनोंके बारेमें नहीं कहता, लेकिन अच्छे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंमें यह सब गुन और इन्हीं गुनोंका परताप है, कि मदरास, कालीकट और बेजवाड़ामें भी लोग अपनी भाखाके फिलमोंको छोड़कर हिन्दी फिलमोंको देखने आते हैं. चाहे बेचारे फिल्मकी भाखा को नहीं समझ पायें । मैं समझता हूँ कि ये हमारे खेल-खेलाड़िनोंके गुनका ही परताप है । पैसा बनाने वाले फिल्म-मालिकोंकी चले तो शायद उसमें भी कुछ खराबी कर दें ।

सोहनलाल—और दोस क्या है भैया !

भैया—भाखा तीन कौड़ीकी होती है, न उसमें लचक, न कहावत और न गहराई होती है । यह क्यों होता है ? बहुतसे फिलम-मालिक भाखा जानते ही नहीं, लेकिन तो भी अपनेको महाविद्वान समझते हैं । एक तो उनके भाखा लिखनेवाले भी बहुतसे उन्हींकी तरह हैं, और जो कोई अच्छा भी लिखता हो, तो अच्छेको बुरा और बुरेको अच्छा कहनेका अख्तियार फिलम तैयार करने वाले अपने हाथमें रखते हैं । समझ लो पूरी दमद-सोधन हो जाती है ।

सोहनलाल—दमद-सोधन क्या है भैया ?

भैया—किसी पंडितने एक मुरुखसे अपनी लड़की ब्याह दी । दामाद एक दिन ससुरार आया । छापाखानासे पहिलेकी बात है, उस वक्त किताबोंको उतारनेवाले मामूली पढ़े-लिखे लेखक हुआ करते थे । वह मजूरी लेकर किताब उतार दिया करते थे । पंडित लोग किताब लेके फिर पढ़ते और जो असुद्ध होता, उस पर पीला हड़ताल फेरते और जिसको ज्यादा ध्यानमें रखना होता, उसे गेरूसे लाल कर देते । पंडितके दामादने पोथी, हड़ताल और गेरूको देखा । उन्होंने पोथीको हाथमें ले लिया । पंडिताइनको अपने दामाद पर बहुत गरब था । उन्होंने समझा कि दामाद भी बड़ा पंडित है और उससे कहा—"पंडित गेरू और हड़तालसे किताबको सोध रहे हैं । तुम भी सोधते होगे बाबू !" दामाद कब पीछे रहनेवाले थे । उन्होंने कहा—"हाँ अइआ ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।" फिर जहाँ मन आया हड़ताल लगाया, जहाँ मन आया गेरू. पोथीकी दमद-सोधन हो गई ।

सोहनलाल—तो इसमें फिलम पैदा करनेवालोंका ज्यादा दोस है या भाखा लिखनेवालोंका ।

भैया—फिलम पैदा करनेवालोंका बहुत बड़ा दोष है, उनमें खुद लियाकत नहीं है और न लायक आदमियोंको चुन सकते हैं । भाखा लिखनेवालोंमें जो थोड़ेसे अच्छे भी हैं, उनमें भी एक बड़ा दोस है । वह हिन्दी या उर्दू की किताबी भाखा लिखते हैं । किताबसे पढ़के सीखनेवालेकी भाखामें जीवट नहीं होता और सहरोंमें जो थोड़े-बहुत बाबू लोग अपने घरोंमें हिन्दी भाखा बोलते हैं, वह भी किताबी भाखा जैसी ही होती है ।

सोहनलाल—तो जीवटवाली भाखा कौन बोलते हैं भैया ?

भैया—मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुरके जिलोंके गँवार ।

सोहनलाल—तब तो फिलमकी भाखा लिखनेवालोंको भाखा सीखनेके लिए इन गँवारोंके पास जाना पड़ेगा ?

भैया—उनके चरनमें जाकर बैठना पड़ेगा । हिन्दी भाखाको किताबवालोंने नहीं पैदा किया, बल्कि इन्हीं गँवारोंने पैदा किया । हिन्दी पढ़ानेवालोंने सैकड़ों बरस पहले उन गँवारोंसे भाखा तो ले ली लेकिन भाखामें जीवट लानेके मुहाविरे, कहावतें, सबदोंका तोड़ना-मरोड़ना और उन्हें मनमाने तौरसे रखना इत्तादि बातें नहीं सीखीं; इसलिए हिन्दी भाखामें वह चमत्कार नहीं आ सका । किताब पढ़ने में तो किसी तरह आदमी बरदास भी कर लेगा, लेकिन नाटककी बातचीत में इससे काम नहीं चल सकता ।

सोहनलाल—तो भैया ! तुमने कोई फिलम ऐसा नहीं पाया, जिसमें कुछ जीवट वाली भाखा दिखाई दे ।

भैया—मैंने सिर्फ एक फिलम ऐसी देखा है जिसकी भाखा मुझे पसंद आई, वह थी—"जमीन ।" मैं समझता हूँ जब तक फिलम पैदा करनेवाले अपनेको सब कुछ जाननेवाला मानना नहीं छोड़ेंगे और जब तक भाखा लिखनेवाले मेरठके उन गँवारोंके चरनोंमें नहीं बैठेंगे, तब तक यह दोस नहीं जायेगा ।

सोहनलाल—और दूसरे दोस क्या हैं भैया ?

भैया—दूसरे दोस फिलम पैदा करनेवालोंका चाहे उन्हें उनका अंधापन कह लो, चाहे "कम दाम ज्यादा नफा" का ख्याल समझ लो, चाहे फिलम मालिकोंका अपने घरके पास ही फिलम बनानेका हठ समझ लो । हिन्दीके फिलम बम्बई या कलकत्तामें ही तैयार किये जाते हैं । वहीके आसपासके गाँवों, पहाड़ों, नदियोंका फोटो खींचा जाता है । वहाँ न हिन्दी बोलने वाले गाँव हैं, न हिन्दीवालों के रीति-रिवाज, कपड़े-लत्ते । इसका फल यह होता है कि सब चीजें बनावटी दीख पड़ती हैं । बहुत सी चीजोंको तो वह आने नहीं देते । "जमीन" की तसवीरोंमें भी यह दोष मौजूद है । यह दोस बँगला, मरहठी या तामिल फिलमोंमें नहीं पाया जाता, काहेसे कि उनमें उन्हीं गाँवों, नदियों, पहाड़ों और लोगोंकी तसवीरें ली जाती हैं, जो उस भाखाको बोलते हैं। हिन्दी फिलमोंका यह दोस तब तक दूर नहीं होगा, जब तक देहरादून, कालसी जैसी जगहोंमें फिलमवाले अपने डंडा-कंडा उठाके नहीं आ जाते ।

सोहनलाल—और कौन दोस है भैया ?

भैया—हिन्दी फिलमोंकी सारी तसवीरें दो एक मीलके छोटेसे घरोंमें घूमती रहती हैं, वह विसाल नही होतीं। नदियों, पहाड़ों, खेतों, गाँवोंका जो विसाल रूप हमें मिलना चाहिये, उसे नहीं पाते। क्या जाने यह पैसा बचानेके ख्यालसे होता होगा।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—हस्तिनापुरके पास गंगाका विसाल कछार है, वहाँ सैकड़ों गायें, भैंसें चरती हैं, चरवाहे मस्त होकर गाना गाते हैं, गंगामें मल्लाह नाव खेता है, और अपनी तानसे सारी मेहनत भूल जाता है। धोबी, कुम्हार सबके अपने-अपने गीत, अपने-अपने बाजे, चित्र-विचित्र नाच हैं। सहरोंमें भी औरतोंके ब्याह और दूसरे वक्त के अपने खास-खास नाच और नाटक हैं। इस तरहकी सैकड़ों चीजें हैं, जिनका बम्बई और कलकत्ताके फिलमोंमें कहीं पता नहीं है।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—मैं अब एक ही दोस और कहूँगा। हिन्दी भाखा हिमालय की गोदमें बोली जाती है। दुनियाके फिलमवाले हिमालयके सुन्दर पहाड़ों, नदियों, झरनों, देवदारके बनों और बरफीली चोटियोंको पाके निहाल हो जाते हैं; लेकिन हिन्दी फिलमवालोंके लिए वह कोई चीज नहीं। जापानके राजाकी राजधानी तोकियो है, लेकिन फिलमोंकी राजधानी क्योतो है, काहेसे कि क्योतोको थोड़ा-सा हिमालय का रूप मिला है। लेकिन हमारे आजके फिलमवालोंको इसका कभी ख्याल आयेगा, इसमें सक है।

सोहनलाल—तो भैया ! जो फिलम बनानेवाले मेरठ कमिसनरी के हिमालय वाले टुकड़ेमें आ जायँ, तो उनके बहुतसे दोस हट जायँगे ?

भैया—यह मैं मानता हूँ, लेकिन यह भी समझता हूँ, कि सेठ अपना घर छोड़ तपोवनमें थोड़े जाना चाहेंगे, वह पचास तरहका बहाना कर सकते हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि नफा तो इन्हें खूब हो ही रहा है और थोड़े ही खर्च में। लेकिन हम फिलम की बात करते-करते बहुत दूर चले गये सोहन भाई ! मैं कह रहा था हिन्दी भाखा के बारे में।

सोहनलाल—हाँ, तो तुम समझते हो, कि अपनी-अपनी भाखा को पढ़ाई की भाखा मान लेने पर हिन्दी को नुकसान नहीं होगा ? लेकिन भैया ! दुनिया को हमें और एक दूसरेके नगीच लाना है। मरकसबाबा तो सारी मानुख जाति को एक बिरादरी में देखना चाहते थे, फिर किसी संयोग से जो हिन्दी के नाते हिन्दुस्तान के आधे लोग एक भाखा में बंध गये हैं, उनको फिर तोड़-फोड़के अलग करना, यह तो पैर पकड़के पीछे खींचना है।

भैया—पैर पकड़कर पीछे खींचना नहीं है सोहन भाई ! यह हाथ पकड़कर आगे बढ़ाना है। जनम-भाखा में पढ़ाई करने पर दस बरसके भीतर ही हमारे यहाँ कोई अपढ़ नहीं रह जायगा। और एक दूसरी जगह जाने, आपसमें मिलनेसे, हिन्दी भाखा सभी लोग थोड़ी बहुत बोल लेंगे। और समझनेमें तो किसीको मुसकिल नहीं होगा, काहेसे कि इन सब भाखाओंमें बहुत से सबद एक हीसे हैं। कविता, कहानी, उपन्यासका

ढङ्ग भी एक सा रहेगा। हिन्दी पोथियोंकी उतनी ही ज्यादा माँग होगी, जितना ही अधिक इन भाखाओंके पढ़ने लिखनेवाले बढ़ेंगे। कमी इतनी होगी, कि आज हमारे कितने ही भाई यह समझते हैं कि अवधी, ब्रज, मालवी, बनारसी, मैथिली इत्तादि भाखायें कुछ दिनों में मर जाएँगी, उनको जरूर निरास होना पड़ेगा। निरास वैसे भी होना पड़ेगा, क्योंकि जनम भाखाओंको किताब की भाखा न भी बनाया जाय, तो भी सौ-पचास सालोंमें उन भाखाओं के मरते देखने की खुसी हमारे भाइयोंको नहीं मिलेगी। अभी उन्हें करना भी नहीं चाहिये, क्योंकि उन्होंने अपने भीतर अपनी जातिकी भाखा, समाज, विचार-विकास ओगैरहके इतिहासकी बहुत सी अनमोल सामिगरी रखी है। मैं जानता हूँ जो दुनियासे जोंकें उठ जायँगी, तो मानुख जाति जरूर एक होगी और फिर सबकी एक साझी-भाखा भी होगी। हो सकता है, कि एक साझी और एक-एक अपनी जनम-भाखा दो भाखाओंका रहना मुसकिल हो जाय। लेकिन वह अभी सैकड़ों बरसों की रात है। उस बखत तक हरेक भाखाके भीतर जितने रतन छिपे हुए हैं, सब जमा करके अच्छी तरह रख रख लिये गये रहेंगे। इसलिए किसी भाखाके नास होनेसे उतना नुकसान नहीं होगा।

सोहनलाल—लेकिन भैया! यह बोलियाँ अभी ऐसी नहीं हैं कि इसमें साइंस, विग्यानपर किताबें लिखी जायँ। हिन्दीने बड़ी मुसकिल से यह कर पाया है।

भैया—जो मान लें कि बनारसी बोलीमें साइन्सकी किताब नहीं लिखी जा सकती, तो उतने ही दिनों तक हिन्दीमें किताबें पढ़ेंगे, जब तक की बोली नाबालिगसे बालिग न हो जायगी। हिन्दी जैसी किसी भाखाकी किताब पढ़ना और उसमें लिखना-बोलना दोनोंमें बहुत फरक है—समझ लेना बहुत सहज है। अपनी बोलीके पढ़नेका मतलब यह नहीं है, कि हिन्दीको लोग छुयेंगे नहीं। दूसरी बात यह कि बनारसी, मालवी किसी भी भाखामें साइंस, इंजीनियरिङ्गकी किताबोंके लिखने में उतनी ही दिक्कत होगी, जितनी हिन्दी में। आखिर हिन्दीने भी साइन्सके सबदोंको संसकीरतसे लिया है, बँगला, गुजराती, मराठी भी संसकीरतसे ही सबदों को लेती हैं, फिर बनारसी, मैथिली, ब्रिज, मालवीने क्या कसूर किया है?

सोहनलाल—हिन्दी-उर्दू के बारे में तुम्हारी क्या राय है भैया?

भैया—मेरी राय क्या पूछ रहे हो, मैंने तो पहले ही कह दिया है, जिसकी जो जनम-भाखा हो, उसको उसी भाषा में पढ़ाना चाहिए। बनारसमें बहुतसे बंगाली भी रहते हैं, उन्हें बंगलामें पढ़ना होगा। मराठे भी हैं, उनको मराठीमें पढ़ना होगा। हाँ, कोई दो भाखा बोलनेवाला हो तो चाहे जिस पाठशालामें जाय। इसी तरह बनारस में जिस लड़केकी जनम भाखा उर्दू है, उसके लिए उर्दू मदरसा कायम करना होगा।

सोहनलाल—तो भैया तुम हिन्दी-उर्दूको मिलाके एक भाखा नहीं करना चाहते।

भैया—मिलाना हमारे बसकी बात नहीं हैं, दस-पाँच आदमी बैठकर भाखा नहीं गढ़ा करते। हिन्दी उर्दूके बनानेमें सैकड़ों बरस न जाने कितनी पीढ़ियोंने काम किया है। मैं जानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू भाखा मूलमें एक ही भाखा हैं। 'का, में, पर, से, इस, उस, जिस, तिस, ना, ता, आ, गा' दोनों हीमें एकसे हैं, खाली झगड़ा है उधार लिये सबदोंका। हिन्दीने संसकीरतसे सबदों को उधार लिया है और उर्दूने

अरबी और कुछ-कुछ पारसी से भी; लेकिन दोनोंने इतना अधिक उधार लिया है, कि अकबालकी कविताको समझनेवाला सुमित्रानन्दन पन्त की कविताको बिलकुल नहीं समझ सकता और सुमित्रानन्दन पन्तकी कविता जाननेवाला अकबालको बिलकुल नहीं समझ सकता। इसलिए मूलमें दोनों एक हैं, कहनेसे काम नहीं चलेगा। अकबाल और पन्त दोनोंके समझनेके लिए दोनों भाखाको अच्छी तरह पढ़ना होगा।

सोहनलाल—तो हिन्दू-मुसलमानोंकी भाखाओंके मिलने का कोई रास्ता है?

भैया—चोटियोंपर तो नहीं मालूम होता, लेकिन जड़में उसका झगड़ा ही नहीं है।

सोहनलाल—जड़ क्या है भैया?

भैया—जड़ यही है कि, जिसे जनम-भाखा कहते हैं, अवधी बोलनेवाले गाँवमें चले जाइये, जहाँ चाहे बामन देवता हों, चाहे मोमिन जोलहा, दोनों एक ही बोली बोलते हैं बनारस, छपरा, गुड़गाँव, थानाभवन के पास किसी गाँव में चले जाइये, किसानों-मजूरों की भाखा एक है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान।

दुखराम—वही जोंकोंसे जिनका बेसी रिसता-नाता नहीं है।

भैया—देखा ना सोहन भाई जड़में अपनी एक भाखा तैयार है, हिन्दू-मुसलमान दोनों कमेरे उसी भाखाको बोलते हैं और फिर उनका ना संसकीरतके साथ पच्छपात है, न अरबी-फारसीके साथ। यही दुक्खू भाईने जो अभी कहा "बेसी रिस्ता-नाता" इसमें बेसी और रिस्ता पारसी भाखासे आया है और नाता अरबी भाखा से। रिस्ता-नाता कहनेसे बिल्कुल निपढ़, गँवार बुढ़िया भी समझ लेगी, लेकिन "सम्बन्ध" कहनेसे उतना नहीं समझ पायेगी। हमने भी अपने इतने दिनोंके सत्संग में पाँच-छः सौ अरबी-फारसी सबदों को लिया है, और हिन्दीमें उसकी जगह अब सिरिफ संसकीरतके सबद ही लिखे जाते हैं। मैं समझता हूँ कि कोई आदमी समरकन्द बुखारा, से सात पीढ़ी पहले आया हो, लेकिन अब उसकी भेख-भाखा सब हिन्दूस्तान की है, तो वह हिन्दुस्तानी है। अपने पुरखा के सहर समरकन्द, बुखारा में जायगा तो वहाँ भी लोग हिन्दुस्तानी कहेंगे—आजकल समरकन्द, बुखारा, उजबेकिस्तान, सोवियत प्रजातन्त्रके अच्छे सहर हैं, उसी तरह जिन अरबी, पारसी सबदोंको निपढ़ गँवारोंने अपना लिया है और उनको वह अपने ढंगसे तोड़-मरोड़के बोलते हैं, वे सबद अब विदेशी नहीं, सुदेशी हैं। जिन संस्कीरत सबदोंको हमारे "गँवार" छोड़ चुके हैं, उनको फिरसे लादना ठीक भी नहीं

सोहनलाल—लेकिन भैया, इन गँवारोंने तो हजार-बारह सौ संसकीरतके, सबदों को निकालकर अरबीके सबद लिये हैं। 'हमेसा', 'दिक्कत', 'मुसकिल' 'मवस्सर,' 'अरज', 'गरज', 'लेकिन', 'बेसी', 'अमहक' (अहमक), 'इफरात', 'जमीन', 'हवा', 'तूफान', 'सहर', 'नौबत', 'जुलुम', 'परेसानी', मेहरबानगी' वगैरह सबदों को उन्होंने लेकर संसकीरतके सबदोंको छोड़ दिया है। जो संसकीरतके सबद रखे हैं, उनके बोलने में भी लाठीसे पीटके ठीक-ठीक कर डालते हैं। और आप इसी भाखाको अपनाने को कहते हैं?

भैया—दोनों बातोंको एकमें न मिलाओ सोहन भाई! जहाँ तक जनम भाखा की बात है, उसके लिए न रामस्वरूप पंडितकी बात मानी जायगी न, कुतुबदीन मोलबी की; उसके लिए तो धनिया भौजी—गाँवकी बेपढ़ अहिरिन को ही परमान माना

जायगा। दोनों सबदोंको उसके सामने रखा जायेगा। जो अरबीवाले सबदोंको समझेगी तो उसे ले लिया जायगा, संसकीरतवालेको समझेगी तो उसको बोलनेके कठिन सबदोंकी धनिया भौजी कपाल-किरिया करे होगी, और उसकी कपाल-किरियाको भी मानना पड़ेगा। हिन्दी-उर्दू को मिलानेका नाम भी यही जनम भाखायें करेंगी, क्योंकि जनम भाखाओंमें हिन्दू-मुसलमानका झगड़ा नहीं है। जड़वालोंका रास्ता साफ है, चोटीवालोंका झगड़ा हैं। उनमें जो अपनी जनम भाखा उरदू मानता है, वह उरदूमें लिखे-पढ़ेगा, जो हिन्दी मानता है, वह हिन्दीमें। मेरठ कमिसनरीके साढ़े तीन जिलेमें कौन भाखा माननी चाहिए, इसका फैसला वहाँ कोई जाटकी धनिया भाभी के हाथ में होगा।

सोहनलाल—और हिन्दुस्तानके संघकी भाखा हिन्दी होगी उसमें हिन्दी-उरदूका झगड़ा कैसे मिटेगा ?

भैया—पहिले तो हिन्दीके अपने साढ़े तीन जनम जिलोंकी भाखाके मुताबिक उसको मानना पड़ेगा। जिसके कारण बहुतसे संसकीरतके सबद छट जायँगे और बहुतसे अरबी-फारसीके भी ?

१६. सुतन्त भारत

सन्तोखी—दुक्खू भैया ! सुना है रजबली भैया आये हैं।

दुखराम—सुना क्या है हम रजबली भैयाके पास ही जा रहे हैं। तीन बरिस पर लौटे हैं। कितना दुनिया जहान देखकर आये हैं तुम भी आओ, चलें, कुछ नई बात सुनें।

सन्तोखी—हाँ दुक्खू भैया ! चलो चलें। १० बरिसमें दुनिया बहुत बदल गई १५ अगस्त (१९४७) से तो अब अपना देस गुलामीसे छूट गया।

दोनों दोस्त चले। राजबली महुआके पेड़के नीचे खाटपर बैठे थे। दोनों पुराने दोस्तोंको देखते ही उठकर दौड़े और छाती से लगाकर मिले। फिर तीनों जने खटिया पर बैठे।

भैया—कहो दुक्खू भाई। सन्तोखी भाई ! कैसे चल रहा है। बाल-बच्चे सब नीके तो हैं ?

दुखराम—बस किसी तरहसे जिन्दगी बीत रही है। अनाजका दाम बढ़ गया है और कपड़े-लत्तेका दाम तो और बढ़ गया है नून-तेलका तो मानो अकाल पड़ गया है।

भैया—अनाजका दाम बढ़नेसे तो किसानका फायदा है।

दुखराम—उसी किसानको फायदा है, जिसको खाने भरसे ज्यादा अनाज होता है। जिसकी चैतकी फसल जेठ तक भी नहीं पहुँचती, उसके तो जिव पर संकट है।

भैया। हाँ ठीक कहा भैया ! और हमारे किसानोंमें सौ में पाँच ही दस ऐसे घर होते हैं, जिनके पास अपने खानेसे अधिक अनाज होता है। मुदा अब देस सुतन्तर है। अब हमें यह दुख दूर करना होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! जब तुम कहते थे कि लड़ाईके बाद हिन्दुस्तान सुतन्तर हो जायगा, तो मुझको तो बिसवास नहीं होता था कि अँगरेज हमारे देस को छोड़कर चले जायँगे।

दुखराम—तो, सन्तोखी भाई तुम समझ रहे हो कि अँगरेज राजी-खुसीसे भारत छोड़के चले गये।

सन्तोखी—कुछ लोग तो ऐसा ही कहते हैं। लेकिन मुझे तो इसपर बिसवास नहीं पड़ता। भैयासे पूछते हैं, यही बतावें। मुझे तो सन्देह होता है, कि काँत देख-देखकर अँगरेज कलकत्ता-बम्बई या दूसरी जगह जाकर बैठ गये हैं। मौका मिलते ही फिर चढ़ दौड़ेंगे।

भैया—राजी-खुसीकी बात तो गलत है और काँत बैठानेकी भी बात नहीं है। लड़ाईके बाद ऐसी हालत हुई, कि अँगरेजोंका भागना छोड़ कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखाई पड़ा।

दुखराम—लेकिन उनके पास पल्टन-पुलिस थी। हाकिम हुकुम सब उनके हाथमें थे, फिर काहे बना-बनवा घर छोड़ कर भाग गये ?

भैया—नदीके किनारे सेठ छदामीमलका बहुत पक्का महल था। गंगा काटने लगी और भीतर ही भीतर नेंवके नीचेकी मट्टी बहा ले गई। सेठ छदामीमल रात बाल बच्चे सहित भाग गये।

दुखराम—हाँ भैया। हम एक बेर अजोधाजी गये रहे। उहाँ देखा, मौनी बाबाको रेतमें एक गोल चौड़ा जैसा दुई पोरसा की चीज खड़ी है। हमने पूछा—बाबा, यह क्या है ? सो हमारे कुटियाके बाबा बालकिसुनदासने कहा—"नहीं जानते ? ई पक्का इनारा (कुआँ) रहा। सरजुग महारानी कुछ माँटी बहा ले गई। अब ई ढाँचा बेकार खड़ा है।" साँच ही बेकार था भैया ! कौन सीढ़ी लगाके पानी भरने जायगा ? और थोड़ा, टेढ़ा भी हो गया था।

भैया—उहाँ ता टेढ़ा-मेढ़ा ढाँचा खड़ा भी रहा, लेकिन अंगरेजी राजको उसकी भी उमेद नहीं। यह लड़ाई जो न करे। लड़ाईमें अँगरेज तबाह-तबाह हो गए।

दुखराम—हमसे अधिक तवाह हुए भैया ?

भैया—हम लोग तो पहले हीसे इनाराकी पेंदी पर पड़े हुए थे। अँगरेज लोग पंचमहलाके ऊपर बैठते थे। दुनिया भरका धन-माल खींचखींचकर उनका पँचमहल बना था। साढ़े पाँच सालकी लड़ाईमें पीढ़ियोंका बटोरा धन खरच हो गया और ऊपरसे इतना करजाका बोझ हो गया कि सम्हारे के मानका नहीं।

दुखराम—क्या कहा भैया, करजाका बोझ ! अँगरेज तो दुनिया भरको करज देते रहे।

भैया—देते रहे तब देते रहे, अब करज़के बोझसे गला दब गया, साँस तर-ऊपर होने लगी। छोटी-बड़ी जितनी रेलवे लाइन तुम देख रहे हो, सबको बेचकर खा डाला

हिन्दुस्तान पर सौ सालसे झूठ-फुर करजा बनाकर रक्खे थे और जिस पर हर साल करोड़ों सूद लेते थे, वह भी सूद-मूर सहित बेबाक हो गया।

दुखराम—तो अब हमारा देस करजसे अकंटक है भैया ?

भैया—करजसे अकंटक ही नहीं अब तो उलटा हिन्दुस्तानका दसों अरब रुपया अंगरेजोंपर चढ़ गया है।

सन्तोखी—कहीं करजवा मार तो नहीं लेंगे भैया ?

भैया—हाँ, चाल तो चल रहे हैं। कभी लाचारी दिखलाते हैं।

सन्तोखी—टाट तो नहीं पलट गया भैया ?

भैया—टाट उलटना ही समझो, जब आदमी अपना देना नहीं चुका सकता, तो उसे दिवालिया छोड़ और क्या कह सकते हैं ? फिर, खाली हिन्दुस्तानका ही करज नहीं है, मिसिर, अर्जन्तीन और कहाँ-कहाँसे करज लिये हुए हैं। सबसे बेसी करज तो अमिरिकाका है। करज ही नहीं, रोजका रोटी-माखन भी अमिरिकाके भरोसे ही चल रहा है।

दुखराम—इतने करजपर भी रोटी-माखन !

भैया—विलायतमें रोटी-माखनका मतलब है, जो हमारे यहाँ साग-रोटीका। अच्छा, तो यह मालूम हुआ, कि करजके मारे अँगरेज लोग खोखले हो गये हैं और उनका गला पूरी तौरसे अमिरिकाके हाथमें है।

दुखराम—मालूम हो गया। अमिरिका जो कहेगा, वही अंगरेजोंको मानना पड़ेगा।

भैया—देखा न, हिन्दुस्तानके बाजारोंमें अमिरिकाका माल भरा पड़ा है।

दुखराम—तब तो अमिरिकाकी मर्जीके खिलाफ अँगरेज नहीं जा सकते। किरिप (क्रिप्स) के आनेके वखत भी अमिरिकाने बहुत जोर लगाया था।

भैया—करज और अमिरिका ही कारन नहीं है। अँगरेज यह भी जानते थे, कि अपना राज कायम करनेके लिए हिन्दुस्तानसे फिर लड़ना होगा। अबके सिर्फ निहत्थी जनता हीसे मुकाबिला नहीं होगा। हिन्दुस्तानसे २५ लाख पढ़े-लिखे पल्टनिया अफसर और सिपाही अब अपनी लड़ाई लड़ेंगे।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! इनमें कौन संका ? उनमेंसे बेसी तो पल्टनसे फरक भी हो गये थे ? देसके गुहारमें ऊ कैसे पीछे रहते ?

भैया—जरमनी और जापानके फसिहोंकी हारमें सबसे बड़ा हाथ रूसकी लाल पल्टनका रहा।

दुखराम—हाँ, भैया ! और यह भी देखा कि जितना मंजिल दूसरी पल्टन एक महीनेमें मारती, उतना लाल पल्टन एक दिनमें। मुदा सुनते हैं कि हिटलर अभी जिन्दा है।

भैया—जिन्दा भी होता, तो भी मरेसे अच्छा न होता। मुदा वह मर गया है जब लाल पल्टन उसके भुंइधराके पास पहुँची, उसने अपने हाथसे गोली मार ली।

सन्तोखी—भुँइधरामें लुका था ! बड़ा कायर था ।

भैया—कायर तो था ही, नहीं तो सामने आकर लड़ता और अपने हाथसे नहीं सत्तुकी गोलीसे मरना चाहिये था ।

दुखराम—कहाँ भुँइधरा बनाये था भैया ?

भैया—बरलिनमें, अपनी राजधानीमें; और कहाँ । माँटीका भुँइधरा नहीं, इतना गहरा और मजबूत भुँइधरा बनाये था, कि बड़के बमगोलोंका भी असर नहीं हो सकता था । लेकिन जब लाल पलटन दुआरपर पहुँच गई, तो क्या करता ?

दुखराम—अंगरेज और अमिरिकाकी पलटन वहाँ नहीं पहुँची थी ?

भैया—वह लोग चींटी की चाल से बढ़ रहे थे । एक चौथाई भी हिटलरकी पलटन उनसे नहीं लड़ रही थी, मुदा तो भी वह परेशान थे ।

सन्तोखी—रूसका तो वहुत नोकसान हुआ होगा भैया ?

भैया—नोकसान ? घर-दुआर, कल-कारखाना, गाँव-नगरका जो नुकसान हुआ, उसका लेखा कौन लगा सकता है ? सबसे अनमोल चीज है आदमीका जीव । हिटलरके गुंडोंने सत्तर लाख आदमियोंको मार डाला ।

दुखराम—सत्तर लाख सिपाही ?

भैया—सिपाही बीस-पचीस लाखसे बेसी नहीं, बाकी तो गाँव-सहरमें रहनेवाले मरद-मेहर, बूढ़ा-बच्चा जो कोई सामने आया, सबके खून से हाथ रँगा ।

सन्तोखी—अतताई !

भैया—अतताई, इसमें कोई संका नहीं । रूसके कमेरोंको भारी बलिदान देना पड़ा ।

दुखराम—रूसवाले कमजोर तो नहीं पड़ गये ?

भैया—कमजोर नहीं पड़े । लेकिन इसकी बात फिर कहेंगे । अभी हम लोग क्या बात कर रहे थे ?

दुखराम—यही कि अँगरेज काहे हिन्दुस्तान छोड़ गये ? हमको तो मालूम हो गया, भैया कि अँगरेज राजी-खुशीसे नहीं भागे ।

भैया—हाँ, भागना छोड़ और रास्ता नहीं था । करजके बोझसे लदे, दाने-दानेके मुहताज अमिरिका का कुरुख, हिन्दुस्तानका हर तरहसे सुतन्तर होने का संकलप, रूसका जनताके राज बनाने पर जोर—सबने मिलकर पासा पलट दिया । मुदा जाते-जाते भी अँगरेज जितना भी अपकार हो सका, करके गए ।

सन्तोखी—अपकार तो जरूर कर गये भैया !

भैया—बहुत अपकार ! हिन्दुस्तानको दो टुकड़ा कर दिया ।

दुखराम—लेकिन दो टुकड़ा तब हुआ, जब कांगरेसने माना । और तुम भी तो, भैया कहते थे, कि जब लोग चाहते हैं, तो बँटवारा कर लेना चाहिए ।

भैया—मुदा इसके लिये मंजबूर अंगरेजों ने किया । अँगरेजोंने हिन्दू-मुसुलमान-का वोट अलग कर दिया । देसभगत मुसुलमानों के लिए वोट पाना मुसकिल हो गया,

काहेसे कि सरकार के पिट्ठू लोग हिन्दू-मुसुलमानमें झगड़ा कराके अपने को पक्का मुसुलमान दिखाने लगे। जितने अधिक हिन्दू-मुसुलमान दंगे होते रहे, उतनी ही उनकी नेतासाही बढ़ती रही।

दुखराम—मुदा मुसुलमान पउलिक (पब्लिक) का मन भी तो वैसई बन गया?

भैया—'आग लगा जमालो दूर खड़ी' की कहावत नहीं सुनी? हिन्दू-मुसुलमानका वोट बाँटा था अँगरेजोंने इसी खियालसे। जो अन्तमें भी उनके मनमें ईमानदारी होती, तो इकट्ठा करके वोट लेते। लेकिन उन्होंने हर तरहसे फूट डालनेवाले मुसुलमानोंका पच्छ लिया। उनका मन था कि देसका बँटवारा करके हिन्दुस्तान को निर्बल बना दें।

दुखराम—तो उन्होंने जान-बूझके ऐसा किया?

भैया—जो इसमें कुछ संका हो तो दूसरी बात देखो। जब तक अँगरेज रहे, तब तक उन्होंने राजाओंको छूट दे दी थी और वह मनमाना अपनी परजापर जुलुम करते थे। अँगरेज चलने लगे, तो उन्हीं राजाओंको कर्ता-धर्ता बनाकर गये और परजा के हकका कुछ खियाल नहीं किया।

सन्तोखी—यह बात तो परतच्छ हैदराबाद में देखी गयी है!

भैया—हाँ, हैदराबादका नवाब बहुत दूरका सपना देख रहा था। कितने दूसरे राजा भी "परम सुतंत्र, न सिरपर कोऊ" बनना चाहते थे। कासमीरमें भी राजा दाव देख रहा था, मुदा जब आन लेकर सिरीनगर से भागना पड़ा, और कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ा तब जेलमें बन्द नेताओंको छोड़कर मुखिया बनाना और हिन्दुस्तानमें आनेकी बात मानी।

सन्तोखी—भैया, हमको भी एक बात पूछना है। ई करपतरी महतमा कहाँ से ऊपर भये हैं?

दुखराम—अउर ई डालूमियाँ कबसे गोरच्छाके झंडा उठाये हैं?

सन्तोखी—दू मर्दे? मियाँ होके गोरच्छा करे तो कोई खराब बात है?

भैया—आपसमें बहसा-बहसी करनेका काम नहीं!

दुखराम—बहसा बहसी न सही, लेकिन जब पचखाके जिमदार-सरब-दमन सिंह को करपतरी महाराज का झंडा उठाये देखा, तो हमें तुरन्त गोसाईंजी की चारपाई याद आई "जानि न जाय निसाचर माया।" जे सरबदमन परजाका खून चूस-चूस मोटे हुए और साहबनकी खुशामद करते-करते जिनगी बिता दिये, वह भला कबसे गऊभगत और देसभगत हो गये?

भैया—हाँ, ठीक कह रहे हो। इन लोगों का देसभगतीमें कहीं पता नहीं था, जब अंगरेज राज करते थे। अब जब कँगरेसने राज सम्हाला, देस सुतन्तर हुआ, तब आँख में धूल झोंकनेके लिए गोरच्छाका झंडा उठा लिए हैं, और सतियागरह करना चाहते हैं।

दुखराम—सतियागरह नहीं भैया! ई हतियागरह है। हम लोगन के बेकूफ गँवार समझिके आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं। राजा-रजुल्ली, सेठ-सेठुल्ली,

संत-महंत सबका धरमातमापन देख लिया है। हम इनके फेरमें नहीं पड़ेंगे। है न भैया ?

सन्तोखी—मुदा करपतरी महतमाको यह क्या सूझा ? सुनते हैं, वह उतराखंडमे तपसिया करते थे।

दुखराम—तुम भी सन्तोखी, रह गये बकलोल ही ! सुना नहीं है "दुनिया ठगिये मक्करसे, रोटी खाइये घी सक्करसे" ?

सन्तोखी—नहीं, ऐसा न कहो दुक्खू भाई ! सुनते हैं वह वड़े निरलोभ महतिमा हैं। उनमें बहुत दया-माया है।

दुखराम—दया-मायाकी बात ना करो सन्तोखी भाई ! कमेरोंके गला रेतने वाले सेठों-जिमदारोंका जो पायक बने, उसको दया-माया कहाँ ?

भैया—दया मायाका परतोख तो यही समझो, जे जब दाना-दानाके वेहाल हो लाखन आदमी बंगालमें मर रहें थे और समूचे भारतमें अन्नके लिए 'तराहि तराहि' मची थी, तब करपतरी महाराज दिल्लीमें सैकड़ों मन अनाज और कनस्तरका कनस्तर घी स्वाहा कर रहे थे।

दुखराम—हतियार ? भैया चाहे तुम नाराज हो, मुदा हम तो यही कहेंगे।

भैया—अपना मुँह नहीं खराब करना चाहिये दुक्खू भाई ?

भैया—पाकिस्तानी गोइन्दा मुसुलमानोंको हिन्दुओंके जुलुमका बखान करके भरमाना चाहते हैं। हम लोगोंको अपने यहाँ मुसुलमानोंके साथ कोई अनियाव नहीं करना चाहिये।

दुखराम—अनियावकी कौन बात है भैया ? अब तो झगड़ा लगानेवाले मुसलमान भी ठंडे पड़ गये हैं। वह समझते हैं कि हमारा जनन-करम हिन्दुस्तानमें है, दूसरी जगह कोई ठौर-ठिकाना नहीं। उमरपुरके कालूमियाँ वेंच-खोंच के लड़िका परानीके साथ लाहौर गये थे। वहाँ गुन्डोंने मुँह मलके पैसा-कौड़ी तो ले ही लिया, वेकत परानी कहाँ गई, इसका भी पता नहीं; रोते कलपते लौटके आये हैं। कहते हैं "यह माँटी अब पुरखोंकी कबुरके पास लगे अच्छा।"

भैया—वहाँ कालूमियाँ जैसोंको कौन पूछता है ? वहाँ पुछार है तो खाली बड़ी-बड़ी जोंकनकी। मुसुलमान जोंक ही नहीं, हिन्दू सेठोंको भी ठेका मिला है।

दुखराम—इहाँ गोरच्छा और वहाँ ठीका…बाह कालूमियाँ बाह !

भैया—हम लोगोंको हिन्दुस्तानमें मजहबका झगड़ा न होने देना चाहिये। सब कमेरोंको मिलके रहना चाहिए। जगिरदारी, तलुकदारीका नाम भी न रहे। नदी से सिंचाईकी नहर निकाली जाये। कारखाना चलाने और घर-दुवार उजियार करनेके लिए विजुली निकलनी चाहिये। मेवाका बाग लगाना चाहिए जिसमें दसगुना, विसगुना साल-दुशाला बने-बिके, ऐसा इन्तिजाम करना चाहिए।

दुखराम—माने जौन तरीकासे कमेरनके पास वेसी धन आवे, वह काम करना चाहिए। जो ऐसा हो तो मुसुलमान कमेरनको कौन फोड़ सकता है ?

भैया—वस, यही रस्ता है दुक्खू भाई !

सन्तोखी—तो तुमको भैया विश्वास है ना, कि अँगरेजोंका पवरा फिर लौटके नहीं आवेगा।

भैया—नहीं आवेगा, नहीं आवेगा। देखा न हम लोगोंका चक्करवाला तिरङ्गा झंडा। अब सब थाना कचहरीके ऊपर फहरा रहा है।

सन्तोखीं—हाँ भैया ? मुदाई महतमाजीका चरखा क्यों झण्डे परसे अलोप हो गया ?

दुखराम—भैयाको तकलीफ मत दो, ई हमसे सुनो सन्तोखी। हम बतावैं। हमको भी का मालूम, सोमारूने बताया।

सन्तोखी—कौन सोमारू ? वही सदाफलका बेटा, जो रेलवइ ऐंजनमें काम करता है ?

दुखराम—हाँ, उसीने बतलाया कि अब हमरा देस सुतन्तर हो गया। आगे कल-मसीनका काम चलेगा। रेलकी लाइन बहुत बढ़ाई जायगी। खेत जोतनेके लिए भी मोटरका हल आयेगा। जानते हो न ? कल मसीनमें सब जगह चक्का-चक्का होता है। वही चक्कर अब हम लोगोंकी पताकापर आया है।

सन्तोखी—महतिमाजी को कैसे मालूम हुआ होगा ? सब जगह कल मसीन चल जायगी, तो चरखेको कौन पूछेगा ?

दुखराम—महतिमाके जिनगीभर चरखा रहा फिर अब वह लौटकर देखने थोड़े आवेंगे, कि अपसोस होगा ?

भैया—महतिमाके लिए ऐसा मत कहो दुक्खू ! उन्होंने देशका बहुत बड़ा काम किया। आँखके देखते ही देस सुतन्तर हो गया, यही उनके लिए सन्तोख की बात थी। ऐसे तो बाल-बुद्धि किसमें नहीं होती ? हमारा देस अब सदाके लिए सुतन्तर है। अँगरेज या कोई दूसरा फिर यहाँ लौटकर नहीं आ सकता। मुदा अभी दो बड़े-बड़े काम हमें करने हैं।

दुखराम और सन्तोखी—कौन काम भैया ?

भैया—अब यह बात कल कहेंगे। "कथा समापत होतु है, सुनहु बीर हनुमान।"

१७. दुनिया-जहान की बात

भैया—भाई लोग कहाँ भूल गये थे ? मैं तो समझता था कि कहीं चुनावके मेलाकी तैयारी तो नहीं हो गई ?

दुखराम—चुनाव के मेलासे भी मुश्किल बात है भैया ! दूकानसे नून अलोप हो गया। ई तो सन्तोखी भाई साथे रहे, कितना अगवार-पिछवार चक्कर लगानेपर

पावभर मिला और सो भी पाँच पैसाकी जगह रुपैया सेरके भावसे। ऐसी चोर-बाजारी तो पराजउ में नहीं देखी थी ?

भैया—जब तक जोंकोंकी चलती-बनती रहेगी, तब तक सब देखनेको मिलेगा।

दुखराम—फिर गाँधी महतिमा काहे कहते थे, कि जोंकोंपर से सब अंकुस उठा दिया जाय ? चीनपरसे अंकुस उठा लिया गया। अनाजपरसे अंकुस उठाया गया है। महतिमाजीका रामराज जोंकोंके लिए ही तो नहीं है ?

सन्तोखी—जोंकन के ऊपर से कुल अंकुस उठ गया तो गरीबोंकी मौत है।

भैया—ठीक है।

सन्तोखी—मुदा भैया, एक बात सुनके तो हमार मन सिहर गया। मनोरी साहुका लड़का कह रहा था, कि जल्दी ही फिर लड़ाई होनेवाली है। बाबूजी तो दो ही तीन लाख कमाकर रह गये, बाकी मैं अबके चालीस-पचास लाखसे कम कमाये बिना नहीं रहूँगा। मेरा तो कलेजा काँप रहा था। तुम्हींने कहा था भैया, कि रूसमें ७० लाख आदमीकी जान पिछली लड़ाईमें गई ! आगेकी लड़ाई तो और भी खराब होगी ?

भैया—भय मत खाओ सन्तोखी भाई ! लड़ाई इतना ठट्ठा-खेल नहीं है, कौन किससे लड़ेगा ?

सन्तोखी—साहुके लड़केने खबरका कागज पढ़कर कहा कि रूस और अमरीकामें कचवावध लड़ाई होने जा रही है।

भैया—हाँ, अमरीका की जोंकोंके मुँहमें ख़ून लग गया।

दुखराम—हिटलरवा की तरह इनकी भी मत तो नहीं मारी गई ? अब अमरीकाकी जोंकें दुनियाकी दिगविजय करना चाहती हैं क्या ?

भैया—गाल तो वैसा ही बजा रही हैं ?

दुखराम—हिटलरवा भी पहले गाल बजाता था, मुदा अन्त में उसने दुनिया को लड़ाईमें ढकेल ही दिया और हमारे देस के भी आध करोड़ आदमियों की जान गई।

भैया—लेकिन अमेरिका की जोंकें हिटलर जैसी पागल नहीं हैं।

दुखराम—मुदा सुनते हैं भैया, अमरीकाके पास अणुआँ बम है। एक बम गिरानेसे कलकत्ता ऐसी नगरीमें चिड़िया-चुनमुन कोई नहीं बच सकता।

भैया—हाँ, वह सबसे खतरेका हथियार है, इसमें संका नहीं। एक बमसे पचास-साठ हजार आदमीकी जान जाना कम नहीं। मुदा दुक्खू भाई, यह भी बूझे रहो, कि अमरीकाने काहे उस हथियारको जर्मनपर क्यों नहीं छोड़ा ?

सन्तोखी—हमारा भैने (भांजा) सोहनलाल कहता, कि जापान काला आदमी था, इसलिए अमेरिकाने उसके हिरोसिमा नगर पर अणुआँ बम फेंका।

भैया—यह भी हो सकता है। लेकिन खाली इसी कारनसे नहीं। अमिरिका समझता था, कि जो जर्मनीके एक भी सहर पर इस बमको फेंका, तो हिटलरवा

बिख-माहुरका बतास भरके बिलाइत पर उझिल देगा; औ बिलाइतके छोटेसे मुलूकमें 'रहा न कुल कोउ रोवनिहारा।' हो जायगा ?

दुखराम—हिटलरके पास बिख-माहुरका ऐसा बतास था, तो काहे नहीं उसने चलाया।

सन्तोखी—जानते नहीं। दुतरफा डर है। दोनों निरबंस हो जाते, तो जीत किसकी, हार किसकी ?

भैया—हाँ, यही बात थी। जापान, अमरीका और बिलाइतसे बहुत दूर था, इतना दूर कि—यहाँ तक जापानी उड़नखटोले बिखका बतास नहीं पहुँचा सकते थे, इसीलिए अमरीकाका हिसाब बढ़ा।

सन्तोखी—यह तो अतताईका कम हुआ भैया ! अमरीकाने अपने साथी-संगीसे पूछके ऐसा किया कि अपने मनसे ?

भैया—खाली चर्चिलसे पूछा।

दुखराम—अहिरावनसे। हम तो भैया; चरचिलवाको दानो समझते हैं, जो रामजीको औतार लेना था, तो इसी दानवके खातिर औतार लेना चाहिए था। उसकी एक-एक बातमें बिख और उसकी एक-एक चालमें सौ-सौ पातक होता है। इस्तालिन बीरसे नहीं पूछा इस बारेमें।

भैया—पूछनेकी बात पूछते हो ? उसीके लिए तो अमरीकाने जल्दी-जल्दी अणुआ बम गिराया। उसने देखा, जर्मनकी लड़ाईमें तो दुनिया जहानने देख लिया जे रूसकी पल्टनके सामने अमिरिकाकी पल्टन पसंगा भी नहीं। चीनके मंचूरिया सूबामें जापानने छाँट-छाँटकर बीर बंका पल्टन रक्खी थी। अँगरेज और अमिरिकाकी पल्टन जापानकी छठवीं पल्टनसे सालों लड़ती रही और इंच-इंच भर हटाते रहे। उधर जब रूसने जापानके ऊपर तेगा उठा लिया: तो तीर की तरह घास-मूलीकी तरह काटते-मारते जापानियोंके सारे बीर बंकापनको धूल में मिला दिया।

दुखराम—हूँ ? तो अमिरिकाने समझा, कि यहाँ भी रूसवाले मीर बन जायेंगे और दुनिया जान जायेगी, कि उनमें कितनी बीरता है। इसीलिए यह अतताईपना किया।

भैया—और नहीं तो ? जापान तो हथियार डालने ही जा रहा था।

सन्तोखी—कहते हैं, अमिरिकाने ढेरका ढेर अणुआँ बम जमा कर रहा है। साहुका लड़का कहता था, कि ऐसा बम अमिरिकाके ही पास है। छः घंटेमें वह सारे रूसको खतम कर देगा।

भैया—रूस, जानते हो, कितना बड़ा देस है। हिन्दुस्तान ऐसे सात देस उसमें समा जायेंगे। ८ हजार कोस लम्बा, ४ हजार कोस चौड़ा देस है। इतना बम कहाँ धरा है कि धाप-धापपर उसे गिराया जाय। फिर रूसभी हाथपर हाथ रखकर बैठा नहीं है। उसके पासभी ऐसे बम और उससे भी भारी-भारी हथियार हैं।

दुखराम—तो यह अँगरेज काहे बीचमें फुदक रहे हैं ?

भैया—ठीक कहते हो, अमिरिका और रूस तो बड़े-बड़े देस हैं। बहाँ सब

लोग खाली सहर हीमें नहीं बसते हैं। बिखके बतास और बमसे गाँवके आदमी बच भी सकते हैं, मुदा एक चौथाई अँगरेज तो लंदन हीमें बसते हैं। पाँच-सात और बड़े सहरोंको ले लो, तो सौमें से अस्सी-नब्बे अँगरेज वही बसते हैं। फिर जो ऐसे बमोंकी लड़ाई हुई और बिख-बतास गोला भी चला, तो बिलायतमें तो सचमुच ही 'रहा न कुल कोउ रोवनिहारा' हो जायगा।

दुखराम—यह देखकर तो भैया मुझको बुझाता है कि यह सब और कुछ नहीं, खाली बनरघुड़की है।

भैया—और रूसमें भी "इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं" वाली बात है।

दुखराम—तो उहाँ कोई डरता-बरता नहीं भैया ?

भैया—तनिक भी नहीं। "हाथी चलै बाजार, कुत्ता भूकै हजार।"

सन्तोखी—भला, सुनते हैं कि अमिरिका रूसको चारों ओर से घेर रहा है।

भैया—हाँ, घेरनेकी कोसिस कर रहा है। जापानके फसिहोंको फिर खड़ा कर रहा है। चीन में जोंकोंके पायककारकी चाङको टापूमें भाग जानेपर खिला-पिला रहा है। और करोड़न-करोड़न रुपया बरसा रहा है। ईरानमें भी रुपया बोके उसने यहाँकी जोंकोंको हथियाया। यही तुर्की और यूनानमें किया है। इरोप के पूरबवाले देसोंमें दाल नहीं गली तो खिसियानी बिल्लीकी तरह खम्भ नोचता है। इटली, फ्रांस, सब जगह छन्द-बन्द कर रहा है।

दुखराम—तब तो भैया, यह लड़नेकी तैयारी है।

भैया—लड़केकी तैयारी नहीं। वह जानता है, कि जबतक रूस और उसके साथी देसोंके ऊपर सीधे चढ़ाई नहीं होगी, तब तक रूस नहीं लड़ेगा। उधर दूसरे देसोंमें सभी जगह कमेरे जोंकोंका टाट उलट देना चाहते हैं। जोंकोंमें अकेले इतनी तागत नहीं, कि अपना बचाव करें। अमिरिकासे चीनका जूता उधार ले लेके वह अपने यहाँके देस बेचुआ नेताओंको खरीद रही हैं और जोंक-राजको बचा रही हैं।

दुखराम—चीनमें भी अमिरिका जोंकोंकी बड़ी मदत करता था।

भैया—मदतकर रहा था, मुदा उसका कोई फल नहीं हुआ है। चीन के देस-भगत लोग और उनकी पलटन चारों ओरसे जोंकोंपर पड़ी। जोंकें एक जगह बचाव करने जातीं, तो दूसरी जगह चढ़ाई हो जाती। नाकमें दम था। चीन इतना बड़ा दलदल है, वहाँ अरबों रुपयोंका पता क्या लगता ? अमिरिका नया-नया हथियार भेजता और पलटनकी पलटन हथियार लिए-दिये भउतोंके पास चली जाती। किसान मजदूर चारों-ओर बिगड़ गये थे।

सन्तोखी—तभी न चीनमें जोंकोंका दाँव नहीं लगा।

भैया—चीनके लोग समझ गये, कि पहले जापान हमें गुलाम बनाना चाहता था और अब अमिरिकाकी डालरशाही।

दुखराम—औ कोरियामें क्या बात हुई भैया ?

भैया—उत्तरमें, आधे कोरियाका इन्तिजाम रूसकी देख-रेखमें होता था। वहाँ किसान-मजदूर लिखे-पढ़े लोग खूब सुखी थे। नये तरीकेसे खेती की जाती थी ? गाँव-गाँव सहर-सहर इस्कूल-अस्पताल था। पूरा-परजा-राज बन गया था। जिसे

दक्खिनी कोरियाके लोग देख-देख सिहाते थे, और वैसे ही अपने यहाँ भी बनाना चाहते थे, इसपर अमेरिका और उसके कठपुतली कोरियन देस-भगतोंको पकड़-पकड़के जेलमें डाल रहे थे। हम कह चुके हैं, इससे काम न चलता देख लड़ाई छेड़ दी, सो हम कह चुके हैं।

दुखराम—अमिरिकाको रुपिया बरसानेका ही आसरा था, मुदा समूची दुनियामें कितने दिन तक अमिरिका रुपिया बरसाता रहेगा।

सन्तोखी—जिस दिन रुपियाकी बरसा बन्द होगी, उस दिन जोंकोंकी क्या दसा होगी ?

भैया—जोंकें छटपटाके मरेंगी।

दुखराम—तो इस बखत दुनियाकी सारी जोंकें अमिरिकाकी जोंकोंका आसरा लगाये बैठी हैं।

भैया—वही दुनियाकी जोंकोंका सिरताज है, चारों ओर हाथ-पैर मार रहा है। उसने लड़ाईमें खूब रुपिया कमाया है।

दुखराम—का नहीं कमायेगा ? अमिरिकामें लड़ाई नहीं हुई। पलटन भी उतनी मरी नहीं।

भैया—हाँ, लड़ाईमें अमिरिका एकका नौ बनाता रहा, मुदा कुबेरका अखुट खजाना उसके पास भी नहीं है।

दुखराम—तो रूस चुपचाप बैठा रहा है; कि अमिरिका कितना अरब-खरब रुपिया दुनियामें बोता है। उधर देसभगत लोग भी अपना बल-बूता लगा रहे हैं। दस बरस, बीस बरस कितने समय तक अमिरिका चाँदीके भरोसे दुनियाकी जोंकोंको पोसता रहेगा ? आखिरमें हाथ खींचना ही पड़ेगा।

भैया—चीनमें हाथ खींचना ही पड़ा और सोलह अरब गँवाके।

सन्तोखी—हमको तो यही सन्तोख है भैया, कि रूस अणुआँ बमसे नहीं डरता और उसके पास अणुआँ बम और दूसरे बड़े-बड़े हथियार है। रूसी जोधा तो बीर बंका हुई हैं।

दुखराम—इसीलिए लड़ाई नहीं होगी। यह खाली अंगरेज और अमिरिका की बनरघुड़की है।

भैया—अंगरेजका काहे नाम लेते हो ? आजकल यह खाली सिखंडी रह गया है। ढोलके भीतर खाली पोल है।

दुखराम—तब भी बेहया बनकर हर जगह पंच बनना चाहता है।

सन्तोखी—लेकिन सुनते हैं, कि अंगरेज पाकिस्तानसे बहुत साँठ-गाँठ कर रहा है। पाकिस्तानको लेके कहीं फिर तो हिन्दुस्तानपर चढ़ाई नहीं करेगा ?

भैया—'लड़ो भतीजो पाछ दो पूतो' कहावत नहीं सुनी ?

सन्तोखी—'आनका मैंदा आनका घीव, भोग लगावे बाबाजीव' वाली बात मालूम होती है।

भैया—जो अंगरेजोंको अपना घीव मैंदा लगाना होता, तो हिन्दुस्तान छोड़कर काहे जाते ? और पाकिस्तान कौन बिरतेपर हिन्दुस्तानसे लड़ाई करेगा। न उसके

पास—लोहेका कारखाना है, न हथियार का कारखाना है, न कोयला, न तामा, न उतने हुसियार, कल-मसीन जाननेवाले, न इतने इलिम विद्दा सीखे लोग। ऊपर से एक टुकड़ा पूरब में लटक रहा है, तो दूसरा टुकड़ा पच्छिममें। पागल कुत्ता काटे नहीं है, कि वह सब करे-धरेपर लीपा-पोती कर देगा। अभी सुना है न, हिन्दुस्तानका इतना करजा पाकिस्तानपर हो गया है कि पचास साल की किस्तमें बेवाक करना मुस्किल है।

सन्तोखी—कहीं भैया, करजा मार तो नहीं लेगा। सूद तो ठीक-ठेकानेसे लगाया गया है? अब उनके साथ मोह-मुरौअत काहेकी?

भैया—महाजन कमजोर होता है, तभी करज मारा जाता है। हिन्दुस्तान जन-धन-बल सबसे पाकिस्तानसे बहुत बड़ा है।

सन्तोखी—सुनते हैं, कि पाकिस्तानकी आमदमी पलटनके खरेचा हीमें चली जा रही है। उसको इतनी पलटनकी क्या जरूरत है, जब हिन्दुस्तानसे लड़के पार नहीं पाना है?

भैया—पाकिस्तान बड़े फेरमें पड़ा है। पलटनसे लोगोंके निकालनेपर बेरोज-गार हो वे काटने दौड़ेंगे। उधर पठान पखतूनिस्तान बनानेपर तुले हुए हैं। अंगरेज हरसाल कई करोड़ रुपिया सरहदके पठानोंको सुँघाते रहे। तब तो हिन्दुस्तानका वड़ा खजाना था, अब वह पाकिस्तानके माथे है।

सन्तोखी—पाकिस्तानने हिन्दुस्तानसे भी कुछ देनेके लिए कहा था न?

भैया—कहा था, मुदा हिन्दुस्तान काहेको देगा? वह इलाका हिन्दुस्तानकी सरहद पर थोड़े ही है।

सन्तोखी—तब तो भैया, पेसावरका इलाका पाकिस्तान में चला गया, वह अच्छा ही हुआ, नहीं तो हमीं लोगोंको सारी रुपिया-सुँघाई करनी पड़ती?

भैया—इसीसे पहिले तो पठानोंको कासमीरमें लूटनेके लिए भेज दिया। अब जब वहाँ खोरिस भागेंगे, तब मालूम होगा।

दुखराम—पठान लोग अपना पठानिस्तान माँग रहे हैं न? उसे लियाकत अली कब तक रोके रखेंगे।

भैया—तभी तक रोकेगा, जब तक दीन-धरमके नामपर लोगोंको पागल कर सकता है।

सन्तोखी–लेकिन सुनते हैं कि पाकिस्तान सारी दुनिया-जहानके मुसलमानों को एक करके लड़ना चाहता है।

भैया—भूल गये, मैंने कहा न था, कि सबसे बेसी मुसलमान हिन्दुस्तान ही में रहते हैं। नाम गिनानेको चाहे आठ मुसलमानी राज गिन लो, लेकिन वह एक-एक, दो-दो जिलेके बराबर हैं और सभी पिछलग्गू। आजकलके जमानेमें लाठी और छूरेकी लड़ाई नहीं है। 'समूचे दुनियाके मुसलमान' खाली नाम ही बड़ा है। इससे घबरानेकी जरूरत नहीं।

सन्तोखी—मुदा 'घरका भभीखन लंका ढाहे,' कहीं हिन्दुस्तानके भीतरके मुसलमान तो धोखा नहीं देंगे?

भैया—पन्द्रह अगस्तके बाद मुसलमानोंके चाल-ब्योहारमें तुम्हें फरक मालूम होता है कि नहीं ?

सन्तोखी—फरक तो बहुत है भैया। अब न कहीं मसजिदके सामने बाजार की बात उठाते है, न छुरा-खंजर दिखाते हैं। बलुक भाई-चारा बढ़ाने की पूरी कोसिस करते हैं।

भैया—भिभीखनको तो हमारे यहाँ जगह नहीं। भिभीखन के लिए सीधे पाकिस्तानका रास्ता बता देना चाहिये। नहीं बताने पर भी उन्हें चला ही जाना होगा, बाकी जो मुसलमान हिन्दुस्तानमें रहनेका निश्चय कर चुके हैं, वह भली-भाँति जानते हैं, कि जो हमने कुछ भी तीन-पाँच किया, तो खैरियत नहीं। पाकिस्तानकी सरहद बहुत दूर है। वहाँ तक जान बचाके भागना भी नहीं हो सकता।

दुखराम—यह तो मैं भी समझता हूँ, मुसलमानोंकी भलाई इसीमें है कि यहाँके लोगोंसे मिताई करें, अपनी जनम धरतीसे सनेह राखें।

भैया—इतना नहीं। मुसलमानोंको वही बोली-वानी, वही पर-पोसाक, वही खान-पान अपनाना होगा, जो कि कि हिन्दुओंका है। बिलाइतमें इसाई रहते हैं, यहूदी भी रहते हैं, लेकिन उनको देखके कोई नहीं कह सकता, कि वह दो तीन-धरमको मानते हैं।

दुखराम—दीन-धरम अपने मनकी बात है भैया, जिसका जो मन हो वैसा माने। मुदा हर जगह अपनेको नक्कू बनाना ठीक नहीं है न भैया ?

भैया—हाँ, धरमकी जगह मन्दिर-महजिद, गिरजा अगियारी में है। उसका हर जगह साईनवोट टाँगना ठीक नहीं है।

सन्तोखी—कोई कोई मुसलमान हिन्दुईको राज-भाखा बनानेपर चिढ़ते हैं।

भैया—मूरख हैं। मूरख हमारे यहाँ की भाखा हिन्दुई न होगी तो क्या अरबी, फारसी होगी ? अपने चाहे जो भाखा पढ़ते रहें, मुदा सरकारी कारबार तो अब अपनी ही भाखा में होगा।

सन्तोखी—जब अँगरेजी इतना दिन पढ़ते रहे, और कभी उजुर नहीं किया, तो बिदेसी भाखा छोड़के अपनी हिन्दुई भाखा पढ़ने-लिखने में काहे इतनी नखराबाजी ?

भैया—'पाँडेजी पछतायेंगे और वही चनेकी खायेंगे'। नखरा छोड़कर हिन्दुई भाखा सबको पढ़ना होगा। बहुतसे मुसलमान भी अब यह समझने लगे हैं।

सन्तोखी—हाँ, इस बातका तो पता आठ साल पहिले (१९४७) परागराजसे मिला। दिसम्बरमें जब जवाहिरलाल पराग पहुँचे, तो लोगोंने जगह-जगह बन्दरवारसे सजाके दरवाजा बनवाया। मुसलमानों का दरवाजा सुन्दर था, और उसपर हिन्दीके मोटे-मोटे अच्छरोंमें लिखा था, उर्दू में भी लिखा था, लेकिन छोटे-छोटे अच्छरोंमें।

भैया—मुसलमानों को उर्दू पढ़ना हो, तो पढ़ें; कौन रोकता है। लेकिन राजभाखा हिन्दी छोड़ दूसरी नहीं होगी।

सन्तोखी—कोई-कोई मुसलमान कहते हैं कि जो उर्दू भाखा नहीं रहेगी, तो मुसलमानी धरम उठ जायेगा।

भैंया—जो धरम ऐसा कच्चा है, तो उसको उठ ही जाना चाहिये। मुदा हिन्दुस्तानमें किसीके धरमपर रोक-थाम नहीं है। पारसी लोग गुजराती लिखते-पढ़ते हैं उनका धरम तो नहीं चला गया। ईसाई बड़े उछाहसे अपनी हिन्दी पढ़ते हैं; बंगाली, मन्दराज के रहवैंया वहाँकी भाखा पढ़ते हैं। बौध हिन्दी पढ़ते हैं, अपनी भाखा से परेम करते हैं। इनमेंसे कोई नहीं कहता कि हिन्दी पढ़नेसे हमारा धरम चला जायेगा।

दुखराम—तो काहे ऐसी उल्टी-पुल्टी बात मुसुलमानोंके मुँहसे निकलती है ?

भैंया—आखिरी बेर निकल रही है दुक्खू भाई। तुर्कीमें नमाज तक अपनी बोलीमें पढ़ते हैं, अरबीमें नहीं। अरबी अच्छरोंको भी वहाँ ठाँव नहीं है मुदा वहाँसे तो मुसुलमान-धरम नहीं चला गया। खाली घर या महजिदमें रोजा-नमाज छोड़के हिन्दू-मुसलमानोंमें बोली-बानी, कपड़ा-लत्ता किसी बातमें फरक नहीं होना चाहिए। हम तो समुझते हैं, कि धीरे-धीरे रोटी-बेटी सब एक हो जायगी।

१८. अनाज कैसे बढ़े ?

सन्तोखी—दुक्खू भाई, रजबली भैंयाने बहुत बात तो बता दी है। आज उनसे क्या पूछना चाहिए ?

दुखराम—अभी तो सन्तोखी भाई, सब दूरे-दूरे की बात रही है। अब तनी नजीककी बात करनी चाहिए।

सन्तोखी—हाँ, दुक्खू भाई, देख न नून तेल सब अलोप होता जा रहा है। जहाँ देखो तहाँ दुइ-दुइ तरहका भाव। सब जगह ईमान-धरम लोगोंका उठ गया है। हम सब गरीबोंकी दसा और बिगड़ती जा......

दुखराम—लो भैंया भी आ गये। जैहिन्द रजबली भैंया।

भैंया—जैहिन्द दुक्खू भाई, जैहिन्द सन्तोखी भाई। कहो आज क्या बात बिचार करना है।

दुखराम—आज भैंया, तुमको जादा तकलीफ नहीं देंगे। बस, घर-दुआरकी बातचीत और येही नून-तेल-लकड़ी की चिन्ता।

भैंया—यह छोटी बात है दुक्खू भाई। कबीर साहब कह गये हैं—'न किछु देखा भाव-भजनमें, ना किछु देखा पोथीमें। कहे कबीर सुनो भाई सन्तो, जो देखा सो रोटी में।' रोटी सब चीजकी मूल है। रोटीके लिए सुराज भैया है।

दुखराम—यह तो हम भी बूझते हैं भैया, खाली हँसी करते रहे। मुदा देखते हो न अनाज दिन-फर-दिन अजुर होता जा रहा है।

भैया—रोटीका इन्तिजाम सबसे पहले करना है। जानते हो न इस साल तोड़ा पूरा करनेके लिए तीन अरब रुपियाका अनाज दूसरे देससे मँगाना पड़ा है।

सन्तोखी—तीन अरब रुपिया बहुत होता है भैया। जो ऐसे रुपिया देना हुआ तो घर-दुआर बिक जायगा।

भैया—तीन अरब तो सरकारकी सारी आमदनी है : और अनाज न मँगायें तो वही बङ्गालकी हालत होगी। लाखों परानी भूखे पटपटा के मर जायेंगे।

दुखराम—हमारे यहाँ अनाजका ऐसा टोटा तो कभी नहीं देखा गया। तो अंगरेज चले गये और इहाँसे बिलायत भी अनाज नहीं जाता। फिर काहे अनाजका इतना अकाल ?

भैया—अनाजका अकाल काहे न हो। खानेवाले मुँह पहलेसे बढ़ गये और धरती एक भी अंगुल नहीं बढ़ी। साले-साल धरतीका सत्त खींचते रहे और खाद नहीं देते। भैंस बियाती है, तो काहे माँडी (पखेब) देते हो।

दुखराम—बियानेसे भैंस दूबर हो जाती हैं। माँडी (पखेव) न देंगे तो कहाँसे दूध देगी।

भैया—उसी तरह धरतीको माँडी चाहिये। फसल काटो और माँडी दो।

दुखराम—माने खाद दो। और पानी भी धरतीको बहुत चाहिए भैया।

सन्तोखी—और अच्छी जोताई भी खेतको जोता-हेङ्गाके तोसक, जैसा नरम कर दे जब धरती-माता परसन्न होती हैं।

भैया—कुल बात तो तुमने वता दी। माँडी (पखेब), पानी, जोताई और इनके साथ अच्छा बीज दे दो, देखो, थनहर भैंस जैसे जितना चाहो उतना दूध दुह लो। लेकिन माँडी कहाँ है हमारे गाँवमें। थोड़ा वहुत गोबर होता है। उसको भी और उपाय न होनेसे ईंधन बनाके जला देते हैं।

दुखराम—हाँ भैया, यह तो रोज ही देखते हैं, कि जिस खेतमें खाद गोबर पड़ता है, उसमें कट्ठा-बिस्वामें मनभर गेहूँ उपजता है। पथरकोयला पर भोजन मीठा तो नहीं होता है, मुदा वह भी मिल जाता, तो सब गोबर बचाके खेतमें डालते।

भैया—खाली मनका भरम है। पथर-कोयला पर भोजन फीका नहीं होता। मुदा पत्थर-कोयला इतना कहाँसे मिलेगा, कि देस भरके चूल्होंमें उसे जलाया जाय ? इसकी यह मनसाय नहीं कि हमारे देसमें पत्थर-कोयला कम है। पत्थर-कोयला बहुत निकाला जा सकता है और गोबरको बचाके खाद वनाना चाहिये। धरतीके पेटमें वहुत खाद है।

दुखराम—क्या कहा कहा भैया, धरतीके पेटमें भी खाद है ?

भैया—हाँ, जैसे कोइलाकी खान हैं, लोहाकी खान हैं, वैसे ही खादकी भी खान हैं—और वह खाद बहुत तेज होती है। जहाँ दूसरी खाद दो मन लगती है, वहाँ उस खादके दो सेरसे ही काम चल जाता है। हमारे देसमें धरतीके पेटमें न जाने क्या-क्या है। हमारी धरतीमें अपार धन है। उसे निकालना चाहिये, और बहुत जल्दी। जानते हो, सत्ताइस लाख खानेवाले मुँह हमारे यहाँ हर साल बढ़ रहे हैं।

सन्तोखी—क्या कहा भैया, सत्ताइस लाख मुँह ? मेरा तो कलेजा सिहर गया ।

दुखराम—देख नहीं रहे हो सन्तोखी भाई, तुम्हारे घरमें तो एक ही लड़का-लड़की होके रह गये। मुदा रामदीन बाबाको नहीं देखते । अभी जिन्दा ही हैं। चार पीढ़ी सामने हैं । और खाली लड़कोंसे आजकल बत्तीस परानी हैं ।

भैया—औ लखनऊके बड़े लिखवैया सामबिहारी मिसिर अपनी देहसे छत्तीस परानी देखके मरे ।

दुखराम—हाँ भैया, ई तो बड़े संकटकी बात है । और मेहरियोंकी मुरुखताई-को पूछो ही नहीं, जो घरमें बहूको आये दो साल हो गया और कोई लड़का-फड़का नहीं हुआ, तो फिर देखो, आज सैयदबाबा किहाँ, काल डीहबाबा किहाँ, परसों परजोत-माई किहाँ, चौथा दिन ओझा-सयान किहाँ । जनु गद्दी सूनी होती जा रही है । हमारे लड़का-फड़का नहीं हुआ, भाईके हो गया । बस, नाम-निसान क्या उससे नहीं होगा ।

सन्तोखी—भाईके क्या, गाँवभर तो एक ही पुरखा का है । चार घरमें धिया-पूता नहीं हुआ, तो पुरखाका बंस, निरबंस थोड़े ही होगा । ई तीन अरब रुपया हर साल बाहर भेजनेकी समरथाय अपने देसमें नहीं है । हम तो बूझते हैं भैया, जो परानी आधे हो जायें, तो कुछ चिन्ता मिटे ।

दुखराम—दुर मर्दे, क्या मुँहसे कुबचन निकालता है । परानी आधा करनेके लिये हैजा बुलाएगा कि पलेक ।

दुखराम—नराज मत हो दुक्खू भाई, हम उस दिनके लिए झङ्ख रहे हैं, जब रुपया देना नहीं सपरेगा, अनाज बाहरसे नहीं आयेगा, और लड़कों सयानों को निरघिन मौत मरना होगा । सुने नहीं हो, बंगालमें जब अन्नका अकाल पड़ा, तो आदमी इज्जत बेंचके भी परान नहीं बचा सके । वैसी मौतसे हैजा-पलेक अच्छा ।

दुक्खू—तो तुम्हारे भगवान क्या करते हैं । खाली हर साल सत्ताईस लाख मुँहई बढ़ानेमें बहादुर हैं !

सन्तोखी—भगवानको भी तो तुमने कह-कहके भुलवा दिया । अब कहाँ उतनी पूजा-पाठ करते हैं ? हम भी देखते हैं, कि एक-एक आदमी के बचाने खातिर कहाँ धाय-धायके औतार लेते थे, और लाखों आदमीके मारके अतताई मोंछपर ताव देते हैं तो भी उनकी नींद ही नहीं टूटती ।

भैया—अब दुखराम कहेंगे कि रहने दो उनको छीरसागरमें हमेसा खातिर सोते । मुदा भगवानका काम है, न हैजा-पलेकका । अगले पचास साल तक जो इसी तरह बढ़ती हुई, तो हिन्दुस्तानमें एक अरब मुँह हो जायेंगे । उसके लिए भी सन्तोखी भाई ! हैजा-पलेक मत मनाओ । हमारी धरती एक अरब मुँहके भोजन, तन ढाँकनेको अच्छा कपड़ा, रहनेको नीचुर घर और सब चीज दे सकती है । मुदा गाँधी महतिमा के रहतासे नहीं । उसके वास्ते कल-मशीन का, नये इलिमका काम है । तुम कट्ठा-बिस्वा मन कह रहे हो, रूस मुलुकमें तो बिस्वामें डेढ़-डेढ़ मन गेहूँ होता है और एक खेतमें नहीं, जिलाके जिलामें ।

तुखराम—तो उहाँ खूब खाद देते होंगे ।

भैया—खूब, हर फसिल बोनेसे पहले नापके बिलायती खाद देते हैं। मोटर-वाले हलसे एक साथ गहरी जुताई करते हैं। ढेला एक भी नहीं रहने पाता। फिर चुनके बढ़िया बीज बोते हैं। और पानी हर बखत हाजिर। बड़ी-बड़ी नदी को बाँध दिये हैं। नर्वदा, सरजू, कोसी, गंडक जैसी नदियाँ जो वहाँ होतीं, तो इतना पानी अकारथ थोड़े ही बहने पाता। वहाँ तो बड़ा-बड़ा सागर और झील बनाके बरसातका पानी भी जमा कर लेते हैं।

दुखराम—ईतो बहुत बड़ा काम है भैया !

भैया—बहुत बड़ा काम है, और वह काम हियाँ भी हो सकता है। गंगाजीसे नहर निकाली गई है जानते हो न ? उसी तरह सब नदियोंके पानी को खेतों में डाला जा सकता है। फिर एक बड़ी गंगा तो धरतीके भीतर हर जगह बह रही है।

दुखराम—वही न जिसका पानी कुएँमें आता है ?

भैया—हाँ, वही और वह पानी नदियोंके पानीसे भी जादा है। पहले जमाने-में उसके निकालनेमें बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। आदमी या बैल लगाकर चिल्लू-चिल्लूभर निकालते, लेकिन आजकल तो पानीकी कल ऐसी बन गई है, कि पाइप बैठा दो, तेल या बिजुलीका अंजन लगा दो, और एक-एक दिनमें सौ-सौ बिगहा सींच लो। देखा नहीं बनारस, पटना, कलकत्ता, बम्बई,सब जगह अब डोरा-लोटा चाहे घड़ासे पानी नहीं खींचा जाता, बीस-बीस लाख आदमीके लिये और सतमहला पर भी कल-मसीन पानी पहुँचा देती है।

दुखराम—तो वह कल-मसीन अब धरतीमें लगाना चाहिए, नहीं तो सन्तोखी भाई फिर हैजा-पलेककी मनौती करेंगे।

भैया—हमारा देस दुक्खू भाई, धन-धानसे भरा है, लेकिन अकिल बिना सब काम चौपट है। रूस या बिलायतके मुलुकको देखो, वहाँ छ महीना धरती पर दो-दो चार-चार हाथ तक बरफ पड़ी रहती है, और कोई खेती-बारी नहीं हो सकती। मुदा अपने देसमें हम हर खेतसे तीन-तीन फसल ले सकते हैं। और आलू, तरकारी, प्याज-की तो पाँच-पाँच फसल भी उसी खेतसे निकाल सकते हैं।

सन्तोखी—सहरके पासके कोइरी (मुराव), काछी, कुंजड़ा लोग चार-चार पाँच-पाँच फसल निकालते ही हैं।

भैया—इसीलिये न कि वहाँ सहरके पास में खूब खाद है। जोताई, पानी, बीज सबका अच्छा इंतिजाम है। और धानके खेत में भी हमारे यहाँ रब्बी और बादमें पियाज तरकारी लगाके तीन फसल कर सकते हैं।

दुखराम—अगहनी धानके खेतमें कैसे रब्बी होगी ?

भैया—ऐसा इलिम निकला है, कि अगहनी धानको कतिका बनाया जा सकता है, माने उसकी फसल पाख डेढ़पाख पहिले ही तैयार हो जायेगी।

दुखराम—बताओ भैया, हम अगले ही सालसे वही धान बोयेंगे।

भैया—लेकिन बड़े-बड़े इलिमकी बात एक-एक घरमें नहीं चलती दुक्खू भाई! जैसे एक घर चाहे कि गङ्गाकी नहर बना दे, पानी निकालनेवाला इंजन बैठा दे, तो

नहीं हो सकता। यह काम तभी हो सकता है, जब गाँव के गाँव मिल जायँ और सरकार तन-मन-धनसे सहायता देनेको तैयार हो जाय। वैसे बीजको भिगाके कुछ देर तक गरमाई में रखना पड़ता है। उसके लिये मसीन, बड़े घर और हुसियार इलिम जाननेवाले आदमीकी जरूरत पड़ती है।

दुखराम—तो रूसमें यह सब इंतिजाम हुआ है ?

भैया—इंतिजाम न होता, तो सत्तर-सत्तर लाख परानीके मर जानेपर, करोड़न बिगहा खेतके बेकार हो जानेपर भी रूस कैसे इतना अनाज पैदा करता, कि अपने खाके दूसरोंको भी करोड़ों मन अनाज देता ?

सन्तोखी—रूस हम लोगोंको भैया, अनाज क्यों नहीं देता ?

भैया—दिया है और भी देना चाहता है। फिर बिना सरतके मुदा कांगरेसी सरकार महँगे दामपर देसको बंधक रखकर अमिरिका से लेना चाहती है। चीनने भी २८ करोड़ मन अनाज दिया है, उतना ही देना चाहता था, और सस्तेमें।

दुखराम—तो भैया ! जोंकें कमेरोंके मुलुकका अन्न भी लेनेमें डरती हैं ? रूसके कमेरोंने आखिर सब कुछ अपने जाँगर हीसे किया है न ? क्या हम भी अपने जाँगरके भरोसे वैसा नहीं कर सकते ?

भैया—जाँगर और इलिम दो ही बात तो चाहिये। फिर हमारे यहाँकी भी धरती सोना उगलने लगेगी। आजकल सड़तर-पड़तर (औसत) हर एकड़में सात मन धान हो जाय तो बहुत। यह हम एक-दो या सुतरे खेतकी बात नहीं कर रहे हैं, जिलाके जिला और सालों के हिसाब लगानेपर फसिलकी यही उपज है।

सन्तोखी—इसका मतलब यह है कि नये इलिमसे जो खेती की जाय, तो पाँचगुना फसिल बढ़ जायेगी।

दुखराम—और एक फसिल। खेत दो-फसिला। माने खेत में तीन-तीन चार-चार फसिल काटी जा सकती है। यह भी दूना हुआ।

सन्तोखी—माने आजके जितने ही खेतमें दस गुना फसिल पैदा हो सकती है।

भैया—और आज जितना खेत है, उसको सवाया कर सकते हैं, जो खेती-लायक सब परती, बंजर जमीनको जोत लिया जाय।

दुखराम—तब तो सन्तोखी भाई तुम भगवानसे हैजा-पलेक मत मनाओ। रजबली भाई ठीक कह रहे हैं, कि खूब जाँगर और इलिम लगाया जाय, तो बाहर से न अन्न मँगवानेकी जरूरत है, न भूखे मरनेकी। और अभी तीन पुस्त तक बराबर मुँह बढ़नेसे भी डर नहीं है। हाँ, लेकिन मालूम होता है, कि बाढ़का पानी गाँवके गोंएड़ा चला आया है, तनिक भी देर करनेसे सारा गाँव डूब जायगा।

भैया—यह ठीक कह रहे हो दुक्खू भाई ! एक छन भी चुप बैठना बहुत खतरेकी बात है।

दुखराम—तो अब तो भैया; अपनी सरकार है, अपने मंतिरी लोग हैं। उन लोगोंकी आँखोंमें पट्टी बँधी है क्या ? काहे नहीं इस बाढ़को देखते ?

भैया—पट्टी ही बँधी है न, तभी न कछुआकी चालसे चल रहे हैं।

दुखराम—ये भी बड़ा औगुन है भैया, घरमें आग लगी हो, और बुझानेवाला कछुआकी चालसे चले तो यह बहुत खराब है।

भैया—कछुआकी चाल बहुत खराब है। जो काम करना ही है, उसमें घिसिर फिसिर करनेकी क्या जरूरत ? जिमदारी उठा देना था मुदा आजकल करते लासको घसीटते रहे। अब हाल-चाल खराब है।

सन्तोखी—खराब क्यों न होगी भैया ? जब हरसाल सत्ताइस लाख मुंह नये बढ़ रहे हैं। चटपट जिमदारीको गंगालाभ कराके नया इलिम लगा अनाज बेसी उपजानेके काममें लग जाना चाहिये था।

भैया—एक-एक परिवारकी नये ढङ्गकी खेती भी नहीं हो सकती। साझेकी खेती, पंचायती खेतीका रस्ता लेना होगा तब्र नया इलिम लगेगा।

दुखराम—"साझेकी सुई सेङ्गरापर उठती है।" की कहावत हर खेतिहरके मुंहपर है।

भैया—हमारे ही देसमें नहीं, दुनिया भरमें यह कहावत किसानोंके ठोरपर थी, मुदा इस कहावतपर चलनेसे काम नहीं चालेगा। कितने ही गाँव हैं, जहाँ परिवार पीछे आधा बीघा भी खेत नहीं पड़ता, और वह भी आठ जगह छितराया हुआ है। कितनी जमीन तो मेंड़ हीमें चली जाती है। इलिमदार लोग बताते हैं, जो मेंड़ तोड़ दी जाय, तो अनाज चोरानेवाले मूसोंके भगानेसे ही उपज सवाई हो जायगी।

दुखराम—हम तो तइयार हैं भैया, मुदा गाँवके आदमी क्या राजी होंगे ? किसीके पास बेसी खेत है, किसीके पास कम, और किसीके पास कुछो नहीं। कैसे राजी होंगे ?

भैया—राजी होना पड़ेगा दुक्खू भाई ! नावमें पानी भर रहा है, जो दोनों हाथसे न उलीचोगे, तो सब डूब जायँगे।

सन्तोखी—हाँ भैया ! जो सत्ताइस लाख सवैया मुंह हरसाल बढ़ते रहे। और तीन-तीन अरब रुपैया का अनाज बाहर से मँगाना पड़ा तो यह डूबनेका रस्ता तो है ही। मुदा बेसी-कम खेत वालोंको भी कोई रास्ता निकालना होगा।

भैया—रस्ता यही है, कि खेतकी उपज में से जोताई-बोआई-कटाई-सिचाई-का खरच निकाल दो, बीजका दाम निकाल दो, मालगुजारी निकाल दो और भी कुछ खरच पड़ा हो, सब निकाल दो; फिर देखो कि सब खरच काट देनेपर कितना अनाज बच रहा है ?

सन्तोखी—कुल खर्च निकालनेपर सात मनमें दो मन बचेगा।

भैया—हर खेत वाले आदमीको एकड़ पीछे दो मन अनाज दे दो। अच्छा खेत हो तो और बाँध दो।

सन्तोखी—कहीं-कहीं उपज बेसी है, वहाँ दो मन कम होगा।

भैया—हम दो मन ब्रह्माकी रेख थोड़ई कहते हैं।

दुखराम—माने, जितनी उपज हो, उसमेंसे सब खरच निकालकर फरक-फरक जमीनपर फरक-फरक भाव बान्ह दो, तो बेसी खेत वाले लोग काहे न राजीं होंगे ?

सन्तोखी—एक आदमी राजी नहीं होगा, तो क्या कुल नावको डुबायेंगे ? और जिसके पास बेसी खेत है, उसका खेत भी तो दो पुहुतमें बाँटकर छोटा-छोटा कोला हो जायगा ।

भैया—हम यह नहीं कहते कि पंचायती खेती हँसते-खेलते हो जायगी, किसी गाँवमें फुटमत बहुत होती है, वहाँ कोई एक दूसरे को देख नहीं सकता । किसी गाँव में मुरुखताई बहुत होती है, लोग अपना भला-बुरा नहीं समझते । मुदा सौ गाँवमें एक गाँव ऐसा भी मिल सकता है जहाँ सुलह-सराकत वेसी है । उसी गाँवको ले लो, खेत का मलिकाना बान्ह दो । फिर सरकारसे कहो कि हमारा गाँव पंचाइती खेती करेगा । हमको सींचनेके लिये पानीका अंजन दो, जोतनेके लिए मोटरका हल दो । मोटर-हल बहुत न मिल सके, तो नये ढंगका हल और मजबूत बैल दो । बीज और विलायतिया खाद दो । पथर-कोइला दो, हमारा गाँव अब गोबर नहीं जलायेगा, अब सारे गोवरकी खाद बनेगी ।

दुखराम—और गाय-भैंस कैसे रहेंगे भैया ?

भैया—दूध देने वाला जानवर अपना-अपना रहेगा । भेड-बकरी, सूअर, मुर्गा भी अपना-अपना ।

दुखराम—माने, खाली जोतने वाले जानवर ही पंचाइती रहेंगे । मुदा दुधार जानवरके वास्ते भूसा कहाँसे मिलेगा ?

भैया—जिसके घरमें जितने ही पसू होंगे, उतना ही गोवर और खाद भी होगा । पंचायत गोबर और खाद का दाम देगी । उसीके मुताबिक भूसा मिलेगा । फिर बछड़ा जो तैयार होगे, उनका भी तो दाम मिलेगा ।

सन्तोखी—औ भेड़-बकरी-मुर्गा !

दुखराम—दुर मरदे ! मुर्गा भूसा नहीं खाता; न भेड़-बकरी को सानी खिलाई जाती है । मुदा भैया ! अकिल बताने के वास्ते खेती का इलिमदार भी सरकार से माँगना चाहिये ।

भैया—जोंकोंकी नहीं, बल्कि हमारी सरकार जब होगी, तो वह कुल काम करेगी । तीन अरब रुपया जमाकरके विदेस भेजना कैसे होगा ?

दुखराम—जैसे रूसमें, जैसे चीनमें, वैसे ही हियाँ भी पंचाइतकी खेती ?

भैया- बिलेतिया खाद, सिंचाईका इंजन, बढ़िया बीज, मोटरका हल, सब पहले पंचाइती खेतीको मिलेगा तब किसी औरको ।

सन्तोखी—हमको तो भैया, सब बात साफ-साफ लौकती है । जो नये ढंगसे पंचाइती खेती हो, तो अनाज, आलू, गोभी, तमाकू, मिर्चाका टाल लग जाये । और ऊख भी ।

भैया—ऊख तो पाँच सौ एकड़ बो दो, तो गाँवमें एक छोटीसी चीनीकी कल बैठा देंगे ।

सन्तोखी—तब तो भैया, लछिमी पैर तोड़कर गाँवमें बैठ जायंगी ।

भैया—गाँवमें छोटा-मोटा बहुत तरहका कारखाना खुलेगा सन्तोखी भाई ? दूसौ एकड़ सिगरेटवाला तमाकू जिस गाँव में बो दिया जाये, वहाँ छोटा-सा सिगरेटका कारखाना भी खड़ा कर दिया जायगा ।

दुखराम—तब तो सुक्खू भाईकी तस्वीर छापके गाँवके नामपर अपना सिगरेट हम चारों खूंटमें चलायेंगे और चारों ओरसे पैसा बहता चला आवैगा ।

दुखराम—हमार फोटो छपैगा, तो उसके साथ सोमरिया भौजीका भी छापना चाहिए ।

सुखराम—हमको उजुर नहीं, जाके अपनी भौजीसे पहले पूछ लो ।

भैया—पंचाइती खेती होने लगेगी तो सोमरिया भौजी भी वही नहीं रहेगी सुक्खू भाई ! अभी कामकी बात हमने कही नहीं । उपजके बारे में इतना ही समझो कि वह सैकड़ों गुना बढ़ जायेगी । गाँवमें अपनी लारी होगी जो ढोकर फल तरकारी सहरमें ले जायगी ।

सन्तोखी—तब तो भैया, सहरमें अपनी तरकारीकी दूकान खोल लेंगें गाँवके लोगोंका टिकाव भी वहीं हो जायगा ।

भैया—कुल होगा सन्तोखी भाई, मुदा मुख बात है धनके आवगको बढ़ाना । रेंड़ी भी गाँवमें चकका चक बोयेंगे । तेल अलग निकालेंगे । खली की खाद बनेगी और पत्तोंको खिलाकर रेसमका कीड़ा पोसेंगे । गाँवही में कताय-बिनायके असमिया अंडी तैयार होगी ।

दुखराम—तब तो मेहरियोंको भी कताईका काम बहुत मिलेगा और गाँवके जोलाहा भी जी जायेंगे ?

भैया—औ गाँवमें मधुमक्खी भी पोसेंगे ।

दुखराम—यह नहीं करना चाहिये भैया, एक मरखही गायसे रस्ता रुक जाता है, मधुमक्खी काट-काटके मुँह तुम्बा बना देंगी ।

भैया—नहीं दुक्खू भाई, यह मधुमक्खी नहीं काटती । दूसरे देसोंमें लोग बहुत पोसते हैं । हमारे गाँवमें मधु निकलेगी और मोम ऊपरसे । खूब पैसा आयेगा । लोगों-को बतला देंगे, अपने घर-घरमें मधुमक्खी पोसेंगे । इसे पंचाइती करने का काम नहीं ।

सन्तोखी—और साबुन नहीं बनाया जा सकता भैया ?

भैया—रेंड़ीके तेलसे चाहे तो साबुन बना लें, चाहे बढ़िया महकौआ तेल । पंचाइती खेतीसे सौ तरहका आमदनीका रस्ता निकल आवेगा ।

सन्तोखी—आमदनी कसे बाँटी जायगी भैया ?

भैया—खेत मालिकका बँधा हुआ अनाज पहले निकाल दिया जायगा । फिर बीज, खाद और हथियारका दाम चुका दिया जायगा । बाकी आमदनी में जो जितना काम किये है, उसी हिसाबसे बाँट दिया जायगा ।

सन्तोखी—काम भी तो कई तरहका भैया ? कोई बेसी काम करता है, कोई कम । कोई बेसी मसक्कतका काम करता है, कोई अकिलका ।

भैया—'सब धान बाइस पसेरी' नहीं होगा, सन्तोखी भाई। एक-एक दिन कामका हिसाब होगा। एकड़का छठाँ हिस्सा एक दिन कोड़नेका हिसाब रखा हो और कोई आदमी तिहाई एकड़ कोड़ देगा, तो हाजिरी बहीमें एक ही दिन में उसके नामपर दो दिनका काम दरज होगा। जो आधा काम करेगा, उसका आधा दिन दरज होगा।

दुखराम—माने कामकी तौल रहेगी। तब तो लोग बेसी-बेसी काम करेंगे ?

भैया—हर फसलमें गाँव के समूचे मरद-मेहरारू मिलके जितने दिन काम किये हैं, सब बही में दर्ज रहेगा। साल भरमें गाँवभरमें कितना काम हुआ, उसको हाजिरी बही ऐनाकी तरह झलका देगी। आदमी को उसीपर बाँट दिया जायगा।

दुखराम—और जिसका सब वखत इन्तिजाम में ही लग जायगा उसको ?

भैया—उसको भी तनखाह दी जायगी। मिस्त्रीको जास्ती पैसा मिलेगा। गाँव में अपनी पंचाइती दुकान भी होगी।

दुखराम—तब तो भैया, नून-तेलकी भी आफत न होगी। कपड़ा-लत्ता सब गाँव हीमें मिलेगा ?

भैया—गाँवमें पंचाइती खेती हो जानेपर सब ठीक हो जायगा। अपनी सरकार भी जिउ-जानसे मदद करेगी। एक गाँवको नमूना बनाकर दिखा देना चाहिये, फिर सैकड़ों गाँव दौड़-दौड़कर आयेंगे और कहेंगे—दुखराम भैया, चलो, हमारे गाँवमें पंचाइती खेती बनवा दो।

दुखराम—और जो दू-चार आदमी गाँवके सरकसई करें ?

भैया—दू चारके सरकसईसे कुछ नहीं बनता-बिगड़ता। उनका खेत एक छोर-पर फरका कर देंगे।

दुखराम—और जो न मानें ?

भैया—कानूनके सामने मानना न मानना कोई नहीं चलता। कानून ही मनवाने के लिये तो पुलिस-पल्टन रखी जाती है।

सन्तोखी—नावमें पानी भर रहा हो और कोई आदमी टाँग पसारकर कहे कि हम उलीचने नहीं देंगे, तब बताओ दुक्खू भाई क्या करोगे ?

दुखराम—क्या करेंगे ? उसको टाँग पकड़कर गंगालाभ करावेंगे।

सन्तोखी—पंचाइती खेतीसे बेखेतवाले लोगों का भी बहुत निस्तार होगा।

भैया—बेखेतवाले लोगोंकी रोजीका रस्ता जो न निकाला गया, तो जैसे ही कारखाने बढ़ने लगे, वह गाँव छोड़के चले जायेंगे। अब दूसरेको भूखा रखके, बाबू बनके, सूद-सवाई करसे धनी बनने का जमाना गया। गाँव भरके सुखमें सुख मनाना पड़ेगा और सुख होगा पंचायती खेती हीसे।

सन्तोखी—तो कारखाना बहुत बढ़ेगा भैया ?

भैया—कारखानेकी बात अब कल होगी, आज बस यहीं तक।

१९. कल कारखानों का फैलाव

दुखराम—अच्छा हुआ मँगरू ! तुम भी आ गये। बड़े मौके से आये। आज रजबली भैयासे कल-कारखाने की बात हो रही है। तुम्हें तो गिरीडीह की कोइलरी का हाल मालूम ही है।

मँगरू—कोइलरीकी बात क्या पूछते हो दुक्खू भाई ! हम लोग चाहते हैं, कि खूब जास्ती कोइला निकालें, देसको कोयलेका बहुत काम है, मुदा मालिक बीचमें कोई न कोई ऐसा अड़ंगा लगा देता है, कि काम होने नहीं पाता।

सन्तोखी—कोयलेकी तो बड़ी जरूरत है। हम लोग अपने गाँवमें भी चाहते हैं, कि गोबर की खाद बनावें और पथर-कोइलेसे भात पके, मुदा ई मालिक काहे बीच में टाँग अड़ाते हैं।

दुखराम—इसीलिए न भैया उनका नाम जोंक रखा है। लो भैया, भी पहुँच गये। जय हिन्द भैया !

भैया—जय हिन्द सब भाई लोगोंके ! कहो मँगरू ! कब आये गिरीडीहसे !

मँगरू—रात आये रजबली भैया ! तीन बरस हो गया देखे, कहा, रजबली भैयासे भेंट कर आवें।

भैया—अच्छा तो, आज बात भी वही होगी, जो तुम्हारे कामकी है। कल-कारखाने का बढ़ाना बहुत जरूरी है और यहाँ काम बहुत जल्दी होना चाहिये।

दुखराम—माने, कछुआकी चालसे नहीं होना चाहिए।

भैया—पेटकी भूख दूर करनेके लिए पंचाइती खेती करनी चाहिए। देस हमारा सुतन्तर और मजबूत तभी होगा, कल-कारखाना बढ़ेगा। जानते हो न "दुब्बरकी मेहरारू सबकी भौजाई।"

सन्तोखी—और धनकी आमदनी भी भैया कारखाना हीसे ज्यादा होती है।

भैया—बल और धनकी दोनों खातिर कल-कारखाना चाहिए। अब हमारा देश सुतन्तर है। हमारे पास अपनी पल्टन है। पल्टनको कितना हथियार चाहिये और आजकलका हथियार बुद्ध ठाकुर की लोहसारमें नहीं बन सकता।

सन्तोखी—अपने यहाँ भी अणुआ बम बनना चाहिए भैया ? क्या जाने, कभी किसी दुश्मनकी आँख हमारे ऊपर पड़े।

भैया—वह भी चाहिये, लेकिन सबसे पहले अपनी फौज के लिए लड़नेवाला उड़नखटोला (हवाई जहाज) चाहिए, लड़नेवाली मोटर चाहिये, और टंक भी चाहिये।

दुखराम—टंकके बारेमें तो कहा था न भैया ?

भैया—टंक है चलता-फिरता किल्ला। जैसे किले की दीवालपर छोटी-मोटी तोपका कोई असर नहीं होता, वैसे ही दो-दो, तीन-तीन अंगुल मोटी इस्पातकी

चादरवाले टंकपर गोला-गोलीका कोई असर नहीं होत। गोलागोलीकी बरसा होती रहे, तो भी वह चला जाता है। वह सड़कपर ही नहीं, खेत-खाइं, भीट-पहाड़ सबपर रेंगता चला जाता है। बड़े-बड़े घरोंको तो वैसे ही उलटते चला जाता है, जैसे सूखे पत्तेके ढेरोंको भैंसा। वह पहिया नहीं, सिक्कड़पर चलता है।

सन्तोखी—अपनी पल्टनमें टंक है भैया ?

भैया—है, मुदा सब उधारका। माँगे हथियारसे आज-कल अपना बचाव नहीं हो सकता। संकट आनेपर अंग्रेज या दूसरे देसका मुँह जोहना पड़ेगा।

दुखराम—नहीं भैया ! हथियारके बारेमें मुँहजोहाई ठीक नहीं।

भैया—इसीलिए पिस्तौल, बन्दूक, तोप, टंक, उड़नखटोलामें लेकर अणुआबम तक सब अपने यहाँ तैयार होना चाहिए।

सन्तोखी—हमारे यहाँ कोई हथियार तैयार भी होता है भैया ?

भैया—अँग्रेज हमारा हथियार छीन लिए थे, इसीलिए न कि हम बाछी बन जायँ ? वह भला काहे हिन्दुस्तानमें हथियार बनने देते ? पिछली लड़ाईका जब चाँप पड़ा तो कुछ छोटे-छोटे हथियार बननेका इन्तिजाम किया। अच्छे किसिमके इस्पात तकको नहीं बनने देते थे। इसी लड़ाईने एक इस्पातका भट्ठा ताताको बनाने दिया। अपने देसमें न मोटर बनती, न उड़न खटोला, न टंक, न रेडियो बाजा बनता। बताओ जो कभी देसपर लड़ाईका संकट आये, तो हमारा गला दूसरोंके ही हाथमें रहेगा न ?

दुखराम—हाँ, भैया ! इसमें क्या सन्देह। छोटेसे बड़े तक सब तरहका हथियार जब तक अपने देसमें नहीं बनेगा, हम निहत्थेके निहत्थे रहेंगे।

भैया—सब हथियार अपने यहाँ बनना चाहिये। हथियार का कारखाना बनेगा, तो उसीसे सवारीकी मोटर, माल ढोनेकी लारी, मुसाफरका उड़नखटोला भी बनेगा, और देशका करोड़ों रुपया बाहरसे बच जायेगा। यही नहीं, हम अपना माल दूसरे देसमें भेजेंगे और बाहरसे भी खूब धन आयेगा।

सन्तोखी—है तो भैया ठीक ! मुदा, हमारे पास कारखाना खड़ा करने और माल तैयार करनेके लिए सब चीज-बहुत भी है ? फिर बेसी इलिम भी तो चाहिए।

भैया—लोहा, तामा, कोइला, रबड़ सब चीज* अपने इहाँ है। इलिम अकिलका जो अपने यहाँ टोटा है, वहाँ भी ऐसा नहीं है, कि पूरा नहीं किया जा सके। मतारीके पेटसे कोई इलिम-अकिल सीखके नहीं आता। बड़े-बड़े लोग हमारे देशमें आज भी हैं, जिनका लोहा दुनिया मानती है।

मँगरू—हाँ, भैया ! हम अपनी कोइलरीमें देखते हैं, कि सब बड़का-बड़का इन्जिनियर और मिस्त्री अपने देस के हैं। भैया सब चीज अपने देसमें है। जल्दी अपने देसको मजबूत करना बहुत जरूरी है। अब एक-दो लोहा-इस्पातके कारखानेसे काम नहीं चलेगा।

दुखराम—कैसे काम चलेगा ! पंचाइती खेतीके लिए हमें मोटर-हल चाहिये, सिंचाईके लिये अंजन चाहिये, चीनी और सिगरेट बनानेकी कल-मसीन चाहिये।

---

*इसके बारेमें देखियें 'आजकी राजनीति।'

सन्तोखी—बाहरसे सब चीज मँगानेमें एकका नौ देना पड़ेगा, फिर इतना पैसा हम कहाँसे लायेंगे ?

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई ! छ-छ, सात-सात लाख गाँव हैं। एक-दो गाँवका इन्तिजाम करना हो, तो बेंच-खोंचकर कुछ पैसा बटोर भी लें, लेकिन कुल देसका काम इस बेंच-खोंचाईसे नहीं होगा। हमारे यहाँ पचासों जगह लोहा भरा पड़ा है। एक-एक जगह एक-एक ताता जैसा कारखाना खड़ा कर सकते हैं। छोटा नागपुरमें और कितनी दूसरी जगह ताँबा है। सब ताँबा निकालना होगा, नहीं तो कल-कारखानोंकी चीज नहीं बन सकेगी। मटिया तेल खाली आसाममें निकसा है। अभी बहुत जगह उसके वास्ते भुइँसोधाई करनी है। नदियाँ सब बिजलीसे भरी हुई हैं,वह मुफ्त मीठा पानी बाहरके समुन्नरमें ले जाकर खारा नहीं बनातीं, बलुक टालकी टाल बिजली भी बहा ले जाती हैं। जहाँ नहरका बड़ा-बड़ा बान्ह बँधेगा, वहाँ बिजली पैदा की जा सकती है और गाँव-गाँव मटिया तेलकी ढिबरी बालनेका काम नहीं पड़ेगा।

सन्तोखी—गाँव-गाँव बिजली वत्ती लग जायेगी, तो गाँव जगमगा उठेगा और हमारे पंचाइती गाँवमें तो सबसे पहले बिजली आयेगी। है न भैया ?

भैया—जरूर ? मुदा बिजलीसे घर ही नहीं जगमगायेगा, उससे तेल-कोइलाका खरच हट जायगा। सिंचाई के अंजनका खरच कम हो जायेगा; तेल-कोइलाका अंजन न लगाकर हम लोग बिजलीका छोटा अंजन लगा लेंगे। चीनी सिगरेटकी कल बिजलीसे चलेगी। चरकट्टी मसीनमें भी बिजली लगा देंगे,चारेका टाल लग जायेगा। मोटर हाल भी बिजलीसे चलेगा। फिर जितनी रेल है, सबमें कोयला झोंकनेका काम नहीं पड़ेगा।

मँगरू—पथरकोइलाका काम तो बन्द नहीं हो जायगा, भैया ?

भैया—नहीं मँगरू ? पथर-कोइलाका खरच बहुत बढ़ जायगा, उसीको बचानेके लिये पनबिजलीकी बहुत जरूरत पड़ेगी। लोहा, तामा, अलमुनिया को गलाकर तैयार करनेमें पथर-कोइला बहुत खर्च होगा और गोबर बचानेके लिए घर-घरमें चूल्हेके लिए पथरकोइला देना पड़ेगा। तुम घबड़ाओ मत—मँगरू कोइलरीका काम बन्द नहीं होगा। आज जितना कोइला निकलता है, उससे बीस गुना अधिक कोइलेकी माँग होगी। फिर खाली लोहा-तामाकी सिल्ली ढाल करके ही छोड़ नहीं देना है, उनसे सब कल-मसीन बनाना होगा।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! कल-मसीन बाहरसे मँगाकर एक का नौ देना बेबूझका काम है।

भैया—अपने देसमें घड़ी बनेगी, रेडिहाबाजा और फोनूगिलाफ बनेगा। मोटर और बाइसिकिल बनेगी। बिड़लाकी तरह नहीं कि पुर्जा बाहरसे मँगा लिया और यहाँ बैठकर जोड़ दिया औ बस ! सब चीज अपने ही यहाँ ढाली जायगी, अपने ही यहाँ जोड़ी जायेगी। जो चीज अपने देसमें नहीं है, उसे अपने यहाँके कारखानेका माल भेजकर बदल मँगाया जायगा।

मँगरू—मुदा जो यह कुल कल-कारखाना सेठोंके जिम्मे लगा दिया, तो सब गुर-गोबर...

भैया—ठीक कहते हो मँगरू ! बिजली, लोहा, तामा, कोइला, कल-मसीन बनाई यही देसका जीव है । जोंकोंको अपने जीवसे खेलवाड़ करनेका मौका नहीं देना चाहिये । सेठोंके पास इतना पैसा भी नहीं है, कि ऐसे बड़े-बड़े कारखानोंको जल्दीसे देसके चारों खूटपर खोल दें ।

मँगरू—हाँ भैया ! सेठ देसकी भलाईका कभी ख्याल नहीं करते । उनको सबसे पहले अपना 'लाभ-सुभ' चाहिये, देस जाय चूल्हा-भाड़में । हम लोग कोइला-खान वाले मजूर तिलमिलाकर रह जाते हैं । हम चाहते हैं कि वेसीसे बेसी कोइला निकालें, मुदा सेठ सोचता है—बेसी कोइला निकला, तो सस्ता हो जायगा, नफा कम होगा । फिर सेठ ऐसा तिकड़म लगाता है, कि कोइलरीमें हड़ताल हो जाय !

दुखराम—माने मजूर लोग काम करना छोड़ दें, और कोइला निकालना बन्द हो जाय । यह भी तो कसाईका काम है ।

भैया—कोइला सबकी जड़ है दुक्खू भाई ! कोइला कम हुआ कि कारखाना को रोकना पड़ा, रेलको कम करना पड़ा । सब जगह मजूर बेकार हो जायेंगे औ कारखानोंसे कपड़ा और दूसरी चीजों के न उपजने से देसभरमें हाहाकार मच जायगा ।

मँगरू—तो भैया जो काम देसके जीवकी तरह है, उसे कभी सेठोंके हाथमें देना नहीं चाहिये ।

भैया—अभी तक जो सेठोंके हाथमें लोहा-कोइला, पनबिजलीका काम है, सबको सरकार हथिया ले, और आगे खूब जोर लगाके नये-नये कारखाने खोले । पनबिजली भी बढ़ाना चाहिये, नहीं तो सचमुच ही कोइलेसे पूरा नहीं पड़ेगा । पनबिजली तो हमारे यहाँ अलमगंज में है । सतलज, बियास, जमुना,गंगा, राम-गंगा, सरजुग, रापती, गंडक (नरइनी), कमला, कोसी, ब्रह्मपुत्त, सोन, दमोदर, महानदी, नरबदा, तापती, गोदावरी, किसुना, कावेरी...देखो न कितनी बड़ी-बड़ी नदियाँ अपने देसमे हैं ?

दुखराम—और नदियाँ सब सिंचाईका पानी, कामकी बिजली बेकार बहाये लिये जा रही हैं ।

भैया—हाँ, सबको जूए में नाधना होगा । बाँध बाँधके पचासों कोसका समुन्दर एक-एक जगह बनाना होगा ।

दुखराम—इसमें तो बहुत आदमियोंको काम मिलैगा ।

भैया—एक-एक समुन्दर बनाने के लिए चार-चार, पाँच-पाँच लाख आदमियोंका काम पड़ेगा । मुदा अपने यहाँ आदमियोंकी क्या कमी है ?

सन्तोखी—कलकत्ता बम्बईकी चटकल-पटकल गाँवके मजूरोंको कलकत्ता खींच ले जाती रही । लड़ाईके बखतमें हवाई जहाजका अड्डा अब जगह-जगह बनने लगा, तो गाँवमें मजूरोंका मिलना मुसिकल हो गया । आदमीके बिना कहीं पंचइती खेतीमें तो हरज नहीं होगा ?

भैया—मजूरोंकी कमी तो जरूर होगी दुक्खू भाई ! पंचइती खेतीसे फरक रहने वाले गाँवों के मजूर तो फुरसे उड़ जायेंगे ।

दुखराम—अच्छा ! तब देखेंगे, बबुआ तिवारीका हल कैसे चलता है ? मजूरी देते समय बड़ा सतजुगका अइन-कानून छाँटते हैं ।

सन्तोखी—इसके वास्ते भी पंचइतींका रस्ता ही ठीक मालूम होता है । मरद-मेहरारू सबको काम मिल जायेगा ।

भैया—कल-कारखाना खूब जोरसे जो बढ़ाया गया, तो पचीस बरसमें अपना देस धनधानसे अटूट हो जायगा, कहीं कोई भूखा-दूखा नहीं रह जायेगा ।

मँगरू—जो कोइलाकी खान सेठोंके हाथसे निकालके समूचे देसके हाथमें चली आयगी, तो हम लोग खूब हुमुचके काम करेंगे, और कोइलाका कभी टोटा नहीं पड़ने देंगे ।

भैया—हाँ, मँगरू, और लोहा, तामा, पन-बिजली सब जगह मजूर हुमुच-हुमुचके काम करेंगे । मजूरको जब मालूम होगा, कि वह सेठकी थैली भरनेके लिए नहीं काम कर रहा है, वह देसकी भलाईके लिए काम कर रहा है, तो न रात गिनेगा न दिन, खूब मन लगाके काम करेगा ।

भैया—हाँ, क्या हम आधा पेट भूखा रहके भी देसके लिए काम करेंगे । मुदा सेठोंकी ही सरकारमें भी चलती है । पुलिस भी उनकी ही मदद करती है ।

भैया—आज तो सेठोंकी ही सरकार है । मजूर, इलिमदार लोग मिलकरके सब चीजका इंतिजाम करेंगे, तभी ठीकसे काम चलेगा । जोंकोंको बिदा करना ही होगा ।

मँगरू—तब सब जगह सांती हो जाएगी भैया ! फिर काहे को हड़ताल करेगा ? आमदमी-खरच हम लोगोंकी आँखोंके सामने रहेगा और हम—उतनी ही मजूरी लेंगे, जिसमें काम भी चलता रहे, और हमारी भी रोजी चले ।

भैया—खाली रोजी ही नहीं, मजूरोंके लड़कोंके पढ़ानेका इंतिजाम करना होगा । रहनेके लिए सूअरकी खोभार नहीं, पक्का मकान बनाना होगा । अस्पताल, दवा-दरपनका पूरा इंतिजाम करना होगा । कमासुत पूतका खाली पेट भर देनेसे छुटकारा नहीं लेना होगा ।

सन्तोखी—और कपड़ा, चीनी और दूसरे कारखानोंके बारेमें क्या होगा भैया ?

भैया—कल-कारखाना तो सभी देसके हाथमें होने चाहिए, जोंकोंके हाथ में रहनेमें वहुत गड़बड़ होती है ।

मँगरू—हाँ भैया, सेठ खाली अपनी थैली की ओर देखते हैं । चीज कमसे कम पैदा करके महँगा बनाकर सो भी चोर वाजारमें बेंचकर थैली भरते हैं ।

सन्तोखी—और चीज महँगा होनेसे समूचे देसको तकलीफ होती है ।

भैया—आजकल जो देसमें चीज इतनी महँगी है, उसका कारन यही है कि चीज कम पैदा होती है और खरीदने वाले जादा हैं । सरकार जब चीजके भावपर अंकुस रखती है तो जोंकें चोरबाजारी करने लगती हैं और लोगोंकी आँख में धूल झोंकके एकका नौ लेती हैं । मुदा पहले कुछ साल तक छोटे-मोटे कारखानोंको सेठोंके हाथमें रखना होगा ।

मँगरू—तब तो मजूरोंका गला रेता गया न भैया ?

भैया—एक ही दिनमें मँगरू, सब कारखानोंको लेने की जरूरत नहीं। पहले जड़को पकड़ना चाहिए। पन-बिजली, लोहा, तामा, कोइला, मसीन और रसायन बनानेका कारखाना देसके हाथमें चला जाना चाहिए, और दूसरे कारखानोंपर पूरा अंकुस होना चाहिए, जिसमें मजूर हकसे वेहक न हों, उनको पूरी मजूरी मिलनी चाहिए। रहनेके लिए अच्छा मकान बनाना चाहिए। स्कूल-अस्पताल का पूरा इंतिजाम होना चाहिए। मजूर सभासे बिना पूछे किसी मजूर को निकालना नहीं चाहिए। कारखानेके इंतिजाममें भी मजूरोंके आदमी होने चाहिए। सेठके नफाको भी मनमाना नहीं होने देना चाहिए। पहले इतना हो जाना चाहिए। पीछे तो फिर जोंकों को हटाना ही है।

मँगरू—मुदा भैया, सेठ इसपर राजी होंगे ? कितने सालों से उनके मुंहमें खून लगा है। बड़े-बड़े भगत सेठ लोगोंको देखा है चीटींको चीनी सतुआ खिलाते हैं, मुदा मजूरका गला काटने के लिए सबसे बड़े कसाई हैं।

भैया—यह तो लोगोंके हाथमें है मँगरू ! जानते हो न, अब सरकारमें वो ही लोग जायेंगे जिनको २०-२१ सालसे वेसी उमिरवाले सब मरद-मेहरारू बोट देंगे।

दुखराम—तो भैया अब बोट खाली पैंसेवालेके हाथमें नहीं है ?

भैया—नहीं अब बोटमें न गरीव न अमीर देखा जायगा, न मरद-मेहरारू। सब लोग जिसको अपना बोट देके चुनेंगे, वही जाकर राज-काज चलाने के लिये अपनी सरकार बनायेंगे। जो लोग चाहेंगे कि जोंकें रहें, तभी जोंकें रह पायेंगी।

सन्तोखी—लोगोंमें तो बेसी जोंकोंको अपना दुस्मन ही समझते हैं, फिर कौन जोंकोंको बोट देने जायगा भैया ?

भैया—यह न कहो सन्तोखी भाई ! लोगों की आँखोंमें धूल झोंकनेकी विद्या जोंकें बहुत जानती हैं। वह भेस बदलके बहुरुपिया बननेमें बहुत हुसियार हैं। वह तो तुम्हारे पास आएंगी गोरच्छाका झंडा लेके कहेंगी जो हमको बोट न दोगे तो हिन्दू धरमका छयकार हो जायगा।

सन्तोखी—बहुत बड़ा खतरा है भैया ! जोंकें जातका नाम लेके आएंगी। अपनी मुढ़ताईसे लोग बहक जाते हैं, औ नहीं जानते कि जोंकोंकी कोई जात नहीं होती, वह सबका खून चूसती हैं।

भैया—बहुत सजग रहनेकी जरूरत है। जोंकोंके फंदेमें जो पड़े तो फिर देसके सुतन्तर होने से कोई फायदा नहीं। उसी तरह हम भूखे मरेंगे।

सन्तोखी—हमको तो बराबर मनमें आ रहा है, वही हरसाल सत्ताईस लाख सवैया मुंहके बढ़ने और तीन अरब रुपिया भेजके विदेससे अनाज मँगानेका। हमें किसीके धोखेमें नहीं पड़ना चाहिये, और जोंकोंके लिए एक भी बोट नहीं देना चाहिए।

भैया—हाँ, सब लोगोंको यह गाँठें बान्ह लेना चाहिए और हिन्दू-मुसलमानके नामपर मरना नहीं चाहिए। गरीबों की भलाई होगी, तो हिन्दू-मुसुलमान दोनोंकी। जोंकोंका जाल चला, तो मरना होगा हिन्दू-मुसुलमान दोनोंको।

दुखराम—यह जोंकों और कमेरोंकी लड़ाई कब तक रहेगी ?

भैया—यह तब तक रहेगी, जब तक जोंकोंका टाट नहीं उलट जाता।

मँगरू—लड़ाई बहुत सङ्गीन है और चारों ओर घूम रहे हैं बहुतसे रँगे सीयार। देखें कैसे कमेरोंका बेड़ा पार होता है।

भैया—बेड़ा जरूर पार होगा मँगरू! मुदा कमेरोंके हकके लिये लड़नेवाले जो आपसकी लड़ाई छोड़ दें तब।

मँगरू—हाँ क्या, इससे बड़ा नुकसान होता है। कमेरोंके लिये सोसलिस्ट भी लड़ते हैं, कमुनिस्ट भी लड़ते हैं, फरबरबलाकी भी लड़ते हैं; करान्तिवाले सोसलिस्ट भी लड़ते हैं, मुदा फिर आपसमें लड़ते बखत कमेरोंकी बात भूल जाते हैं। हम लोग तो बड़ी दुविधामें पड़ जाते हैं।

भैया—हाँ ठीक कहा मँगरू! असल मुद्दा है कमेरोंका राज बनाना, लेकिन अपनी मुढ़ताईसे अपने-अपने दल औ पाटीको ही वह असल मुद्दा समझ लेते हैं। चाहें, जो जिस पाटीमें हो, उसमें रहे। अपना देस इतना बड़ा है, कि सब पाटीके लिए जगह है, मुदा कमेरोंकी भलाई मनमें रखते और मरकस बाबाके चेला होते जो आपसके मनमुटावको फरका रखके जोंकोंसे लड़नेमें आगे नहीं रहता, वह बहुत नालायक है। देस सुतन्तर हो गया, लेकिन किसान-मजूर और कलम-घिसवैया मजूरोंकी दसा पहलेसे बुरी है। अब सबको एक साथ उठके विजय पताका गाड़नी है।

२०: कमेरों का राज

चौपालमें कोयला-मजूर मँगरू, गाँवकी छोटी दुकानवाले सन्तोखी, और किसान दुखराम बैठे किसीकी बाट जोह रहे थे। इसी बेरा रजबली आते दिखाई पड़े। तीनोंका मन हरा हो गया और पास आते ही 'भैया, जय हिन्द' कह कर उन्होंने स्वागत किया। आज भैया हीने बात सुरू की—सब भाई जानते हैं, कि लड़ाईके समय में कितनी तकलीफ हमारे देसके गरीबोंको भोगनी पड़ी, पिछले छः बरसमें तो हद हो गई। हर साल नेता लोग कहते रहे अब अच्छा दिन लौटेगा, मुदा अच्छा दिनका कहीं पता नहीं।

मँगरू—पता कहते हैं भैया, औ अच्छे दिनका। आज तो नोन-तेल-लकड़ी जुटाना भारी मुस्किल है।

दुखराम—मँगरू भाई, सहरके लोग समझते होंगे, कि नून-तेल-लकड़ीका चाहे कुछ भी दुख हो, मुदा किसानोंको अन्नका कोई काल नहीं है।

मंगरू—हाँ दुक्खू भाई, झरिया वैसे तो कोइलरीके लिए मसहूर है, हजारों मजूर धरतीके पेटमें से कोयला निकालते हैं, मुदा हम लोगोंकी कमाईमें हिस्सा लेनेके

लिए बनिया-महाजन भी बहुत बस गये हैं। ऊ लोग कहते हैं, कि आजकल जब सेर-सवा-सेरका चाउर बिक रहा है, तो सबसे मौजमें गाँवके किसान हैं।

दुखराम—आनके मुँहकी बहुरी (भुना हुआ जौ) बहुत मीठी लगती है। सहरके सेठ या बाबू लोगोंको क्या पता, कि हमारे गाँवमें आधे लोगोंके पास खेत ही नहीं हैं। वह मजूरी-बनिहारी करके जीते हैं।

मँगरू—सो भी सालमें कुछ ही दिन। जो सूखी रोटी भी मँडुआ-बजराकी मिल जाती, तो दुक्खू भाई हम लोग काहे झरियामें जाकर दिन-रात खटते, गाली-मार सहते और घरके बेकत-परानीको दुख सहने के लिए छोड़ जाते? भैया, तुम तो गाँवके हो और सहर, देस-परदेस भी देखे हो, हमारे लोगोंकी तकलीफ तुमसे छिपी नहीं है।

भैया—मंगरू भाई, हमारे देसमें मुट्ठीभर लोग हैं, जिनको अँगुरी पर गिना जा सकता है, वही मौजमें हैं और उन्हींके लिए ई सुराज भैया है।

सन्तोखी—भैया, हमको तो दिखाई पड़ता है कि खाली सेठ लोग ही मौजमें हैं।

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई, चोर बजरिहा लोग बड़ी मौजमें हैं। एक लगावे चार पावेकी कहावत उनके लिए ही ठीक है। मुदा, ई मत समझो कि सहर-बाजारमें जितने लोग कपड़ा, अनाज या दूसरी चीज चोरी-चोरी बेच रहे हैं, सब सुख और निचिन्ताईमें हैं। ठीक से देखो, तो पता लगता है कि लखपती चोर-बजरिया भी तुमसे अच्छी दसामें नहीं हैं। जो कभी पकड़-धकड़ होती है, तो यही पकड़े जाते हैं, बड़े-बड़े चोर बजरिहाको कोई नहीं पूछता। सबसे बड़े दस-बारह चोर-बजरिहा हैं, उनका ही तो ई राज है। सुराज भया है, तो उन्हींके लिए। यह देसका गला रेत रहे हैं, मुदा कोई पुछवैया नहीं।

सन्तोखी—तो भैया, लखपती चोर-बजरिहाका भी कोई ठौर-ठिकाना नहीं है।

भैया—नहीं सन्तोखी भाई, ऊ तो वही घाघ चोर-बजरिहोंके दलाल हैं। थोड़ी-सी दलाली इनको मिल जाती है, और जोखिम भी इन्हींको उठाना पड़ता है, बाकी समूचा धन तो बहकर वहीं बड़े चोर-बजरिहोंके घरमें चला जाता है। जिस बखत देसके ऊपर आखिरी संकट आयेगा, उनका टाट उलटनेमें देर नहीं होगी।

दुखराम—कहो भैया, ई लोग तो दुनिया भरका धन जमा करके घरमें रख रहे हैं।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, हम तो न लखपती हैं, न हजारपती। कुछ सौ रुपयाका सौदा-सुलुफ खरीदके ले आते हैं और उसीसे चार पैसा कमाके लड़का-परानीको जिलाते हैं। मुदा हमें मालूम है कि कितनी बेईमानी, सैतानी करनी पड़ती है, और हम कितना जोखिम उठाते हैं। कहनेको तो कहते हैं कि कंठरोल लोगोंके फायदेके लिये किया है, मुदा यही समझो कि पहले खाली पुलिस और कचहरीके अमलाकी लूटके मारे लोग परेसान थे, और अब कंठरोलकी आड़में जो कुछ हो रहा है, उसकी कुछ न पूछो।

मँगरू—तो भैया, कंठरोलवा उठाया काहे नहीं दिया जाता ?

भैया—मँगरू भाई, यही तो बड़ी-बड़ी जोंकें, बड़े-बड़े चोर-बजरिहा रात-दिन रट लगाये हैं, एक बार उन्होंने गाँधीजीको भी भरमा दिया और जैसे ही कपड़ासे और-और चीजसे कन्ठरोल हटा, कि इन अतताइयोंने दाम दूना-चौगुना चढ़ाके अरबों रुपया लूटके धर दिया। देखा नहीं कपड़ा कितना मंहगा हो गया।

दुखराम—तो भैया कन्ठरोल रखने पर सिपाही चपरासीसे लेके हाकिम-हुकुम, सरकारी मन्तरी तक सब जगह घूंस-रिस्वत की बाढ़ आ जाती है। क्या किया जाय ? हमारी तो सीधी-सीधी अहिरकी जात है। जहाँ कोई रस्ता नहीं दिखाईं पड़ता, वहाँ लाठीसे रस्ता निकालते हैं।

भैया—दुक्खू भाई, आजकलके अणुवाँ बम, तोप, टंक, बन्दूक, मसीनगनके जमानेमें लाठी बेचारी क्या करेगी ?

दुखराम—भैया तो क्या करें, गाँवमें आधे लोगों के पास खेत नहीं हैं। जिनके पास खेत नहीं हैं उनमें हमहूँ हैं। खाली नाँव रखनेके लिये दस परानी खातिर चार बीघा खेत है। चैतमें पेट भरता है, बैसाखमें सुमरिया हाथ खींच लेती है और बड़े मुस्किलसे आधे असाढ़ तक आधा पेट देके लड़के-बालकोंको जिलाती है। यही दसा गाँवके सौमें दस घर छोड़कर सबकी है। अनाज मँहगा हो गया है, तो इससे लाभ है खाली ओही सौमें दस घरवालोंको जिनके पास खानेसे फाजिल अनाज है। कपड़ा खरीदने जाते हैं, तो दाम सुनके टाँग थहराने लगती है। लौट आते हैं, लेकिन लड़िकनको जैसे लंगोटी पहनाके वैसे मेहरियन को तो नहीं रख सकते। अब तो नाकमें दम आ गई है।

भैया—दुक्खू भाई, तुम समझते होगे कि गाँवके गरीब किसानोंको ही नरक भोगना पड़ रहा है। यही दसा बजारके हजारपती नहीं कितने लखपती ही बनियोंकी भी है। भले तिनके आसरा पर मुनाफा नहीं मूल खा-खाके उनमेंसे कितने ही आज बड़े संकटमें फँसे हैं। कलम घिसवइया बाबू लोगनकी तो दसा हमसे-तुमसे भी खराब है। लड़का-लड़कीके पढ़ानेके लिए पैसा कहाँसे लावे, जब तनखाहमें से रुपयामें बारह आना नून-लकड़ीमें ही चला जाता है। लड़की सयानी हो जाती है, पैसा नहीं कि बियाहका इंतिजाम करें।

सन्तोखी—हम तो समझते थे भैया, कि बाबू लोग बड़े मौजमें होंगे, चोर-बजरिहा जैसे मुनाफा कमा-कमाके घरमें रुपया गाँज रहे हैं, वैसे बाबू लोग घूस-रिस्वत ले-लेकर।

दुखराम—हाँ भैया, जब अँगरेज लोग भाग गये और अपने देसके नेता लोगके हातमें राज आया, तो बड़ी उमेद भई थी और घूस-रिस्वत लेनेवाले बाबू-भैया डर भी गये थे, मुदा अब कुछ ना पूछो। दरोगाजी नम्बर दसमें नाँव लिखनेकी धमकी देके घरका थाली-लोटा सब बिकवा रहे हैं। केतेक दिनवाँ, हो केतेक दिनवाँ, कब तक ई कुल सहना पड़ेगा। आगम तो अँधियारा मालूम होता है। भैया, अब तक हमारे जैसे लोगों को आखिरमें लाठीका सहारा रहा, सोई तुम मना करते हो।

भैया—देसमें जो लोगोंको इतनी साँसत सहनी पड़ रही है और अंगरेजोंके जानेके बाद दिन पर दिन दसा और खराब होती गई, इसे देखके तुम कहोगे कि अपने भाई लोगोंके हातमें अब तो सरकार है, अब काहे ई सब होता है।

मँगरू–भैया, हम कहें। हमें तो बूझ पड़ता है, कि जोंकें किसीके भाई-बहन नहीं होतीं। जिसका भी खून उन्हें मिले, उसके देहमें मुंह लगा देती हैं, औ पेट भर जाने पर भी खून खींचती ही जाती हैं। वही जोंकें न हमारी सारी सारी विपदाका कारन हैं ?

भैया—ठीक का मँगरू भाई, ई सरकार भी जोकोंकी है, जोंकोंके लिये है। काजल की कोठरी है न ? ईमानदार कांगरेसी भी सरकारमें गये थे। कुछने छ महीना अपनेको रोका, कुछने एक बरिस और किसी-किसीने कुछ और दिन, मुदा देखा की उनकी तपस्यासे कुछ नहीं होनेवाला है। सब जगह 'राम नामकी लूट है, लूट सकै सो लूट। जोंकों ने उनके सामने भेंट-सौगात, बेटा-बेटी के बियाह-सादीमें, पूजा-पतिस्ठाके नामसे सोना-असरफी फैला दिया, हजार नहीं लाख-लाखके नोट हातमें थमा दिया।

सन्तोखी—हाँ भैया, देखते तो हैं, कल तक जिनको फटा लतरा नहीं मोवस्सर रहा, आज ऊ अपनी मोटर चढ़े घूमते हैं।

भैया—कितनोंने तो सन्तोखी भाई, मोटर लेनेको भी रोजगार बना लिया। कन्ठरोलमें छ हजारकी मोटर ली, औ चोर-बजरियोंमें चौदह हजारमें बेंच दी।

दुखराम—हमारी बूझमें आता है भैया, कि घूस-रिसवत लेनेवाले और चोर-बजरिहा लोगोंके मुँहमें खून लग गया है, मुँह लगा खून नहीं छूटता ? फिर बताओ लाठी छोड़ इसकी कौन दवा है ?

भैया—दुक्खू भाई, हत्याका रस्ता ठीक है कि बेहत्याका, इसके बारेमें हम यहाँ कुछ नहीं कहते। अततताईको जानसे मारने में दोस नहीं है। इहै बात ठीक है। मुदाई बात भी मनमें गठियाय लो, जैसे अंगरेज हमारे देसकी जनतासे डरते रहे, वैसे ई उनकी गद्दी संभालनेवाले हमारे नेता लोग भी डरते हैं। इसीलिए इन्होंने अङ्गरेजों-के समयके सभी कड़े-कड़े आईन-कानूनोंको बनाये रखा। काँगरेस एक बेरा चिल्लायके अंगरेजों से कहती थी, कि हथियारका कानून रद्द करो, उसे बनाके तुमने देसको निहत्था कर दिया। मुदा काँगरेसिया लोग जब गद्दी पर बैठे, तो ऊ कानून जैसाका तैसा आजहू काल चल रहा है। जो जंगली जानवरके भैया चोर-डाकूसे बचनेके लिए बन्दूकका लैसन माँगो, तो पूछा जाता है तुम कै सो एकम-टिक्कस देते हो, तुम खान्दानी हौ के वेखान्दानी।

दुखराम—तो इसका मतलब तो यही हुआ न, कि दुक्खूके हाथमें लाठी छोड़ बन्दूक न आने पावे।

भैया—मुदा, बंदूक क्या तोप और टंकसे भी बढ़कर हथियार जनताके हाथमें आ गया है।

मँगरू—सो क्या भैया ?

भैया—ऊ है इकइस बरससे बेसी उमिरके, सब मरद-मेहरियोंको सरकार चलाने खातिर मेम्बर-पंच चुनने का हक मिला है।

दुखराम—पंचाइत के चुनावमें तो हम सब नान्ह जातके लोग इकवट गये रहे, औ कितना गाँवनमें बाभन-छत्री-लाला लोग हमारी गोड़धरिया करते रहे, दाढ़ी सुहराते थे, कि भैया हमको भी वोट दे दो, जे हम भी पंचाइतमें चले जाएँ। मुदा रँगुवा सियारनको हम भली-भाँति पहिचानते हैं। हमने जो बाभन-छत्री-लालामें किसी को पंच बनने भी दिया; तो उन्हीं जवानको, जो जोंकों को नहीं पसंद करते :

भैया—बड़ी जातके गरीबोंकी ई मुढ़ताई है दुक्खू भाई, जो अपनी जातका होनेसे जोंकोंको अपना समझते हैं। फिर जिनको नान्ह जात भै अछोप (अछूत) कहते हैं, उनको तो सदा चूसते रहते, पनपने नहीं देते, देहपर मांस नहीं चढ़ने देते। अपमान और बेइज्जती तो पग-पगपर करते ई हैं। इसीलिए पंचायतके चुनावमें छोप-अछोप, हिन्दू-मुसुलमान सब नान्ह जातके लोग एक हो गये। जानते हो ना सौमें बीस ही बड़ी जात के लोग हैं। चाहे बाभन-छत्री-लाला हों, चाहे शेख-सैय्यद, मुगल-पठान हों। बाकी अस्सी नान्ह जात के लोग हैं। जो नान्ह जातके लोग एक हो जायँ, तो अपने बलबूतापर वह कमेरोंका राज बना सकते हैं। समझानेपर बड़ी जातके कमेरे भी समझ जायँगे कि जोंकोंके साथ रहनेमें उनकी भलाई नहीं है। जोंकोंने उन्हें अपनी जातका कहके बड़ा जो बनाया, यह खाली ठगनेके लिये।

मँगरू—लेकिन भैया, बड़ी जातके कमेरोंकी आँखमें पट्टी बँधी है, हम कमुनिस्तों की बात नहीं करते, वो तो तन-मन-धन से कमेरोंका राज चाहते हैं। झरियामें हम रोज देखते हैं। वह जात-पाँत कुछ नहीं मानते। जो भी कमेरे हैं, उन सबको अपना भाई समझते हैं औ हम भी उनके खातिर परान देते हैं।

दुखराम—भैया तुमने जो जोंक पुरान सुनाया था औ कहा कि मरकस बाबा ने जोंकोंसे बचानेके लिये कमेरोंको रस्ता दिखाया। उनका रस्ता तो हमें बहुत ठीक जँचता है। कमेरे खाली मरकस बाबाके चेलोंपर ही भरोसा कर सकते हैं।

भैया—औ उनके हाथ-पैर तुम्हीं लोग हो, दुक्खू भाई, खूंटके बल पर बछरू कूदता है।

दुखराम—तो भैया, काहे नहीं हम सब लोग कमुनिस्तोंको ही अपना बोट देके सरकारमें भेजें?

भैया—दुक्खू भाई हमारा देश बहुत बड़ा है। पैंतिस करोड़ आदमी रहते हैं। कमुनिस्त इतने अधिक नहीं हैं, कि हर जगह पहुँच सकें, मुदा ई बात ठीक है कि हम उनपर ही विश्वास कर सकते हैं, वह जोंकोंके फंदे में नहीं पड़ सकते।

मँगरू—भैया ऊ तो तपे हुए सोना हैं। हमने कोयलरीमें देखा है, कैसे पुलिस उनके पीछे हाथ धोके पड़ी रहती है, हाथमें आते ही जेलमें बन्द करके साँसत करती है। साँसत ही काहे जेहलमें उनके ऊपर गोली भी चलाई और कितनों को मारा। हमारे कोयला मजूरोंके भीतर काम करने वाले एक जनेका भाई तो उसी गोलीसे जेलमें मरा।

सन्तोखी—काहे भैया हाथ-पैर बाँधके जेलमें डाल देनेपर भी उनको गोली से मारा जाता है ?

भैया—सन्तोखी भाई, जो काम अँग्रेजोंने नहीं किया था, वो काम इस सरकारने किया है। कमुनिस्तोंका यही दोस है, कि वह जोंकोंका पछ नहीं करते औ जोंकोंका टाट उलट कर कमेरोंका राज बनानेके लिये काम करते हैं।

दुखराम—तो भैया हम तो कमुनिस्तोंको ही बोट देना अच्छा समझते हैं।

भैया—बताया नहीं कि कमूनिस्त सब जगहके लिये नहीं मिल सकते, औ सब जगह वह खड़ा भी नहीं होना चाहते।

दुखराम—सो क्यों भैया ?

भैया—वह चाहते हैं कि कमेरा-राज चाहने वाले जितने लोग हैं, सबका एक-एक गोल बन जाये औ इसी गोलके-गोल सब जगह खड़े हों।

दुखराम—जो हम लोग समझ-बूझके बोट दें, तो कमेरा राज बन जायेगा भैया ?

भैया—पहले ई विश्वास है तुम्हें कि कमेरा राज बननेसे ही हम लोगोंका दुख दूर होगा, रोटी-कपड़ा मिलेगा।

दुखराम—हाँ भैया, जब तक जोंकोंका राज रहेगा तब तक उन्हींके बेटा-बेटी मौज करेंगे।

भैया—तो कमेरा-राज बनानेका एक ही रास्ता है कि कमुनिस्तोंके गोलका जो भी आदमी पंच (मेम्बर) होनेके लिए खड़ा किया जाय, उसीको बोट दिया जाय। ई समझ रक्खो कि सौमें अस्सी बोट देने वाले नान्ह जात के ही हैं, जो जुग-जुगसे पीसे औ सताये जा रहे हैं।

दुखराम—गाँव-पंचायतके चुनावमें तो भैया कमुनिस्त नहीं दिखाई पड़े थे, अबहूँ कहाँ दिखाई पड़े हैं ?

भैया—आजकल देशमें दो गोल हैं। दोनों गोल चाहेगी कि जाके सरकारको अपने हाथमें ले लें।

सन्तोखी—एक गोल तो जानते हैं भैया, जोंकोंकी है, चाहे ऊ कांग्रेसका नाम लें, गाँधी बाबाका नाम लें, राम-राजका नाम लें, हिन्दू सभाका नाम लें। मुदा दूसरा गोल कौन है ?

भैया—दूसरा गोल कमूनिस्त और उनके साथी-समाजियोंका।

दुखराम—तब तो भैया हमारे पास जो भी आवैगा बोट माँगने, उससे पूछेंगे कि तुम कौन गोलके हो। अपनी नान्ह जातिके आदमी पर हमको भरोसा है, मुदा सेठ लोग सबको चाँदीके टुकड़ा से खरीद लेना चाहते हैं। हम कहेंगे कि तुम जो उस गोलमें हो, जिसमें मरकस बाबाके चेला और जोंकनके दुश्मन कमूनिस्त लोग हैं तब ठीक है। नहीं तो हम जात-भाईके फेरमें नहीं पड़ते।

मँगरू—हाँ भैया, कांग्रेस और गाँधी बाबाके नामके धोखामें अब हम लोग नहीं पड़ेंगे। झरियामें मजूरनकी गलीमें तो गाँधी टोपी देके जो निकल जाये, तो

लड़के थू-थू करने लगते हैं। हमारी चमारकी जात देखते हो न नान्ह जातमें भी कितनी छोटी है, औ हमसे दुखिया दुनियामें कोई नहीं है। अपनी जातके एक जनेको बोट देके हमने मेम्बर बनाया, अँगरेजके जानेके बाद जब उनको मंतरी बनाया गया, तो खुशीके मारे हम लोगोंकी छाती फूल गयी। मुदाका देखते हैं। ऊ सोरहो आना जोंकोंके हाथमें हैं। सेठ लोग वैसे तो चमार को अपने ओसारेके पास भी नहीं आने देते, मुदा हमारी जातके इस मंतरीकी सेठ-सेठानी लोग आरती उतारते हैं। ऊ भला कमेरा राज कभी होने देंगे ? दुखराम भाई, अपनी जातके या नान्ह जातके आदमीको बोट देनेमें भी समझ लेना होगा, कि वह जोंकोंके हाथमें तो नहीं चले जायेंगे ! सेठ लोग दस-बीस लाख रुपया देके मालामाल करेंगे। नान्ह जातके मंतरीकी कोठा-अटारी खड़ी हो जायगी। उनकी मेहरियोंके गलेमें खाली सोना चमकने लगेगा, मुदा दस-पाँच लखपती बना देनेसे हम लोगोंका दुख दूर नहीं होगा।

दुखराम—तो भैया, हमें बहुत ठोंक-ठाकके आदमीको परखना होगा।

सन्तोखी—दमड़ीकी हंडिया खरीदते हैं, तब भी ठोंक-ठाँकके देखे बिना नहीं लेते।

मँगरू—औ 'दमड़ीकी हंडिया गई कुत्तेकी जात पैचानी गई' का ख्याल करके हमें रह नहीं जाना चाहिए।

भैया—रह जानेके माने हैं, अपनी गरदन फिर उन्हीं खून चूसनेवालोंके हात-में थमा देना। औ यह भी ख्याल रक्खो, कि अबकी बड़ा राम-नामा तैयार हो रहा है। पाँच बरस तक लूटके घर भरनेवाले औ देसको रसातल पहुँचाने वाले लोग फिर रामनामा ओढ़के वोट माँगने आये।

दुखराम—हम राम-नामा के फेरमें नहीं पड़ेंगे भैया ! हम राम-नामाके पितर-के मुँहको पहचानेंगे नहीं क्या, कि यह वही भगत है जो छप्पन चूहा खा चुके हैं, और अभी तक इनकी भूख नहीं गई है।

मँगरू —सुनते हैं भैया, अब कांग्रेसवाले भी कहने लगे हैं कि हम भी कमेरोंका राज चाहते हैं।

भैया—कमेरोंका राज कैसा चाहते हैं, यह तो उनके छः बरसके राजसे खूब मालूम हो गया। जमींदारी उठा देनेकी बड़ी-बड़ी बात करते थे, मुदा उसमें भी इतने छन्द-बन्द लगाये, कि पहले तो उनका कानून ही गैर-कानून हो गया और अब जमी-दारी उठाना नहीं बलुक जमीदारोंका तोंद भरना चाहते हैं और हम लोगों का हाड़-मांस कूट-पीस रहे हैं। कहते हैं कि राजा लोग अपनेसे अपना राज राजी-खुशी छोड़ दिये, और साधू-सन्यासी बन गये। मुदा, सन्तोखी भाई राजा लोग राजी-खुशीसे—राज छोड़के चले गये, यह सोरहो आना झूठ है। परजा राजाको खानेको तैयार थी, सैकड़ों बरसोंके उनके जुलुम और पापको देखते-देखते वह अकुता गई थी। कांग्रेस-वालोंने जो किया, वह यही की राजाओंको परजाके क्रोधसे बचा लिया औ साथ ही बीस-बीस, तीस-तीस लाख सालियाना उनके लिये पिन्सन दे दी, जमीन-महल-बँगला धन-जेवर जो दिया सो अलग।

सन्तोखी—हम कब तक अपना खून पिला-पिलाके इन सड़ी जोंकोंको मोटी करते रहेंगे ?

भैंया—जब तक कमेरोंका राज नहीं होगा, तब तक खून चूसनेवाली जोंकें पहलेसे भी बेसी दाँत पर सान चढ़ाये बनी रहेंगी । मुदा, अब समझ जाओ, कि कमूनिस्त चाहे थोड़े ही हों वह जोंकोंके खिलाफ जितनी भी पार्टी, दल, गुट है, सबका एक गोल बाँधके कमेरोंका अपना राज बनानेका इंतजाम कर कहे हैं ।

दुखराम—तब तो भैंया, हम नान्ह जातवाले अपने नेता लोगों को ही कहेंगे, कि जो ईमानदारीसे कमेरोंका राज बनाना चाहतें हो तो पहले मरकस बाबाका गुर-मंतर ले आवो और कमूनिस्तोंके गोलमें मिल जाओ । जो कमूनिस्त कौनसल में डिल्ली पंचायत (पार्लियामेन्ट) में ना जायेंगे, तो रास्ता कौन बतलायेगा ।

भैंया—रास्ता बतलानेके लिए दस-पाँच का चला जाना बहुत है ।

दुखराम—तो भैंया, कमूनिस्त लोग डिल्लीकी पंचायतमें अपने ही जानेके लिये ललायत नहीं हैं ।

भैंया—नहीं, वह चाहते हैं, कि देशके सोसित, अछोप नान्ह जात औ दूसरे जो कमेरे हैं उनको गोल बाँधके भेजा जाय, तभी कमेरोंकी सरकार बन सकती है, तभी उन लोगोंका दुख दूर होगा ।

दुखराम—तब तो भैंया, इसी गोलमें नान्ह जात वालों का ठाँव है, जो हमारी जात के लोग कांग्रेस वालोंके फेरमें पड़े, तो वही होगा जो इतने साल से हमने देखा ।

मँगरू—लेकिन सुनते हैं भैंया, कांग्रेसकी गोल और कमेरोंकी गोलसे अलग भी गोल अपनी लोग बना रहे हैं ।

दुखराम—मैं समझता हूँ भैंया, जो मरकस बाबाके चेलोंके गोलमें नहीं है, वह जोंकोंके फंदेसे बच नहीं सकते ।

सन्तोखी—परजा सोसलिस्त पार्टी, हिन्दू सभा, संघ-सभा औ कितना-कितना नाम सुनते हैं ।

मँगरू—संघ-सभा क्या संतोखी भाई ?

भैंया—संघ सभा नहीं सन्तोखी भाई, राष्ट्रीय सेवक संघ, वह लोग अपने दलको कहते हैं । यह खाली सहरके रहवैया बाभन छत्री, लालाकी जमातके लोग हैं और दक्खिनमें मराठे ब्राह्मणों का जो एक बेर राज हुवा था, वैसा ही राज फिर बनाना चाहते हैं ।

दुखराम—बाभन-छत्री-लालाका राज अब हम नहीं होने देंगे । बहुत दिनों तक इन्होंने हमें नाकों चने चबवाया । लाठीमें हमारे सामने कोई नहीं ठहर सकता । जाँगर और मसक्कतके काम में हमारे सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता ।

भैंया—और बिद्दा पढ़नेका मौका मिले, तो उसमें नान्ह जात वाले पीछे नहीं रह सकते । मुदा, बड़ी जात वाली जोंकें हम लोगोंके पास पैसा-कौड़ी कहाँ रहने देती हैं कि हम अपने लड़कोंको पढ़ावें ।

संतोखी—तुमने कहा था भैंया, कि हमारे देशमें सौमेंसे अस्सी नान्ह जातवाले लोग रहते हैं, जोंकोंके सबसे सताये यही लोग हैं, औ अब इक्कीस बरससे बेसी उमर

के सभी मरद-मेहरियोंको अपना बोट देके पंच और मेम्बर चुनने का अख्तियार है, फिर तो कमेरों की जीत निश्चय है ।

भैया—संतोखी भाई, नान्ह जात वालोंको बड़ी जात वालोंने बहुत सताया है । लेकिन बड़ी जातके सभी लोगोंको इसका फल नहीं मिला । सब मजा जोंकों लिया । इसी वास्ते जात के कमेरे, कलमघिसाई करने वाले औ दौरी-दुकान रखनेवाले भूखे-दूखे लोग अब एकवट कर जोंकोंका राज खतम करना चाहते हैं । अखबार में छपा है, कि कलकत्ता के पास चन्दरनगर शहर में बोट देकर चुनाव हुआ था, जिसमें चौबीस पंचोंमें एक भी कांग्रेस नहीं चुना गया ।

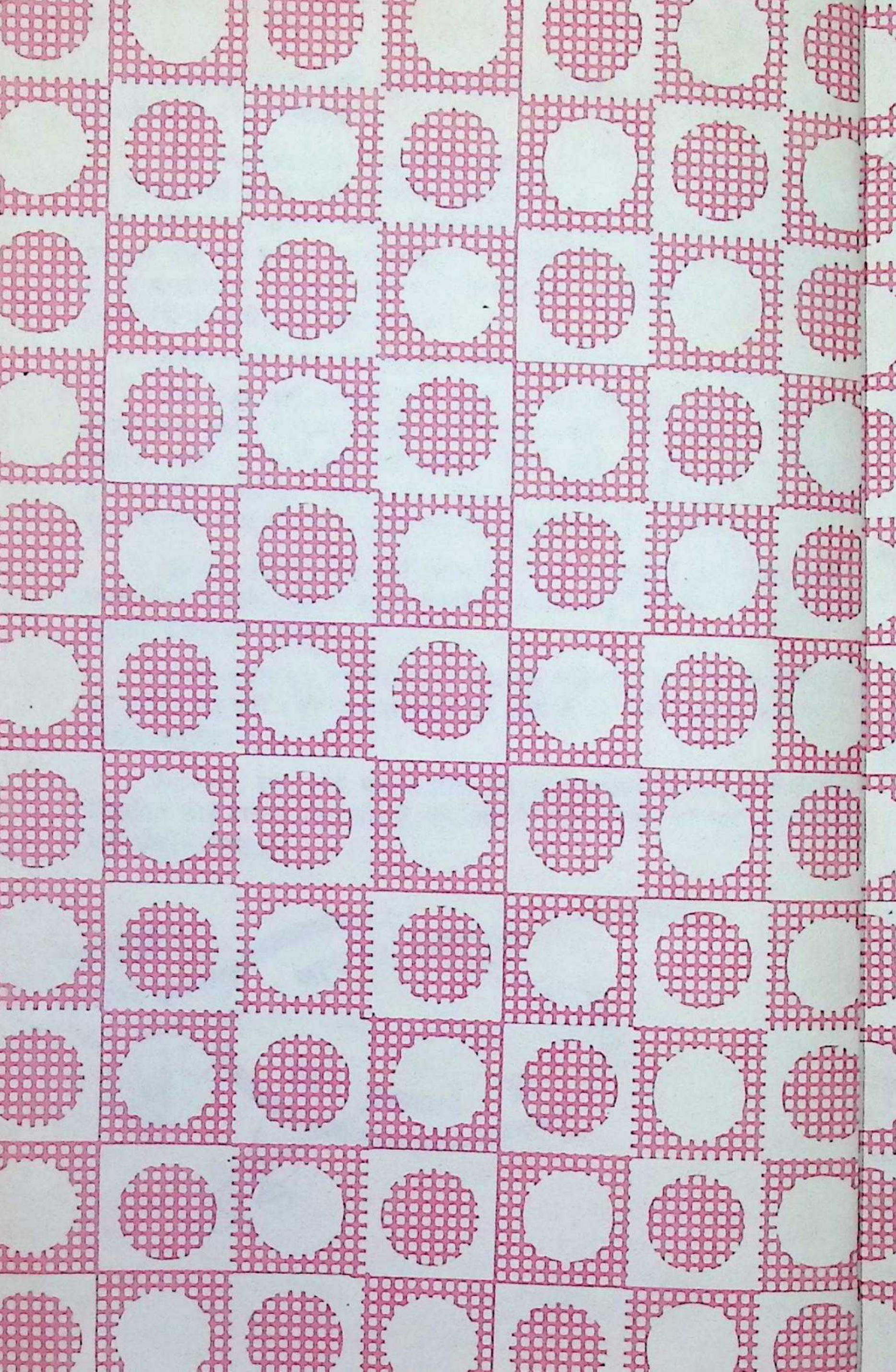
मँगरू—वही चन्दरनगर न भैया, जहाँ पहले अंग्रेजोंका राज नहीं था ?

भैया—हाँ, वहाँ फ्रांसीसियों का राज था और अभी थोड़े ही दिन हुआ, उन्हें छोड़के जाना पड़ा । सहरका इंतिजाम करनेके लिये पचीस पंचोंको चुनना था । कांग्रेस वालोंने अपने पचीस आदमी खड़े किये । 'उघरे अन्त न होंहि निबाहू' जानते हो न, कांग्रेस वालों का परदा उघड़ गया है । इसीलिए उनका एक भी आदमी चुनावमें नहीं जीता और सभी जगह कमेरोंकी गोलके आदमी चुन लिये गए ।

दुखराम—हमको भैया वही करना है, जो चन्दरनगरमें हुआ । हम सोसित संघके लोगों से कहेंगे, कि जो अपने भाइयोंकी भलाई चाहते हों, तो मरकस बाबाके चेलोंकी गोलमें मिल जाओ ।

मँगरू—और हम अछोप (अछूत) भाइयोंसे कहेंगे, कि अपनी जातके भभीखनों पर भरोसा मत करो । जो तुम्हारा ईमान-धर्म ठीक है, तो उसी गोलमें चले जाओ, जिसमें कमुनिस्त हैं ।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई, मरकस बाबा कह गये हैं कि कमेरोंके पास अपने पैर की बेड़ियोंको छोड़ हारनेके लिए और है ही क्या ? और जीतने पर सारी दुनिया का राज उन्हींके लिए है ।



मूल्य :- १२.००